Like us on facebook
https://www.facebook.com/
www.humhindustaniusa.com

www.humhindustaniusa.com

हम हिंदुस्तानी

संस्थापक संपादक : जसबीर 'जे' सिंह

Weekly, U.S.A.

Year 14, Issue 11 | MARCH 08-14, 2024 | Price: $ 1

अमेरिकी कंपनी को मिली MH370 विमान की क्रैश साइट

कंपनी ने हिंद महासागर में खोजने की इजाजत मांगी; 9 साल से लापता 239 पैसेंजर्स

ऑस्टिन/कुआला लंपुर ■ हम हिंदुस्तानी

2014 में गायब हुए मलेशिया के विमान MH370 की गुत्थी कुछ दिनों में सुलझ सकती है। अमेरिका के टेक्सास राज्य की एक कंपनी ओशन इनफिनिटी ने दावा किया है कि उनके पास उस जगह की लोकेशन है, जहां MH370 विमान क्रैश हुआ था। कंपनी ने मलेशियाई सरकार के सामने हिंद महासागर में नए सिरे से खोज शुरू करने का प्रस्ताव रखा है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, कंपनी ने सरकार के सामने नो क्योर, नो फी का प्रस्ताव रखा है। यानी सरकार तभी कंपनी को उसकी सर्विस के लिए पैसे दे जब उन्हें कोई सकारात्मक परिणाम मिले। कंपनी के CEO ऑलिवर प्लंकेट ने कहा- MH370 को ढूंढना हमारी प्राथमिकता है, ताकि फ्लाइट में मौजूद रहे 239 पैसेंजर्स के परिजनों को कुछ राहत मिल सके। बता दें कि ओशन इनफिनिटी ने इससे पहले साल 2018 में भी हिंद महासागर में खोज अभियान चलाया था। हालांकि, तब उन्हें कोई सफलता नहीं मिली थी। इससे पहले दिसंबर में कुछ एक्सपर्ट्स ने दावा किया था कि अगर अब विमान की खोज शुरू की जाए, तो विमान कुछ ही दिनों में मिल सकता है। सितंबर में ब्रिटेन की रॉयल एरोनॉटिकल सोसाइटी में एरोस्पेस एक्सपर्ट जीन-लुक मरचंद और पायलट पैट्रिक ब्लेली ने रिसर्च के बाद उस नए क्षेत्र की जानकारी दी थी, जहां प्लेन के गायब होने की आशंका है। उन्होंने कहा था कि इस इलाके में 10 दिन के अंदर छानबीन पूरी की जा सकती है। एक्सपर्ट के मुताबिक- जिसने भी प्लेन हाईजैक किया वो बेहद अनुभवी था। उसने पूरी प्लानिंग के साथ इसे अंजाम दिया। प्लेन के केबिन में दबाव को खत्म कर दिया गया, ताकि मलबा ज्यादा न हो और इसे ढूंढा न जा सके। एक्सपर्ट्स ने ये भी कहा कि जिसने भी इस पूरे मामले को अंजाम दिया, उसे पता था कि अगर विमान के लिए सर्च ऑपरेशन चलाया गया तो ये फ्लाइट के तय रूट पर ही होगा।

अमेरिकी राष्ट्रपति उम्मीदवार चुनाव- निक्की हेली ने नाम वापस लिया

वॉशिंगटन ■ हम हिंदुस्तानी

अमेरिका में राष्ट्रपति उम्मीदवार बनने के लिए रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक पार्टी के चुनाव चल रहे हैं। बुधवार को 15 राज्यों में वोटिंग हुई। इनमें डेमोक्रेटिक पार्टी की तरफ से सभी 15 सीटों पर बाइडेन की जीत हुई। रिपब्लिकन पार्टी की तरफ से 14 सीटों पर ट्रम्प जीते। ट्रम्प ने भारतवंशी निक्की हेली को हराया। हेली सिर्फ 1 सीट पर जीत हासिल कर पाईं। इसके बाद अब उन्होंने राष्ट्रपति उम्मीदवार की दावेदारी से नाम वापस लेने का फैसला किया है। निक्की हेली दूसरी भारतवंशी कैंडिडेट हैं जो अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में उम्मीदवारी की रेस से बाहर हो गई हैं। इससे पहले रिपब्लिकन पार्टी के विवेक रामास्वामी ने शुरुआती चुनाव हारने के बाद उम्मीदवारी से नाम वापस ले लिया था।

निक्की ने क्या कहा

बुधवार देर रात निक्की ने कहा- मैंने अपने कैम्पेन की शुरुआत जिन शब्दों से की थी, वही दोहरा रही हूं। उन महिलाओं और लड़कियों का खासतौर पर शुक्रिया, जिन्होंने मुझ पर भरोसा जताया। हमें आगे भी मजबूत और साहसी रहना होगा। न डरने की जरूरत है और न हिम्मत हारने की। अगर हम ऐसा करते हैं तो, आप और हम जहां भी जाएंगे, वो ईश्वर हमारे साथ होगा। इस कैम्पेन के दौरान मैंने अपने इस देश की महानता को देखा। दिल की गहराइयों से आज सिर्फ यही कहना चाहती हूं...शुक्रिया अमेरिका।

सुपर ट्यूजडे को समझिए...

अमेरिका में नवंबर 2024 में प्रेसिडेंशियल इलेक्शन यानी राष्ट्रपति चुनाव होने वाला है। इसके पहले दोनों मुख्य पार्टियां (डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन) अपने-अपने उम्मीदवारों का चुनाव कर रही हैं।

इसके लिए अलग-अलग राज्यों में वोटिंग हुई है। संवैधानिक तौर पर सुपर ट्यूजडे शब्द का कोई अर्थ नहीं है, लेकिन मोटे तौर पर आप कह सकते हैं कि इस दिन एक साथ कई राज्यों में प्राइमरी वोटिंग होती है। इन चुनाव से अंदाजा लग जाता है कि किस पार्टी से कौन नवंबर में होने वाले चुनाव में पार्टी का प्रेसिडेंशियल कैंडिडेट होगा।

ट्रम्प ने कहा- ये ऐतिहासिक दिन

भारतवंशी निक्की हेली को हराकर डोनाल्ड ट्रम्प ने खुशी जाहिर की है। उन्होंने मार-ए-लागो में अपने रिसॉर्ट में सुपर ट्यूजडे को अमेरिका के लिए ऐतिहासिक दिन बताया। ट्रम्प ने अपनी जीत पर रिसॉर्ट में एक पार्टी भी रखी। उन्होंने बाइडेन पर निशाना साधते हुए कहा कि देश को बचाने के लिए उन्हें ये चुनाव हर हाल में जीतना होगा। वहीं, बाइडेन ने ट्रम्प की जीत पर कहा कि अगर उन्हें एक और टर्म के लिए राष्ट्रपति चुना गया तो वो अमेरिका को अंधकार और हिंसा में धकेल देंगे। चार साल पहले जब मैं चुनाव लड़ा तो मेरा मकसद ट्रम्प से देश के अस्तित्व को बचाना था। ट्रम्प को अमेरिका के लोगों से मतलब नहीं है वो सिर्फ बदले के लिए सत्ता में आना चाहते हैं।

सृष्टि का आरंभ और महाशिवरात्रि

भावना शर्मा
डायरैक्टर,
हम हिंदुस्तानी

फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि पर्व मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि सृष्टि का प्रारंभ इसी दिन से हुआ। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस दिन महादेव के विशालकाय स्वरूप एक अग्निलिंग के उदय से सृष्टि आरंभ हुई। कई लोग यह मान्यता भी रखते हैं कि इसी दिन भगवान शिव का विवाह देवि पार्वती के साथ हुआ था। हर साल पड़ने वाली 12 शिवरात्रियों में से महाशिवरात्रि सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। कश्मीर में शैव मत को मानने वाले इस त्यौहार को हर-रात्रि और 'हेराथ' या 'हेरथ' के रूप में मनाते हैं। इस दिन को शिव सती के मिलन के पर्व के रूप में मनाया जाता है। महाशिवरात्रि पर शिव आराधना और अभिषेक उत्तम फलदाई माना जाता है। शिवरात्रि पर अभिषेक करने का बहुत महत्व है, ऐसा करके भक्तजन अपने जीवन में धन लक्ष्मी की स्थिरता, बीमारी से निजात, संतान सुख और कष्टों से छुटकारा पाने के लिए अभिषेक करते हैं। शुद्ध जल, गुड़ युक्त जल, तीर्थ स्थलों की नदियों के जल, गन्ने के रस, विभिन्न पुष्पों के रस और दही-दूध आदि से भोलेनाथ का अभिषेक करके उनका आशिर्वाद प्राप्त किया जा सकता है। इस व्रत के महातम्य से जुड़ी एक रोचक पौराणिक कथा भी है जो स्वंय शिव जी ने माता पार्वती को सुनाई थी।

पूजा का मिला फल

इस कथा के अनुसार एक बार पार्वती जी ने भगवान शिवशंकर से पूछा, 'ऐसा कौन-सा श्रेष्ठ तथा सरल व्रत-पूजन है, जिससे मृत्युलोक के प्राणी आपकी कृपा सहज ही प्राप्त कर सकते हैं?' उत्तर में भोलेनाथ ने शिवरात्रि के व्रत का विधान बताकर यह कथा सुनाई। इसके अनुसार एक बार चित्रभानु नामक एक शिकारी था। पशुओं की हत्या करके वह अपने कुटुम्ब को पालता था। वह एक साहूकार का ऋणी था, लेकिन ऋण समय पर न चुका सकने पर क्रोधित साहूकार ने उसको शिवमठ में बंदी बना लिया। संयोग से उस दिन शिवरात्रि थी। बंदी रहते हुए शिकारी मठ में शिव-संबंधी धार्मिक बातें सुनता रहा, वहीं उसने शिवरात्रि व्रत की कथा भी सुनी। संध्या होने पर साहूकार ने उसे बुलाया और ऋण चुकाने के लिए पूछा तो शिकारी अगले दिन सारा ऋण लौटा देने का वचन दिया। साहुकार ने उसकी बात मान ली और उसे छोड़ दिया। अगले दिन शिकारी जंगल में शिकार के लिए निकला। लेकिन दिनभर बंदी गृह में रहने के कारण भूख-प्यास से व्याकुल था। शिकार करने के लिए गया और एक तालाब के किनारे बेल-वृक्ष पर मचान बनाने लगा। उस बेल वृक्ष के नीचे शिवलिंग था जो विल्वपत्रों से ढका हुआ था। शिकारी को उसका पता न चला। भूख और प्यास से थका वो उसी मचान पर बैठ गया।

अनजाने में हुआ पूजन

मचान बनाते समय उसने जो टहनियां तोड़ीं, वे संयोग से शिवलिंग पर गिरीं। इस प्रकार दिनभर भूखे-प्यासे शिकारी का व्रत भी हो गया और शिवलिंग पर बेलपत्र भी चढ़ गए। एक पहर रात्रि बीत जाने पर एक गर्भिणी मृगी तालाब पर पानी पीने पहुंची। शिकारी ने धनुष पर तीर चढ़ाकर ज्यों ही प्रत्यंचा खींची, मृगी बोली, ''मैं गर्भिणी हूं। शीघ्र ही प्रसव करूंगी। तुम एक साथ दो जीवों की हत्या करोगे, जो ठीक नहीं है। मैं बच्चे को जन्म देकर शीघ्र ही तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत हो जाऊंगी, तब मार लेना।'' शिकारी ने प्रत्यंचा ढीली कर दी और मृगी जंगली झाड़ियों में लुप्त हो गई। कुछ ही देर बाद एक और मृगी उधर से निकली। शिकारी की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। समीप आने पर उसने धनुष पर बाण चढ़ाया। तब उसे देख मृगी ने विनम्रतापूर्वक निवेदन किया, कि मैं थोड़ी देर पहले ऋतु से निवृत्त हुई हूं। कामातुर विरहिणी हूं। अपने प्रिय की खोज में भटक रही हूं। मैं अपने पति से मिलकर शीघ्र ही तुम्हारे पास आ जाऊंगी। शिकारी ने उसे भी जाने दिया। दो बार शिकार को खोकर वह चिंता में पड़ गया। रात्रि का आखिरी पहर बीत रहा था। तभी एक अन्य मृगी अपने बच्चों के साथ उधर से निकली। शिकारी धनुष पर तीर चढ़ा कर छोड़ने ही वाला था कि मृगी बोली, मैं इन बच्चों को इनके पिता के हवाले करके लौट आऊंगी। इस समय मुझे मत मारो। शिकारी हंसा और बोला, सामने आए शिकार को छोड़ दूं, मैं ऐसा मूर्ख नहीं। इससे पहले मैं दो बार अपना शिकार खो चुका हूं। मेरे बच्चे भूख-प्यास से तड़प रहे होंगे। उत्तर में मृगी ने फिर कहा, जैसे तुम्हें अपने बच्चों की ममता सता रही है, ठीक वैसे ही मुझे भी इनकी फिक्र है इसलिए सिर्फ बच्चों के नाम पर मैं थोड़ी देर के लिए जीवनदान मांग रही हूं। मेरा विश्वास करो, मैं इन्हें इनके पिता के पास छोड़कर तुरंत लौटने की प्रतिज्ञा करती हूं। मृगी का दीन स्वर सुनकर शिकारी को उस पर दया आ गई। उसने उस मृगी को भी जाने दिया। शिकार के अभाव में बेल-वृक्षपर बैठा शिकारी बेलपत्र तोड़-तोड़कर नीचे फेंकता जा रहा था। पौ फटने को हुई तो एक हृष्ट-पुष्ट मृग उसी रास्ते पर आया। शिकारी ने सोच लिया कि इसका शिकार वह अवश्य करेगा। शिकारी की तनी प्रत्यंचा देखकर मृगविनीत स्वर में बोला, भाई! यदि तुमने मुझसे पूर्व आने वाली तीन मृगियों तथा छोटे-छोटे बच्चों को मार डाला है, तो मुझे भी मारने में विलंब न करो, ताकि मुझे उनके वियोग में एक क्षण भी दु:ख न सहना पड़े। मैं उन मृगियों का पति हूं। यदि तुमने उन्हें जीवनदान दिया है तो मुझे भी कुछ क्षण का जीवन देने की कृपा करो। मैं उनसे मिलकर तुम्हारे समक्ष उपस्थित हो जाऊंगा।

मोक्ष का वरदान

मृग की बात सुन कर शिकारी ने सारी कथा मृग को सुना दी। तब मृग ने कहा, मेरी तीनों पत्नियां जिस प्रकार प्रतिज्ञाबद्ध होकर गई हैं, वे मेरी मृत्यु से अपने धर्म का पालन नहीं कर पाएंगी। अत: जैसे तुमने उन्हें विश्वासपात्र मानकर छोड़ा है, वैसे ही मुझे भी जाने दो। मैं उन सबके साथ तुम्हारे सामने शीघ्र ही उपस्थित होता हूं। उपवास, रात्रि-जागरण तथा शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ने से शिकारी का हिंसक हृदय निर्मल हो गया था। उसमें भगवद् शक्ति का वास हो गया था। उसके हाथ से धनुष तथा बाण छूट गया और उसने मृग को जाने दिया। थोड़ी ही देर बाद वह मृग सपरिवार शिकारी के समक्ष उपस्थित हो गया, ताकि वह उनका शिकार कर सके, किंतु जंगली पशुओं की ऐसी सत्यता, सात्विकता एवं सामूहिक प्रेमभावना देखकर शिकारी को बड़ी ग्लानि हुई। उसके नेत्रों से आंसुओं की झड़ी लग गई। उस मृग परिवार को न मारकर शिकारी ने अपने कठोर हृदय को जीव हिंसा से हटा सदा के लिए कोमल एवं दयालु बना लिया। देवलोक से समस्त देव समाज भी इस घटना को देख रहे थे। उन्होंने इस शिकारी तथा मृग परिवार मोक्ष का वरदान दिया।

सतिंद्र कौर
डायरैक्टर,
हम हिंदुस्तानी

भगवान शिव-पार्वती को समर्पित है

शिवरात्रि

शिवरात्रि साल मे 12/13 बार आने वाला मासिक त्यौहार है, जो पूर्णिमा से एक दिन पहिले त्रियोदशी के दिन आता है। शिवरात्रियों में से दो सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं, फाल्गुन त्रियोदशी महा शिवरात्रि के नाम से प्रसिद्ध है और दूसरी सावन शिवरात्रि के नाम से जानी जाती है। यह त्यौहार भगवान शिव-पार्वती को समर्पित है, इस दिन भक्तभगवान शिव के प्रतीक शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ाते हैं।

इस बर्ष महाशिवरात्रि सोमवार के दिन है जिसे बड़ा ही दुर्लभ माना जाता है। सोमवार का दिन भगवान शिव से जोड कर देखा जाता है। महाशिवरात्रि और सोमवार दोनों एक दिन होना शिवभक्तों के लिए बहुत ही शुभ है। विवाह योग्य युवक - युवतियां विवाह योग के लिये शिवजी का अभिषेक करते हैं।

महाशिवरात्रि, भगवान शिव की पार्वती देवी से शादी का दिन है, इसलिए भक्तगण महा शिवरात्रि को गौरी-शंकर की शादी की सालगिरह के रूप में मानते हैं। इस दिन ब्रत में, कुछ भक्तों को बिना पानी के ब्रत रहिते देखा गया है। महाशिवरात्रि के दिन भक्त शिवलिंग को दूध, दही, शहद, गुलाब जल, आदि के साथ हर तीन घंटे के अंतराल मे सारी रात पूजा करते हैं।

यह दिन दो महान प्राकृतिक शक्तियों, रजस एवं तमस के एक साथ आने का दिन है। शिवरात्रि व्रत इन दोनों शक्तियों का सही नियंत्रण है। वासना, क्रोध, और ईर्ष्या जैसे बुराइयों को नियंत्रण कर सकते हैं। हर तीन घंटे शिवलिंग की पूजा के एक दौर आयोजित किया जाता है। सदगुरु के अनुसार, इस रात को ग्रहों की स्थिति कुछ ऐसी होती है कि मानव तंत्र में ऊर्जा का प्रवाह प्राकृतिक रूप से ऊपर की ओर होता है। अत: योगी साधक भक्त शरीर को सीधी स्थिति में रखते हैं, और सारी रात सोते नहीं हैं।

पृथ्वी की रचना पूरी होने के बाद, पार्वती जी ने भगवान शिव से पूछा कि भक्तों के कौनसे अनुष्ठानों से आपको सबसे ज़्यादा प्रशन्नता होती है। भगवान ने कहा है कि, फाल्गुन के महीने के दौरान शुक्लपक्ष की 14वीं रात मेरा पसंदीदा दिन है।

हिंदू पंचांग के अंतर्गत प्रत्येक माह के तेरहवें दिन को संकृत भाषा में त्रियोदशी कहा जाता है और प्रत्येक माह में कृष्ण और शुक्ल दो पक्ष होते हैं अत: त्रियोदशी एक माह में दो वार आती है। परंतु कृष्ण पक्ष के तेरहवें दिन आने वाली त्रियोदशी भगवान शिव की अति प्रिय है। भगवान शिव के प्रिय होने के कारण इस तिथि को शिव के साथ जोड़ कर साधारण भाषा में शिवतेरश कहा जाने लगा।

सावन शिवरात्रि को काँवर यात्रा भी कहा जाता है, जो मानसून के श्रावण (जुलाई-अगस्त) के महीने मे आता है। कंवर (काँवर), एक खोखले बांस को कहते हैं इस अनुष्ठान के अंतर्गत, भगवान शिव के भक्तों को कंवरियास या काँवाँरथी के रूप में जाने जाता है। हिंदू तीर्थ स्थानों हरिद्वार, गौमुख व गंगोत्री, सुल्तानगंज में गंगा नदी, काशी विश्वनाथ, बैद्यनाथ, नीलकंठ और देवघर सहित अन्य स्थानो से गंगाजल भरकर, अपने - अपने स्थानीय शिव मंदिरों में इस पवित्र जल को लाकर चढ़ाया जाता है।

हिन्दू पुराणों में कांवड़ यात्रा समुद्र के मंथन से संबंधित है। समुद्र मंथन के दौरान भगवान शिव ने जहर का सेवन किया, जिससे नकारात्मक ऊर्जा से पीड़ित हुए। त्रेता युग में रावण ने शिव का ध्यान किया और वह कंवर का उपयोग करके, गंगा के पवित्र जल को लाया और भगवान शिव पर अर्पित किया, इस प्रकार जहर की नकारात्मक ऊर्जा भगवान शिव से दूर हुई।

जल कब चढ़ाए?

भगवान शिव का सबसे प्रवित्र दिन शिवरात्रि, सकारात्मक उर्जा का श्रोत है, इसलिए जल चढ़ाने के लिए पूरा दिन ही पवित्र और शुभ माना गया है। पर जल चढ़ाते समय आगे और पीछे की तिथि के संघ को ध्यान में रखें।

Avneet Nick Singh (Founder)
(Will Always Be Remembered)

शिव की कृपा सब पर बनी रहे

Jasbir 'Jay' Singh
Chief Editor

Bhavna Sharma
Director

हम हिंदुस्तानी U.S.A.
www.humhindustaniusa.com
संस्थापक संपादक : जसबीर 'जे' सिंह

Hum Hindustani U.S.A.
www.humhindustaniusa.com
Chief Editor : Jasbir 'Jay' Singh

ਪੰਜਾਬ, ਪੰਜਾਬੀ ਤੇ ਪੰਜਾਬੀਆਤ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ
ਅਸਲੀ ਪੰਜਾਬੀ
www.aslipunjabi.com
ਮੁੱਖ ਸੰਪਾਦਕ : ਜਸਬੀਰ 'ਜੇ' ਸਿੰਘ

Satinder Kaur
Director

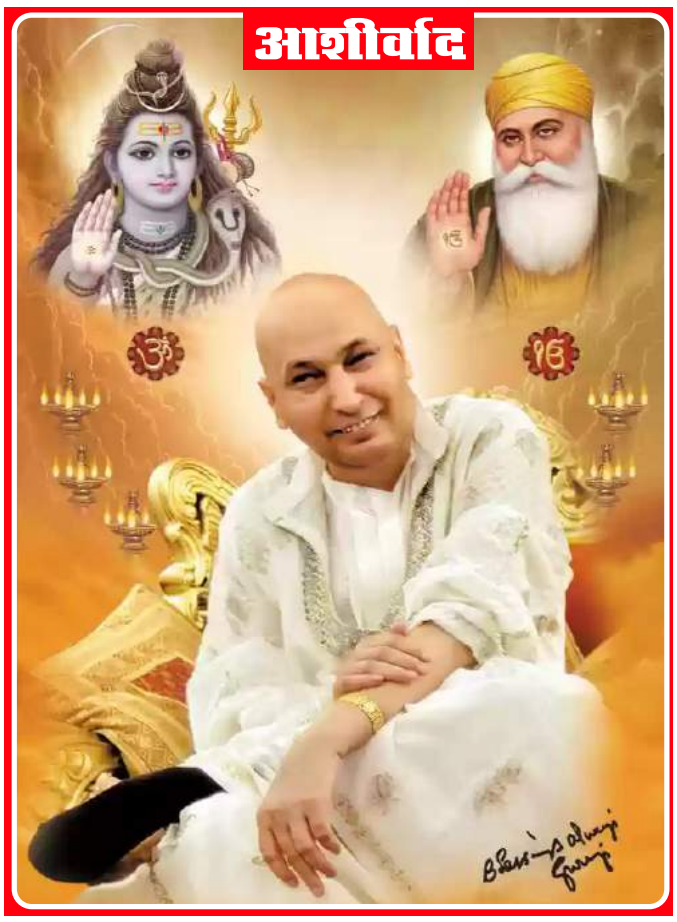

हम हिंदुस्तानी
A Weekly Newspaper from USA

Avneet Nick Singh (Founder)
(Will Always Be Remembered)

Publisher/Chief Editor
Jasbir 'Jay' Singh
Published by Media Resources Inc.d/b/a Hum Hindustani News Weekly
humhindustaniusa@gmail.com
www.humhindustaniusa.com
humhindustaniusawriters@gmail.com
(Spl. for Writers Only)

CEO : Ikjot Singh
Director Business Development : Arvin Singh
Hon. Director Marketing : Mukesh Modi
Distribution : Sukhwinder Singh
Director I.T : Gaurav Sharma
Website : Upinder Singh
Northern India : Prakash Kumar Pandey
Maharashtra Bureau : Jaswinder Jesse Singh
Editor (India) : Sudesh K. Bagga
Contributing Editors : Jugal Kishore Gupta
Gurcharanjit Singh Lamba, Dr. Sanjay Goyal
Contributing Photographers
: Nandita Pandey
: Baldev Singh (BJ Studio)
: Gunjesh Desai Masala Junction
: Tony Arora Vaaho Photos
: Thakur Thakur Digital Photo
Directors : Bhavna Sharma, Satinder Kaur

Office :
385 W John Street
Suite 202, Hicksville, NY 11801
Ph. : 516-515-9575, Fax : 516 307 3389
E-mail : humhindustaniusa@gmail.com

भारत में अत्यधिक गरीबी पूरी तरह खत्म

अमेरिकी थिंक टैंक का दावा

वैश्विक स्तरपर आज हर देश जानता है कि भारत कितनी तेजी से विकास कर रहा है।यही कारण है कि अनेक देश भारत से नजदीकियां बढ़ाने, मुक्त व्यापार समझौता करने और संबंधों को आगे बढ़ने व अनेक क्षेत्रों में रणनीतिक साझेदारी बनाने को आतुर है, क्योंकि भारतीय उत्पादों की प्रतिष्ठा से दुनियां वकिब हो चुकी है। अब हर क्षेत्र में भारत के परफॉर्मेंस की ब्रेकिंग का डंका बज रहा है। यही कारण है के जहां एक और अमेरिका की प्रमुख थिंक टैंक के दो अर्थशास्त्रियों ने एक लेख में कहा है कि भारत ने अत्यधिक गरीबी को खत्म कर दिया है, वहीं दूसरी ओर नीति आयोग और स्टेट बैंक रिसर्च रिपोर्ट भी इसी की तरफ कई सकारात्मक आंकड़ों सहित अपनी बात कर रहे हैं इसलिए अब मेरा मानना है कि इन सभी रिपोर्ट्स को संज्ञान में लेकर लोकसभा चुनाव 2024 से गठित 18वीं लोकसभा से उदित नई सरकार को अत्यधिक गरीबी समाप्त होने और करोड़ों व्यक्तियों परिवारों को गरीबी रेखा से बाहर आकर जो सक्षम हुए हैं, इसलिए उनको मिलने वाली सुविधाएं व हित वाली सूची से बाहर करने की जरूरत को रेखांकित करना जरूरी है। चुंकि अमेरिका थिंक टैंक का दावा है कि भारत अति गरीबी से पूरी तरह मुक्त हो चुका है इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे अंतरराष्ट्रीय राष्ट्रीय एजेंसी द्वारा भारत में भारी मात्रा में गरीब कम होने के दावों को अब अमली जामा पहना कर अपडेट सूची जारी करना समय की मांग है

साथियों बातें कर हम अमेरिकी थिंक टैंक द्वारा लिखे एक लेख की करें तो, अमेरिकी थिंक टैंक ब्रुकिंग्स ने एक रिपोर्ट में दावा किया है कि भारत ने अब आधिकारिक तौर पर अत्यंत गरीबी का सफाया कर दिया है। थिंक टैंक के अनुसार भारत में गरीबी अनुपात में तेज गिरावट आई है और इसे घरेलू खपत में वृद्धि को देखते हुए महसूस किया जा सकता है। सुरजीत भल्ला और करण भसीन द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट में कहा गया है कि यह पुनर्वितरण पर सरकार की मजबूत नीति का परिणाम है, जिससे पिछले एक दशक में भारत में मजबूत समावेशी विकास हुआ है। भारत ने अभी 2022-23 के लिए अपना आधिकारिक उपभोग व्यय डेटा जारी किया है, जो दस वर्षों में भारत के लिए पहला आधिकारिक सर्वेक्षण-आधारित गरीबी अनुमान प्रदान करता है। ब्रुकिंग्स के अनुसार उच्च वृद्धि और असमानता में बड़ी गिरावट की मदद से भारत में गरीबी उन्मूलन में मदद मिली है और गरीबी रेखा के नीचे के लोगों में क्रय शक्ति समानता 1.9 डॉलर प्रति व्यक्ति तक पहुंच गई है। भारत ने अभी 2022-23 के लिए अपना आधिकारिक उपभोग व्यय डेटा जारी किया है, जो दस वर्षों में भारत के लिए पहला आधिकारिक सर्वेक्षण-आधारित गरीबी अनुमान प्रदान करता है। ब्रुकिंग्स के अनुसार उच्च वृद्धि और असमानता में बड़ी गिरावट की मदद से भारत में गरीबी उन्मूलन में मदद मिली है और गरीबी रेखा के नीचे के लोगों में क्रय शक्ति समानता 1.9 डॉलर प्रति व्यक्ति तक पहुंच गई है।

साथियों बातें अगर हम एसबीआई थिंक रिसर्च रिपोर्ट की करें तो, एसबीआई ने कंज्यूमर एक्सपेंडिचर सर्वे के रिपोर्ट के हवाले से बताया है कि देश में शहरी और ग्रामीण इलाकों के बीच खाई कम हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक 2022-23 में ग्रामीण इलाकों में गरीबी घटकर 7.2 फीसदी पर आ गई है जो 2011-12 में 25.7 फीसदी रही थी. जबकि शहरी इलाकों में गरीबी घटकर 4.6 फीसदी रही है जो 2011-12 में 13.7 फीसदी रही थी. एसबीआई के मुताबिक ग्रामीण इलाकों में गरीबी घटने के चलते इस बात के आसार हैं कि देश में गरीबी दर घटकर 4.5 से 5 फीसदी पर आ चुकी है। एसबीआई रिसर्च रिपोर्ट ने कहा कि भारत सरकार की ओर से उठाए गए कदमों का जमीनी स्तर पर बड़ा प्रभाव देखने को मिल रहा है. रिपोर्ट के मुताबिक नए घरेलू उपभोग व्यय को कंज्यूमर प्राइस इंफ्लेशन में शामिल करने से वित्त वर्ष 2023-24 में देश का रियल जीडीपी 7.5 फीसदी के लेवल तक रह सकता है। एसबीआई के ग्रुप चीफ इकोनॉमिक एडवाइजर सौम्या कांति घोष के नेतृत्व में तैयार किए रिसर्च रिपोर्ट के मुताबिक एक दशक के बाद जारी किए गए घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण ने शहरों और ग्रामीण घरेलू उपभोग के तौर तरीकों में बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है। शहरी ग्रामीण इलाकों में प्रति व्यक्ति खपत और एक्सपेंडिचर में बढ़ोतरी देखने को मिली है। एसबीआई ने अपने रिपोर्ट में बताया कि कोरोना महामारी के बाद ग्रामीण इलाकों में गरीबी में 2018-19 के बाद 440 प्वाइंट की कमी आई है जबकि शहरी गरीबी में 170 बेसिस प्वाइंट की कमी आई है. इससे स्पष्ट है कि सरकार की योजनाओं का ग्रामीण इलाकों में लोगों की जीविका पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। ग्रामीण इलाकों में गरीबी 7.2 फीसदी पर आ गया है जबकि शहरी गरीबी घटकर 4.6 फीसदी पर आ गई है जो 2011-12 में 25.7 फीसदी और 13.7 फीसदी हुआ करता था।एसबीआई के रिसर्च रिपोर्ट के मुताबिक नए घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण डेटा इस ओर इशारा कर रहा है कि असामनता की खाई कम हुई है। शहरी और ग्रामीण दोनों ही इलाकों में औसतन एकसमान रूप से खपत बढ़ी है. ग्रामीण और शहरी इलाकों में खपत में असमानता भी घटी है।एसबीआई रिसर्च के मुताबिक 2011-12 में ग्रामीण इलाकों में 816 रुपये से कम आय और शहरी इलाकों में 1000 रुपये से कम आय वालों को गरीबी रेखा के नीचे माना गया था।लेकिन एनएसएसओ के नए डेटा के मुताबिक नई

(शेष पृष्ठ 24 पर)

एड. किशन भावनानी
कर विशेषज्ञ,साहित्यकार, पत्रकार, कानूनी लेखक, चिंतक, कवि
भावनानी गोंदिया (महाराष्ट्र)
Mob. : 9284141425

DISCLAIMER
Media Resources Inc. and Hum Hindustani assume no responsibility for the claims made in advertisements. We only Sell Space. Views Published in the newspaper are those of the authors and do not necessarily reflect the views of the newspaper. All Rights are reserved by the publishers. Reproduction in whole or in part without permission in writing from Hum Hindustani is prohibited.

बंगाल पर दहाड़, मणिपुर पर ख़ामोशी?

लोकसभा के आम चुनावों का बिगुल बज चुका है। राजनेताओं ने चुनावी सभायें,रैलियां व रोड शो करने शुरू कर दिये हैं। साम्प्रदायिक व जातीय ध्रुवीकरण, लोभ-लालच, सुनहरे सपने दिखाने, धार्मिक भावनायें भड़काने, विपक्षी नेताओं को अपमानित करने उन्हें डराने धमकाने व ख़रीदने का दौर जारी है। सत्तारूढ़ दल जहां हर सूरत में स्वयं को सत्ता में बनाये रखना चाहता है वहीँ विपक्ष, सत्ता हासिल करने के लिये कोई भी अवसर गंवाना नहीं चाहता। केंद्रीय सत्तारूढ़ दल भारतीय जनता पार्टी की ओर से एक बार फिर चुनाव प्रचार की कमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संभाल ली है। प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में चुनावी बिगुल फूंकने के बाद पिछले दिनों बंगाल राज्य का दौरा किया। उन्होंने यहां कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन, शिलान्यास व लोकार्पण किया। इसके बाद पीएम मोदी ने यहां जनसभा की और जैसी कि उम्मीद थी उन्होंने संदेशखाली हिंसा के मामले पर बंगाल की ममता बनर्जी सरकार पर जमकर निशाना साधा। मोदी ने यहां तक कहा कि ''संदेशखाली की घटना पर ममता बनर्जी की सरकार को शर्म आनी चाहिए।'' ख़बरों के अनुसार तृणमूल कांग्रेस के नेता शेख़ शाहजहां पर आरोप है कि उसने संदेशखाली में महिलाओं पर यौन अत्याचार किये और आदिवासियों की ज़मीनें हड़प लीं। यदि यह आरोप सही है तो निश्चित रूप से आरोपी किसी भी दल या समुदाय का क्यों न हो उसके विरुद्ध कठोर से कठोर कार्रवाई की जानी चाहिये और क़ानून के मुताबिक़ उसे सज़ा ज़रूर मिलनी चाहिये। फ़िलहाल आरोपी शेख़ शाहजहां को गिरफ़्तार भी किया जा चुका है और तृणमूल कांग्रेस से उसे छः वर्षों के लिये निष्कासित भी किया जा चुका है।

Tanveer Jafri (Columnist)
Ambala City (Haryana)
098962-19228, 0171-2535628
tanveerjafri1@gmail.com

परन्तु अपने बंगाल दौरे पर प्रधानमंत्री संदेशखाली प्रकरण को भी साम्प्रदायिक रंग देने से बाज़ नहीं आये। चूँकि आरोपी का नाम शेख शाहजहां है इसलिए उन्होंने अपनी सार्वजनिक सभा में यह कहा कि कहा कि - ''आज बंगाल की जनता यहां की मुख्यमंत्री दीदी से पूछ रही है कि क्या 'कुछ लोगों का वोट' आपके लिए संदेशखाली की पीड़ित महिलाओं से भी ज़्यादा अहम हो गया है ? 'कुछ लोगों के वोट' से उनका सीधा इशारा मुस्लिम मतों की तरफ़ था। उन्होंने संदेशखाली प्रकरण पर केवल बंगाल की तृणमूल कांग्रेस को ही नहीं घेरा बल्कि इसी बहाने

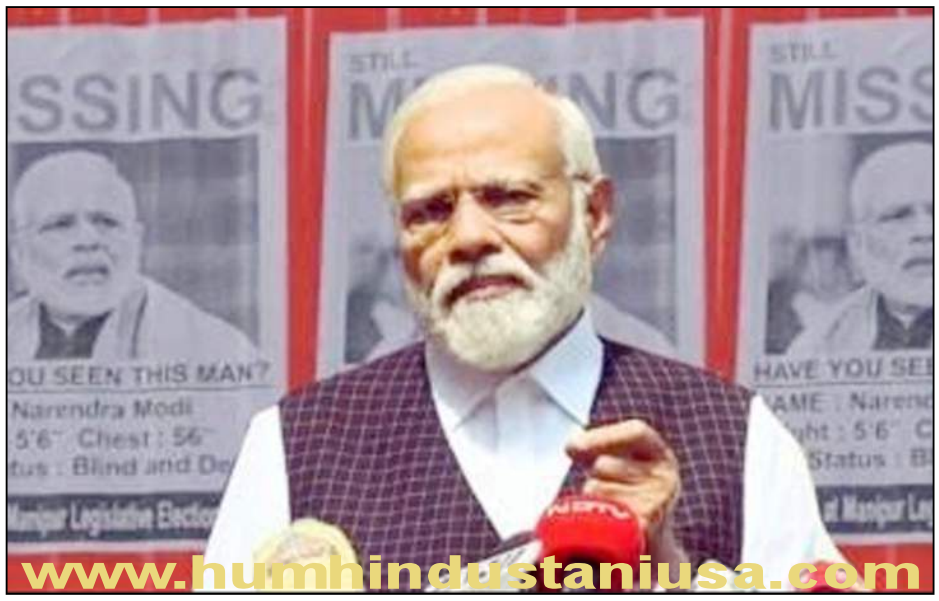

I. N. D. I. A. पर भी यह कहते हुये निशाना साध दिया कि - ''इंडी गठबंधन के बड़े-बड़े नेता संदेशखाली पर आंख, कान, मुंह सब बंद करके बैठे हैं?'' मोदी ने कांग्रेस और I. N. D. I. A. गठबंधन को भ्रष्टाचारियों, परिवारवादियों और तुष्टीकरण करने वालों का साथ देने वाला तथा तृणमूल कांग्रेस को बंगाल में अपराध और भ्रष्टाचार का एक नया मॉडल पैदा करने वाला दल बताया। साथ ही उन्होंने राम मंदिर मुद्दे को भी यह कहकर भुनाने की कोशिश की कि ''हम सभी का सौभाग्य है कि 5 सदियों के इंतज़ार के बाद प्रभु श्रीराम अपने भव्य मंदिर में विराजे हैं।''

भाजपा काफ़ी लम्बे समय से बंगाल में साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण कर सत्ता पर क़ाबिज़ होने की कोशिश कर रही है। राज्यों में सुशासन की दुहाई देते हुये भाजपा ने 'डबल इंजन की सरकार' जैसा एक नया शगूफ़ा छोड़ा है। केवल भाजपा या उसके नेता ही नहीं बल्कि देश का मीडिया भी इस समय संदेशखाली प्रकरण को बढ़ा चढ़ाकर पेश करने इसे साम्प्रदायिक रंग देने व ममता बनर्जी को एक 'विलेन' के रूप में पेश करने में व्यस्त है। परन्तु बड़ा आश्चर्य है कि न तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को आज तक मणिपुर की हिंसक घटनाओं पर कोई प्रतिक्रिया देते सुना गया न ही मुख्य धारा का मीडिया मणिपुर की घटनाओं को तवज्जोह दे रहा है। ग़ौर तलब है कि 3 मई 2023 यानी दस महीनों से 'डबल इंजन' की सरकार वाला राज्य मणिपुर सुलग रहा है। पूरा राज्य साम्प्रदायिक हिंसा की चपेट में है वहां गृह युद्ध जैसे हालात हैं। क्या मंत्री क्या अधिकारी क्या पुलिस ऑफ़िसर तो क्या सैन्याधिकारी क्या थाना तो क्या मंत्री निवास कुछ भी सुरक्षित नहीं। पुलिस थानों से हथियार तक लूटे जा चुके। इन्हीं हिंसक झड़पों के दौरान सैकड़ों चर्च और एक दर्जन से अधिक मंदिरों को भी तोड़ दिया गया। कई गांव के गांव आग के हवाले कर दिये गये। इसी डबल इंजन की सरकार वाले राज्य मणिपुर से दो महिलाओं को निर्वस्त्र कर घुमाने और उनके साथ यौन उत्पीड़न करने की वीडियो ने पूरे देश को शर्मसार किया। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार वहां प्रत्येक व्यक्ति शस्त्रधारी हो चुका है। मणिपुर हिंसा पर ख़ामोशी बरतने वाले प्रधानमंत्री ने मणिपुर की दो कुकी महिलाओं को निर्वस्त्र कर घुमाने और उनके साथ यौन उत्पीड़न करने के घटना पर मानसून सत्र के पहले दिन मीडिया को संबोधित करते हुए केवल इतना कहा कि इस घटना ने ''भारत को शर्मसार कर दिया है और किसी भी दोषी को बख़्शा नहीं जाएगा। मणिपुर की बेटियों के साथ जो हुआ उसे कभी माफ़ नहीं किया जा सकता।'' मणिपुर में इस समय लाखों लोग घर से बेघर हो चुके हैं सैकड़ों लोगों की जानें जा चुकी हैं। अनेक महिलाओं के साथ बलात्कार हुये हैं । परन्तु चूँकि मणिपुर में मामला बहुसंख्यक मैतेई और अल्पसंख्यक कुकी समुदाय के बीच का है। यहां जातीयता का संघर्ष है धर्म का

(शेष पृष्ठ 25 पर)

महिला बनाम घूंघट और बुर्का

लगभग हर युग में महिलाओं पर पाबंदियां रही है। उन्हें आगे बढ़ने से रोका जाता रहा। उन्हें घर तक ही सीमित रखा जाता रहा। केवल महिलाओं को पतिवर्ता और सती सावित्री जैसी उपाधियां दी गई जबकि ऐसी किसी भी उपाधियों से पुरुषों को नहीं नवाजा गया है। इतिहास गवाह है कि अनेक युगों में राजा महाराजाओं ने और यहां तक कि कुछ धर्म संस्थापकों ने भी एक से अधिक शादियां की है। पुरुषों ने पहली पत्नी के जिन्दा होते हुए या उसके निधन यानि कि आदमी के विधुर होने के बाद भी शादियां की जबकि महिलाओं के साथ ऐसा नहीं हुआ। महिलाओं को पुनर्विवाह की इजाजत नहीं दी गई। पुरुष प्रधान समाज ने महिलाओं को केवल बुर्का और घूंघट ही दिया। हाथ में खनखनाती हुई चूड़ियां और पांव में बजती हुई पाजेब दी गई ताकि उसके हर मूवमेंट पर पुरूष प्रधान समाज द्वारा उस पर हर पल नजर रखी जा सके। करवा चौथ का व्रत केवल महिलाओं को दिया गया। इसके अलावा मंगल सूत्र,मांग भरना, बुर्का पहनना महिलाओं को दिया गया। ये सब पुरुषों को भी क्यों नहीं दिए गए? इतिहास में दर्ज है कि कुछ महिलाओं द्वारा अपने पति के प्राण वापिस लाने के लिए यमराज को भी विवश कर दिया था जबकि किसी भी पुरुष द्वारा ऐसा नहीं किया गया आखिर ऐसा क्यों? क्या यह सोचनीय बात नहीं है। विवाहित महिला की मृत्यु होने पर पुरुष की पुनः शादियां होती रही है जबकि महिलाओं को केवल विधवा ही रखा जाना उचित माना गया। वह भी सफेद वस्त्र और बिना आभूषण और श्रृंगार के साथ एकांकी जीवन व्यतीत करने के लिए ताकि वह अकेली अपमान के घूंट पीकर जिंदा रहे और अकेली घुटती हुई मानसिक रूप से टूटती रहे। इसके साथ ही साथ विधवा को अशुभ भी माना गया। मांगलिक कार्यों से उसे दूर रखा गया और उसके सामने आने पर अप सगुन माना गया जबकि विधुर यानी कि जिसकी पत्नी गुजर गई हो उस पुरूष के साथ ऐसा बुरा व्यवहार नहीं हुआ। महिलाओं को तीन तलाक, दहेज, बलात्कार, सामुहिक बलात्कार,अपहरण, जिंदा जला दिया जाना,मारपीट आदि आदि जुल्मों से भी पीड़ित होना पड़ा है। महिलाओं को वैश्यालय में बिठाया गया। इस वक्त उनकी पवित्रता को परखने वाले पुरुष शान्त क्यों रहें। इन वैश्यालय पर महिलाओं की जगह पुरुषों ने पुरुषों को क्यों नहीं बिठाया गया ताकि पुरुष पुरुष के पास आकर भी तो अपनी हवस अपनी कामवासना पूरी कर सकता था। मगर ऐसा नहीं किया गया। महिलाओं को शिक्षा और समाज से दूर रखा गया। महिलाओं को गुड़ चीनी की चासनी में लपेट लपेट कर घर तक ही सीमित रखने के लिए तरह तरह के पाठ पढ़ाए जाते रहे। द्रोपदी को छोड़ कर किसी भी

(शेष पृष्ठ 25 पर)

सड़क जाम, मार्ग परिवर्तन से जनता परेशान-ज़िम्मेदार कौन सरकार या किसान?

किसान आंदोलन-2 अभी जारी है। इसका सबसे अधिक प्रभाव हरियाणा व पंजाब से लगती हुई शंभू और खनौरी नाम की सीमाओं के सीमित क्षेत्रों में है। हरियाणा व पंजाब से लगती इन्हीं दो सीमाओं पर गत 13 फ़रवरी से अनेक किसान संगठनों के नेता व सदस्य दिल्ली कूच करने के उद्देश्य से डेरा जमाये हुये हैं। किसान, दो वर्ष पूर्व हुये आंदोलन के समय सरकार द्वारा मानी गयी उनकी मांगों को अब तक पूरा न किये जाने के चलते यानी सरकार की वादा ख़िलाफ़ी की वजह से दूसरी बार आंदोलन करने के लिये मजबूर हुये हैं। सरकार ने किसानों को दिल्ली आने से रोकने के लिये इसबार शंभू व खनौरी से लेकर दिल्ली से लगती चारों ओर की सीमाओं पर कड़ी नाकेबंदी की है। शंभू व खनौरी सीमाओं पर तो छः लेयर तक के अवरोधक लगाये गए हैं। इनमें कंटेनर्स,सीमेंटेड ब्लॉक्स,सीमेंट में ढली मोटी कीलें,कंटीले तार,लोहे की चादरें, तरह तरह के वाहन व मशीनें,आर ए एफ़,अर्ध सैनिक बल,आंसू गैस फेंकने वाले यंत्र,ड्रोन,पानी की तेज़ बौछार फेंकने वाली मशीनें,बुलडोज़र,पोकलेन,जे सी बी आदि और भी अनेक चीज़ों का सहारा लिया गया है। इन सीमाओं पर सरकार द्वारा लगाये गये अवरोध शायद भारत की चीन व पाकिस्तान से लगती सीमाओं से भी अधिक सुदृढ़ हैं। जिन्हें विदेशियों या घुसपैठियों को नहीं बल्कि अपने ही देश के किसानों को रोकने के लिये खड़ा किया गया है।

निर्मल रानी
1885/2, Ranjit Nagar,
Ambala City (Haryana)
nirmalrani@gmail.com

दूसरी ओर किसान हैं जो शंभू व खनौरी की सीमाओं

पर पंजाब की हद में डेरा डाले हुए हैं। किसानों ने केवल इन्हीं बॉर्डर्स पर सड़कों के किनारे अपने तंबू लगा रखे हैं व ट्रैक्टर ट्रॉली आदि खड़ी कर रखी है। यही ट्रैक्टर ट्रॉली किसानों के घर, गोदाम तथा छाया सर्दी धूप बारिश से बचाओ आदि का काम करती है। किसानों ने आंदोलन के शुरुआत में शंभू व खनौरी सीमाओं से हरियाणा में प्रवेश की कोशिश की परन्तु सरकार ने अपनी पूरी ताक़त झोंक कर किसानों को हरियाणा में प्रवेश करते हुये दिल्ली पहुँचने से रोक दिया। इसी बीच 21 फ़रवरी को खनौरी बॉर्डर पर पुलिस और किसानों के बीच झड़प हुई थी जिसमें बठिंडा के युवा किसान शुभकरण सिंह की पुलिस की गोली लगने से मौत हो गई थी। किसान हालांकि अभी भी शंभू व खनौरी सीमाओं पर डेरा जमाये हुये हैं परन्तु उनकी तरफ़ से यातायात बाधित करने का न तो कोई प्रयास किया जा रहा है न ही उनकी मंशा जनता को परेशानी में डालने की है। जहां तक किसानों के दिल्ली कूच का प्रश्न है तो किसान कभी भी लुक छुप कर या सत्ता अथवा प्रशासन को धोखा देकर दिल्ली नहीं पहुँचते बल्कि 'दिल्ली चलो' का नारा देकर पूर्व घोषित कार्यक्रमानुसार ही मार्च करते हैं।

परन्तु सरकार ने गत 12 मार्च से ही शंभू व खनौरी सीमाओं के अतिरिक्त दिल्ली -हरियाणा-हिमाचल - चंडीगढ़ राष्ट्रीय राजमार्ग को भी पूरी तरह से अवरुद्ध कर रखा है। जगह जगह मार्ग परिवर्तन किया जा रहा है। अकारण ही गांव व क़स्बों से होकर ट्रेफ़िक मार्ग परिवर्तित किये जा रहे हैं। 12 मार्च से ही चंडीगढ़- अंबाला मार्ग पूरी तरह बाधित है जबकि अंबाला-चंडीगढ़ सीमा यानी सद्दोपुर-झड़मड़ी पर किसानों का किसी भी तरह का न तो जमावड़ा है न ही किसानों ने फ़िलहाल इस मार्ग से दिल्ली जाने की कोई घोषणा की है। इसके बावजूद चंडीगढ़-अंबाला-दिल्ली मार्ग को बंद करने या परिवर्तित करने का आख़िर क्या औचित्य है? किसान आंदोलन के नाम पर मार्ग बदले जाने से जनता बेहद परेशान है। चंडीगढ़ दिल्ली की यात्रा जो मात्र चार घंटे में तय होती थी अब 12-14 घंटों में तय हो रही है। कारें बसें आदि क़स्बों व गांवों से होकर गुज़रने से तंग रास्तों में जाम लगा रहता है। यात्रियों के साथ साथ उन गांव के लोगों को भी भारी परेशानी उठानी पड़ रही है जिन्हें 24 घंटे जाम और यातायात प्रदूषण का सामना करना पड़ रहा है। रुट बदलने के कारण जिन जिन क़स्बों व गांव से ट्रेफ़िक मोड़ा गया है उन रास्तों के सैकड़ों मेन होल के ढक्कन टूट गए हैं।

किसान आंदोलन के कारण जहाँ तमाम बसों का परिचालन बंद कर दिया गया है वहीँ तमाम बसों के रुट भी बदले गये हैं। बसों का कोई टाइम टेबल नहीं रह गया है। इससे आम जनता को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। यात्रियों को

(शेष पृष्ठ 25 पर)

इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड की नई कार्यकारिणी ने

कर्त्तव्यनिष्ठा से निर्वहन सहित पद व गोपनीयता की शपथ ली

शपथ ग्रहण समारोह का शुभारंभ अध्यक्ष प्रदीप टंडन द्वारा किया गया तथा जिसके उपरांत इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड के 1987-88 के अध्यक्ष रहे डा. जगन पाहूजा की पौत्री करिश्मा पाहूजा द्वारा भारत एवं संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रीय गान गाया गया

न्यूयॉर्क। हम हिन्दुस्तानी

इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड की ओर से अध्यक्ष प्रदीप टंडन के नेतृत्व में नई कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन न्यूयॉर्क के हिक्सविला में स्थित हिक्सविला कम्युनिटी सैंटर में किय गया। बारिश एवं मौसम के ठंडक के बावजूद भी यह शपथ ग्रहण समारोह अपने-आप में एक अमिट यादें छोड़ गया। उल्लेखनीय है कि इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड की ओर से जब भी नई कार्यकारिणी को चयनित किया जाता है तो शानदार शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया जाता है। इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड की गत 46 वर्षों की परम्परा को निरंतर जारी रखा हुआ है। शपथ ग्रहण समारोह का शुभारंभ अध्यक्ष प्रदीप टंडन द्वारा किया गया तथा जिसके उपरांत इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड के 1987-88 के अध्यक्ष रहे डा. जगन पाहूजा की पौत्री करिश्मा पाहूजा द्वारा भारत एवं संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रीय गान गाया गया, जिसके साथ ही पूरा माहौल देशभक्ति से गुंजायमान हो गया। इसके उपरांत नई कार्यकारिणी की चुनाव समिति के सदस्य ओम भांबरी एवं रीता भटेजा द्वारा मंच का संचालन किया गया तथा उन्होंने नई कार्यकारिणी के पदाधिकारियों के नामों का ऐलान किया गया। बता दें कि शपथ ग्रहण समारोह में मुख्यातिथि के रूप में इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड के पूर्व अध्यक्षा एवं पदाधिकारियों के अलावा सुपरपाइजर टाऊन ऑफ ओएस्टर बे जोसफ सलादिनो, नार्थ हैम्पस्टेड टाऊन सुपरवाइजर जैफिर डिसेना, डायरैक्टर ऑफ साऊथ एशियन बिजनैस एवं डिवैल्पमैंट ऑफ टाऊन ऑफ ओएस्टर बे हैरी मल्होत्रा, चेयरमैन ह्यूमन राइट्स कमीशन नासाऊ काऊंटी एडवाइजरी बोर्ड बॉबी कलोटी सहित अन्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए मुख्यातिथियों ने इंडिया एसोसिएशन ऑफ आंग आइलैंड द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। नए

हम हिंदुस्तानी U.S.A. www.humhindustaniusa.com संस्थापक संपादक : जसबीर 'जे' सिंह

पदाधिकारियों के शपथ ग्रहण करने से पहले डा. कृष्णन जावेरी, जोकि एसोसिएशन के प्रतिष्ठित सदस्य हैं, द्वारा स्टेज की जिम्मेदारी संभाली तथा उन्होंने गत 35 वर्षों से बतौर सदस्य कार्य कर रहे डा. नीरू भांबरी के बारे में जानकारी दी तथा उन्हें मंच पर आमंत्रित किया। बता दें कि डा. भांबरी को एसोसिएशन 2024 की कार्यकारिणी में सचिव नियुक्त किया गया है। इसके उपरांत डा. जावेरी द्वारा पूर्व अध्यक्ष गुंजन रस्तोगी को मंच पर आमंत्रित किया गया तथा उन्होंने इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड के नवनियुक्त अध्यक्ष प्रदीप टंडन के संदर्भ में विस्तृत जानकारी उपस्थित को दी। इसके उपरांत शपथ ग्रहण समारोह हेतु मंच की जिम्मेदारी टाऊन ऑफ नार्थ हैम्पस्टेड (नासाऊ काऊंटी) की सुपरवाइजर जैनिफर डीसेना ने संभाली तथा उन्होंने सर्वप्रथम इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड के नवनियुक्त अध्यक्ष प्रदीप टंडन को शपथ दिलाई। जिसके उपरांत एसोसिएशन के अन्य पदाधिकारियों में डा. नीरू भांबरी सचिव, अंजना कश्यप कोषाध्यक्ष, सुशील खन्ना उपाध्यक्ष, जोकि शपथ ग्रहण समारोह में किन्हीं कारणों से उपस्थित नहीं हो सके, के अलावा एग्जीक्यूटिव कमेटी सदस्यों अश्विनी बेरी, आशा दुआ, शशि गोयल, विनोद गोयल, किशोर मलिक, प्रफुल्ल वघेला को शपथ दिलाई गई। इसके अलावा एग्जीक्यूटिव कमेटी के 2 सदस्यों सुषमा कौशिक एवं पद्मा टड़ूरी जोकि स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण शपथ नहीं ले सके। इसी तरह से मुकेश मोदी ने फाइनैंस चेयर, रजनीश त्यागी मैंबरशिप चेयर के रूप में शपथ ग्रहण की जबकि सोशल कल्चरल चेयर नियुक्त किए गए डा. सुनील मेहरा भी किन्हीं कारणों के चलते शपथ ग्रहण नहीं कर सके। शपथ ग्रहण करने के उपरांत नवनियुक्त अध्यक्ष प्रदीप टंडन ने समूह अतिथियों एवं गण्यमान्यों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जो उन्हें जिम्मेदारी सौंपी गई है, वह उसे पूरी निष्ठा व ईमानदारी के साथ निभाने के साथ-साथ पूरी टीम को साथ लेकर चलेंगे। जिसके उपरांत नई टीम के पदाधिकारियों द्वारा कार्यभार संभालने की रस्म निभाई गई तथा समारेह में उपस्थित हुए अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसी तरह से अंत में सचिव नीरू भांबरी ने इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड द्वारा किए जाने वाले कार्यों के संदर्भ में विस्तृत जानकारी दी। जिसके उपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ यह शपथ ग्रहण समारोह दिलों में अमिट यादें छोड़ता हुआ सम्पन्न हो गया। बता दें कि शपथ ग्रहण समारोह की टी.वी. एशिया, आई.टी.वी. गोल्ड के अलावा हम हिन्दुस्तानी सहित अन्य मीडिया प्रतिनिधियों द्वारा शानदार कवरेज की गई। (शेष पृष्ठ 7 पर)

इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड की नई कार्यकारिणी घोषित

प्रदीप टंडन ने अध्यक्ष व डा. नीरू भांबरी ने सचिव का पद्भार संभाला

शपथ ग्रहण समारोह में मुख्यातिथि के रूप में सुपरपाइजर टाऊन ऑफ ओएस्टर बे जोसफ सलादिनो, नार्थ हैम्पस्टेड टाऊन सुपरवाइजर जैफिर डिसेना, डायरैक्टर ऑफ साऊथ एशियन बिजनैस एवं डिवैल्पमैंट ऑफ टाऊन ऑफ ओएस्टर बे हैरी मल्होत्रा, चेयरमैन ह्यूमन राइट्स कमीशन नासाऊ काऊंटी एडवाइजरी बोर्ड बॉबी कलोटी सहित अन्य उपस्थित रहे

(शेष पृष्ठ 8 पर)

इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड की नई कार्यकारिणी घोषित

नई जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा व टीम वर्क के साथ निभाऊंगा : टंडन

नए पदाधिकारियों के शपथ ग्रहण करने से पहले डा. कृष्णन जावेरी, जोकि एसोसिएशन के प्रतिष्ठित सदस्य हैं, द्वारा स्टेज की जिम्मेदारी संभाली तथा उन्होंने गत 35 वर्षों से बतौर सदस्य कार्य कर रहे डा. नीरू भांबरी के बारे में जानकारी दी तथा उन्हें मंच पर आमंत्रित किया

(शेष पृष्ठ 9 पर)

इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड की नई कार्यकारिणी घोषित

मुकेश मोदी ने फाइनैंस चेयर व रजनीश त्यागी मैंबरशिप चेयर के रूप में ग्रहण की शपथ

नई टीम के पदाधिकारियों द्वारा कार्यभार संभालने की रस्म निभाई गई तथा समारेह में उपस्थित हुए अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसी तरह से अंत में सचिव नीरू भांबरी ने इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड द्वारा किए जाने वाले कार्यों....

(शेष पृष्ठ 10 पर)

इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड की नई कार्यकारिणी घोषित

सभी पदाधिकारियों ने एकजुटता के साथ कार्य करने की वचनबद्धता दोहराई

एग्जीक्यूटिव कमेटी सदस्यों अश्विनी बेरी, आशा दुआ, शशि गोयल, विनोद गोयल, किशोर मलिक, प्रफुल्ल वघेला को शपथ दिलाई गई। इसके अलावा एग्जीक्यूटिव कमेटी के 2 सदस्यों सुषमा कौशिक एवं पद्मा टडूरी जोकि स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण शपथ नहीं ले सके

(शेष पृष्ठ 11 पर)

इंडिया एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड का शपथ ग्रहण समारोह

दिलों में अमिट यादें छोड़ता हुआ सम्पन्न

सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ यह शपथ ग्रहण समारोह दिलों में अमिट यादें छोड़ता हुआ सम्पन्न हो गया। बता दें कि शपथ ग्रहण समारोह की टी.वी. एशिया, आई.टी.वी. गोल्ड के अलावा हम हिन्दुस्तानी सहित अन्य मीडिया प्रतिनिधियों द्वारा शानदार कवरेज की गई

www.humhindustaniusa.com
हम हिंदुस्तानी
संस्थापक संपादक : जसबीर 'जे' सिंह
U.S.A.

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा

'इंस्पायर इंक्लूजन' थीम पर 13वें वार्षिक वूमैन अचीवमैंट अवार्ड गाला आयोजित

चेयरपर्सन इंदू जयसवाल एवं गाला चेयर शम्मी सिंह के नेतृत्व में आयोजित 13वें वार्षिक वूमैन अचीवमैंट अवार्ड गाला अमिट यादें छोड़ गया तथा सभी ने आयोजकों के कार्य की प्रशंसा की। बता दें कि इस प्रतिष्ठित समागम में मुख्यातिथियों के रूप में नासाऊ काऊंटी ब्रूस ए. ब्लैकमैन के कार्यालय से दि टाऊन ऑफ नार्थ हैम्पस्टेड सुपरवाइजर जैनिफर एस. डिसेना....

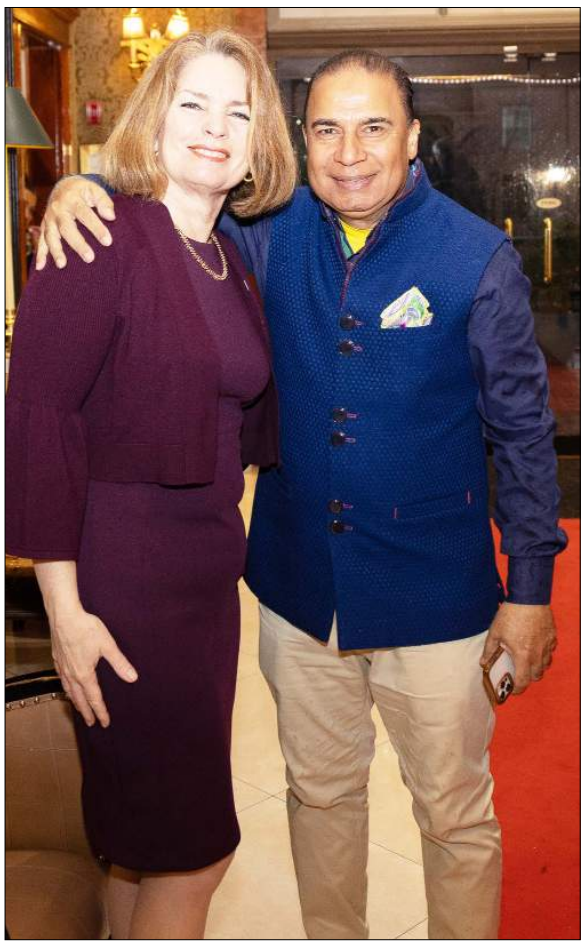

न्यूयॉर्क। हम हिन्दुस्तानी

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा 'इंस्पायर इंक्लूजन' थीम पर 13वें वार्षिक वूमैन अचीवमैंट अवार्ड गाला का आयोजन लांग आइलैंड स्थित मैट्रोपोलिटन कैटरर्स में हर्षोल्लास के साथ किया गया। चेयरपर्सन इंदू जयसवाल एवं गाला चेयर शम्मी सिंह के नेतृत्व में आयोजित 13वें वार्षिक वूमैन अचीवमैंट अवार्ड गाला अमिट यादें छोड़ गया तथा सभी ने आयोजकों के कार्य की प्रशंसा की। बता दें कि इस प्रतिष्ठित समागम में मुख्यातिथियों के रूप में नासाऊ काऊंटी ब्रूस ए. ब्लैकमैन के कार्यालय से दि टाऊन ऑफ नार्थ हैम्पस्टेड सुपरवाइजर जैनिफर एस. डिसेना, टाऊन ऑफ हैम्पस्टेड डोनाल्ड एक्स कैल्विन के कार्यालय से टाऊन क्लर्क रागिनी श्रीवास्तव एवं टाऊन ऑफ ओएस्टर बे सुपरवाइजर जोसफ स्लादिनो, नासाऊ काऊंटी कार्यालय से कम्पट्रोलर एलिन फिलिप्स उपस्थित रहे तथा उन्होंने सम्मानित शख्सियतों को नासाऊ काऊंटी कार्यालय के प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इसके अलावा टाऊन ऑफ हैम्पस्टेड डिप्टी सुपरवाइजर डॉर्टी एल. गूसबी भी उपस्थित हुए तथा जिनका डा. बॉबी कलोटी की ओर से भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर डा. बॉबी कलोटी ने इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की तथा साथ ही इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा आयोजित 13वें वार्षिक वूमैन अचीवमैंट अवार्ड गाला के संदर्भ में विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर मुख्यातिथियों ने सम्बोधित करते हुए इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की तथा इंडियन अमेरिकन फोरम को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। इसके उपरांत अलग-अलग क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया गया, जिनमें विशेष रूप से डा. भवानी श्रीनिवासन, एम.डी. डी.सी.एच. एम.पी.एच. बाल चिकित्सा, पब्लिक हैल्थ, डा. माला सचदेवा, प्रोफैसर ऑफ मैडीसिन एट डोनाल्ड एंड बारबारा जूकर स्कूल ऑफ मैडीसिन एट होफस्ट्रा एवं नार्थवैल, नीला मुखर्जी लोकेल प्रैजीडैंट एंड चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर ई.ए.सी. नैटवर्क, डा. ममता साहा प्रैजीडैंट ऑफ नार्थ शोरे रोटरी क्लब, सम्युक्त अरुण कुमार यूथ लीडर एंड इंस्पायरिंग नैक्स जैनरेशन एथलीट, गोल्फर तथा स्वर्गीय श्रीमति शरण प्रेमी को लाइफ टाइम अचीवमैंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। इससे पहले वार्षिक गाला समागम का शुभारंभ भव्य तरीके साथ भारत एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रीय गान के साथ किया गया, जिसके उपरांत रूपम मैनी एवं चनबीर कौर द्वारा उपस्थिति का भव्य स्वागत किया तथा इंडियन अमेरिकन फोरम के कार्यों के संदर्भ में विस्तृत जानकारी दी गई। इसके उपरांत सुनीता साधनानी ने अपनी मधुर गायकी के माध्यम से समां बांध दिया गया, डी.जे. परमिन्द्र ने डांस फ्लोर पर धमाल मचाया। इसके उपरांत सम्बोधित करते हुए प्रतिष्ठित राजनेताओं, मुख्यातिथियों, कम्युनिटी नेताओं, इंडियन अमेरिकन फोरम ऑफ ट्रस्टीज, सदस्यों, स्वयंसेवकों आदि ने इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की तथा सम्मानित शख्सियतों द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। इस अवसर पर डा. उर्मिलेश आर्य, डा. भूपेंद्र पटेल, बीना कोठारी, फ्लोरा पारेख अध्यक्ष गिफ्ट ऑफ लाइफ यू.एस.ए., डा. पल्लवी मनावर सिंह, डा. सुनील मेहरा, प्रदीप टंडन अध्यक्ष इंडियन एसोसिएशन ऑफ लांग आइलैंड, डा. जगदीश गुप्ता अध्यक्ष ए.आई.ए., विजय गोस्वामी, अंजू शर्मा, डा. पूर्ण प्रसाद, डा. प्राची दुआनंद, आश्मिता योगीराज, इंदू जयसवाल, रूपम मैनी, चनबीर कौर के अलावा अन्य उपस्थित थे। अंत में प्रबंधकों द्वारा मुख्यातिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया तथा भविष्य में भी इसी तरह से कार्य करने की वचनबद्धता दोहराई। इस अवसर पर बॉबी कुमार कलोटी फाऊंडिंग मैंबर, आनंद आनंद, उर्मिलेश आर्य, प्रवीण चोपड़ा, अनिमेश गोयनका, डा. निर्मल कुमार, डा. डी. नूरी, भूपेंद्र आर. पटेल, सुरिन्द्र रामेतरा, मोहिन्द्र सिंह तनेजा बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज, इंदू जयसवाल चेयरपर्सन, विजय गोस्वामी कोषाध्यक्ष, जबकि एग्जीक्यूटिव कमेटी सदस्यों में जया भावादकर, रतना भल्ला, डा. प्राची दुआ, इंदू गजवानी, अनु गुलाटी, ज्योति गुप्ता, जैसिका कालड़ा, नरिन्द्र कपूर, बीना कोठारी, डा. मीना जयसवाल, नीलिमा मदान, रूपम मैनी, डा. अनीला मिड्ढा, फ्लोरा पारेख, निरंजन पटेल, निर्मला रामेतरा, अंजू रिहल, बीना सभापति, चनबीर कौर सेठी, अंजू शर्मा, शम्मी सिंह, इनेशा सिंह जुनेजा, रोहिनी सिंह, डा. भवानी श्रीनिवासन एवं सन्नी ठक्कर आदि उपस्थित थे। **(शेष पृष्ठ 13 पर)**

www.humhindustaniusa.com
हम हिंदुस्तानी U.S.A.
संस्थापक संपादक : जसबीर 'जे' सिंह

इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा वार्षिक वूमैन अचीवमैंट अवार्ड गाला आयोजित

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली महिलाओं को किया सम्मानित

सम्बोधित करते हुए प्रतिष्ठित राजनेताओं, मुख्यातिथियों, कम्युनिटी नेताओं, इंडियन अमेरिकन फोरम ऑफ ट्रस्टीज, सदस्यों, स्वयंसेवकों आदि ने इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की तथा सम्मानित शख्सियतों द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। इस अवसर पर डा. उर्मिलेश आर्य, डा. भूपेंद्र पटेल, बीना कोठारी....

www.humhindustaniusa.com
हम हिंदुस्तानी U.S.A.
संस्थापक संपादक : जसबीर 'जे' सिंह

(शेष पृष्ठ 14 पर)

इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा वार्षिक वूमैन अचीवमैंट अवार्ड गाला आयोजित

मुख्यातिथियों ने की इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा

प्रबंधकों द्वारा मुख्यातिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया तथा भविष्य में भी इसी तरह से कार्य करने की वचनबद्धता दोहराई। इस अवसर पर बॉबी कुमार कलोटी फाऊंडिंग मैंबर, आनंद आनंद, उर्मिलेश आर्य, प्रवीण चोपड़ा, अनिमेश गोयनका, डा. निर्मल कुमार, डा. डी. नूरी, भूपेंद्र आर. पटेल, सुरिन्द्र रामेतरा...

(शेष पृष्ठ 15 पर)

इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा वार्षिक वूमैन अचीवमैंट अवार्ड गाला आयोजित

समागम में पहुंची विशिष्ट अतिथियों एवं गण्यमान्यों का किया भव्य स्वागत

वार्षिक गाला समागम का शुभारंभ भव्य तरीके साथ भारत एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रीय गान के साथ किया गया, जिसके उपरांत रूपम मैनी एवं चनबीर कौर द्वारा उपस्थिति का भव्य स्वागत किया तथा इंडियन अमेरिकन फोरम के कार्यों के संदर्भ में विस्तृत जानकारी दी गई। इसके उपरांत सुनीता साधनानी ने अपनी मधुर गायकी के माध्यम से समां बांध दिया गया, डी.जे. परमिन्द्र ने डांस फ्लोर पर धमाल मचाया

(शेष पृष्ठ 16 पर)

इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा वार्षिक वूमैन अचीवमैंट अवार्ड गाला आयोजित

हर किसी ने झूम-नाच कर समारोह को हर्षोल्लास के साथ मनाया

मुख्यातिथियों ने सम्बोधित करते हुए इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की तथा इंडियन अमेरिकन फोरम को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। इसके उपरांत अलग-अलग क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया गया...

(शेष पृष्ठ 17 पर)

इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा वार्षिक वूमैन अचीवमैंट अवार्ड गाला आयोजित

सम्मानित शख्सियतों सहित अन्य गण्यमान्यों का प्रबंधकों ने किया आभार व्यक्त

बॉबी कुमार कलोटी फाऊंडिंग मैंबर, आनंद आनंद, उर्मिलेश आर्य, प्रवीण चोपड़ा, अनिमेश गोयनका, डा. निर्मल कुमार, डा. डी. नूरी, भूपेंद्र आर. पटेल, सुरिन्द्र रामेतरा, मोहिन्द्र सिंह तनेजा बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज, इंदू जयसवाल चेयरपर्सन, विजय गोस्वामी कोषाध्यक्ष, जबकि एग्जीक्यूटिव कमेटी सदस्यों में जया भावादकर, रतना भल्ला, डा. प्राची दुआ, इंदू गजवानी, अनु गुलाटी, ज्योति गुप्ता, जैसिका कालड़ा.....

www.humhindustaniusa.com
हम हिंदुस्तानी
संस्थापक संपादक : जसबीर 'जे' सिंह
U.S.A.

(शेष पृष्ठ 18 पर)

इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा वार्षिक वूमैन अचीवमैंट अवार्ड गाला आयोजित

प्रबंधकों द्वारा किए गए प्रबंधों की हर अतिथि व गण्यमान्यों ने की तारीफ

वार्षिक गाला समागम का शुभारंभ भव्य तरीके साथ भारत एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रीय गान के साथ किया गया, जिसके उपरांत रूपम मैनी एवं चनबीर कौर द्वारा उपस्थिति का भव्य स्वागत किया तथा इंडियन अमेरिकन फोरम के कार्यों के संदर्भ में विस्तृत जानकारी दी गई

www.humhindustaniusa.com
हम हिंदुस्तानी
संस्थापक संपादक : जसबीर 'जे' सिंह
U.S.A.

(शेष पृष्ठ 19 पर)

इंडियन अमेरिकन फोरम द्वारा आयोजित वार्षिक वूमैन अचीवमैंट अवार्ड गाला

दिलों में अमिट यादें छोड़ता हुआ सम्पन्न

www.humhindustaniusa.com
हम हिंदुस्तानी
संस्थापक संपादक : जसबीर 'जे' सिंह
U.S.A.

भारतीय कांसुलेट में छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती श्रद्धाभाव के साथ मनाई

न्यूयॉर्क। हम हिन्दुस्तानी

भारतीय दूतावास में छत्रपति शिवाजी महाराज की 394वीं जयंती श्रद्धाभाव के साथ मनाई गई तथा उपस्थिति द्वारा छत्रपति शिवाजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की। समागम में मुख्यातिथि के रूप में न्यूयॉर्क में स्थित भारतीय दूतावास में नियुक्त कांसुलेट जनरल अम्बैसडर बिनिया प्रधान उपस्थित हुए तथा उन्होंने सम्बोधित करते हुए छत्रपति शिवाजी महाराज जी के जीवन के संदर्भ में विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर भारी संख्या में गण्यमान्य उपस्थित हुए तथा धार्मिक समागम आयोजित किया गया। इस अवसर पर सी.ई.ओ. आई एंड आई सॉफ्टवेयर श्याम कुमार भी उपस्थित रहे तथा उन्होंने भी शिवाजी महाराज जी के जीवन एवं आदर्शों के संदर्भ में विस्तृत जानकारी दी। अंत में समागम के प्रबंधकों द्वारा मुख्यातिथियों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस तरह से यह समागम दिलों में अमिट यादें छोड़ता हुआ सम्पन्न हो गया।

कैरेबियाई देश हैती में खूनी हिंसा के बाद

72 घंटे की एमरजैंसी लगी, रात का कर्फ्यू भी लगाया

हम हिन्दुस्तानी की विशेष रिपोर्ट

कैरेबियाई देश हैती लम्बे समय से आंतरिक हिंसा का दंश झेल रहा है। इस देश में इन दिनों लगातार हिंसा हो रही है। बीती रात उग्र प्रदर्शन के बाद हैती ने रात के कर्फ्यू और 72 घंटे की एमरजैंसी पूरे देश में लगाने की घोषणा कर दी है। इस दौरान प्रदर्शनकारियों और जेल से फरार लोगों को पकड़ा जाएगा। हैती में लगभग एक हफ्ते से कई कुख्यात गिरोह हिंसा फैला रहे हैं, उन्होंने हैती के कई सरकारी संस्थानों में हमले कर दिए थे। इसके बाद हिंसा और भी ज्यादा फैल गई। ये गिरोह देश के कई हिस्सों में आगजनी कर रहे हैं। यही नहीं दुकानों में तोड़फोड़ कर रहे हैं। हिंसा में 9 लोगों की मौत हो चुकी है। इनमें 4 पुलिस अधिकारी भी शामिल हैं। प्रदर्शनकारियों ने पुलिस थानों से लेकर एयरपोर्ट तक को अपना निशाना बनाया है। देश में 72 घंटे का आपातकाल तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया है। सरकार ने कहा कि यह उन हत्यारों, अपहरणकर्ताओं और अन्य हिंसक अपराधियों को खोज निकालने के लिए लागू किया जाएगा जो जेल से फरार हो गए हैं।

लगातार बढ़ रहे हमले

प्रधानमंत्री एरियल हेनरी ने देश में बढ़ते शक्तिशाली अपराध समूहों के साथ संघर्ष में स्थिरता लाने के लिए संयुक्त राष्ट्र समर्थित सुरक्षा बल की तैनाती के वास्ते समर्थन जुटाने की कोशिश में पिछले सप्ताह विदेश यात्रा की थी। हैती में गिरोहों द्वारा पोर्ट ऑ प्रिंस में सरकारी संस्थानों पर हमले बढ़ने के बीच गत सप्ताहांत हुई हिंसा में गुरुवार से अब तक कम से कम 9 लोगों की मौत हो गई है।

Hindu mantras to start the day of 4 Idaho cities & 2 counties 1st time

NEWYORK (HH)

Hindu invocation (opening-prayer) is scheduled to be read for the first time in four city councils and two county boards of commissioners in Idaho in the coming months, containing verses from world's oldest extant scripture. Distinguished Hindu statesman Rajan Zed will deliver the invocation from ancient Sanskrit scriptures in the city councils of Meridian, Middleton, American Falls, Castleford; and boards of commissioners of Jerome and Owyhee counties. After Sanskrit delivery, he then will read the English interpretation of the prayers. Sanskrit is considered a sacred language in Hinduism and the root language of Indo-European languages. Zed, who is the President of Universal Society of Hinduism, will recite from Rig-Veda, the oldest scripture of the world still in common use; besides lines from Upanishads and Bhagavad-Gita (Song of the Lord), both ancient Hindu scriptures. He plans to start and end the prayer with "Om", the mystical syllable containing the universe, which in Hinduism is used to introduce and conclude religious work. Reciting from Brahadaranyakopanishad, Rajan Zed plans to say "Asato ma sad gamaya, Tamaso ma jyotir gamaya, Mrtyor mamrtam gamaya"; which he will then interpret as "Lead us from the unreal to the real, Lead us from darkness to light, and Lead us from death to immortality." Reciting from Bhagavad-Gita, he proposes to urge county commissioners, city council members and others present to keep the welfare of others always in mind. Zed, a global Hindu and interfaith leader, has been bestowed with the World Interfaith Leader Award. Zed is Senior Fellow and Religious Advisor to Foundation for Religious Diplomacy, on the Advisory Board of The Interfaith Peace Project, etc. He has been panelist for "On Faith", a prestigious interactive conversation on religion produced by The Washington Post; and produces a weekly multi-faith panel "Faith Forum" in a Gannett publication for over 13 years. Hinduism, oldest and third largest religion of the world, has about 1.2 billion adherents and moksh (liberation) is its ultimate goal. There are about three million Hindus in USA.

IOCUSA bemoans the weaponization of OCI cards to silence critics.

"The recent denial of entry to India by Professor Nitasha Kaul from the U.K. is nothing short of weaponization of OCI cards to silence the critics of the BJP Government. This action that is contrary to the democratic traditions not only diminishes the value of the OCI card but also tarnishes the image of India as a beacon of freedom and liberty," said George Abraham, Vice-Chair of the Indian Overseas Congress, USA. Last Sunday, Nitasha Kaul, an Indian-origin UK-based professor at the University of West Minister, claimed that she was denied entry into India and was sent back to London from the Bengaluru airport based on "orders from Delhi." She is said to have stated that she was denied entry because of her opinions on "democratic and constitutional values." During a weekly media briefing by MEA spokesperson Randir Jaiswal said, "This U.K. national (Nitasha Kaul) came to India on February 22. As you know, the entry of foreign nationals into our country is a sovereign decision," a surprising statement from a person who has been celebrating the diversity and achievements of India with the overseas Indian community until very recently. The BJP-led government is said to have canceled at least 102 OCI cards between 2014 and May 2023, including several journalists and academicians. In 2021, the Centre issued a notification introducing a series of new restrictions that curtailed the rights and liberties of OCI card holders. According to the notification, OCI card holders had to secure a special permit to undertake any research, missionary, Tablighi, or journalistic activities or to visit any area in India notified as protected, restricted, or prohibited. If a democratic government is sure-footed about their policies and actions, they may not go down to this level to silence someone who participates in a policy debate.It is also ironic that this is the same government that takes pride in chastising foreign governments on their failures to protect the safety and religious freedom of its citizens abroad. There is increasing evidence that global freedom is at risk where democratic governments are becoming increasingly authoritarian and more effective in curtailing the freedom of their citizens but also reaching out and beginning to control their expatriate population from expressing their disapproval of the governance or differing on their policy making that may be quickly interpreted as 'anti-national.' Unless the voters in India and the Diaspora recognize this looming danger, free expression will become a thing of the past. Therefore, IOCUSA appeals to the government of India to stop targeting Overseas Indians for expressing their opinions on the current state of affairs and instead focus on building a more robust relationship through meaningful dialogue for mutually beneficial interests.

यूरोप में फैल रही पैरेट फीवर नाम की जानलेवा बीमारी

अब तक 5 लोगों की मौत, 4 देशों में 81 मामले सामने आ चुके

नई दिल्ली ■ हम हिंदुस्तानी

यूरोप के कई देशों में एक जानलेवा बीमारी फैल रही है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन ने इस बीमारी को पैरेट फीवर नाम दिया है। WHO का कहना है कि ये बेहद खतरनाक है। इससे अब तक 5 लोगों की मौत हो चुकी है। US सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के मुताबिक पैरेट फीवर पक्षियों में पाए जाने वाले एक बैक्टीरिया की वजह से फैल रहा है। अगर इस बैक्टीरिया से संक्रमित पक्षी किसी इंसान को काट लेता है या उसके संपर्क में आता है तो वो शख्स बीमार पड़ जाता है। हालांकि यह बीमारी संक्रमित जानवरों को खाने से नहीं फैलती है।

अमेरिकी मीडिया CNN ने अपनी रिपोर्ट में WHO के हवाले से लिखा, ''पैरेट फीवर को सिटाकोसिस के नाम से भी जाना जाता है। इसने यूरोपीय देशों में रहने वाले लोगों को बुरी तरह प्रभावित किया है। साल 2023 की शुरुआत में भी इस बीमारी से लोग संक्रमित हुए थे, लेकिन अब इससे लोगों की जान जाने लगी है।''

डेनमार्क में 23 मामले सामने आए

WHO ने कहा, ''ऑस्ट्रिया में 2023 में 14 मामलों की पुष्टि हुई थी, लेकिन इस साल अब तक मार्च में ही 4 मामले सामने आ चुके हैं। कुल मामले 18 हो गए। वहीं, डेनमार्क में 27 फरवरी तक 23 मामलों की पुष्टि हुई थी।''

जर्मनी में 2023 में 14 मामले सामने आए थे। इस साल अब तक 5 मामले सामने आए हैं। कुल 19 मामले हो गए हैं। अब तक 3 देशों में कुल 60 लोग पैरेट फीवर से संक्रमित पाए गए हैं। नीदरलैंड में भी 21 मामले सामने आए हैं। WHO ने कहा कि हाल ही मिले अधिकांश मामले पालतू या जंगली पक्षियों के संपर्क में आने से सामने आए हैं।''

बीमारियां बढ़ने की एक वजह क्लाइमेट चेंज

कई रिसर्च में सामने आया है कि जलवायु परिवर्तन से बीमारियां फैल रही हैं। निचली और गर्म जगहों पर रहने वाले जानवर बढ़ते तापमान को झेल नहीं पा रहे हैं इसलिए ऊंची और ठंडी जगहों की तरफ माइग्रेट हो रहे हैं। इनके साथ बीमारियां भी उन इलाकों तक पहुंच रही हैं, जहां पहले नहीं थीं। उदाहरण के जरिए इसे ऐसे समझें- साइंस न्यूज के मुताबिक पोसम्स, ऑस्ट्रेलिया में पाया जाने वाला नेवले की तरह दिखने वाला जानवर बुरुली अल्सर नाम की बीमारी फैला रहा है। ये ऑस्ट्रेलिया के तापमान में ही रह सकता है, लेकिन अगर वहां के तापमान में बदलाव होता है तो पोसम्स अपने जीवन के अनुकूल परिस्थिति ढूंढने के लिए किसी और देश जा सकता है। मान लीजिए पोसम्स अनुकूल परिस्थिति की तलाश में न्यूजीलैंड पहुंच जाए और वहां रहने लगे। ऐसी स्थिति में पोसम्स से फैलने वाली बुरुली अल्सर नामक बीमारी ऑस्ट्रेलिया के साथ न्यूजीलैंड में भी फैलने लगेगी। इंसानों ने डेवलपमेंट के नाम पर जंगलों को काटकर यहां घर और इंडस्ट्रीज बना लीं। इस कारण हमारा जानवरों, मच्छरों, बैक्टीरिया, फंगस से संपर्क बढ़ गया है। दूसरी तरफ ये सभी जीव-जंतु खुद को बदलती क्लाइमेट कंडीशन्स के अनुकूल बना रहे हैं और हमारे वातावरण में ही रह रहे हैं। इनसे कई बीमारियां फैल रही हैं, जो हमारे जीवन के लिए खतरनाक हैं।

भारत के साथ फिर हाइड्रोग्राफिक सर्वे एग्रीमेंट नहीं करेगा मालदीव

राष्ट्रपति मुइज्जू बोले- समुद्री सीमा की 24 घंटे निगरानी करेंगे; चीन से मिलेगी मिलिट्री ट्रेनिंग

माले ■ हम हिंदुस्तानी

मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने घोषणा की है कि वो भारत के साथ हाइड्रोग्राफिक सर्वे समझौता फिर से शुरू नहीं करेंगे। उन्होंने कहा- मालदीव खुद यह सर्वे शुरू के लिए जरूरी मशीनें और तकनीक जुटाएगा। इसके अलावा राष्ट्रपति मुइज्जू ने यह भी घोषणा की कि वह देश के एक्सक्लूसिव इकोनॉमिक जोन EEZ (समुद्री सीमा) की 24×7 निगरानी भी शुरू करेंगे, जिससे देश की रक्षा की जा सके। चीन के साथ रक्षा समझौता करने के दो दिन बाद मालदीव ने इसकी घोषणा की। इसके अलावा राष्ट्रपति ने बाताया कि समझौते के तहत मालदीव को चीन से मुफ्त में सैन्य सामग्री (कम खतरे वाली) और मिलिट्री ट्रेनिंग मिलेगी। इससे पहले सोमवार को मालदीव ने चीन के साथ पहला रक्षा समझौता किया था। समझौते के बाद राष्ट्रपति मुइज्जू ने देश में मौजूद भारतीय नागरिकों को लेकर बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि 10 मई के बाद मालदीव में सादे कपड़ों में भी कोई भारतीय सैनिक नहीं रहेगा। मुइज्जू ने कहा था- कुछ लोग देश में अफवाह फैला रहे हैं कि भारतीय सैनिक देश छोड़ नहीं रहे हैं, वो टेक्निकल स्टाफ के बहाने केवल यूनिफॉर्म बदलकर सादे कपड़ों में देश लौट रहे हैं। मैं पूरे विश्वास के साथ इन बातों का खंडन करता हूं। दरअसल, भारत और मालदीव के बीच हुए समझौते के तहत भारतीय सैनिक 10 मई तक अपने देश लौट जाएंगे। मालदीव की रेस्क्यू यूनिट में इन सैनिकों की जगह भारत का ही टेक्निकल स्टाफ ऑपरेट करेगा। इस समझौते का पहला चरण 10 मार्च तक पूरा हो जाएगा। मालदीव में करीब 88 भारतीय सैनिक हैं। ये दो हेलिकॉप्टर और एक एयरक्राफ्ट का ऑपरेशन संभालते हैं। इससे पहले 15 दिसंबर को मालदीव ने भारत के साथ हाइड्रोग्राफिक सर्वे एग्रीमेंट खत्म करने की घोषणा की थी। एग्रीमेंट 7 जून 2024 को एक्सपायर हो जाएगा। यह समझौता 2019 में मालदीव आईलैंड के पानी पर रिसर्च करने के लिए हुआ था। इस समझौते के तहत भारत को मालदीव आईलैंड के पानी, रीफ, लैगून, कोस्टलाइन, समुद्री धाराओं और टाइड्स पर स्टडी करने की अनुमति दी गई थी। 19 फरवरी से 26 फरवरी 2023 के बीच भारतीय नौसेना ने मालदीव नेशनल डिफेंस फोर्स के साथ तीसरा जॉइंट हाइड्रोग्राफिक सर्वे किया था।

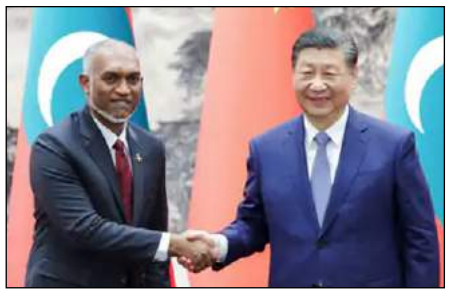

साप्ताहिक टैरो भविष्य फल

March 09-15 2024

नन्दिता पाण्डेय
ऐस्ट्रोटैरोलोजर
आध्यात्मिक गुरु,
लाइफ़ कोच
Mob. +91-93127-11293, E-mail - nandita.pandey@gmail.com

मेष (22 मार्च से 21 अप्रैल)

इस सप्ताह की गई यात्राओं द्वारा शुभ संकेत प्राप्त होंगे एवं यात्राएँ शुभ रहेंगी। परिवार में खुशियां दस्तक दे रही हानि एवं आपसी प्रेम में वृद्धि होगी। आर्थिक मामलों में किसी भी दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से पहले उसे भली भाँति पढ़ कर साइन करें तो बेहतर होगा। कार्य क्षेत्र में आपको किए गए वादे तभी पूरे होंगे जब आप अपनी तरफ से कोशिश करते रहेंगे। सेहत में बीती बातों को भूल कर भविष्य के बारे में सोच कर हेल्थ एक्टिविटी करेंगे तो तंदुरुस्ती महसूस होगी।प्रेम समबंध में आपैस प्रेम सुदृढ़ होगा एवं आप अपने जीवन साथी के साथ किसी धार्मिक कार्य में भी शामिल हो सकते हैं या फिर शांत एकांत स्थान पर रहने का मन भी बना सकते हैं। सप्ताह के अंत में सुख समृद्धि के शुभ संयोग बनते जाएँगे एवं मन प्रफुल्लित रहेगा। शुभ दिन : 9,13,14,15

वृषभ (22 अप्रैल 21 मई)

इस सप्ताह आपकी हेल्थ में सुधार रहेंगे एवं किसी महिला की राय आपके लिए तंदुरुस्ती के मार्ग खोलेगी। यात्राओं द्वारा भी शुभ परिणाम सामने आएंगे एवं सुखद समाचार प्राप्त होंगे। परिवार के मामलों में अपनी राय खुल कर रखें तभी सुखद अनुभव रहेंगे। प्रेम समबंध में रोमांस की शनै शनै एंट्री होगी। आर्थिक व्यय आपकी जिद्द की वजह से या फिर किसी महिला की वजह से अधिक हो सकते हैं। कार्यक्षेत्र में भी साझेदारी में किया गया कार्य आपके लिए कष्ट लेकर आएगा। सप्ताह के अंत में समय शनै शनै अनुकूल होने लगेगा। शुभ दिन : 12,13,14

मिथुन (22 मई से 21 जून)

इस सप्ताह आपके परिवार में सुख सौहार्द के शुभ संयोग बन रहे हैं एवं आपैस प्रेम भी सुदृढ़ होता जाएगा। आप अपने परिवार के साथ कहीं यात्रा करने का मन भी बना सकते हैं। प्रेम समबंध में एक नई शुरुआत आपका जीवन में रौनक़ लेकर आएगी। सेहत में भी हल्के फुलके सुधार इस सप्ताह नज़र आएँगे। यात्राओं को इस सप्ताह टाल दें तो बेहतर होगा। आर्थिक व्यय भी इस सप्ताह अधिक हो सकते हैं एवं आपको आपने निवेशों की तरफ ध्यान देना चाहिए। कार्य क्षेत्र में आपसी द्वेष बड़ेंगे एवं किसी पार्ट्नर्शिप में तकरार की सम्भावना भी बड़ेंगी। सप्ताह के अंत में आप अपने प्रियजनों के सानिध्य में सुखद समय व्यतीत करेंगे। शुभ दिन : 9,13,15

कर्क (22 जून से 21 जुलाई)

इस सप्ताह आपकी सेहत में शनै शनै सुधार आते जाएँगे। प्रेम समबंध में भी आपके द्वार आकी गई मेहनत जीवन में सुख समृद्धि के द्वार खोलेगी।आर्थिक मामलों में धीरे धीरे सुधार आएँगे। इस सप्ताह यात्राओं को टाल दें तो बेहतर होगा। परिवार में किसी बात को लेकर मन दुखी हो सकता है एवं जिस तरह की ख़ुशियाँ आप चाह रहे हैं उन्हें प्राप्त करने में समय अधिक लगेगा। कार्य क्षेत्र में किसी पितृतुल्य व्यक्ति की वजह से कष्ट बड़ सकते हैं। सप्ताह के अंत में किसी पितृतुल्य व्यक्ति को लेकर मन दुखी हो सकता है। शुभ दिन : 9,12

सिंह (22 जुलाई से 21 अगस्त)

परिवार में सुख सौहार्द के द्वारा खुलेंगे एवं मन संतुष्ट रहेगा। आप अपने परिवार के सतह कहीं घूमने फिरने का मन भी बना सकते हैं। यात्राओं द्वार अभी सुखद अनुभव रहेंगे एवं मन प्रसन्न रहेगा। यात्राओं के दौरान किसी युवा की मदद प्राप्त होगी जिस वजह से यात्रा सुखद रहेंगी।प्रेम समबंध में किसी महिला की राय या आशीर्वाद से जीवन में सुखी रहेंगे एवं लव लाइफ़ रोमांटिक रहेगी। कार्यक्षेत्र में भवनतमक कारणों की वजह से कास्ट बड़ सकते हैं। आर्थिक मामलों में भी कोई नया निवेश आपके लिए कष्ट लेकर आ सकता है एवं इस तरफ ध्यान देने की आवश्यकता है। सप्ताह के अंत में जीवन में सफलता हासिल होगी एवं आप एक बेहतर स्थिति की तरफ बढते जाएँगे। शुभ दिन : 9,13,14,15

कन्या (22 अगस्त से 21 सितम्बर)

आर्थिक मामलों में समय अनुकूल रहेगा एवं धन लाभ होंगे। आप जितना अधिक बैलेन्स बना कर अपने जीवन में आगे बढ़ेंगे उतना अधिक सुखी भी रहेंगे।सेहत में भी काफ़ी सुधार इस सप्ताह रहेगा एवं तंदुरुस्ती महसूस होगी। यात्राओं को इस सप्ताह टाल दें तो बेहतर होगा। परिवार में सुखद अनुभव प्राप्त करने के लिए आपको अपनी तरफ से अधिक प्रयास करने पड़ेंगे। प्रेम समबंध में सप्ताह के उत्तरार्ध में अचानक से बेहतर स्तिथियाँ बनती जाएँगी। कार्य क्षेत्र में साधारण सफलता हासिल होगी। सप्ताह के अंत में किसी नई शुरुआत को लेकर मन दुखी हो सकता है। शुभ दिन : 11,12

तुला (22 सितम्बर से 21 अक्तूबर)

आर्थिक मामलों के लिए यह सप्ताह शुभ रहेगा एवं धन लाभ के प्रबल संयोग बनते जाएँगे। धन वृद्धि में आपको किसी पितृतुल्य व्यक्ति की सहायता भी प्राप्त होगी। प्रेम समबंध में आपसी प्रेम सुदृढ़ होगा एवं किसी मातृतुल्य महिला के आशीर्वाद से जीवन में सुख समृद्धि के रास्ते खुलेंगे।इस सप्ताह से आपकी सेहत में काफी सुधार होने लगेंगे एवं तंदुरुस्ती के मार्ग खुलेंगे।कार्य क्षेत्र में कष्ट बड़ सकते हैं एवं बातचीत द्वारा ही मामलों को सुलझाया जा सकता है। हो सकता है की आपके प्रोजेक्ट में किसी ऐसे व्यक्ति की वजह से अवरोध उत्पन्न हों जिनकी आर्थिक स्थिति बेहतर है। परिवार में किसी युवा को लेकर मन दुखी हो सकता है। यात्राओं द्वारा सुखद अनुभव रहेंगे एवं आपकी यात्राओं को सफल बनाने में आपको कसी महिला की मदद मिलेगी। सप्ताह के अंत में सुख समृद्धि के मार्ग खुलने लगेंगे एवं सुखी रहेंगे। शुभ दिन : 9,11,12,15

वृश्चिक (22 अक्तूबर से 21 नवम्बर)

आर्थिक मामलों में समय अनुकूल है एवं सप्ताह की शुरुआत में अपने निवेशों को लेकर कोई सुखद समाचार मिल सकता है। सेहत में भी सुधार रहेंगे एवं योग और ध्यान आपके लिए तंदुरुस्ती के मार्ग खोलते जाएँगे।इस सप्ताह आप किसी धर्म कर्म के कार्य में भी शामिल हो सकते हैं। परिवार में दूसरों को भी अपने निर्णय लेने दें तो बेहतर होगा। थोड़ा सा अपनी रेस्पॉन्सिबिलिटी भी परिवार के अन्य सदस्यों को देंगे तो बेहतर परिणाम सामने आएँगे।प्रेम समबंध में थोड़ा सा फ़्रस्ट्रेशन बड़ सकता है। इस सप्ताह किसी नए प्रोजेक्ट को लेकर मन दुखी रहेगा। यात्राओं द्वारा साधारण सफलता हासिल होगी। सप्ताह के अंत में सेलिब्रेशन के शुभ योग बन रहे हैं एवं आप पार्टी करने के मूड में रहेंगे। शुभ दिन : 11,12,15

धनु (22 नवम्बर से 21 दिसंबर)

इस सप्ताह आपकी आर्थिक स्थिति शनै शनै सुधार होगा। सेहत में भी सोच समझ कर की गई एक्टिविटी आपके हित में फ़ैसला देगी एवं शनै शनै सफ़रती महसूस करेंगे।यात्राओं को इस सप्ताह टाल दें तो बेहतर होगा। परिवार में किसी बात को लेकर स्ट्रेस रहेगा एवं रात्रि की नींद में भी ख़लल पड़ सकता है। कार्य क्षेत्र में भावनात्मक कार्यों की वजह से कष्ट बड़ सकते हैं एवं प्रोजेक्ट में अवरोध रहेंगे। प्रेम समबंध में आपैस प्रेम सुदृढ़ होता जाएगा एवं लव लाइफ़ में ख़ुशियाँ दस्तक देंगी। शुभ दिन : 9,11,15

मकर (22 दिसंबर से 21 जनवरी)

इस सप्ताह आपके परिवार का भरपूर सपोर्ट आपको प्राप्त होगा एवं वे आपके जीवन में एक सम्बल की तरह खड़े होकर आपका सपोर्ट करेंगे। प्रेम समबंध में अपने पर विश्वास कर निर्णय लें तो बेहतर परिणाम सामने आएँगे। कार्य क्षेत्र में शनै शनै उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। इस सप्ताह यात्राओं को टाल देना बेहतर होगा। निवेशों की तरफ़ भी ध्यान अवश्य दें, व्यय की स्तिथियाँ बन रही हैं। कोर्ट कचहरी के मामले आपके विरुद्ध निर्णय दे सकते हैं। इस सप्ताह मांसपेशियों में दर्द रहेगा एवं स्ट्रेस की वजह से प्रतिकूल सेहत का सामना करना पड़ सकता है।हालाँकि सप्ताह के अंत में खट्टे मीठे अनुभव रहेंगे एवं अंत में समय अनुकूल होता जाएगा। शुभ दिन : 13,15

कुंभ (22 जनवरी से 21 फरवरी)

आर्थिक उन्नति के शुभ संयोग बं रहे हैं एवं इस मामले में आप काफ़ी रेलक्ष महसूस करेंगे। कार्य क्षेत्र में आपके द्वारा किए गए लगातार प्रयास आपके जीवन में सुख शांति लेकर आ सकते हैं एवं प्रोजेक्ट में भी सफलता लेकर आ सकते हैं। प्रेम समबंध में समय रोमांटिक रहेगा लेकिन आपकी अपेक्षाओं से कमतर होगा।परिवार में सुख सौहार्द के शुभ संयोग बनेंगे एवं आप अपने परिवार के साथ एक बेहतर भविष्य के लिए प्लानिंग मूड में रहेंगे। यात्राओं को इस सप्ताह टाल दें तो बेहतर होगा। सप्ताह के अंत में कुछ हानि उठानी पड़ सकती है। सेहत की तरफ़ जागरूक होने की आवश्यकता है एवं मेहनत के बल बूते पर ही सेहत में तंदुरुस्ती प्राप्त होगी। शुभ दिन : 9,11,13

मीन (22 फरवरी से 21 मार्च)

कार्य क्षेत्र में थोड़ा स अरिसक लेकर निर्णय लेना आपके लिए शुभ फल लेकर आएगा एवं उन्नति के मार्ग भी खोलेगा। आर्थिक मामलों में किसी भी दस्तावेज पर ध्यान से पढ़ कर ही हस्ताक्षर करें अन्यथा कष्ट बड़ सकते हैं। प्रेम समबंध में कोई सकारात्मक समाचार प्राप्त हो सकता है एवं मन प्रसन्न रहेगा। सेहत में शनै शनै सुधार इस सप्ताह से नज़र आएँगे। परिवार में एक नई शुरुआत आपके जीवन में सुकून लेकर आएगी एवं आप अपने प्रियजनों के सानिध्य में सुखद समय व्यतीत करेंगे। इस सप्ताह की गई यात्राओं द्वारा साधारण सफलता हासिल होगी। सप्ताह के अंत में एक नए बदलाव की तरफ अग्रसर होते नजर आ रहे हैं एवं सुख समृद्धि के शुभ अवसर भी प्राप्त होंगे। शुभ दिन : 9,13,15

गरीब, किसान, कमेरे वर्ग की चंडीगढ़ में आवाज बनी जेजेपी

लोकसभा चुनाव को लेकर जेजेपी राजनीतिक सलाहकार समिति और 4 विशेष कमेटियां बनाने का निर्णय

चंडीगढ़ ■ हम हिंदुस्तानी

जननायक जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अजय सिंह चौटाला ने कहा है कि पिछले सवा चार साल में जेजेपी गरीब, किसान, कमेरे वर्ग के लिए चंडीगढ़ में आवाज बनी है। उन्होंने कहा कि चौधरी देवीलाल की प्रेरणा से पार्टी आज मजबूत भी हो रही है और लोगों के काम भी कर रही है। वे रविवार को करनाल में जेजेपी राष्ट्रीय एवं प्रदेश कार्यकारिणी की अहम बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में आने वाले लोकसभा चुनाव के लिए जेजेपी की राजनीतिक सलाहकार समिति और चार विशेष समितियां बनाने का फैसला लिया है। जेजेपी ने लोकसभा चुनाव को लेकर बनाई गई नई समन्वय समिति को एनडीए नेतृत्व से एक सप्ताह में बातचीत कर स्थिति स्पष्ट करने को कहा है। पार्टी ने उम्मीदवारों के चयन और प्रचार के लिए भी कमेटियों का गठन किया। बैठक में जेजेपी के वरिष्ठ नेताओं ने पार्टी पदाधिकारियों के साथ विभिन्न विषयों पर गंभीरता के साथ चर्चा की और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

जेजेपी राष्ट्रीय अध्यक्ष अजय चौटाला ने कहा कि पूर्ण बहुमत ना होने, कोरोना महामारी व किसान आंदोलन की वजह से कार्यकर्ताओं की उम्मीदों के अनुसार काम होने में बाधाएं आई लेकिन पार्टी ने अपने बहुत सारे चुनावी वादों को पूरा किया है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे चुनावों की जोर-शोर से तैयारी करें और प्रदेश में जेजेपी की पूर्ण बहुमत से सरकार बनाने के लिए काम करें। अजय चौटाला ने कहा कि कार्यकर्ता लोकसभा चुनाव की तैयारी में जुट जाएं। उन्होंने कहा कि गांव-गांव, गली-गली, घर-घर जाएं और एक-एक व्यक्ति से संपर्क करें और पार्टी के लिए समर्थन मांगे। जेजेपी अध्यक्ष ने यह भी कहा कि बड़े-बड़े दावे करने वाली कांग्रेस जैसी पार्टियों को आज बैसाखी की जरूरत पड़ गई है। उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने कहा कि जेजेपी के घोषणा पत्र का बड़ा वादा कुरुक्षेत्र में संत गुरु रविदास मंदिर बनाने को हरियाणा सरकार के बजट में शामिल किया गया है, इसके लिए पार्टी ने जेजेपी राष्ट्रीय अध्यक्ष का आभार प्रकट किया और जल्द हरियाणा सरकार को भी धन्यवाद प्रस्ताव भेजा जाएगा। जेजेपी की बैठक में वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन, चौधरी चरण सिंह सहित पांच महान हस्तियों को भारत रत्न देने के लिए केंद्र सरकार का आभार व्यक्त किया है। वहीं स्वर्गीय जननायक चौधरी देवीलाल और कांशीराम को भी भारत रत्न से सम्मानित करने की मांग पत्र के जरिए केंद्र से की जाएगी। चुनाव के संदर्भ में दुष्यंत चौटाला ने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि लड़ेंगे, तभी तो जीतेंगे और चौधरी देवीलाल के विचारों को जिंदा रखेंगे। जेजेपी प्रदेशाध्यक्ष सरदार निशान सिंह ने पार्टी पदाधिकारियों को 'मिशन दुष्यंत 2024' को कामयाब बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए और कहा कि वे डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला द्वारा गठबंधन सरकार में करवाए जा रहे जनहितैषी कार्यों का प्रचार-प्रसार करें।

Jobs हम हिंदुस्तानी Weekly, U.S.A.

Space Available for Rent in a busy Beauty salon in Hickville

Ideal for Medspa / laser/ eyelash extensions/ Nails/ Boutique /jewelry.

Please Call or Text
516-708-3328

वधू चाहिए

Punjabi Brahmin, Vegetarian, Slim (1973 Born) 5'05", Born and Brought up in Delhi. Canadian Citizen and US Green Card Holder. Looking for a match.

Please contact
718-687-3649

दावा- प्राण प्रतिष्ठा से पहले भारतीय एजेंसी ने 1244 IP एड्रेस ब्लॉक किए

पाक-चीन से राम मंदिर वेबसाइट हैक की कोशिशें हुई थीं

नई दिल्ली ■ हम हिंदुस्तानी

अयोध्या में 22 जनवरी को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से ठीक पहले पाकिस्तान और चीन के हैकर्स भारतीय वेबसाइट को निशाना बना रहे थे। भारतीय मीडिया इकोनॉमिक टाइम्स ने अपनी रिपोर्ट में इसका दावा किया है। रिपोर्ट के मुताबिक हैकर्स ने राम मंदिर, प्रसार भारती और यूपी सरकार से जुड़ी कई वेबसाइट को हैक करने की कोशिश की थी। भारत का टेलिकॉम ऑपरेशन सेंटर (TSOC) प्राण प्रतिष्ठा से पहले करीब 264 वेबसाइट पर नजर रख रहा था। इसमें राम मंदिर, प्रसार भारती, यूपी पुलिस, एयरपोर्ट, यूपी टूरिज्म समेत कई वेबसाइट शामिल थीं। इस दौरान TSOC को करीब 140 IP एड्रेस ऐसे मिले थे, जो राम मंदिर और प्रसार भारती वेबसाइट को टारगेट कर रहे थे। रिपोर्ट के मुताबिक 21 जनवरी को पाकिस्तान और चीन की तरफ से साइबर क्राइम की कोशिशें तेज हो गई थीं। इस दौरान करीब 1244 IP एड्रेस ब्लॉक किए गए थे। इनमें से 999 चीन के थे, जबकि बाकी पाकिस्तान, हॉन्गकॉन्ग और कंबोडिया के थे। इसके अलावा कुछ IP एड्रेस भारत के ही थे, जिनके खिलाफ जरूरी कार्रवाई की गई थी। रिपोर्ट के मुताबिक एक भारतीय अधिकारी ने बताया कि इन साइबर हमलों का सामना देश में ही बनी तकनीक के जरिए किया गया। इससे पहले G20 समिट के दौरान भी भारत के डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर की रक्षा के लिए इन तकनीकों का इस्तेमाल किया गया था। इसमें भारत में बने AI और मशीन लर्निंग टेक्नोलॉजी की सहायता ली गई, जिससे साइबर हमले से पहले से ही इसकी जानकारी मिल सके। राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के बाद पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने इसकी निंदा की थी। 22 जनवरी को एक स्टेटमेंट में मंत्रालय ने कहा था- यह मंदिर बाबरी मस्जिद को तोड़कर बनाया गया है। ध्वस्त मस्जिद की जगह पर बना मंदिर आने वाले समय में भारतीय लोकतंत्र के माथे पर कलंक की तरह बना रहेगा। भारत में बढ़ती 'हिंदुत्व' विचारधारा धार्मिक सद्भाव और क्षेत्रीय शांति के लिए बड़ा खतरा है। ऐसा करके भारत मुस्लिमों को दरकिनार करने की कोशिश कर रहा है। इसके अलावा पाकिस्तान ने ह में भी राम मंदिर का मामला उठाया था। OIC ने कहा- इस्लामिक स्थल को मिटाना चिंता का विषय

UN में पाकिस्तान के राजदूत मुनीर अकरम ने OIC की मीटिंग में बाबरी मस्जिद की जगह राम मंदिर के बनाए जाने की आलोचना की थी। इसके अलावा मुनीर ने ह की एक संस्था अलायंस ऑफ सिविलाइजेशन के अधिकारी को खत लिखा। इसमें कहा गया कि भारत में मंदिर बनाने के ट्रेंड से न सिर्फ भारतीय मुस्लिम बल्कि पूरे इलाके की शांति को भी खतरा है। प्राण प्रतिष्ठा के अगले ही दिन ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कोऑपरेशन (OIC) ने भी इसकी प्राण प्रतिष्ठा की निंदा की थी। OIC ने कहा था- भारत के अयोध्या राज्य में जिस जगह पर पहले बाबरी मस्जिद ढहाई गई थी, वहीं राम मंदिर बनाना और फिर प्राण प्रतिष्ठा होना चिंता का विषय है। OIC ने आगे कहा था- हम ऐसे कदमों की निंदा करते हैं, जिनका लक्ष्य बाबरी मस्जिद जैसे अहम इस्लामिक स्थलों को मिटाना है। बाबरी मस्जिद वहां 5 सदियों तक रही थी।

nuway group

INSIDER Josh India BOI Ethnic Strategies

Most Trusted
News Media Company
Serving South Asian Amercians

The Only South Asian American Media Group that Gives you Maximum Cost Effective Reach

3 Million + Views on YouTube & Half Million fan like on FacebooK

Email:sst@nuwaygroup.com
www.nuwaygroup.com
Phone: 917 612 3158

"East to West Coast"
America's Biggest
South Asian Radio Network

RADIO ZINDAGI
540 AM
NEW YORK | NEW JERSEY
Jiye Ja!

For details and to advertise call
646.907 8022
www.RadioZindagi.com

RADIO ZINDAGI IS ON
KLOK 1170 AM,
50,000 Watt station in California

अंतरराष्ट्रीय हंगामा लोक साहित्यिक, सामाजिक संस्था द्वारा

किया जा रहा है हर घर गंगाजल अभियान

नई दिल्ली ■ हम हिंदुस्तानी

अंतरराष्ट्रीय हंगामा लोक साहित्यिक, सामाजिक संस्था की संस्थापिका राखी कौशिक उपासना कौशिक व संरक्षक डॉ जितेंद्र कौशिक द्वारा देश विदेश में हर घर गंगाजल अभियान चलाया जा रहा है संस्था द्वारा हर घर गंगाजल अभियान में पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष राजू गुप्ता,योजना गुप्ता, गौरी शंकर मंदिर कमेटी,मनोज धनौरिया ,मनोज कात्यायन वरिष्ठ पत्रकार, अनिल कश्यप वरिष्ठ पत्रकार, लाजपदराय मुखिया ,सजीव अग्रवाल,मुकेश शर्मा, विनीत कौशिक, हरीश गोयल(बाला मेडिकल),अरविंद गोयल,दिनेश चंद्र नवीन अग्रवाल आदि को अंतरराष्ट्रीय हंगामा लोक साहित्यिक, सामाजिक संस्था की द्वारा गंगाजल भेट किया गया, खारीकुआँ, फल चौक,बॉस मंडी,बड़ी मंडी,छोटी मंडी आदि सभी स्थानो पर गंगाजल भेट किया गया राखी उपासना ने बताया कि उनका ये अभियान पूरे एक माह तक चलाया जा रहा है उनका ये अभियान संस्था के सदस्यों द्वारा ऑस्ट्रेलिया शवेता शर्मा,निवेदिता सिन्हा बिहार,डॉ अर्चना श्रेया बेंगलुरु,वीना आडवाणी महाराष्ट्र, उत्तराखंड,ममता सक्सेना मथुरा,मीनाक्षी शर्मा हरियाणा,शिवम भारद्वाज, गणेश यादव,कुलदीप पंडित कासगंज,राजस्थान,अनुराग उपाध्याय उड़ीसा, राज तिवारी ,शिवम गोस्वामी,गुड्डू गुरु जी,अमित दुबे सोरो ,लक्ष्मी सिंह शाहजहांपुर,रेखा चंद्रा लुधियाना, कुलदीप सिंह रुहेला सहारनपुर,सीताराम पवार मध्यप्रदेश,मालिनी पाठक गुजरात, रुपाली बिजनौर, श्वेता सिंह बिजनौर, चाँदपुर वैष्णवी,हिमांशी पुरैनी,डॉ राजेश तिवारी मक्खन झांसी,डॉ राम निवास तिवारी निवाड़ी मध्यप्रदेश, विनोद शर्मा दिल्ली, मीनाक्षी चौहान हिमाचल प्रदेश,संदीप कुमार जैन राजस्थान, कमल किशोर अग्रवाल इंदौर, उषा गुप्ता इंदौर,क्षमा पाण्डेय जौनपुर,डॉ मंजू बडोला ऋषिकेश, सुरेंद्र कुमार जोशी मध्यप्रदेश, अर्जलि श्रीवास्तव लखनऊ,विकास यादव,अक्ष शर्मा, सुगम जैन,डॉ राजमोहन विश्वास, डॉ प्रिंस गुप्ता,पराग अग्रवाल,मुकेश शर्मा, आदि द्वारा गंगाजल अभियान में सहयोग किया गया राखी उपासना ने बताया उनका ये अभियान अभी और राज्यो में भी जारी है उनका ये अभियान पूरे एक माह तक तक जारी रहेगा। शिवरात्रि पर भगवान शिव के जलाभिषेक के लिए अंतरराष्ट्रीय हंगामा लोक साहित्यिक, सामाजिक संस्था द्वारा देश विदेश में निशुल्क गंगाजल वितरण किया जा रहा है।

अंतरराष्ट्रीय विशिष्ट प्रतिभा

सम्मान समारोह लुम्बिनी में संपन्न

लुंबिनी (नेपाल) ■ हम हिंदुस्तानी

साहित्यकार गुरुदीन वर्मा के अनुसार सोमवार 26 फरवरी 2024 को बहुप्रतीक्षित 'अंतरराष्ट्रीय विशिष्ट प्रतिभा सम्मान समारोह 2024' का भव्य आयोजन नेपाल में किया गया है। यह समारोह नेपाल की पवित्र भूमि नेपालगंज में एक दिवसीय ऐतिहासिक महत्व के गौरवशाली आयोजन 'अंतरराष्ट्रीय विशिष्ट प्रतिभा सम्मान समारोह' का आयोजन बड़े हर्षोल्लास से किया गया है।

नेपाल की प्रसिद्ध संस्था 'शब्द प्रतिभा बहुक्षेत्रीय सम्मान फाउन्डेशन नेपाल' द्वारा देश-विदेश की विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने, हिंदी, अवधी तथा नेपाली भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति के विकास, नेपाल भारत के बीच मैत्री सम्बंध विकास तथा साहित्यक पर्यटन विकास के उद्देश्य से कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। संस्था के संस्थापक अध्यक्ष आनन्द गिरि मायालु की अध्यक्षता, नेपाल सरकार लुंबिनी प्रदेश के कृषि तथा भूमि व्यवस्था मंत्री भण्डारी लाल अहिर के प्रमुख आतिथ्य, तथा नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान के सदस्य सचिव सनत रेग्मी तथा आयोजन संरक्षक डॉ प्रवीण कुमार श्रीवास्तव प्रेम की विशिष्ट अतिथ्यता में समारोह का आयोजन किया है। विगत 8 महिने की चयन प्रक्रिया के बाद नेपाल तथा भारत से चयनित 50 विशिष्ट प्रतिभाओं को 'नोबुल टैलेंट इंटरनेशनल अवॉर्ड ' से सम्मानित किया गया है। चार हजार आवेदनों में से दो चरणों में नेपाल तथा भारत के 14 राज्यों से 50 प्रतिभाओ का चयन किया गया था। आयोजन का विभाजन चार सत्र में किया गया था। सहभागी सभी विशिष्ट प्रतिभागियों को नेपाल लुंबिनी प्रदेश के कृषि तथा भूमि व्यवस्था मंत्री भण्डारी लाल अहिर ने मोमेंटो, बैग, शॉल, मेडल, प्रमाण पत्र, रुद्राक्ष की माला तथा नेपाली टोपी पहनाकर सम्मानित किया गया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त संस्था 'शब्द प्रतिभा बहुक्षेत्रीय सम्मान फाउन्डेशन नेपाल' द्वारा आयोजित विश्व स्तरीय ऐतिहासिक महत्व के गौरवशाली 'अंतरराष्ट्रीय विशिष्ट प्रतिभा सम्मान समारोह NOBUL TALENT INTERNATIONAL AWARD PROGRAM में सैकड़ों लोगों की सहभागिता में रायपुर से एम एल नत्थानी, दुर्ग से डॉ. कृष्ण कुमार पाटिल और गोविंद पाल, जांजगीर चांपा से ऋताम्भरा शीशपाल कश्यप, रायगढ़ से उर्मिला सिदार उर्मी तथा रश्मि वर्मा, बलिया से डॉ. इफतखार खां, कानपुर से सुनील कुमार तिवारी, लखनऊ से डॉ. प्रवीण कुमार श्रीवास्तव प्रेम, अंजु रंजना, उपमा आर्य सहर तथा अरविंद झा, गाजियाबाद से अब्दुल कलाम आज़ाद, बहराइच से एम. रशीद तथा मामून रशीद, मैसूर से प्रो. प्रतिभा मुदलियार तथा डॉ. पुष्पा, बरेली से डॉ. विनीत विद्यार्थी दर्शन शास्त्री, शामली से रुचि शर्मा, बाड़मेर से तरुण राय कागा, टोंक से महेश कुमार शर्मा तथा राम अवतार स्वामी, बांसवाड़ा से उत्सव जैन कवि जी, अलवर से डॉ. जय प्रकाश चौहान अजनबी, होशियारपुर से कु. वंदना ठाकुर चहक, फाजिल्का से डॉ. रवि घायल, नागपुर से विवेक नगरारे, रोशन दुलिचंद राउत, पुनम संतोष अग्रवाल, मेघा अग्रवाल, अमन रंगेला अमन सनातनी, वर्धा से अरूण विष्णु गोडे, देहरादून से सुशीला राजपूत, भावनगर से रीना फतनानी, जामनगर से डॉ. हंसा सिद्धपुरा, सहारनपुर से सुनील कुमार, मुजफ्फरपुर से डॉ. प्रिंस कुमार वर्मा, अशोकनगर से डॉ. डी. एस. संधु (डॉ. दविंदर सिंह संधु), भोपाल से डॉ. गोपेश बाजपेयी, अशोक कुमार धनमेंनियां तथा संजय आराजु बड़ौतवी, विदिशा से राज कुमार अहिरवार, शिवपुरी से डॉ. मुकेश अनुरागी, इंदौर से डॉ. घनश्याम ठाकुर, बालाघाट से प्रणय श्रीवास्तव अश्क, भेजेंद्र चौधरी तथा प्रदीप खंडेलवाल, हैदराबाद से गया बालाजी चंबुले, मुंबई से चेतना साबला, भाटापारा से डॉ. ललित सिंह ठाकुर, हरिद्वार से अशोक पाल सिंह, जबलपुर से डॉ. सलमा जमाल, जम्मू और कश्मीर से गिरिजा शर्मा, मथुरा से डॉ. खेमचंद यदुवंशी शास्त्री, सतना से स्वाती सिंह, अंबेडकरनगर से छविपाल, सुलतानपुर से ब्रजेश कुमार वर्मा तथा राज बहादुर राना, दिल्ली से अरूण कुमार अरूण, बांदा से अब्दुल रहमान रहमान बांदवी, सिरोही से गुरुदीन वर्मा, नांदेड़ से डॉ. गुलाब सिंग जाधव , उदयपुर से पुनम भू तथा गोरखपुर जिले से जालिम प्रसाद को 'अंतरराष्ट्रीय विशिष्ट प्रतिभा सम्मान 2024 'सम्मान तथा नेपाल की ओर से जानकी गांव पालिका प्रमुख छब्बन खां, खजुरा प्रज्ञा प्रतिष्ठान के सचिव डॉ. इंद्र बहादुर भण्डारी, भेरी अस्पताल प्रमुख किरण आचार्य को कदर पत्र प्रदान कर नेपाल सरकार लुंबिनी प्रदेश के कृषि तथा भूमि व्यवस्था मंत्री भण्डारी लाल अहिर ने शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया है।

भारत में अत्यधिक गरीबी पूरी तरह खत्म (पृष्ठ 4 का शेष)

गरीबी रेखा या उपभोग का मूल स्तर ग्रामीण इलाकों में बढ़कर 1622 रुपये और शहरी इलाकों में बढ़कर 1922 रुपये हो गया है. रिपोर्ट में कहा गया है कि ऐसे राज्य जिन्हें पिछड़ा समझा जाता था, जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश वहां तेजी के साथ सुधार हुआ है। साथियों बात अगर हम नीति आयोग की रिपोर्ट की करें तो, नीति आयोग के सीईओ ने कहा कि ग्रामीण व शहरी, दोनों क्षेत्रों में लोग अधिक समृद्ध हो रहे हैं और ताजा घरेलू उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण से संकेत मिलता है कि भारत का गरीबी स्तर 5 प्रतिशत से नीचे गिर गया है। दरअसल राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय द्वारा शनिवार देर रात जारी आंकड़ों के अनुसार, प्रति व्यक्ति मासिक घरेलू खर्च 2011-12 की तुलना में 2022-23 में दोगुना से अधिक हो गया है, जो देश में समृद्धि के बढ़ते स्तर को दर्शाता है। उन्होने पत्रकारों से कहा,उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण सरकार द्वारा उठाए गए गरीबी उन्मूलन उपायों की सफलता को भी दर्शाता है। उन्होंने कहा कि सर्वेक्षण में जनसंख्या को 20 अलग-अलग श्रेणियों में बांटा गया और आंकड़ों से पता चला कि सभी श्रेणियों के लिए औसत प्रति व्यक्ति मासिक व्यय ग्रामीण क्षेत्रों में 3,773 रुपये और शहरी क्षेत्रों में 6,459 रुपये देश में केवल 5 प्रतिशत लोग गरीब निचले 0-5 प्रतिशत वर्ग का औसत प्रति व्यक्ति मासिक व्यय ग्रामीण क्षेत्रों में 1,373 रुपये और शहरी क्षेत्रों में 2,001 रुपये आंका गया है. नीति आयोग के सीईओ ने कहा,अगर हम गरीबी रेखा को लें और इसे उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) के साथ आज की दर तक बढ़ाएं, तो हम देखेंगे कि सबसे निचले 0-5 प्रतिशत वर्ग की औसत खपत लगभग समान है. इसका मतलब है कि देश में गरीबी केवल 0-5 प्रतिशत समूह में है।उन्होंने कहा, यह मेरा आकलन है. लेकिन अर्थशास्त्री इसका विश ?लेषण करेंगे और बिल्कुल सही आंकड़े सामने लाएंगे।एनएसएसओ का अनुमान 1.55 लाख ग्रामीण परिवारों और 1.07 लाख शहरी परिवारों से एकत्र किए गए आंकड़ों पर आधारित है. सुब्रमण्यम ने कहा कि आंकड़ों से पता चलता है कि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में खपत लगभग 2.5 गुना बढ़ गई है। उन्होंने कहा, 'इससे पता चलता है कि देश में शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में प्रगति हो रही है। सर्वेक्षण से पता चलता है कि 2011-12 में अंतर 84 प्रतिशत था और 2022-23 में घटकर 71 प्रतिशत हो गया है. 2004-05 में यह अंतर 91 प्रतिशत के अपने चरम पर था. एनएसएसओ सर्वेक्षण देश में ग्रामीण और शहरी दोनों परिवारों के कुल खर्च में अनाज और भोजन की खपत की हिस्सेदारी में उल्लेखनीय गिरावट का भी संकेत देता हैद्व इसका मतलब है कि लोग अतिरिक्त आय के साथ समृद्ध हो रहे हैं। इस बढ़ी हुई समृद्धि के साथ वे भोजन के अलावा अन्य चीजों पर अधिक खर्च कर रहे हैं. यहां तक कि भोजन में भी, वे अधिक दूध पी रहे हैं, फल और अधिक सब्जियां खा रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा, 'सीपीआई मुद्रास्फीति में भोजन का योगदान कम होगा और शायद पहले के वर्षों में भी कम था. इसका मतलब है कि मुद्रास्फीति को बढ़ा-चढ़ाकर बताया जा रहा था और शायद कम है, क्योंकि मुद्रास्फीति में भोजन का प्रमुख योगदान रहा है। अत: अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अमेरिकी थिंक टैंक का दावा भारत में अत्यधिक गरीबी पूरी तरह खत्म हुई-शहरी, ग्रामीण असमानता में भी गिरावट आई।अंतरराष्ट्रीय व घरेलू एजेंसियों द्वारा भारत की अत्यंत गरीबी खत्म तथा गरीबी से भारी मात्रा में उभरने का दावा सराहनीय।अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय एजेंसीयों द्वारा भारत में भारी मात्रा में गरीबी कम होने के दावों को अब अमलीजामा पहना कर अपडेट सूची जारी करना समय की मांग है।

September is Life Insurance Awareness Month

We're here to help you find a life insurance policy that fits your need and budget.

Vindu Hora
Agent
Ph: (718) 286-1100
Cell: (917) 843-6031
vhora@ft.newyorklife.com

New York Life Insurance Company
95-25 Queens Blvd. 4th Floor
Rego Park, NY 11374

NEW YORK LIFE

Protection you need. Benefits you didn't expect.

Starting out? Growing family? Nearing retirement? Life insurance from New York Life offers protection plus benefits that can help can fund your retirement, pay for college, or just give you financial peace of mind.* Contact me to learn more.

* The primary purpose of the policy is death benefit protection. Accessing the cash value of a whole life policy will reduce the available cash surrender value and the death benefit.

Common questions about life insurance:

- What are the best life insurance companies?
- What type of life insurance policies are there?
- How much are life insurance rates?
- How can I get a life insurance quote?

Life insurance is in our DNA. We've been cracking the code for 175 years.

With New York Life by your side, you can focus on the things that matter most.

SMRU 1668734 EXP. 9/26/2022

तहसील फतेहाबाद में हिन्दी पखवाड़ा दिवस मनाया

आगरा ■ हम हिंदुस्तानी

फतेहाबाद में अधिवक्ता परिषद् फतेहाबाद इकाई की बैठक सम्पन्न हुई,जिसमे अंतराष्ट्रीय हिन्दी भाषा अभियान के बैनर तले एक विचार गोष्ठी का अयोजन किया गया। जिसमें हिन्दी पखवाड़ा दिवस मनाया।मुख्य अतिथि बतौर ब्रज प्रांत की संयोजक श्रीमती अंजली वर्मा एडवोकेट तथा विशिष्ट संयोजक अतिथि श्रीमान सन्त कुमार एडवोकेट जी रहें।

श्रीमती अंजली वर्मा जी ने बताया कि जूनियर न्यायालयों से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक लंबे समय से भारतीय भाषा अभियान चलाया जा रहा है। जिसमें हमें अहम सफलता प्राप्त हुई हैं। इस अभियान के द्वारा देश भर के कार्यालयों में क्षेत्रीय भाषा एवम हिंदी भाषा पर कार्य किए जाएं। बैठक में बताया कि अभियान के माध्यम से सभी न्यायालयों में हिंदी में सभी मुकदमे दाखिल किए जावे तथा आदेश भी हिंदी में लिखा जाए जिससे सभी मुबाकिलो को मुकदमे में समझने में आसानी हो। अधिवक्ता परिषद् इकाई के वरिष्ठ पधाधिकारी उप शासकीय अधिवक्ता व खण्ड कार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ श्रीमान नागेन्द्र सिंह तोमर एडवोकेट जी ने बताया कि हम फतेहाबाद के सभी न्यायालयों में सिविल की रूलिंग 15 के अनुसार हिंदी में सभी मुकदमे दाखिल की अपील करते हैं तथा आदेश भी हिंदी में लिखा जाए ये सब कोशिश करते हैं जिससे सभी मुबाकिलो को मुकदमे में समझने में आसानी हो। तथा रिश्वतखोरी जैसी कुप्रथा को खत्म किया जा सके।इस मौके पर अधिवक्ता परिषद् इकाई के अध्यक्ष एवम् बार एसोसिएशन फतेहाबाद के सचिव श्रीमान वीरेन्द्र सिंह तोमर एड0 ,महामंत्री श्रीमान अवधेश सिंह वर्मा एड0, उपाध्यक्ष श्रीमान रवि शेखर सिंह एड0, मंत्री दीपक धाकरे एड0, मंत्री रामबाबू भदौरिया एड0, मंत्री अनिल शर्मा एड0, कोषाध्यक्ष श्रीमान वेदन श्रीवास्तव एड0, भूपेंद्र एड0, सहमंत्री नरेन्द्र धाकरे एड0, सहमंत्री प्रेमवीर एड0, सदस्य अशोक सिकरवार एड0, विनय भारद्वाज एड0 आदि अधिवक्ता गण काफी मात्रा में उपस्थित होकर अपने अपने विचार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम को सफल बनाया है इसके लिए मैं सभी अधिवक्तागणों को धन्यवाद प्रकट किया।

सूलिया के सरकारी स्कूल में नशामुक्ति की शपथ दिलाई

भवानीमंडी ■ हम हिंदुस्तानी

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सूलिया में नशामुक्ति अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों प्रधानाचार्य व सभी शिक्षकों ने नशामुक्ति की शपथ ली।विद्यार्थियों को नशे से होने वाली बीमारियों से अवगत कराते हुए समझाया गया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षक राजेश कुमार शर्मा ने नशे के दुष्प्रभाव बताते हुए कहा कि नशा नाश की जड़ है।आज की युवा पीढ़ी नशे की शिकार हो रही है जो चिंताजनक है। बीड़ी सिगरेट तम्बाकू व मद्यपान करने वाले समाज का वातावरण खराब करते हैं। नशे से गाल का कैंसर,जीभ का कैंसर होता है।दांत पीले काले रंग के हो जाते हैं। लाल मंजन जो जर्दायुक्त होता है कभी नहीं करें सभी विद्यार्थियों को समझाया। नशे से तन मन धन सब बर्बाद हो जाते हैं। नशे से असमय मृत्यु हो जाती है। आज हम देखते हैं नशे के सेवन से कई परिवार बर्बाद हो रहे हैं।इसलिए न नशा करो न दूसरों को करने दो। आओ नशामुक्त समाज बनाएं।अपने परिवार को नशामुक्त बनाएं तभी स्वस्थ समाज बनेगा। हम नवभारत बना पाएंगे।

कार्यक्रम में प्रधानाचार्य गंगाप्रसाद गुदराशिया अध्यापक राजेश कुमार शर्मा देवी सिंह अध्यापिका शोभा गुप्ता प्रीति बाला जैन विद्यालय शिक्षक अजयराज गुप्ता गरिमा गौतम सुनील पुरोहित सहित स्टाफ मौजूद रहा।

महिला बनाम घूंघट और बुर्का

(पृष्ठ 5 का शेष)

समाज में और कोई उदाहरण देखने को नहीं मिलता है कि पुरुषों की तरह महिलाओं को भी दो चार पति रखने की अनुमति दी गई हो। महिलाएं समय समय पर सती होकर पूजनीय होती रही मगर एक भी पुरूष सता यानी कि अपनी पत्नी के पीछे जल कर पूजनीय नहीं हुआ। ऐसा कोई मन्दिर देखने को नहीं मिला जबकि सती प्रथा के खात्मे से पहले ऐसे बहुत से मन्दिर देखने को मिल जाते थे।महिलाएं भी इन सती सावित्री जैसी उपाधियों के जाल में फस कर खुश होकर इन डिग्रियों को धारण करती रही। पतिव्रता की जगह पत्नीव्रता शब्द कभी सुनने में नहीं आया? अब समय बदल रहा है। अब महिलाएं शिक्षा में, खेल में, रोजगार में, पुनर्विवाह में, राजनीति में, उद्योग जगत में, लेखन में, अंतरिक्ष में, चिकित्सा में, विज्ञान में, सेना में हर फील्ड में सक्रिय भागीदारी निभा रही है और पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही है। घूंघट और बुर्के से बाहर निकल कर दुनिया को अपने नज़रिए से देख रही समझ रही है और आगे बढ़ रही है। आज विश्व में महिलाओं का भी बोलबाला है। वे अब किसी से कम नहीं है जो कि एक सराहनीय कदम है। महिला रोजगार से घर घर आय में वृद्धि हुई है। आज महिलाओं को पुरुषों के बराबर कंधे से कंधा मिलाकर उन्हें साथ चलते हुए देख कर सबको बहुत अच्छा लग रहा है। पुरुष के साथ महिला शक्ति के जुड़ जाने से श्रम और शक्ति में निश्चित रूप से वृद्धि हुई है।

-अशोक रंगा, लेखक चिन्तक और व्यंग्यकार, बीकानेर

बंगाल पर दहाड़,मणिपुर पर ख़ामोशी?

(पृष्ठ 5 का शेष)

नहीं। मणिपुर में भाजपा का शासन है और राज्य के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह स्वयं मैतेई समुदाय से हैं। मणिपुर की 60 विधानसभा सीटों में से 40 सीटों पर मैतेई समुदाय का दबदबा है क्योंकि उनकी जनसंख्या कुल आबादी की 53 प्रतिशत है। शेष कुकी या नागा जैसे समुदाय अल्पसंख्यक श्रेणी में आते हैं। परन्तु चूँकि यहां 'शेख शाहजहां' नामधारी कोई चरित्र सामने नहीं इसलिये न तो राज्य की भाजपा सरकार पर कोई इलज़ाम है न ही तुष्टीकरण के कोई आरोप न ही भ्रष्टाचार व परिवारवाद व अपराधीकरण की कोई शिकायत। गोया जिस मणिपुर की हिंसा की चर्चा पूरे विश्व में हुई,जिस मणिपुर की घटना से पूरी दुनिया में देश की बदनामी हुई वर्तमान सत्ता के लिये वह मणिपुर नहीं बल्कि बंगाल का संदेशखाली प्रकरण बड़ी चिंता का विषय है। जबकि हक़ीक़त यह है कि गत दस महीनों में शायद ही कोई दिन ऐसा बीता हो जिस दिन मणिपुर से हिंसा,हत्या,आगज़नी या बलात्कार की ख़बरें न आई हों। परन्तु प्रधानमंत्री से लेकर मीडिया तक और सत्ता के चाटुकार लेखक पत्रकार व समीक्षक सभी बंगाल के संदेशखाली मुद्दे पर तो खूब दहाड़ रहे हैं परन्तु उन्हीं पर मणिपुर हिंसा को लेकर कुछ इस तरह की ख़ामोशी छाई हुई है मानो मणिपुर भारत का राज्य ही न हो ? राजनीति में दोहरे मापदण्ड अपनाने का इससे बड़ा दूसरा उदाहरण और क्या हो सकता है?

सड़क जाम,मार्ग परिवर्तन से जनता परेशान-ज़िम्मेदार कौन सरकार या किसान?

(पृष्ठ 5 का शेष)

घंटों बसों का इंतजार करना पड़ रहा है। परन्तु अब सुखद ख़बर यह है कि अंबाला-चंडीगढ़ हाईवे को पुलिस प्रशासन द्वारा आंशिक रूप से खोला जा रहा है। ख़बरों के अनुसार छः लेन के इस रास्ते में अभी केवल दोनों दिशाओं से दिल्ली-चंडीगढ़ मार्ग की केवल एक-एक लेन ही खोली जा रही है। यानी सद्दोपुर-झड़मड़ी सीमा पर राजमार्ग की एक लेन खुलने के बावजूद अभी भी जाम की स्थिति बनी रहेगी। सवाल यह है कि किसान आंदोलन के नाम पर या इससे भयभीत होकर सरकार व प्रशासन द्वारा 20 दिनों से भी अधिक समय तक जनता को क्यों परेशानी में डाला गया ? क्या सरकार को भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में लोगों की आवाज़ ख़ासकर 'अन्नदाताओं' की आवाज़ को कुचलने का सबसे आसान रास्ता यही नज़र आया कि इंटरनेट बंद कर दिये जाएँ,रास्ते बंद कर दिये जायें,मार्ग परिवर्तित किये जायें,किसान प्रदर्शनकारियों के साथ दुश्मनों व घुसपैठियों जैसा व्यवहार किया जाये,उनपर लाठियां गोलियां आंसू गैस व पानी की तेज़ बौछारें इस्तेमाल की जायें ? और इन सब सरकारी बंदिशों के चलते जनता को होने वाली परेशानियों की ज़िम्मेदारी किसानों पर ही मढ़ी जाये ? और गोदी मीडिया भी सत्ता के साथ क़दमताल करता हुआ किसानों को ही दोषी क़रार देने की कोशिश करे ?

बहरहाल,किसान आंदोलन यदि और तेज़ न हुआ और सरकार व किसानों के मध्य वार्ता के द्वारा कोई समाधान निकल आया फिर तो सुखद है। अन्यथा 12 फ़रवरी से बंद पड़े 6 लेन के अंबाला-चंडीगढ़-शिमला हाईवे की दोनों दिशाओं की केवल एक ही लेन 5 मार्च से खोलने से जनता को फ़िलहाल कुछ राहत तो ज़रूर मिलेगी। परन्तु बेहतर हो कि सरकार इन समस्याओं का दीर्घकालिक समाधान निकाले और ऐसी व्यवस्था करे,ऐसी नीतियाँ व योजनाएं बनाये कि किसानों और सरकार के बीच टकराव की नौबत ही न आ सके ? और किसान व सरकार के टकराव के बीच कम से कम देश की आम जनता को तो परेशानी न उठानी पड़े?

सम्मान

वरिष्ठ समाजसेवी एवं साहित्यकार डॉ.विनय कुमार श्रीवास्तव दिल्ली में कबीर कोहिनूर सम्मान-2024 से अलंकृत कर सम्मानित किया गया

नई दिल्ली ■ हम हिंदुस्तानी

डॉ. भीम राव अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय हाल,जनपथ,नई दिल्ली में संत श्री कबीर दास जी के 506वें महानिर्वाण दिवस पर आयोजित भव्य समारोह कबीर कोहिनूर सम्मान-2024 का संयोजन कबीर आश्रम सेवा संस्थान,बड़ी खाटू, राजस्थान के भारत भूषण संत डॉ. नानक दास महाराज जी के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में 27 फरवरी 2024 को बड़े धूम धाम से संम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में देश विदेश से विभिन्न क्षेत्रों में चयनित 100 विशिष्ट प्रसिद्ध असाधारण प्रतिभाओं को *कबीर कोहिनूर सम्मान-2024 प्रदान कर समारोह पूर्वक उन्हें अलंकृत एवं सम्मानित किया गया।प्रतापगढ़ उ.प्र.जनपद से वरिष्ठ साहित्यकार श्रेणी में विभिन्न सामाजिक,शैक्षिक,साहित्यिक, धार्मिक संस्थाओं के माध्यम से अपनी सेवाएं दे रहे वरिष्ठ समाजसेवी (सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रवक्ता-पी.बी.कालेज) जवाइंट इंटरनेशनल ट्रेजरर- एलायंस क्लब्स इंटरनेशनल,पूर्व डिप्टी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर (सेंट्रल)लायंस क्लब्स इंटरनेशनल,हंगामा लोक साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था के जिला अध्यक्ष,ह्यूमन सेव लाइफ फाउंडेशन के जिलाध्यक्ष,अखिल भारतीय कायस्थ महासभा प्रतापगढ़, उ.प्र. के जिलाध्यक्ष एवं मानवाधिकार सहायता संघ भारत अंतर्राष्ट्रीय के राष्ट्रीय अध्यक्ष बौद्धिक प्रकोष्ठ- डॉ. विनय कुमार श्रीवास्तव को भारत भूषण संत नानक दास जी एवं मुख्य अतिथि तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा *कबीर कोहिनूर सम्मान -2024* से विभूषित किया गया। इस सम्मान के लिए कबीर आश्रम सेवा संस्थान-बड़ी खाटू राजस्थान के संस्थापक भारत भूषण संत नानक दास जी एवं दिव्य प्रेरक शिक्षा सामाजिक संस्था के प्रबंधक आदरणीय डॉ. अभिषेक जी का हृदय से बहुत-बहुत साधुवाद एवं आभार। वरिष्ठ साहित्यकार एवं समाजसेवी डॉ. विनय कुमार श्रीवास्तव को नई दिल्ली में प्राप्त इस विशेष उपलब्धि से एलायंस क्लब इंटरनेशनल उ.प्र., मानवाधिकार सहायता संघ भारत अंतर्राष्ट्रीय,लायंस क्लब्स इंटरनेशनल,ह्यूमन सेफ लाइफ फाउंडेशन, पी.बी.कालेज प्रतापगढ़ के शिक्षक साथियों तथा हंगामा लोक साहित्यिक-सामाजिक संस्था आदि के अनेकों पदाधिकारियों व सदस्यों, डॉ.सोनू सिंह भारत, डॉ. जितेन्द्र कौशिक,वैभव श्रीवास्तव,ज्ञानेश श्रीवास्तव,आनंद मोहन ओझा एवं अखिल भारतीय कायस्थ महासभा प्रतापगढ़ के सदस्यों,नागरिकों ने बधाई दे कर अपनी खुशी व्यक्त की। इस सम्मान के लिए भारत भूषण संत नानक दास जी,पैनल के सभी श्रेष्ठ चयन कर्ताओं के साथ दिव्य प्रेरक कहानियाँ व मानवता अनुसन्धान के मुख्य प्रबंधक डॉ.अभिषेक जी के प्रति हृदय से मैं बहुत-बहुत सादर साधुवाद देता हूँ एवं आभार व्यक्त करता हूँ।

रूपा कनौजिया का सेवानिवृत्ति पर फेडरेशन ने अभिनंदन किया

इंदौर ■ हम हिंदुस्तानी

म.प्र. पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी इंदौर के कार्पोरेट कार्यालय उपभोक्ता फोरम इंदौर से सेवानिवृत्त हुई श्रीमती रूपा कनौजिया का म.प्र. विद्युत कर्मचारी संघ फेडरेशन (इंटक) इंदौर द्वारा गुलदस्ता भेंट कर व फुलमालाओं से स्वागत अभिनंदन किया गया। उपस्थित सभी साथियों ने उनके स्वस्थ, सुखी व दीर्धायु जीवन की कामना करते हुए हार्दिक बधाइयां व शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर फेडरेशन के एन के यादव झोनल सचिव, जेएल जोशी, एनके जैन, वीरेन्द्र मिश्रा, सुशील मिश्रा, राजु काले, मदनलाल लाइनमेन सहित अनेक साथीगण उपस्थित हुए। इनकी सेवानिवृत्ति पर सतीश शांडिल्य, मदन वर्मा माणिक द्वारा हार्दिक बधाइयां अभिव्यक्त की गई।

बिटिया की घोड़ी पर बिंदोरी निकाल कर दिया संदेश

चिड़ावा ■ हम हिंदुस्तानी

हमारी बेटी, बेटो से कम नही है। इन दिनों विवाह शादियों में बेटियो को बेटों के बराबर सम्मान देने की परंपरा से समाज में अच्छा संदेश जा रहा है। शेखावाटी के झुंझुनू जिले में विवाह ,शादियों में बेटों की तरह बेटियों को भी घुड़चढ़ी की रस्म निभाने की परंपरा ट्रेंड कर रही है। समाज के प्रबुद्धजन बेटियों को बेटों के बराबर मांन देने की पहल से सामाजिक रूप में एक अच्छा संदेश जा रहा है। ऐसा ही एक नजारा चिड़ावा शहर में देखने को मिला। वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, अंतरराष्ट्रीय ख्यातिनाम पत्रकार, लेखक एवम समाजसेवक डॉ.शंभू पवार ने अनुज सुभाष की बिटिया गरिमा की घोड़ी पर गाजे बाजे के साथ शहर में बिंदोरी निकाली । श्रीमती कमलेश पंवार, बेटी के पिता सुभाष पवार ,मम्मी श्रीमती बबीता, विजय -लक्ष्मी पवार, पूर्व पार्षद मधु शर्मा, मुकेश ओला, जयप्रकाश चौधरी, मुकेश महेंद्र - साइना शर्मा नेपाल, अभिषेक ज्योति पवार शुभम पवार, पवन पवार, चंदन पवार, ओमप्रकाश-सुमन महावार,पवन-पूजा , पंकज-पूजा कोटनिश,सहित परिवार के अन्य सदस्य इस दौरान बिंदोरी में नाच कर खुशी का इजहार किया। उल्लेखनीय के झुंझुनू जिले में लगातार बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत नवाचार और पीसीपीएनडीटी कार्रवाई के चलते काफी बदलाव देखने को मिल रहे हैं। झुंझुनू जिले के तीन बार लगातार बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के अंतर्गत राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त मिल चुका है।

ताइवान की मंत्री ने भारतीयों पर नस्लभेदी टिप्पणी की

भारत की अपत्ति के बाद माफी मांगी; भारतीयों को नौकरी देने पर चर्चा कर रही थीं

ताइपे ■ हम हिंदुस्तानी

ताइवान ने भारतीयों पर की गई नस्लभेदी टिप्पणी के लिए माफी मांगी है। दरअसल, ताइवान की लेबर मिनिस्टर शू मिंग चूं ने 4 मार्च को भारत के साथ हुए श्रम करार पर चर्चा करते हुए कहा था- ताइवान, भारत के पूर्वोत्तर के ईसाई कामगारों को प्राथमिकता देगा, क्योंकि उनका रूप-रंग और खान-पान ताइवानी लोगों जैसा है। भारत ने मंत्री की इस टिप्पणी को नस्लभेदी बताते हुए विरोध जताया था। इसके बाद आज ताइवान ने कहा- मंत्री की टिप्पणी अफसोसजनक है। ताइवान किसी भी प्रवासी कामगार या पेशेवर के साथ उसके रूप-रंग, जाति-धर्म, भाषा और खान-पान की आदतों के आधार पर भेदभाव नहीं करता। हम भारत सरकार को भरोसा दिलाते हैं कि ताइवान में सभी भारतीयों के साथ उचित व्यवहार किया जाएगा। लेबर मिनिस्टर शू मिंग चूं से पूछा गया कि भारत के साथ श्रमिकों को लेकर हुए करार पर उनकी क्या राय है और इसे किस तरह से लागू किया जाएगा? साथ ही ये भी पूछा गया कि भारत-ताइवान के बीच सांस्कृतिक फासले का इस पर क्या असर होगा? इसके जवाब में चूं ने कहा- नॉर्थ-ईस्ट इंडिया के लोगों का रंग, खाने के तौर तरीके हमसे मिलते जुलते हैं। वो हमारी तरह ही ईसाई धर्म में ज्यादा विश्वास रखते हैं। वो काम में निपुण भी हैं। इसलिए पहले पूर्वोत्तर के श्रमिकों को भर्ती किया जाएगा। भारत और ताइवान ने 17 फरवरी, 2024 को एक रूश (मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग) पर साइन किए थे। इस MoU के तहत भारतीय कामगारों के लिए ताइवान के दरवाजे खुल जाएंगे। दरअसल, ताइवान इस वक्त प्रोडक्शन, कंस्ट्रक्शन और एग्रीकल्चर सेक्टर में मजदूरों की कमी से जूझ रहा है। इस करार के तहत ताइवान ही निर्धारित करेगा कि भारत से कितने प्रवासी कामगारों को वहां भुलाया जाएगा। ताइवान के विदेश मंत्री जोसेफ वू ने हाल ही में एक भारतीय टीवी चैनल को इंटरव्यू दिया था। अब चीन ने इस पर आपत्ति जताई है। भारत में मौजूद चीनी ऐम्बेसी ने शनिवार को कहा- ''भारतीय मीडिया की वजह से ताइवान को अपनी स्वतंत्रता की वकालत करने और दुनिया में झूठ फैलाने का मंच मिला है।'' चीन ने कहा- ''यह वन-चाइना पॉलिसी के खिलाफ है, इसे स्वीकार नहीं किया जाएगा।'' चीन के बयान का जवाब देते हुए ताइवान ने कहा- ''भारत और हम दो आजाद लोकतांत्रिक देश हैं। दोनों में से कोई भी चीन की कठपुतली नहीं है, जो उसके हुक्म का पालन करे। चीन को दूसरे देशों के सामने दादागिरी करने की जगह खुद पर ध्यान देने की जरूरत है।''

इजराइल में बच सकती थी भारतीय की जान

हिजबुल्लाह की बमबारी के बावजूद उसके मालिक ने सुरक्षित जगह नहीं जाने दिया

गैलीली (इजराइल) ■ हम हिंदुस्तानी

इजराइल में सोमवार को हिजबुल्लाह के मिसाइल हमले में एक भारतीय पटनीबिन मैक्सवेल की मौत हो गई थी। उसके पिता पैथरोस मैक्सवेल ने दावा किया है कि पटनीबिन को पहले से ही खतरे का आभास था, लेकिन उसे वहां से जाने नहीं दिया गया। भारतीय मीडिया टाइम्स ऑफ इंडिया को दिए इंटरव्यू में पैथरोस ने कहा- सोमवार (4 मार्च) सुबह मेरी पटनीबिन से बात हुई थी। वो परेशान लग रहा था। पूछने पर उसने बताया कि वो जहां काम करता है, वो जगह अब सुरक्षित नहीं है। 2 हफ्ते पहले ही वहां हमला हुआ था। पैथरोस ने आगे कहा- मैंने उसे वहां से दूर जाने की सलाह भी दी। उसने बताया कि उसके मालिक इसकी इजाजत नहीं दे रहे हैं। उसी दिन मेरे बड़े बेटे निविन ने मुझे शाम करीब 4.30 बजे फोन करके बताया कि पटनीबिन एक मिसाइल हमले में घायल हो गया है। फिर देर रात करीब 1 बजे उसकी मौत हो गई। पटनीबिन के पिता ने बताया कि सोमवार को उसने अपनी 7 महीने की गर्भवती पत्नी सियोना और 5 साल की बेटी आमिया से भी बात की थी। पैथरोस के मुताबिक, पटनीबिन 2 महीने पहले ही एक खेत पर काम करने के लिए इजराइल गया था। वहां उसे अच्छे वेतन का ऑफर मिला था। पटनीबिन हमेशा से एक गरीब परिवार में पला-बढ़ा है। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद वो मस्कट चला गया था, जहां उसने एक आइस प्लांट में काम किया। इसके बाद वो दुबई की एक कंपनी में काम करने लगा। उसका बड़ा भाई निविन मैक्सवेल पहले से ही इजराइल में काम करता है। उसकी मदद से उसे इजराइल में 5 साल का एग्रीकल्चरल वीजा मिल गया। पैथरोस ने बताया- पटनीबिन का शव फिलहाल इजराइल के सीव अस्पताल में है। उसे बुधवार को तेल अवीव भेजा जाएगा। इसके बाद अगले 4 दिन में शव को भारत लाया जा सकेगा। पैथरोस ने आगे कहा- इजराइल और उसके दुश्मनों को वहां रह रहे विदेशी नागरिकों की रक्षा करनी चाहिए। उन्हें जंग से दूर तुरंत किसी सुरक्षित स्थान पर रखा जाना चाहिए। इजराइल के उत्तरी क्षेत्र गैलीली में हुए मिलाइल हमले में 2 भारतीय घायल भी हुए थे। इसके बाद भारतीय ऐंबैसी ने एडवाइजरी जारी की थी। इसमें दूतावास ने सभी भारतीय नागरिकों को बॉर्डर से दूर और सुरक्षित स्थानों पर जाने की सलाह दी है। साथ ही हेल्पलाइन नंबर भी शेयर किया था। 7 अक्टूबर को इजराइल-हमास जंग शुरू होने के बाद इजराइल ने वहां काम कर रहे फिलिस्तीनियों का वर्क परमिट खारिज कर दिया। इजराइल की कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री में उस वक्त करीब 80 हजार फिलिस्तीनी लेबर काम करती थी। उनके जाने के बाद इजराइल में लेबर की कमी होने लगी। इसका सीधा असर इजराइल की त्रष्ठक्क पर पड़ने का खतरा मंडराने लगा। द गार्जियन की रिपोर्ट के मुताबिक, इजराइल के वित्त मंत्रालय ने आशंका जताई थी कि कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री का काम ठप होने के चलते इजराइल की त्रष्ठक्क में 3त्र की गिरावट आ सकती है। इसके बाद नवंबर 2023 में इजराइल ने कंस्ट्रक्शन और एग्रीकल्चर इंडस्ट्री में वीजा देना शुरू कर दिया। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दिसंबर में करीब 800 भारतीय नौकरी के लिए इजराइल पहुंचे थे। इनमें से ज्यादातर केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना और उत्तर प्रदेश के थे। दरअसल, मई 2023 में इजराइल और भारत के बीच लेबर फोर्स को लेकर एक समझौता हुआ था। इसके तहत 42 हजार भारतीय कामगार इजराइल में काम करने जाने वाले थे। दिसंबर में जंग को लेकर इजराइली PM नेतन्याहू ने PM मोदी से फोन पर बात की थी। इजराइली PM ने दावा किया था कि इस दौरान दोनों नेताओं के बीच भारतीय लेबर को इजराइल भेजने के एग्रीमेंट में तेजी लाने पर सहमति बनी थी।

Vaaho Photo

30 YEARS

www.VaahoPhoto.com

Vaaho Photographers
132 Broadway
Hicksville, NY 11801

Toll Free- 1-877-77-VAAHO
Tony - (516)428 - 5020
Ekonkar - (516) 633 - 9579

पंजाब सरकार के खिलाफ अवमानना का केस, लाहौर हाईकोर्ट ने 26 मार्च तक जवाब मांगा

पाकिस्तान में शादमान चौक का नाम भगत सिंह नहीं रखा

लाहौर ■ हम हिंदुस्तानी

पाकिस्तान के हाईकोर्ट ने सोमवार को पाकिस्तान की पंजाब सरकार और जिला प्रशासन को नोटिस जारी किया। नोटिस में पूछा गया है कि आदेश दिए जाने के बावजूद लाहौर में शादमान चौक का नाम बदलकर शहीद भगत सिंह चौक क्यों नहीं किया गया। इस मामले में भगत सिंह मेमोरियल फाउंडेशन पाकिस्तान ने याचिका लगाकर तीन टॉप अधिकारियों के खिलाफ अवमानना कार्रवाई की मांग की गई है। फाउंडेशन के अध्यक्ष इम्तियाज रशीद कुरैशी ने सुनवाई के बाद बताया कि लाहौर हाईकोर्ट ने शादमान चौक का नाम भगत सिंह के नाम पर रखने में विफल रहने की याचिका पर 26 मार्च तक जवाब मांगा है।

दरअसल, लाहौर हाइकोर्ट ने 2018 में पंजाब सरकार को आदेश दिया था कि लाहौर के शादमान चौक का नाम भारत के स्वतंत्रता संग्राम में शहीद हुए भगत सिंह के नाम पर रखा जाए। हालांकि, इस फैसले पर सरकारों ने अब तक कोई कदम नहीं उठाया। शादमान चौक ही वो जगह है जहां 23 मार्च 1931 को अंग्रेजों ने भगत सिंह को फांसी दी थी। क्षेत्र में रह रहे हिंदू, सिखों के अलावा मुस्लिम भी भगत सिंह का सम्मान करते हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, पाकिस्तान के फाउंडर मोहम्मद अली जिन्ना ने 2 बार अपने भाषणों के दौरान भगत सिंह को भारतीय सब-कॉन्टिनेंट का सबसे बहादुर व्यक्ति बताते हुए श्रद्धांजलि दी थी।

पिछले साल सितंबर में लाहौर हाईकोर्ट ने भगत सिंह को 1931 में सजा मिलने के मामले को दोबारा खोलने से इनकार कर दिया था। दशकों पहले दायर की याचिका में भगत सिंह को मरणोपरांत राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किए जाने का अनुरोध भी किया गया था। पाकिस्तान की कोर्ट ने इस पर भी आपत्ति जाहिर की थी। 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह को उनके साथियों राजगुरु और सुखदेव के साथ फांसी दे दी गई थी। इस सजा के खिलाफ 2013 में पाकिस्तान में याचिका दायर की गई थी। याचिकाकर्ताओं के पैनल में शामिल इमतियाज राशिद कुरैशी ने कहा था कि अंग्रेज अधिकारी जॉन सॉन्डर्स हत्या की प्राथमिकी में भगत सिंह का नाम नहीं था।

भगत सिंह का मामला देख रहे विशेष न्यायाधीशों ने मामले में 450 गवाहों को सुने बिना ही उन्हें मौत की सजा सुना दी थी। ऐसे में उनके मामले पर फिर सुनवाई की जानी चाहिए। कोर्ट में दाखिल याचिका में कहा गया था कि भगत सिंह ने पूरे सब कॉन्टिनेंट यानी उप महाद्वीप की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी थी।

24 मार्च 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को लाहौर सेंट्रल जेल में फांसी दी जानी थी। भगत इस फैसले से खुश नहीं थे। उन्होंने 20 मार्च 1931 को पंजाब के गवर्नर को एक खत लिखा कि उनके साथ युद्धबंदी जैसा सलूक किया जाए और फांसी की जगह उन्हें गोली से उड़ा दिया जाए।

22 मार्च 1931 को अपने क्रांतिकारी साथियों को लिखे आखिरी खत में भगत ने कहा- ''जीने की इच्छा मुझमें भी है, ये मैं छिपाना नहीं चाहता। मेरे दिल में फांसी से बचने का लालच कभी नहीं आया। मुझे बेताबी से अंतिम परीक्षा का इंतजार है।'' अंग्रेज पुलिस ऑफिसर सान्डर्स को गोली से उड़ाते भगत और राजगुरु। हालांकि दोनों को सान्डर्स की जगह पुलिस सुपरिन्टेंडेंट जेम्स ए स्कॉट को निशाना बनाना था। 12 जून 1929 को ही भगत को असेंबली ब्लास्ट के लिए आजीवन कारावास की सजा सुना दी गई थी। हालांकि, जो बंदूक असेंबली में भगत ने सरेंडर की थी, वो वही थी जिससे सांडर्स की भी हत्या की गई थी। इसकी भनक पुलिस को लग चुकी थी। इस केस के लिए भगत को लाहौर की मियांवाली जेल में शिफ्ट किया गया था। लाहौर जेल पहुंचते ही भगत ने खुद को राजनीतिक बंदियों की तरह मानने और अखबार-किताबें देने की मांग शुरू कर दी। मांग ठुकरा दिए जाने के बाद 15 जून से 5 अक्टूबर 1929 तक भगत और उनके साथियों ने जेल में 112 दिन लंबी भूख हड़ताल की। 10 जुलाई को सांडर्स हत्या केस की सुनवाई शुरू हुई और भगत, राजगुरु और सुखदेव समेत 14 लोगों को मुख्य अभियुक्त बनाया गया। 7 अक्टूबर 1929 को इस केस में भगत, सुखदेव और राजगुरु को फांसी की सजा सुनाई गई थी।

आखिरी बार पसंद का खाना भी न खा पाए भगत

भगत को पता था कि 24 मार्च को उन्हें फांसी होनी है। ऐसे में उन्होंने जेल के मुस्लिम सफाई कर्मचारी बेबे से अनुरोध किया था कि वो उनके लिए एक दिन पहले शाम को घर से खाना लाएं। हालांकि, उन्हें वो खाना कभी नसीब नहीं हो पाया। भगत को जब पता चला कि उन्हें 23 की शाम को ही फांसी होने वाली है तो उन्होंने कहा- क्या आप मुझे इस किताब (रिवॉल्यूशनरी लेनिन) का एक चैप्टर भी खत्म नहीं करने देंगे? भगत सिंह को फांसी की खबर फैलते ही जेल के बाहर भीड़ इकट्ठा हो रही थी। इससे अंग्रेज डर गए और जेल की पिछली दीवार तोड़ी गई। उसी रास्ते से एक ट्रक जेल के अंदर लाया गया और उस पर बहुत अपमानजनक तरीके से उन शवों को एक सामान की तरह डाल दिया गया।

अंतिम संस्कार रावी के तट पर किया जाना था, लेकिन रावी में पानी बहुत ही कम था, इसलिए सतलज के किनारे शवों को जलाने का फैसला लिया गया। हालांकि, लोगों को भनक लग गई और वे वहां भी पहुंच गए। ये देखकर अंग्रेज अधजली लाशें छोड़कर भाग गए। बाद में परिजनों ने उनका अंतिम संस्कार किया।

पेरिस ओलिंपिक 2024 के हॉकी टूर्नामेंट का शेड्यूल जारी

27 जुलाई से टूर्नामेंट; पहले दिन पुरुष टीम का मैच न्यूजीलैंड से होगा

पेरिस ■ हम हिंदुस्तानी

पेरिस ओलिंपिक 2024 के हॉकी टूर्नामेंट का शेड्यूल जारी हो गया है। बुधवार को इंटरनेशनल ओलिंपिक काउंसिल के प्रेसिडेंट थामस बाक ने इसे जारी किया। 26 जुलाई से शुरू हो रहे गेम्स में हॉकी टूर्नामेंट 27 जुलाई से शुरू होगा और 9 अगस्त तक चलेगा। हॉकी टूर्नामेंट में 12 पुरुष और 12 महिला टीमें हिस्सा लेंगी। भारतीय पुरुष हॉकी टीम अपने अभियान का आगाज 27 जुलाई को न्यूजीलैंड के खिलाफ करेगी। भारतीय महिला टीम रांची में आयोजित क्वालिफायर में गेम्स के लिए क्वालिफाई नहीं कर सकी है। भारतीय टीम को टूर्नामेंट के पूल बी में रखा गया है। टीम इंडिया के साथ बेल्जियम, अर्जेंटीना, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और आयरलैंड के साथ रखा गया है। जबकि पूल ए में नीदरलैंड, स्पेन, जर्मनी, फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन और साउथ अफ्रीका हैं। ग्रुप स्टेज में टीमें एक-दूसरे से एक बार मुकाबला करेंगी। हर पूल से टॉप-4 टीमें क्वार्टर फाइनल में प्रवेश करेंगी। पेरिस-2024 ओलिंपिक हॉकी मेडल राउंड मैच 8 अगस्त को तय किए गए हैं। हॉकी टूर्नामेंट का फाइनल मैच 8 अगस्त को खेला जाएगा। भारतीय टीम ने पिछली बार ऐतिहासिक ब्रॉन्ज मेडल जीता था। तब भारत ने 41 साल बाद हॉकी का मेडल जीता था। भारतीय टीम ओलिंपिक गेम्स में 8 बार की चैंपियन है।

मुलाकात की फोटो ट्वीट की

धर्मशाला टेस्ट से पहले दलाई लामा से मिली इंग्लैंड टीम

धर्मशाला ■ हम हिंदुस्तानी

इंग्लैंड क्रिकेट टीम और मैनेजमेंट धर्मगुरू दलाई लामा से मिलने मैकलोडगंज स्थित उनके आवास पर पहुंची। इंग्लैंड टीम ने इस मुलाकात की फोटो ट्वीट की है। पहले भी धर्मशाला क्रिकेट स्टेडियम में होने वाले मैचों के दौरान खिलाड़ी धर्मगुरू दलाई लामा से मिलने जाते रहे हैं। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का आखिरी मुकाबला 7 मार्च से धर्मशाला के हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में खेला जाएगा।

न्यूजीलैंड के खिलाड़ी भी दलाई लामा से मिल चुके : 2023 वर्ल्ड कप के दौरान न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम के प्लेयर्स ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच से पहले दलाई लामा से मिलने पहुंचे थे।

IPL 2024 के बाद रिटायर हो सकते हैं DK-2008 से अब तक सभी IPL खेलने वाले 7 प्लेयर्स में शामिल

नई दिल्ली ■ हम हिंदुस्तानी

विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक IPL 2024 के बाद इंटरनेशनल क्रिकेट और IPL से संन्यास ले सकते हैं। कार्तिक IPL में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की ओर से अपना आखिरी सीजन खेलेंगे। उन्हें IPL ने साल 2022 की मिनी ऑक्शन में अपने साथ 5.5 करोड़ रुपये में जोड़ा था। ईएसपीएन के मुताबिक, भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज जून में 39 साल के हो जाएंगे। वह आखिरी IPL सीजन के लिए तैयार हैं। इसके बाद वह IPL और इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास ले सकते हैं। कार्तिक ने भारत के लिए अपना आखिरी इंटरनेशनल मैच साल 2022 जुलाई में टी-20 वर्ल्ड कप में बांग्लादेश के खिलाफ खेला था। कार्तिक उन सात खिलाड़ियों में शामिल हैं, जिन्होंने IPL के अब तक हुए सभी सीजन (16) के हिस्सा रहे हैं। 2008 में IPL शुरू होने के बाद से ही वह, रोहित शर्मा, विराट कोहली, शिखर धवन, महेंद्र सिंह धोनी, रिद्धिमान साहा और मनीष पांडे के साथ ही इसमें खेल रहे हैं। कार्तिक आईपीएल के अब तक हुए 16 सीजन में केवल दो मैचों को ही मिस किए हैं। उन्होंने अपने पहले सीजन में कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ नहीं खेल पाए थे। वहीं दूसरा मैच पिछले साल यानी 2023 में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ लीग मैच से बाहर बैठे थे। कार्तिक का IPL 2022 में शानदार प्रदर्शन के बाद उन्हें टी-20 वर्ल्ड कप के लिए टीम में शामिल किया गया था। उन्होंने साल 2022 में 16 मैचों में 183.33 की स्ट्राइक रेट से 330 रन बनाए बनाए थे। हालांकि, उनका पिछला साल ज्यादा अच्छा नहीं रहा था। उन्होंने RCB की ओर से खेलते हुए 11 की औसत से 140 रन बनाए थे।

एलिस पेरी ने सिक्स लगाकर कार का कांच तोड़ा

नई दिल्ली ■ हम हिंदुस्तानी

विमेंस प्रीमियर लीग (WPL) में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने वापसी कर ली है। टीम ने चिन्नास्वामी स्टेडियम में लगातार 2 हार के बाद अपने पांचवें मुकाबले में यूपी वॉरियर्ज को हरा दिया। टीम को 23 रन से जीत मिली। RCB की कप्तान स्मृति मंधाना ने WPL में अपना दूसरा अर्धशतक लगाया। उन्होंने 80 रन की पारी खेली। मंधाना के 2 कैच छूटे, वह एक बार स्टंपिंग आउट होने से भी बच गईं। RCB से अर्धशतक लगाने वाली दूसरी बैटर एलिस पेरी ने सिक्स लगाकर कार का कांच तोड़ दिया। 8वें ओवर की आखिरी बॉल पर सोफी एकलेस्टन के सामने स्मृति मंधाना ने लॉन्ग ऑफ की ओर बड़ा शॉट खेला। फील्डिंग कर रहीं चमारी अटापट्टू ने लॉन्ग-ऑफ से दौड़कर बॉल का गलत अनुमान लगाया, फिर वह पीछे हटीं और एक हाथ से कैच लेने की कोशिश की। बॉल उनके हाथों पर चिपकी नहीं और कैच छूट गया। मंधाना को 28 रन के स्कोर पर जीवनदान मिला। एलिसा हीली विकेटकीपिंग के दौरान मंधाना को स्टंपिंग आउट करने से चूक गईं। 9वें ओवर की दूसरी बॉल पर चमारी अटापट्टू ने तेज फेंकी, जिसे मंधाना मिस कर गईं। मंधाना शॉट खेलने के लिए क्रीज से बाहर आईं और शॉट गलत जज किया, जिस कारण बॉल उनके पैड और बल्ले के बीच के गैप से होकर पीछे गई। स्टंप्स के पीछे खड़ी हीली गेंद को अपने पास रखने में नाकाम रहीं और गेंद चार रन के लिए चली गई।

नील वैगनर को जबरन रिटायरमेंट दिलाया गया

रॉस टेलर बोले- कीवी बॉलर ने खुद को अवेलेबल रखा था; न्यूजीलैंड प्लेइंग-11 में नहीं मिली थी जगह

न्यूजीलैंड के पूर्व बल्लेबाज रॉस टेलर ने कहा है कि तेज गेंदबाज नील वैगनर को जबरन रिटायरमेंट दिलाया गया। उन्हें बता दिया गया था कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज में उन्हें प्लेइंग इलेवन में नहीं चुना जाएगा। वैगनर ने हाल ही में पहले टेस्ट की शुरुआत से पहले एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान अपने रिटायरमेंट की घोषणा की। टेलर ने ESPN के अराउंड द विकेट पॉडकास्ट पर कहा, मुझे लगता है कि यह सब अब थोड़ा-थोड़ा समझ में आता है। मुझे लगता है कि वैगनर को जबरदस्ती रिटायरमेंट दिलाया गया। यदि आप वैगनर की प्रेस कॉन्फ्रेंस को सुनते हैं, तो वह कहना चाह रहे थे कि रिटायरमेंट आखिरी टेस्ट खेलने के बाद लेंगे। टेलर बोले मुझे लगता है कि भविष्य को देखते हुए टीम में बदलाव किया गया है, लेकिन ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट में जीत की स्थिति में, मैं नील वैगनर के आगे किसी को भी नहीं सोचूंगा। मुझे यकीन है कि ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज आराम से सो रहे होंगे, क्योंकि वैगनर टीम का हिस्सा नहीं है। वैगनर मूल रूप से साउथ अफ्रीका के रहने वाले हैं। वे न्यूजीलैंड शिफ्ट हो गए थे। उन्होंने न्यूजीलैंड के लिए 64 मैच खेले हैं। जिसमें 3.13 की इकोनॉमी रेट से 260 विकेट ले चुके हैं। उन्होंने 2012 वेस्टइंडीज के खिलाफ अपना टेस्ट डेब्यू किया था। उन्होंने अपना आखिरी टेस्ट साउथ अफ्रीका के खिलाफ 13 से 16 फरवरी तक हुए मैच में खेला था। संन्यास की घोषणा के बाद वैगनर ने मीडिया के साथ कुछ पुरानी यादें भी शेयर कीं। उन्होंने कहा 2014 में भारत के साथ पहली टेस्ट जीत, बारबाडोस में वेस्टइंडीज में न्यूजीलैंड की पहली टेस्ट सीरीज जीत, 2018 में इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज जीत को वह कभी नहीं भूलेंगे। वहीं, वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप और भारत और इंग्लैंड के खिलाफ पिछले साल टेस्ट में एक रन की जीत को कभी नहीं भूल पाएंगे।

पाकिस्तान में जूडो प्लेयर की मैच के दौरान मौत

खेलते हुए मैट पर गिरी 20 साल की प्लेयर, सिर पर चोट लगने से जान गई

खैबर पख्तूनख्वा ■ हम हिंदुस्तानी

पाकिस्तान में जूडो टूर्नामेंट के दौरान एक जुडोका की सिर में चोट लगने से मौत हो गई। यह घटना पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में हुई प्रतियोगिता के दौरान की है। 20 साल की फिजा शेर अली को 44 किलो वेट कैटगिरी में मैच के दौरान सिर में चोट लग गई। इसके बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पाकिस्तान जूडो फेडरेशन के एक अधिकारी के अनुसार फिजा शेर पेशावर में बीएस फर्स्ट ईयर की छात्रा थीं। वह मर्दन में जूडो के लिए ट्रायल देने आई थीं। वह इस खेल में नई थीं। मैच के दौरान उनके सिर में चोट लग गई, जिसके बाद वह नीचे गिर गईं। उन्हें तुरंत मेडिलक स्टाफ ने प्राथमिक उपचार दिया और अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। कुछ महीने पहले इस्लामाबाद में भी टेबल टेनिस खिलाड़ी की हो गई थी मौत कुछ दिन पहले, इस्लामाबाद में टेबल टेनिस की प्रतियोगिता के दौरान 16 साल की एक लड़की की हार्ट अटैक से मौत हो गई थी। वह ITF जूनियर टूर्नामेंट में हिस्सा लेने के लिए आई हुई थी।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सूलिया में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया

भवानीमंडी ■ हम हिंदुस्तानी

ब्लॉक भवानीमंडी के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सूलिया में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस प्रधानाचार्य गंगाप्रसाद गुदराशिया के मार्गदर्शन व वरिष्ठ अध्यापिका विज्ञान ऋतु श्री महावर के सानिध्य में मनाया। विद्यार्थियों ने विज्ञान के चार्ट बनाए जिसमें श्वसन तंत्र ,स्वच्छता अभियान पर आधारित चित्र,पुष्प के विभिन्न भाग के चित्र आदि चार्ट बनाए जिन्हें रंग भरकर सजाए गए। विज्ञान दिवस पर ऋतु श्री महावर ने विद्यार्थियों को बताया कि 28 फरवरी को हम प्रतिवर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाते हैं।1986 में आज के दिन को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस घोषित किया था।इस दिन सी वी रमन ने रमन प्रभाव की खोज की घोषणा की थी। इस खोज की स्मृति में साल 1987 में 28 फरवरी को नेशनल साइंस डे मनाए जाने का निर्णय लिया था।उन्हें 1930 में नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। शिक्षक राजेश कुमार शर्मा ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि विज्ञान दिवस मनाने का उद्देश्य वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना है।और विद्यार्थियों को विज्ञान को करियर के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित करना है। जिया प्रजापति कक्षा 6 द्वारा पुशो के विभिन्न भागों पर आधारित चार्ट को प्रथम स्थान मिला। विज्ञान दिवस पर प्रधानाचार्य गंगाप्रसाद गुदराशिया वरिष्ठ अध्यापिका ऋतु श्री महावर शिक्षक राजेश कुमार शर्मा देवी सिंह नागर अध्यापिका प्रीतिबाला जैन गरिमा गौतम मौजूद रहे।

ज्ञान वाटिका संचालन समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष पहुंचे बाड़मेर

बाडमेर ■ हम हिंदुस्तानी

स्थानीय कुशल वाटिका में विश्व का अद्वितीय राजहंस मन्दिर में शनिवार को माताजी म.सा. रतनमाला श्रीजी म.सा. की निश्रा में मेले का हुआ आयोजन हुआ व ज्ञान वाटिका के राष्ट्रीय अध्यक्ष का किया अभिनन्दन। कुशल वाटिका ट्रस्ट के उपाध्यक्ष द्वारकादास डोसी व उपाध्यक्ष रतनलाल संखलेचा ने बताया कि कुशल वाटिका में विराजमान माता म.सा. साध्वी रत्नमाला श्रीजी व साध्वी मण्डल के सानिध्य में कुशल वाटिका में शनिवार को मेले का आयोजन किया गया, जिसमें बाडमेर सहित आस-पास के अन्य गावों से पधारे श्रद्धालुओं दर्शन वन्दन कर पूजा अर्चना की। कुशल वाटिका में मुनिसुव्रत स्वामी भगवान मन्दिर, दादावाडी, नवग्रह मन्दिर, गुरू मन्दिर, देवी-देवताओ के आदि मन्दिरो के केशर पूजा, दर्शन-वन्दन किया गया। डोसी ने बताया कि शनिवार को कुशल वाटिका में मन्दिर प्रांगण में साध्वी मण्डल की निश्रा में प्रात: 08.30 बजे गिरनार भक्त मण्डल द्वारा शंखनाद व ढोल की थाप लय व सुर के साथ भक्ति भावना के माध्यम से मुलनायक भगवान मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिमा का पक्षाल किया गया और विधि-विधान व श्लोक के साथ केशर पूजा व भक्तिमय आरती की गई। कुशल वाटिका ट्रस्ट मण्डल की और से भाता प्रभावना दी गई। कुशल वाटिका सहमंत्री एडवोकेट गौतमचन्द बोथरा ने बताया कि कुशल वाटिका में शनिवार को मुनिसुव्रत स्वामी के पक्षाल का लाभ इन्द्रादेवी कालूचन्द श्रीश्रीमाल परिवार सांचोर व केशर पूजा का लाभ मेवाराम मूलचन्द बोथरा व आरती व मंगल दीपक का लाभ साधार्मिक भक्त द्वारा लिया गया, जिनका ट्रस्ट मण्डल द्वारा अनुमोदना की गई। शनिवार मेले के दौरान कुशल वाटिका ट्रस्ट मण्डल, गिरनार भक्त मण्डल, केयुप, केएमपी, कुशल वाटिका मित्र मण्डल सहित शहर के कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

कोमी एकता पर मंचित हुआ नाटक

जयपुर ■ हम हिंदुस्तानी

अनुपम रंग थिएटर सोसायटी की ओर से संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से आयोजित 2 दिवसीय रंगीला नाट्य समारोह का समापन किया गया। इस दौरान प्रबोध जोशी द्वारा लिखित व वरिष्ठ रंगकर्मी नरेंद्र सिंह बबल द्वारा निर्देशित कौमी एकता पर आधारित नाटक %ईश्वर अल्लाह तेरो नाम% का मंचन किया गया। कलाकारों ने देश के बंटवारे के दर्द को केंद्र में रखा गया। नाटक में मंच पर एक पालघर दिखाया गया, जिसमें ईश्वर, अल्लाह, आईजैक, विनोद और कई अनामी पागल हैं जो आजादी के समय से रहते हैं। ये सभी पागल खाने की दुनिया को बाहर की दुनिया से सर्वश्रेष्ठ मानते हैं, क्योंकि इनके बीच धर्म, जाति, भाषा के नाम पर झगड़े नहीं होते। सभी मिलकर कौमी तराने व देश भक्ति के गीत गाते हैं, प्रार्थना करते हैं, नमाज अदा करते हैं। इनका मानना है कि पागलखाने के बाहर कहने को इंसान तो हैं, लेकिन सही मायने में इंसान कोई नहीं है। यहां सब पागल तो हैं पर सयाना कोई नहीं है। नाटक ने 1947 के बंटवारे के साथ आज के हालातों पर रोशनी डाली। प्रस्तुति में अर्जुन सिंह राठौड़, गौरव त्रिपाठी, विकास सैनी, सोनू शर्मा, महेंद्र शर्मा, नंदा सिंह, दुर्गा प्रसाद सैनी व तरुण सूर्यवंशी आदि ने अपने अभिनय से दर्शकों को बांधे रखा।

नैतिक मतदान हमारा कर्तव्य है-प्रो.शरद नारायण खरे

मंडला ■ हम हिंदुस्तानी

शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो(डॉ)शरद नारायण खरे के मार्गदर्शन तथा डॉ अंजली पंड्या नोडल अधिकारी के संयोजन में मतदाता जागरुकता (स्वीप)के अंतर्गत छात्राओं व स्टाफ को नैतिक मतदान की शपथ दिलाई गई, संकल्प पत्र भरवाए गए,तथा इस संबंध में प्राचार्य प्रो डॉ शरद नारायण खरे द्वारा उन्हें महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। डॉ आराधना दुबे का विशेष सहयोग रहा। डॉ अंजली पंड्या ने आभार प्रदर्शन किया।

इधर भी...

मुस्कान केशरी जी पटना में 'गार्गी अचीवर्स अवार्ड 2024' से सम्मानित हुई

नई दिल्ली ■ हम हिंदुस्तानी

एम एस केशरी पब्लिकेशन की संस्थापिका मुस्कान केशरी को साहित्य और कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु 3 मार्च 2024 को पटना में 'गार्गी अचीवर्स अवार्ड' 2024 से सम्मानित किया गया। मुस्कान केशरी जी बहुमुखी प्रतिभावान लड़की है। इनके बारे में जितना बोला जाए कम ही होगा। मुस्कान केशरी जी हर क्षेत्र में अपना योगदान देती रहती हैं। केशरी जी अभी तक ऑनलाइन व ऑफलाइन लगभग 2000 से अधिक सम्मान से सम्मानित हो चूँकी है और आज राष्ट्र स्तर की समाजसेवी, लेखिका, कवयित्री हैं। मुस्कान केशरी जी द्वारा 5 और 6 जून 2024 को मुजफ्फरपुर बिहार के प्रांगण में 'मुजफ्फरपुर साहित्यिक महोत्सव' कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। जिसमें वो खुद साहित्यकारो को सम्मानित करेगी।

वरिष्ठ साहित्यकार गीतांजलि अरोड़ा कबीर कोहिनूर अवार्ड से सम्मानित

नई दिल्ली ■ हम हिंदुस्तानी

अखिल भारतीय मठ सदगुरु कबीर आश्रम सेवा संस्थान बड़ी खाटू के महंत भारत भूषण डॉ.नानक दास महाराज के सानिध्य में कबीर कोहिनूर अवार्ड समारोह का आयोजन किया गया। राजधानी में जनपथ पर स्थित डॉ.भीमराव अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र सभागार में आयोजित समारोह के अतिथि धरा धाम इंटरनेशनल के प्रमुख एवम मानद कुलपति सौहार्द शिरोमणी डॉ.सौरभ , कबीर समाधि पीठ के पीठाधीश्वर विचार दास जी महाराज ने गीतांजलि काव्य प्रसार मंच की अध्यक्ष,वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गीतांजलि अरोड़ा गीत को कबीर कोहिनूर अवार्ड 2024 से सम्मानित किया। डॉ गीतांजलि अरोड़ा को यह सम्मान उत्कृष्ठ साहित्य सृजन एवम राष्ट्र भाषा हिंदी के संवर्धन व विकास में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। डॉ अरोड़ा को पूर्व में भी साहित्यिक एवम सामाजिक सरोकारों के लिए राष्ट्रीय एवम अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड व उपाधियों से नवाजा जा चुका है। डॉ.अरोड़ा को राजधानी की अनेक साहित्यिक संस्थाओं एवम नामचीन साहित्यिक विभूतियों ने खुशी जाहिर करते हुवे, बधाई प्रेषित की है।

विश्व रिकॉर्ड में सम्मिलित हुए गोण्डा के देहदानी /कवि सुधीर श्रीवास्तव

गोण्डा (उत्तर प्रदेश) ■ हम हिंदुस्तानी

दुनिया के सबसे बड़े कवि सम्मेलन में प्रतिभाग कर विश्व रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करवाकर देहदान की घोषणा कर चुके गोण्डा के वरिष्ठ कवि/ साहित्यकार सुधीर श्रीवास्तव ने शहर का मान बढ़ाया। बुलंदी संस्था द्वारा विश्व हिंदी दिवस से प्रारंभ हिंदी की वैश्विक यात्रा बुलंदी पर हिंदी अनवरत कवि सम्मेलन को हॉवर्ड वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा विश्व रिकॉर्ड में सम्मिलित किया गया है उक्त आयोजन में दुनिया के 55 देशों के हिंदी कवियों सहित 1205 कलमकारो ने प्रतिभाग किया साथ ही यह आयोजन 220 घंटे अनवरत आयोजित हुआ हॉवर्ड वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा सबसे ज्यादा देशों की सहभागिता सहित अनवरत 220 घंटे आयोजित होने पर यह आयोजन विश्व रिकॉर्ड में सम्मिलित किया गया है द्य उक्त आयोजन में काव्य पाठ हेतु गोण्डा निवासी वरिष्ठ कवि सुधीर श्रीवास्तव को संस्था के संस्थापक अंतरराष्ट्रीय कवि बादल बाजपुरी एवं संरक्षक अंतरराष्ट्रीय कवि पंकज प्रकाश द्वारा आमंत्रित किया गया है द्य बुलंदी संस्था ने वर्ष 2021 और 2022 में 207 घंटे और 400 घंटे अनवरत वर्चुअल कवि सम्मेलन आयोजित करवाकर तीन बार विश्व वर्ल्ड रिकॉर्ड बना चुकी है द्यजिससे इंडिया वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज किया गया , बुलंदी संस्था उत्तराखंड के बाजपुर से संचालित होती हैं, जिसका उद्देश्य नवोदित कलाकारों को मंच प्रदान करना है और इसके लिए संस्था निस्वार्थ भाव से कार्य कर रही हैं। बहुत ही कम समय में बड़े -बड़े आयोजन आयोजित करवा कर बुलंदी संस्था ने अपने नाम को सार्थक कर दिया है संस्था का यह तीसरा वर्ल्ड रिकॉर्ड साहित्य जगत की सुर्खियों में बना हुआ है।

विद्या वाचस्पति विशिष्ट सम्मान से सम्मानित हुए कवि अशोक कुमार यादव

राजश्री साहित्य अकादमी छत्तीसगढ़ के द्वारा सरस्वती पूजा, मातृ-पितृ पूजन और बसंत उत्सव विषय के तहत दो दिवसीय ऋतुराज बसंत उत्सव विशेष साहित्य सृजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अकादमी के संस्थापक राजेन्द्र कुमार पाण्डेय राज, अध्यक्ष पंकज जोशी, महानिर्देशक मणिमाला शर्मा, संरक्षक तान्या मिश्रा, महासचिव ज्योति महाजन, संपादक चमन विश्वकर्मा और आयोजिका मीना राज वर्मा हैं। प्रतियोगिता में भारत के अन्य राज्यों के कवि एवं कवयित्रियाँ सम्मिलित हुए। इस प्रतियोगिता में मुंगेली, छत्तीसगढ़ के साहित्यकार-कवि अशोक कुमार यादव जिलाध्यक्ष राष्ट्रीय कवि संगम इकाई, अध्यक्ष यादव समाज सेवा, कला, संस्कृति एवं साहित्य उन्नयन समिति के द्वारा स्वरचित कविता- सुघ्घर बगरे बसंत हे को उत्कृष्ट प्रस्तुति हेतु राज श्री साहित्य विद्या वाचस्पति विशिष्ट सम्मान से सम्मानित किया गया। सम्मान पत्र मिलने पर संगीता यादव, कैलिसा यादव, मोहित कुमार यादव, यशवंत पात्रे, करन टंडन, हरीश सोनवानी, आकाश बंजारे और साहेब दास मानिकपुरी सहित अन्य दोस्तों, परिजनों और कवियों ने शुभकामनाएँ एवं बधाईयाँ दी।

Kids's Special

Sanjeev Jindal
ACE AGENT FINANCIAL LLC
FOUNDER & CEO
FINANCIAL LITERACY & EMPOWERMENT
Phone: 1-646-496-6636
E-mail: jindalsk@gmail.com

प्रेरक-प्रसंग

कम लोगों को पता है भारत के तीसरे राष्ट्रपति की यह बात

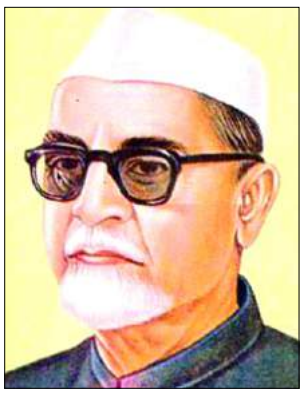

डॉ. जाकिर हुसैन भारत के तीसरे राष्ट्रपति थे जिनका कार्यकाल 13 मई 1967 से 3 मई 1968 तक था। यह बात उनके राष्ट्रपति बनने के पहले की है। जब वह विशेष अध्ययन के लिए जर्मनी गए हुए थे। वहां कोई भी अनजान व्यक्ति दूसरे अनजान को देखकर अपना नाम बताते हुए हाथ आगे बढ़ा देता था। इस प्रकार अपरिचित लोग भी एक दूसरे के दोस्त बन जाते थे। दोस्ती करने का यह रिवाज वहां काफी प्रचलित था। एक दिन जाकिर हुसैन कॉलेज में वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा था। कार्यक्रम का समय हो चुका था। सभी विद्यार्थी व शिक्षक वार्षिकोत्सव के लिए निर्धारित स्थल पर पहुंच रहे थे। जाकिर साहब भी जल्दी-जल्दी वहां जाने के लिए अपने कदम बढ़ा रहे थे। जैसे ही उन्होंने कॉलेज में प्रवेश किया, एक शिक्षक महोदय भी वहां पहुंचे। दोनों ही जल्दबाजी और अनजाने में एक-दूसरे से टकरा गए। शिक्षक महोदय जाकिर साहब से टक्कर होने पर गुस्से से उन्हें देखते हुए बोले, 'इडियट।' यह सुनकर जाकिर साहब ने फौरन अपना हाथ आगे की ओर बढ़ाया और बोले, ''जाकिर हुसैन। भारत से यहां पढ़ने के लिए आया हुआ हूं।''

जाकिर साहब की हाजिरजवाबी देखकर शिक्षक महोदय का गुस्सा मुस्कराहट में बदल गया। वह बोले, ''बहुत खूब। आपकी हाजिरजवाबी ने मुझे प्रभावित कर दिया। इस तरह परिचय देकर आपने हमारे देश के रिवाज को भी मान दिया है और साथ ही मुझे मेरी गलती का अहसास भी करा दिया है।'' वाकई हम अनजाने में एक-दूसरे से टकराए थे। ऐसे में मुझे क्षमा मांगनी चाहिए थी। अपशब्द नहीं बोलने चाहिए थे।

संक्षेप में - अगर क्रोध से भरे हुए व्यक्ति का विनम्रता पूर्वक स्वागत करते हैं तो वह भी पिघल जाता है। इसलिए विनम्रता का गुण अपनाइए।

COMPUTER

Gaurav Sharma

What is Computer

Drawing tools:

Elements does not include several of the commonly used vector-based drawing tools found in Photoshop, like the Pen tool and Paths panel. Elements is mostly limited to photos that use 8-bit mode; it offers very little support for 16- and 32-bit modes, which many photographers use to get even higher-quality photos. However, 8-bit mode still offers a high level of quality—it's actually the mode most digital cameras use—so for many people this will not be a major limitation. Adobe Photoshop Express: Available for iOS, Android, and Windows Phone, this free app allows you to make quick changes to your photos, like cropping and applying simple filters. You can also purchase additional feature packs for a small price. Photoshop CC on iPad: Scheduled for release in 2019, this app will be just as powerful and fully-featured as the desktop version of Photoshop. While Adobe hasn't yet released many details, it will likely require an Adobe Creative Cloud subscription.

(>> Cont.)

पर्यटन

एक बार ताज महल का दीदार करना हर किसी की हसरत होती है

इसके आधार और कास्केट दानों कीमती रत्न पत्थरों से जड़ा गया हैं। आने वाले इसकी खूबसूरती को निहारते रह जाते हैं। मकबरे के सामने परिसर के 980 वर्ग फीट में फारसी चारबाग शैली की मुगल उद्यान बनाया गया है। परिसर के प्रवेश द्वार से मकबरे के आधार तक करीब आधा हिस्से में दो नहरें बनाई गई हैं। इनमें सुंदर फव्वारें एवं पानी के टेंक बनाये गये हैं। जल में मकबरे का प्रतिबिम्ब झिलमिलाता है। उद्यान में चलने के लिए उभरे

-डॉ. प्रभात कुमार सिंघल, कोटा
लेखक एवं पत्रकार

मार्ग बनाये गये हैं। चारों तरफ हरे भरे लान एवं सजावटी फूलदार वृक्ष एवं पौधें उद्यान की शोभा बढ़ाते हें। ताज महल का संपूर्ण परिसर तीन ओर से लाल रंग की बलुआ दीवारों घिरा है एवं मकबरे के पीछे वाला भाग खुला है जिस ओर यमुना नदी बहती है। ताजमहल का मुख्य प्रवेश द्वार भी अपने आप में स्मारक से कम नहीं है। मुगल वास्तुकला में निर्मित द्वार मकबरे के मेहराव की समानता लिये है। इसकी दीवारों पर भी सुलेख नजर आता है। गुम्बददार छत एवं दीवारों में जटिल ज्यामितिय संरचनाएं बनी हैं। इसका निर्माण संगमरमर एवं बलुआ पत्थरों से किया गया है। यह स्मारक बास रिलीफ एवं पीट्रा ड्यूरा पच्चीकारी की पुष्पाकृति से सजजित है। प्रवेश द्वार की भव्यता मन मोहक है। इसके पीछे एक लंबा प्लेटफार्म बनाया गया है जहाँ से संपूर्ण ताजमहल परिसर के सौन्दर्य को सैलानी आश्चर्यचाकित हो कर

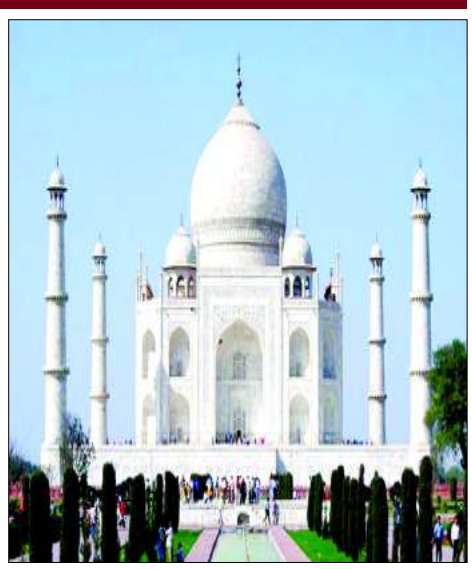

निहारते हैं और विभिन्न रूपाकनों को अपने कैमरों में कैद करते नज़र आते हैं। मुख्य मकबरे के पश्चिम की ओर बलुआ पत्थर से निर्मित एक इमारत मस्जिद है और पूर्व की ओर दूसरी इमारत इसे वास्तु संतुलन देने के लिए बनाई गई हैं जिसका उपयोग अतिथि गृह के रूप में किया जा सकता है। मस्जिद का फर्श कालों संगमरमर से बनाया गया है। भवन के ऊपर तीन गुम्बद बने हैं।

देखो! हंस न देना...

एक आदमी ने अपनी पत्नी को सुबह 9 बजे से बैंक की लाइन में खड़ा करवा दिया और खुद ऑफिस चला गया। शाम को जब वापस आया तो पत्नी से पूछा कि पैसे निकाले या नहीं? तो पत्नी बोली, ''धूप में खड़े-खड़े दो बजे बैंक के दरवाजे में घुसी और तीन बजे कैशियर के सामने पहुँची, मुझे खड़ा कर वो चाय पीने चला गया। फिर आधे घण्टे बाद आया और कम्प्यूटर पर बैठ कर बोला, ''सॉरी मैडम पैसे नहीं हैं।'' पति गुस्सा करता हुआ बोला, ''और तुम पागलों जैसी यूँ ही आ गयी? उनका कुछ नहीं कर पायी? मुझ पर तो आज तक 15 बेलन तोड़ चुकी हो, कम से कम एक बेलन उन पर तोड़ आती, उनको भी तो कुछ मालूम पड़ता।''

पत्नी बहुत ही धीरज से बोली, ''बेलन तो आज एक और टूटेगा। पैसा बैंक में नहीं... तुम्हारे खाते में नहीं था।''

अमेरिका बोला

कश्मीर मुद्दे पर शांति से बातचीत करें भारत-पाकिस्तान

ये कैसे होगी दोनों देश तय करें; मोदी ने शाहबाज को PM बनने की बधाई दी थी

वॉशिंगटन ■ हम हिंदुस्तानी

अमेरिका चाहता है कि भारत और पाकिस्तान के बीच अच्छे संबंध हों। अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने कहा- भारत और पाकिस्तान को कश्मीर मुद्दे पर शांति से बात करना चाहिए। ये बातचीत कैसे करनी है दोनों देश तय करें। हमारें रिश्ते दोनों देशों के साथ हैं, इसलिए हम चाहते हैं कि भारत और पाकिस्तान के रिश्ते भी सुधर जाएं। दरअसल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शाहबाज शरीफ को पाकिस्तान का नया प्रधानमंत्री बनने पर बधाई दी थी। इससे जुड़ा एक सवाल मैथ्यू मिलर से किया गया, जिसके जवाब में उन्होंने कहा कि अमेरिका, भारत और पाकिस्तान के बीच बातचीत का स्वागत करेगा। शाहबाज शरीफ 3 मार्च 2024 को प्रधानमंत्री चुने गए थे। 4 मार्च को राष्ट्रपति भवन में उन्होंने शपथ ली थी। इसके बाद प्रधानमंत्री मोदी ने उन्हें बधाई दी थी। हालांकि, प्रधानमंत्री चुने जाने के फौरन बाद शाहबाज ने कहा था- कश्मीर में लोग मारे जा रहे हैं। इसके अलावा इजराइल लगातार गाजा पर बमबारी कर रहा है। हमें कश्मीर और फिलिस्तीन की आजादी के लिए संसद में प्रस्ताव पास करना चाहिए। मार्च 2021 में तत्कालीन अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता नेड प्राइस ने कश्मीर के मुद्दे पर भारत-पाक को आपस में बातचीत करने की बात कही थी। उन्होंने कहा था- जब भारत की बात आती है तो हमारे बीच वैश्विक व्यापक रणनीतिक साझेदारी है। जब पाकिस्तान की बात आती है तो इस बारे में मैंने पहले कहा था कि क्षेत्र में हमारे महत्वपूर्ण साझा हित हैं। इन साझा हितों पर हम पाकिस्तानी अधिकारियों के साथ मिलकर काम करना जारी रखेंगे। अमेरिका, कश्मीर और अन्य मुद्दों पर भारत और पाकिस्तान के बीच सीधी बातचीत का समर्थन करता है। मार्च 2021 में अमेरिका ने जम्मू-कश्मीर के विकास के लिए हो रहे फैसलों पर भारत सरकार की तारीफ की थी। नेड प्राइस ने कहा था- हम लगातार जम्मू-कश्मीर में हो रहे बदलाव पर नजर रखे हुए हैं। हमारी नीतियां नहीं बदली हैं। भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों के मुताबिक केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आर्थिक और सियासी हालात को पूरी तरह से सामान्य करने के लिए उठाए गए कदमों का हम स्वागत करते हैं।

इमरान जिस जेल में कैद वहां आतंकी हमले की कोशिश

पाकिस्तान की अदियाला जेल में हथियार-ग्रेनेड लेकर घुसे 3 आतंकी

नई दिल्ली ■ हम हिंदुस्तानी

पाकिस्तान की अदियाला जेल में गुरुवार रात आतंकी हमले की कोशिश हुई। यह वही जेल है जहां पूर्व प्रधानमंत्री और PTI लीडर इमरान खान कैद हैं। पाकिस्तानी मीडिया डॉन न्यूज के मुताबिक, अफगानिस्तान के 3 आतंकियों ने अटैक करने की कोशिश की। हालांकि, पुलिस और काउंटर टेररिज्म डिपार्टमेंट ने मिलकर साजिश को नाकाम कर दिया। रावलपिंडी पुलिस के मुताबिक, ष्टञ्जष्ठ ने तीनों आतंकियों को गिरफ्तार कर लिया। आतंकियों के पास से कई हथियार, ग्रेनेड, IED समेत जेल का नख्शा बरामद हुआ है। पुलिस चीफ सैयद खालिद हमदानी ने बताया कि पुलिस और दूसरी एजेंसियां मिलकर जेल के आसपास के क्षेत्र में सर्च ऑपरेशन चला रही हैं। इमरान खान के अलावा इस जेल में पाकिस्तान के पूर्व विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी भी कैद हैं। पाकिस्तान की अदियाला जेल को 1980 के दशक की शुरुआत में तानाशाह जनरल जिया-उल-हक ने बनवाया था। उन्होंने इसी जेल में पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो को भी कैद किया था। हालांकि, तब यह पूरी तरह से बनकर तैयार नहीं हुई थी। पाकिस्तान के राजनीतिक कैदियों को आमतौर पर अदियाला जेल में रखा जाता है। इमरान से पहले इस जेल में पूर्व प्रधानमंत्री युसुफ रजा गिलानी, नवाज शरीफ, उनकी बेटी मरियम नवाज समेत कई बड़े अधिकारी रह चुके हैं। इससे पहले पिछले साल अक्टूबर में भी इमरान खान के वकील ने उनकी जान को खतरा होने की आशंका जताई थी। वकील नईम पंजुथा ने कहा था कि खान को स्लो पॉइजन देकर मारा जा सकता है। कुछ दिन पहले इमरान खान की पत्नी बुशरा बीबी ने भी खुद को अदियाला जेल में शिफ्ट करने की मांग की थी। दरअसल, बुशरा को तोशाखाना से जुड़े एक मामले में 14 साल की सजा सुनाई गई थी। इसके बाद उन्हें इमरान के बनी गाला बंगले में हाउस अरेस्ट में रखा गया था। यहां बुशरा ने अपनी जान को खतरा बताते हुए उसी जेल में भेजे जाने की अपील की थी, जहां इमरान खान कैद हैं।

भारतीय नौसेना ने हूती अटैक के शिकार जहाज को बचाया

नई दिल्ली ■ हम हिंदुस्तानी

भारतीय नौसेना ने एक बार फिर से अदन की खाड़ी में एक कॉमर्शियल जहाज को रेस्क्यू किया है। नेवी के मुताबिक बारबाडोस के फ्लैग वाले लाइबेरिया के जहाज पर हूती विद्रोहियों ने मिसाइल से हमला किया था। इसके बाद जहाज में आग लग गई। इस दौरान 3 क्रू मेंबर्स की मौत हो गई और 6 लोग घायल हुए। भारतीय नौसेना ने इस जहाज पर मौजूद 21 लोगों को बचा लिया है। इनमें से एक भारतीय है। अमेरिकी मीडिया मुताबिक, 'ट्रू कॉन्फिडेंस' नाम के जहाज पर 6 मार्च को हमला हुआ था। ये हूती विद्रोहियों का पहला ऐसा हमला है जिसमें लोगों की जान गई है नौसेना के प्रवक्ता कमांडर विवेक मधवाल ने इस रेस्क्यू ऑपरेशन की जानकारी दी। उन्होंने कहा- जहाज पर हुए हमले की जानकारी मिलने के बाद INS कोलकाता को रवाना किया गया था। इस पर मौजूद हेलिकॉप्टर और बोट की मदद से लोगों को बचाया गया। घायलों का इलाज मेडिकल टीम कर रही है। 2 मार्च को लाल सागर में लगातार हो रहे हूतियों के हमलों के बीच पहली बार कोई जहाज डूब गया था। न्यूज एजेंसी क्क के मुताबिक, हूती विद्रोहियों ने 18 फरवरी को बाब-अल मंडब स्ट्रेट में रूबीमार नाम के जहाज पर मिसाइल से अटैक किया था। इसके बाद जहाज के क्रू मेंबर्स को ब्रिटिश मिलिट्री ने रेस्क्यू किया।

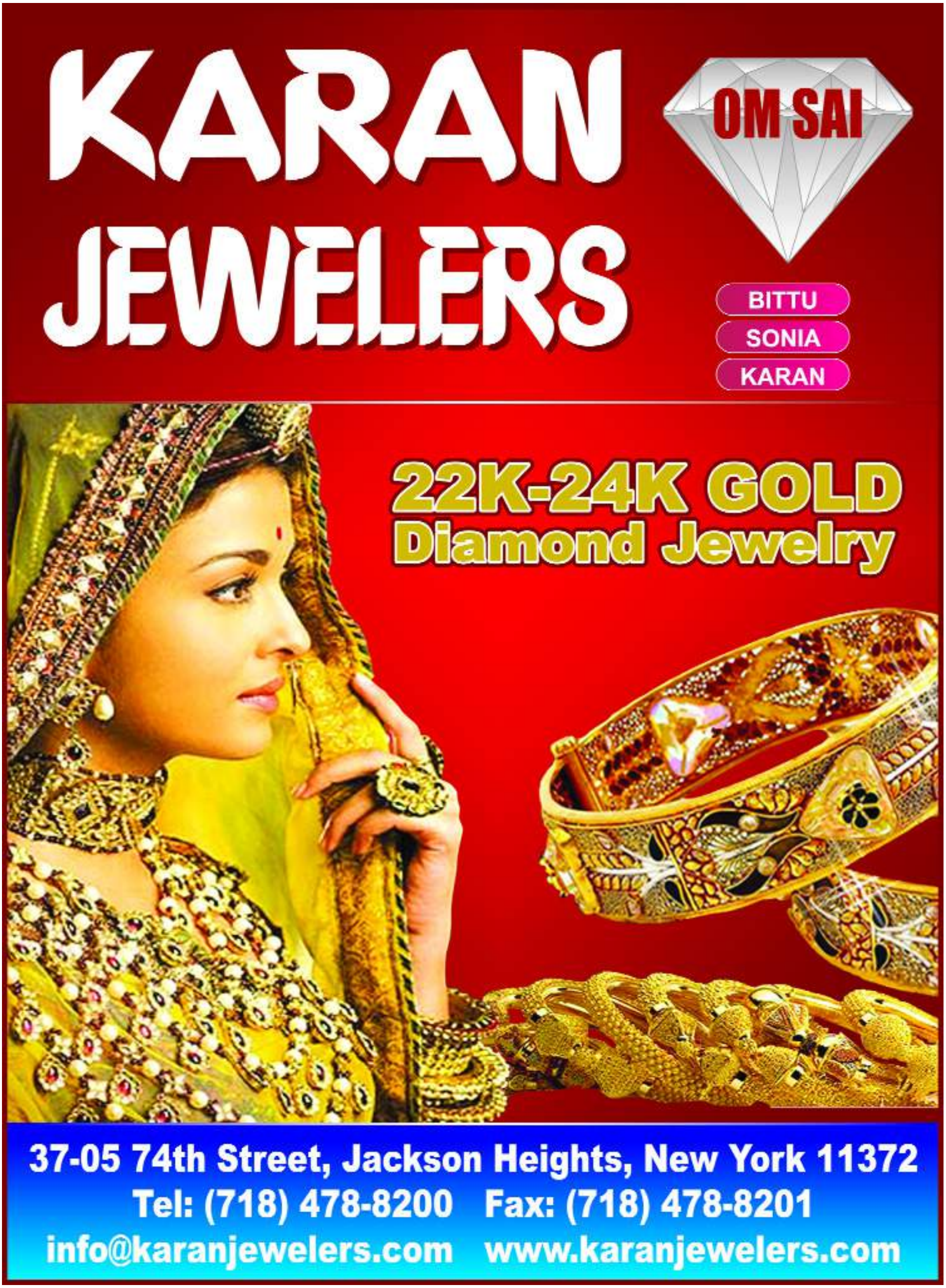
KARAN
JEWELERS
OM SAI
BITTU
SONIA
KARAN
22K-24K GOLD
Diamond Jewelry
37-05 74th Street, Jackson Heights, New York 11372
Tel: (718) 478-8200 Fax: (718) 478-8201
info@karanjewelers.com www.karanjewelers.com

KUNAL Jewelers

22k Bangles, Chains, Rings, Sets, Ear Rings & Jewelry
24K, Karas, Bars, Coins etc.
Diamond Jewelry & Birthstones

Davinder Bittu Verma

Kunal Jewelers

has only one location in jackson heights, NEWYORK

37-08 74th Street, Jackson Heights, NY 11372
Tel. : 718-478-7200, Fax : 718-478-7977

हरियाणा-पंजाब के युवक जबरन रूसी सेना में भर्ती

होशियारपुर का गुरप्रीत बोला- हथियारों की ट्रेनिंग दी, यूक्रेन से लड़ने भेजे; टूरिस्ट वीजा पर गए थे

जालंधर ■ हम हिंदुस्तानी

रूस और यूक्रेन के बीच चल रही जंग में अब भारतीय युवाओं का इस्तेमाल हो रहा है। पंजाब और हरियाणा से टूरिस्ट वीजा पर रूस गए युवकों को धमकी देकर आर्मी में भर्ती करवा लिया गया। इन युवकों को 15 दिन ट्रेनिंग देने के बाद उन्हें यूक्रेन के खिलाफ युद्ध लड़ने के लिए भेज दिया गया। करीब सात भारतीय युवाओं ने रूस से आर्मी की वर्दी पहनकर एक वीडियो शेयर किया था। जारी किए गए वीडियो में 5 युवक पंजाबी और दो हरियाणवी हैं। पंजाबियों में चार युवक दोआबा क्षेत्र के रहने वाले हैं। रूस में फंसे पंजाब के होशियारपुर (दोआबा) के रहने वाले गुरप्रीत से भास्कर की बातचीत हुई तो उसने सारी आपबीती सुनाई। होशियारपुर के गांव हाल्टा के रहने वाले गुरप्रीत ने कहा- हम गलती से घूमते वक्त बेलारूस में घुस गए थे। जहां से हमें पकड़ लिया गया। अगले दिन सभी को वापस रूस आर्मी के हवाले कर दिया गया। दो दिन हमें एक बंद कमरे में रखा गया। तीसरे दिन मुझे और मेरे सभी साथियों को किसी बड़े अधिकारी के ऑफिस में पेश किया गया। सभी अधिकारी रशियन भाषा में बात कर रहे थे, कोई भी अधिकारी इंग्लिश में बात नहीं कर रहा था। सुबह से लेकर शाम तक हमारे साथ अधिकारियों ने बातचीत की। किसी को कुछ समय नहीं आया तो वहां के अधिकारियों ने एक हिंदी बोलने वाले व्यक्ति के साथ उनकी बात करवाई। जिसे वहां की भाषा भी आती थी और हिंदी भी अच्छी तरह से आती थी। हिंदी बोलने वाले व्यक्ति ने हमें बताया कि आप रूस आर्मी जॉइन कर लें। इससे आपको बहुत फायदा होगा। गुरप्रीत ने कहा- हम सभी ने आर्मी जॉइन करने से साफ मना कर दिया था। हिंदी बोलने वाले व्यक्ति द्वारा उन्हें तरह तरह के लालच दिए गए, मगर कोई भी साथी नहीं माना। जिसके बाद उन्हें डराना शुरू कर दिया गया। व्यक्ति ने कहा- अगर वे आर्मी नहीं जॉइन करते तो सभी को दस दस साल की कैद होगी। गुरप्रीत ने कहा- हमने अधिकारियों की मिन्नतें की, मगर कोई भी अधिकारी हमारी एक भी बात सुनने को तैयार नहीं था। दस साल की सजा का नाम सुन कर सभी साथी घबराए हुए थे। इस पर सभी ने सलाह की कि वह एक साल नौकरी करेंगे। अधिकारियों ने वहां की भाषा में लिखा गया कॉन्ट्रैक्ट उनके साथ साइन किया। उनके फोन जमा कर लिए गए थे। सब कुछ होने के बाद उन्हें मॉस्को शिफ्ट कर दिया गया। पहले तो कहा गया था कि उन्हें आर्मी में सिर्फ हेल्पर का काम करना है, ज्यादा कुछ नहीं। करीब सात दिन वह मॉस्को में रहे। जिसके बाद उन्हें एक अन्य कैंप में भेज दिया गया। जहां पर उनकी करीब 15 दिन तक ट्रेनिंग हुई। ट्रेनिंग के दौरान उन्हें उनके फोन मिल चुके थे। ट्रेनिंग खत्म होते ही उन्हें वॉर जोन में भेज दिया गया। जहां अभी जंग चल रही है। जिसके बाद उन्होंने सिम खरीद कर अपनी आपबीती परिवार को बताई और भारत सरकार से मदद के लिए गुहार लगाई।

आंखों के सामने कई भारतीय मारे गए

गुरप्रीत ने कहा- हमारी मांग है कि भारत सरकार हमें जल्द से जल्द वापस लाने का प्रयास शुरू करे। हमारी आंखों के सामने कई भारतीय मारे गए हैं। उनके साथ अभी फिलहाल सात लोग हैं, जिसमें दो लोग हरियाणा हैं और पांच पंजाबी युवक हैं। पिछले कैंप में और भी भारतीय लोग थे, जोकि रूस आर्मी के चंगुल में फंसे हुए हैं। गुरप्रीत के भाई अमृत सिंह ने बताया कि उसका भाई पिछले साल 27 दिसंबर को रूस घूमने के लिए गया था। वह रूस में घूमते-घूमते बेलारूस में घुस गए। जहां उन्हें वहां की पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और रूस की आर्मी के हवाले कर दिया गया। अमृत ने कहा- मेरा भाई को आर्मी ने जंग वाली जगह पर भेज दिया है। अभी वह पूरी तरह से ट्रेंड नहीं है। जिसके चलते उनकी जान को खतरा है। इसलिए मेरा भाई वापस आना चाहता है। अमृत ने कहा- सभी को पैसे के चक्कर में एक टैक्सी ड्राइवर द्वारा फंसाया गया था। उनके पिता खाड़ी देश ओमान की राजधानी मस्कट में हैं। पहला वायरल वीडियो 105 सेकेंड का है। इसमें 7 लोग एक गंदे कमरे में खड़े हैं। उनमें से गगनदीप सिंह नाम का व्यक्ति पूरा मामला बता रहा है। बाकी 6 कोने में छिपे हुए हैं। गगनदीप बताता है कि वे नए साल में रूस घूमने आए थे। एक एजेंट ने उन्हें कई जगहों पर घुमाया। इसके बाद एजेंट ने कहा कि वो बेलारूस ले जाएगा। उन लोगों को नहीं पता था कि बेलारूस घूमने के लिए वीजा लगता है। इसके बाद एजेंट पैसा मांगने लगा। सभी लोगों ने जितने पैसे थे, एजेंट को दे दिए। इसके बाद बाकी पैसे न देने पर एजेंट ने उन भारतीयों को हाईवे पर छोड़ दिया, जहां उन्हें पुलिस ने पकड़कर रूस की आर्मी को दे दिया। दूसरी वीडियो में युवक कह रहे हैं कि रूस की आर्मी ने धमकी दी कि सभी लोग जॉब करने को लेकर एक कॉन्ट्रैक्ट साइन कर लें, नहीं तो उन्हें 10 साल की सजा होगी। इसके बाद आर्मी ने सभी से साइन करवा कर ट्रेनिंग देनी शुरू कर दी। तब जाकर भारतीयों को पता चला कि उनके साथ धोखा हुआ है।

यूक्रेन जंग में हैदराबाद के युवक की मौत

धोखे से रूसी सेना में भर्ती करवाया गया; 13 दिन पहले गुजरात का युवक मारा गया था

नई दिल्ली ■ हम हिंदुस्तानी

रूस-यूक्रेन जंग में हैदराबाद के एक युवक मोहम्मद असफान की मौत हो गई है। यह रूसी सेना में सहायक के रूप में काम कर रहा था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, असफान के परिजनों ने AIMIM नेता और हैदराबाद से सांसद असदुद्दीन ओवैसी से उसे भारत लाने के लिए मदद मांगी थी। रूस के मॉस्को में स्थित भारतीय दूतावास ने असफान की मौत की पुष्टि की है। उसके परिवार में पत्नी और 2 बच्चे हैं। परिवार हैदराबाद में रहता है। भारतीय दूतावास ने कहा है, ''हमें भारतीय नागरिक मोहम्मद असफान के निधन की जानकारी मिली है। हम उनके परिवार और रूसी अधिकारियों के संपर्क में हैं। उनके पार्थिव शरीर को भारत भेजने की कोशिश करेंगे।'' 21 फरवरी को गुजरात के सूरत में रहने वाले हेमिल अश्विनभाई मंगुकिया की यूक्रेन में मौत हुई थी। हेमिल को रूसी कंपनी में नौकरी जॉइन कराई गई थी। बाद में कंपनी ने उसे जंग लड़ने के लिए भेज दिया था। हेमिल को धोखे से वैगनर आर्मी जॉइन करा दी गई थी। मरने से कुछ घंटे पहले हेमिल ने घरवालों से करीब 2 घंटे बात की थी। 5 मार्च को रूस में धोखे से ले जाए गए भारतीयों से जुड़ी एक रिपोर्ट सामने आई थी। इसके मुताबिक रूस में फंसे इन भारतीयों ने विदेश मंत्री एस. जयशंकर से भारत लौटने में मदद करने की अपील की थी। पंजाब के होशियारपुर के रहने वाले 7 लोगों ने इससे जुड़ा एक वीडियो जारी किया था। 105 सेकेंड के वीडियो में 7 लोग एक गंदे कमरे में खड़े हैं। उनमें से गगनदीप सिंह नाम का व्यक्ति पूरा मामला बता रहा है। बाकी 6 कोने में छिपे हुए हैं। गगनदीप बताता है कि वे नए साल में रूस घूमने आए थे। एक एजेंट ने उन्हें कई जगहों पर घुमाया। इसके बाद एजेंट ने कहा कि वो बेलारूस ले जाएगा। उन लोगों को नहीं पता था कि बेलारूस घूमने के लिए वीजा लगता है। इसके बाद एजेंट पैसा मांगने लगा। सभी लोगों ने जितने पैसे थे, एजेंट को दे दिए। इसके बाद बाकी पैसे न देने पर एजेंट ने उन भारतीयों को हाईवे पर छोड़ दिया, जहां उन्हें पुलिस ने पकड़कर रूस की आर्मी को दे दिया। रूस की आर्मी ने धमकी दी कि सभी लोग जॉब करने को लेकर एक कॉन्ट्रैक्ट साइन कर लें, नहीं तो उन्हें 10 साल की सजा होगी। इसके बाद आर्मी ने सभी से हस्ताक्षर करवा कर ट्रेनिंग देनी शुरू कर दी। तब जाकर भारतीयों को पता चला कि उनके साथ धोखा हुआ है।

यूक्रेन जंग, मृत भारतीय के परिजन ने डेथ सर्टिफिकेट मांगा

कहा- नौकरी देने वाले एजेंट्स ने बोला था अफसान जिंदा है, उसने दिसंबर में हमसे बात की थी

नई दिल्ली ■ हम हिंदुस्तानी

रूस-यूक्रेन जंग में हैदराबाद के एक युवक मोहम्मद अफसान की मौत हो गई। अब उसके परिजनों ने भारत में स्थित रूसी ऐंबैसी से उसकी मौत का सबूत मांगा है। अफसान के भाई मोहम्मद इमरान ने ङ्ग पर मॉस्को में भारतीय दूतावास से मौत का सबूत मांगते हुए कहा- हम कैसे मान लें कि अफसान मर गया है। आपके पास कोई सबूत है? रूसी आर्मी ने आपको लिखित में इस बात की जानकारी दी है? रूसी सेना को डेथ सर्टिफिकेट या मौत की पुष्टि करने वाला कोई ऑफिशियल लेटर देना चाहिए। भारतीय मीडिया टाइम्स ऑफ इंडिया को दिए इंटरव्यू में इमरान ने कहा- ऐंबैसी ने फोन करके अफसान की मौत की जानकारी दी थी, लेकिन उसे नौकरी देने वाले एजेंट्स ने कहा कि वो जिंदा है। एजेंट्स ने अफसान के जिंदा होने का सबूत 5 मार्च तक देने की बात कही थी। 6 मार्च को उसकी मौत की खबर मिली। हमें उसके मारे जाने या जिंदा होने का कोई सबूत नहीं मिला है। मोहम्मद इमरान ने कहा- अफसान ने आखिरी बार 31 दिसंबर को हमसे फोन पर बात की थी। इसके बाद से उसका कोई फोन नहीं आया। उसके दो बच्चे हैं। एजेंट्स ने हेल्पर की नौकरी के लिए उसे हायर किया था। कहा था कि 1.5 लाख की सैलरी देंगे, लेकिन रूस पहुंचने के बाद अफसान से कहा गया कि उसे आर्मी के साथ जंग लड़नी होगी। उन्होंने कहा- पहले तो अफसान को धोखे से आर्मी में भर्ती करवाया गया, फिर वहां उसे बिना किसी ट्रेनिंग के जंग लड़ने भेज दिया गया। वो अपनी जान नहीं बचा पाया। अफसान ने कॉमर्स फील्ड में ग्रेजुएशन किया था। वो रूस जाने से पहले हैदराबाद में एक कपड़े की दुकान में काम करता था। अफसान के परिजनों ने AIMIM नेता और हैदराबाद से सांसद असदुद्दीन ओवैसी से उसे भारत लाने के लिए मदद मांगी थी। वहीं, 6 मार्च को रूस के मॉस्को में स्थित भारतीय दूतावास ने अफसान की मौत की पुष्टि की। भारतीय दूतावास ने कहा, ''हमें भारतीय नागरिक मोहम्मद अफसान के मौत की जानकारी मिली है। हम उनके परिवार और रूसी अधिकारियों के संपर्क में हैं। उनके पार्थिव शरीर को भारत भेजने की कोशिश करेंगे।'' 21 फरवरी को गुजरात के सूरत में रहने वाले हेमिल अश्विनभाई मंगुकिया की यूक्रेन में मौत हुई थी। हेमिल को रूसी कंपनी में नौकरी जॉइन कराई गई थी। बाद में कंपनी ने उसे जंग लड़ने के लिए भेज दिया था। हेमिल को धोखे से वैगनर आर्मी जॉइन करा दी गई थी। मरने से कुछ घंटे पहले हेमिल ने घरवालों से करीब 2 घंटे बात की थी। वहीं, 3 मार्च को इजराइल के उत्तरी क्षेत्र गैलीली में हुए मिलाइल हमले में 2 भारतीय घायल भी हुए थे। इसके बाद भारतीय ऐंबैसी ने एडवाइजरी जारी की थी। इसमें दूतावास ने सभी भारतीय नागरिकों को बॉर्डर से दूर और सुरक्षित स्थानों पर जाने की सलाह दी है। साथ ही हेल्पलाइन नंबर भी शेयर किया था। 22 फरवरी की टाइम्स ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक, पहली बार भारतीयों को धोखा देकर यूक्रेन जंग में भेजने की बात सामने आई थी। इसके बाद 29 फरवरी को विदेश मंत्रालय ने बताया था कि रूस में फिलहाल 20 भारतीय नागरिक फंसे हैं और इन्हें निकालने की कोशिश जारी है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, पीड़ित पहली बार नवंबर 2023 में एजेंट्स से मिले थे। एजेंट्स ने हेल्पर की नौकरी के लिए लाखों की सैलरी बताई थी। इसके बाद दिसंबर 2023 में भारतीयों को विजिटर वीजा पर रूस ले जाया गया।

SAAWA

www.saawa.org

SAAWA Institute of Excellence in STEM Program

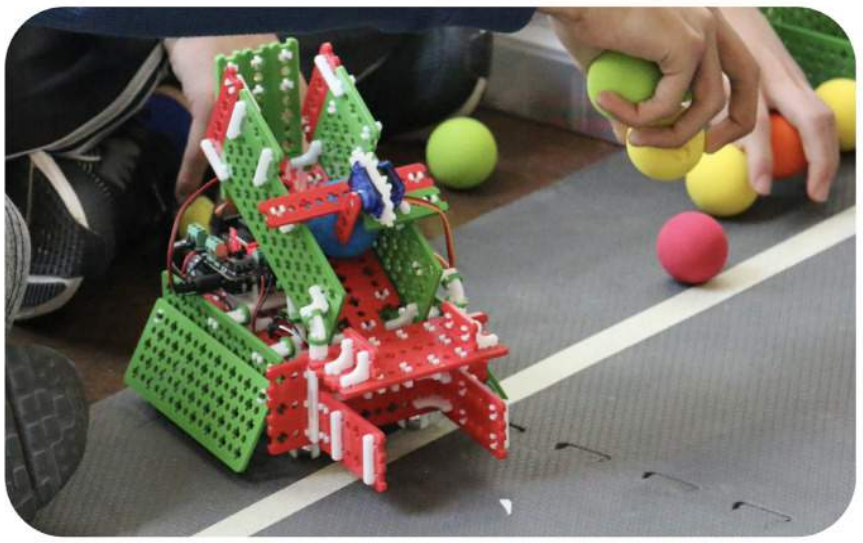

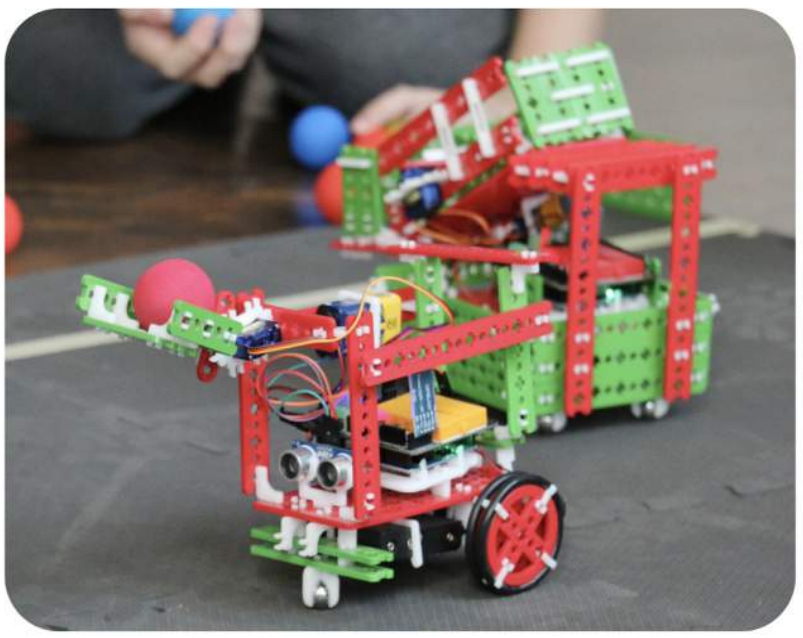

Robotics Engineering Program Summer 2024

In collaboration with SnappyXO

www.snappyxo.com

Learn Mechanical Design, Practical Electronics, and Microcontroller Programming

Each student will receive a SnappyXO Robotics Kit V2 to keep.

SAAWA Robotics Program - Summer 2024

Students in 7-8th grade will learn STEM concepts and the design process in this program. They will apply these skills to design, build and program robots using SnappyXO, a fun, educational robotics platform invented here on Long Island at Stony Brook University.

Scan the QR Code below or click the link to sign up now!

Duration: 2 Weeks, M-F 10am-2pm

Program fee: $550 per student

https://snappyxo.com/robotics-program-2024/

For more info, please contact Professor Subash Midha
subash.Midha@gmail.com

SAAWA SnappyXO®

COMPLETING ONE YEAR,
ALOTUSINTHEMUD.COM IS SET TO GROW
AND CURATE MORE USEFUL CONTENT FOR YOU.

THANK YOU, READERS, DONORS AND SUPPORTERS.

ALOTUSINTHEMUD.COM IS A NOT-FOR-PROFIT ONLINE MAGAZINE FOR WELLNESS, AS WELL AS PERSONAL AND SPIRITUAL GROWTH.
TO GIVE A TAX-DEDUCTIBLE DONATION, CLICK ON THE DONATE BUTTON IN THE FOOTER OF THE WEBSITE, OR CONTACT
PARVEEN CHOPRA - PH: +1 516 710 0508, EMAIL: LOTUS4USA@GMAIL.COM.

Personality of the Week

Vaibhav Gupta

Indian Idol Season -14 Winner

कहते हैं कि अगर कुछ कर गुजरने की दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो कोई भी बाधा सामने नहीं आती है और आखिर में मंजिल अपने-आप ही मिल जाती है। ऐसा ही कुछ दिखाया है वैभव गुप्ता है, जोकि इंडियन आइडल सीजन-14 के विजेता बने हैं। बता दें कि 3 मार्च को हुए इंडियन आइडल-14 के फिनाले में वैभव गुप्ता अपने सभी प्रतिभागियों को पीछे छोड़ते हुए विजेता बने तथा उन्हें इंडियन आइडल-14 के विजेता के रूप में चमचमाती ट्रॉफी एवं 25 लाख रुपए की नकद राशि प्रदान की गई। बता दें कि इंडियन आइडल के फिनाले के प्रतिभागियों में उनके साथ आदया मिश्रा, अनन्या पाल, पीयूष पंचार, शुभदीप दास, अंजना पद्मनाभन शामिल थे...

उत्तर प्रदेश के कानपुर शहर के नाम एक और बड़ी उपलब्धि जुड़ गई है। म्यूजिक के रियलटी शो इंडियन आइडल सीजन-14 का खिताब इस बार कानपुर शाह के नाम आया है। कानपुर के वैभव गुप्ता उर्फ छोटे सेठ जी ने अपनी गायकी की कला एवं जनता में अपनी लोकप्रियता के दम पर सभी को पछाड़ते हुए जीत दर्ज की है। लगभग 5 महीने के उतार-चढ़ाव और कड़ी प्रतिस्पर्धा के बाद 3 मार्च रविवार की रात फाइनल में पहुंचे टॉप-6 प्रतिभागियों में से वैभव को पब्लिक से मिले वोटों के आधार पर विजेता घोषित किया गया। बता दें कि वैभव गुप्ता को यह शोक जीतने के साथ ही 35 लाख रुपए की नकदी एवं एक कार प्रदान की गई जबकि इस फिनाले में कोलकाता के शुभदीप दास चौधरी दूसरे एवं राजस्थान के पीयूष पंवार तीसरे स्थान पर रहे। यहां पर यें भी उल्लेखनीय है कि फाइनल एपिसोड में बॉलीवुड के प्रतिष्ठित गायक सोनू निगम, गायिका नेहा कक्कड़ एवं संगीतकार प्यारे लाल राम प्रसाद शर्मा मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित हुए। वैभव गुप्ता ने इंडियन आइडल सीजन-14 जीतने के बाद पत्रकारों से कहा कि मुझे देश की जनता ने जीता दिया। लोगों को मेरी आवाज पसंद आई, जिसके चलते मुझे जीत मिली। वैभव गुप्ता ने कहा कि शो में जीती हुई राशि से वह मुंम्बई में स्टूडियो बनवाएंगे। मेरा हमेशा से यह सपना रहा कि मुंबई में मेरा अपना स्टूडियो हो। बता दें कि जैसे ही रिजल्ट अनाऊंसमैंट के दौरान गायक सोनू निगम ने वैभव का हाथ पकड़कर उठाया तो कुछ देर के लिए सभी चौंक गए. हालांकि उसके बाद ही वैभव के परिजनों ने वैभव को गले लगा लिया और सभी के खुशी वाले आंसू निकल पड़े। बता दें कि वैभव गुप्ता ने शुरुआत से ही अपनी आवाज से वैभव ने करोड़ों दर्शकों का दिल जीत लिया था। नानकारी शहर के मंटोरा स्कूल में पढ़ने वाले वैभव का शुरू से ही म्यूजिक की तरफ रुझान था। स्कूल में ही उसने क्लासिकल म्यूजिक सीखा। उन्होंने पिता चाहते थे कि 12वीं के बाद वैभव इंजीनियरिंग करे, लेकिन उन्होंने म्यूजिक में ही करियर बनाने का फैसला लिया और वैभव कि किस्मत इतनी अच्छी रही कि 12वीं के तुरंत बाद ही उनका सिलैक्शन इंडियन आइडल के लिए हो गया और वो इस शो के विनर भी बन गए। **(शेष पृष्ठ 39 पर)**

Personality of the Week

Vaibhav Gupta

Indian Idol Season -14 Winner

वैभव गुप्ता ने शुरुआत से ही अपनी आवाज से वैभव ने करोड़ों दर्शकों का दिल जीत लिया था। नानकारी शहर के मंटोरा स्कूल में पढ़ने वाले वैभव का शुरू से ही म्यूजिक की तरफ रुझान था। स्कूल में ही उसने क्लासिकल म्यूजिक सीखा। उन्होंने पिता चाहते थे कि 12वीं के बाद वैभव इंजीनियरिंग करे, लेकिन उन्होंने म्यूजिक में ही करियर बनाने का फैसला लिया..

इंडियन आइडल-14 के विजेता वैभव गुप्ता जिनका जन्म उत्तर प्रदेश राज्य के कानपुर शहर में हुआ था। उन्होंने कानपुर के नानकारी के मंटोरा स्कूल से अपनी 12वीं तक कि पढ़ाई की थी। वैभव गुप्ता 12वीं के बाद इंजीनियरिंग करना चाहते थे, लेकिन बचपन से उन्हें म्यूजिक का शौक था इसलिए वैभव गुप्ता ने म्यूजिक अपना कैरियर बनाने की ठान ली। परिवार ने भी उनका साथ दिया और छोटी मां ने भी वैभव गुप्ता के इस फैसले का स्वागत किया, जिस कारण वैभव के पिता जोकि कानपुर शहर में एक प्रतिष्ठित व्यापारी हैं तथा वह चाहते थे कि उनका बेटा कोई बड़ा काम करे लेकिन वैभव की संगीत की तरफ रूचि व परिवार के कहने के अनुसार वह भी वैभव की स्पोर्ट में आए गए और वैभव की अब मेहनत रंग लाई। वैभव गुप्ता अब इंडियन आइडल-14 के विजेता बन चुके हैं तथा हर कोई उन्हें बधाइयां देने में लगा हुआ है। विजेता बनने के उपरांत वैभव गुप्ता ने कहा कि मैं हर उसे इंसान का आभारी हूं जिसने मुझ पर विश्वास किया चाहे वह जज हो या मेरे चाहने वाले हो या टीम हो जिसने मेरी प्रतिभा को निखारा और मेरे इस सपने को साकार किया। जज और टीम से ज्यादा वैभव गुप्ता ने अपना डैडिकेशन दर्शकों को दिया है। उन्होंने कहा कि दर्शकों के अटूट समर्थन से उनके दृढ़ संकल्प को बढ़ावा मिला है। जिससे मुझे अपना सब कुछ देने के लिए प्रेरित किया। इसके आगे उन्होंने कहा कि मेरी यात्रा को अपनाने के लिए, मेरे लिए वोट करने के लिए, मेरा उत्साह बढ़ाने के लिए धन्यवाद। इंडियन आइडल विजेता वैभव अपनी बात जारी रखते हुए कहते हैं कि 90 का दशक संगीत के लिए सबसे सुरीला दौर रहा है। मैं अपनी गायकी से उसी मिठास को वापस लाना चाहता हूं। आज के युवा किशोर कुमार को फिर से सुनने लगे हैं। (शेष पृष्ठ 40 पर)

Personality of the Week

Vaibhav Gupta

Indian Idol Season -14 Winner

वैभव गुप्ता ने कहा कि मैं हर उसे इंसान का आभारी हूं जिसने मुझ पर विश्वास किया चाहे वह जज हो या मेरे चाहने वाले हो या टीम हो जिसने मेरी प्रतिभा को निखारा और मेरे इस सपने को साकार किया। जज और टीम से ज्यादा वैभव गुप्ता ने अपना डैडिकेशन दर्शकों को दिया है। उन्होंने कहा कि दर्शकों के अटूट समर्थन से उनके दृढ़ संकल्प को बढ़ावा .....

संगीत के साथ नए प्रयोग होने लगे हैं। मैं खुश हूं कि मैं इस दौर का हिस्सा हूं। बता दें कि वैभव के लिए इंडियन आइडल 14 का सफर बेहद रोमांचक रहा है। वे अपने सफर को याद करते हुए कहते हैं कि जब महेश भट्ट आए थे और उन्होंने मेरी गायकी को सुनकर सीटी बजाया था, वह पल मेरे लिए बहुत खास था। मैं अब और बेहतर काम करना चाहता हूं। मैं अपना म्यूजिक वीडियो लाना चाहूंगा जिसका संगीत मधुर हो। मैंने इसके लिए सोचना शुरू कर दिया है। वैभव ने आगे कहा कि मेरे दर्शकों और फैंस ने हमेशा मेरा समर्थन किया है और मैं चाहता हूं कि मैं हमेशा उनका मनोरंजन कर सकूं। वैभव ने अपनी स्ट्रगल की कहानी बताते हुए कहा कि मैं रिजैएक्शन, असफलताओं या असफलताओं के कारण कभी नहीं रोया। मैंने यह सब अपने अंदर रखा और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ा। उन्होंने ये भी कहा कि कि मैं महादेव का भक्त हूं और मैं हमेशा मंदिरों में जाता था और भगवान से इस बारे में बात करता था और शांति और आश्वासन की भावना महसूस करता था कि एक दिन चीजें ठीक हो जाएंगी और मुझे खुशी है कि यह आज हुआ। 'इंडियन आइडल सीजन 14' के विनर कहे जाने पर अपनी खुशी साझा करते हुए वैभव गुप्ता ने कहा कि मुझे खुद को इंडियन आइडल 14 का विनर कहलाना अच्छा लग रहा है। (शेष पृष्ठ 41 पर)

Personality of the Week

Vaibhav Gupta

Indian Idol Season -14 Winner

वैभव ने अपनी स्ट्रगल की कहानी बताते हुए कहा कि मैं रिजैएक्शन, असफलताओं या असफलताओं के कारण कभी नहीं रोया। मैंने यह सब अपने अंदर रखा और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ा। उन्होंने ये भी कहा कि कि मैं महादेव का भक्त हूं और मैं हमेशा मंदिरों में जाता था और भगवान से इस बारे में बात करता था और शांति और आश्वासन की भावना महसूस करता था कि एक दिन चीजें ठीक हो जाएंगी.....

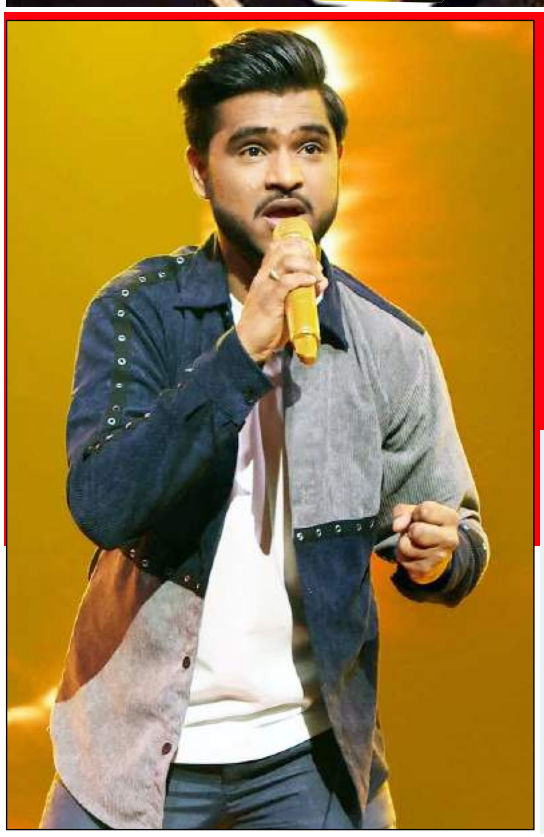

लोगों ने मुझे बहुत प्यार किया है। सपने सच हो रहे हैं, ये तो बस शुरुआत है। भगवान की इच्छा रही तो मैं अब बॉलीवुड में एंट्री करना चाहता हूं। मुझे जो प्यार और सराहना मिल रही थी, उससे मुझे उम्मीद थी कि मैं ये भी कर लूंगा। यहां ये भी उल्लेखनीय है कि शो में शुभदीप और पीयूष को प्रथम और द्वितीय उपविजेता घोषित किया गया। उन्हें ट्रॉफी के साथ 5 लाख रुपए का चैक दिया गया है। वहीं, अनन्या इस शो की तीसरी रनर-अप रहीं। उन्हें ट्रॉफी के अलावा तीन लाख रुपए का ईनाम मिला। बॉलीवुड के प्रतिष्ठित गायक सोनू निगम इस ग्रैंड फिनाले के विशेष जज रहे। उनके अलावा रियलिटी शो 'सुपरस्टार सिंगर' के आगामी सीजन में 'सुपर जज' के रूप में नजर आने वाली नेहा कक्कड़ भी फिनाले एपिसोड में शामिल हुईं। 'प्यारेलाल सिम्फनी' चैलेंज के लिए वैभव ने 1991 के एक्शन क्राइम ड्रामा 'हम' से 'जुम्मा चुम्मा' गाया, जिसमें अमिताभ बच्चन, रजनीकांत, गोविंदा, किमी काटकर और अनुपम खेर ने अभिनय किया था। फिनाले के लिए वैभव ने आखिरी गाना सोनू निगम के साथ 'जोरू का गुलाम' गीत गाया। विजेता का ऐलान सोनू निगम ने किया। शो जीतने के बाद वैभव ने मीडिया से बातें करते हुए कहा कि मैं बेहद खुश हूं और खुशी की इस भावना को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं। मैं अब फिल्मों के लिए गाना चाहता हूं। सलमान और रणवीर मेरे पसंदीदा कलाकार है। मेरा सपना है कि मैं उनके लिए प्लेबैक सिंगिंग करूं। बता दें कि इंडियन आइडल की ट्रॉफी जीतने से पहले साल 2013 में वे वॉइस ऑफ कानपुर का भी खिताब जीत चुके हैं। वैभाव को बचपन से ही सिंगिंग का शौक था। (शेष पृष्ठ 42 पर)

Personality of the Week

Vaibhav Gupta

Indian Idol Season -14 Winner

शो जीतने के बाद वैभव ने मीडिया से बातें करते हुए कहा कि मैं बेहद खुश हूं और खुशी की इस भावना को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं। मैं अब फिल्मों के लिए गाना चाहता हूं। सलमान और रणवीर मेरे पसंदीदा कलाकार है। मेरा सपना है कि मैं उनके लिए प्लेबैक सिंगिंग करूं। बता दें कि इंडियन आइडल की ट्रॉफी जीतने से पहले साल 2013 में वे वॉइस ऑफ कानपुर का .....

स्कूल में ही उन्होंने क्लासिकल म्यूजिक सीखा। हांलाकि, वैभव के घरवाले चाहते थे कि वे एक इंजीनियर बने, लेकिन उन्होंने बचपन से ही एक सिंगर बनने का सपना देखा था, वहीं अज अपनी कड़ी मेहनत और लगन के साथ वैभव ने अपना ये सपना पूरा कर लिया। इंडियन ऑइडल जीतने के बाद अब उनके लिए इंडस्ट्री के दरवाजे भी खुल चुके हैं। वहीं वैभव ने अपनी बेहतरीन गायिकी से हर बार जजेज को इंप्रैस किया है, वहीं इस साल विशाल ददलानी, कुमार सानू और श्रेया घोषाल बतौर ने शो को जज किया. तो वहीं शो के ग्रैंड फिनाले में नेहा कक्कड़ और सोनू निगम बतौर स्पैशल गैस्ट नजर आए। यहां दोनों ने अपने बेहतरीन आवाज से समा बांध दिया। सोनी टी.वी. ने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर वैभव गुप्ता की तस्वीर शेयर की गई है, जिसमें वह विनर ट्रॉफी के साथ नजर आ रहे हैं। कैप्शन में लिखा है, 'इंडियन आइडल सीजन 14 के विनर हैं कानपुर के छोटे सेठ जी– वैभव गुप्ता' शो का विनर बनने पर लोग वैभव गुप्ता को जमकर बधाइयां और शुभकामनाएं दे रहे हैं। साधारण परिवार से आने वाले वैभव नानकारी के रहने वाले वैभव गुप्ता के पिता विष्णु गुप्ता एक व्यापारी हैं। वैभव की लक इतना अच्छा था कि 12वीं के तुरंत बाद ही उनका सिलैक्शन इंडियन आइडल में हो गया और अब वो के विनर भी बन गए। फिनाले के लिए वैभव का आखिरी गाना सोनू निगम के साथ डुएट गीत था। (शेष पृष्ठ 43 पर)

Personality of the Week

Vaibhav Gupta

Indian Idol Season -14 Winner

सोनी टी.वी. ने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर वैभव गुप्ता की तस्वीर शेयर की गई है, जिसमें वह विनर ट्रॉफी के साथ नजर आ रहे हैं। कैप्शन में लिखा है, 'इंडियन आइडल सीजन 14 के विनर हैं कानपुर के छोटे सेठ जी- वैभव गुप्ता' शो का विनर बनने पर लोग वैभव गुप्ता को जमकर बधाइयां और शुभकामनाएं दे रहे हैं....

उन्होंने गोविंदा, टिवंकल खन्ना, कादर खान और जॉनी लीवर की फिल्म का कॉमेडी टाइटल सांग 'जोरू का गुलाम' गाया। वैभव गुप्ता ने कहा कि मेरा परिवार मेरा सबसे बड़ा सपोर्ट सिस्टम है और मेरी सिंगिंग जर्नी के दौरान और किसी भी हालात में उन्होंने मेरा साथ दिया है। मुझे लगता है कि वे मेरी जीत के असली हकदार हैं। आपको बता दें कि जैसे ही गायक सोनू निगत ने शो के विजेता के रूप में वैभव गुप्ता का हाथ उठाया वैसे ही वैभव के पिता एवं छोटी मां की आंखों में आंसू आ गए। वैभव के पिता ने बातचीत करते हुए कहा कि आज उनके बेटे ने उनका नाम रोशन कर दिया। उन्होंने कहा कि पहले सभी बेटे को मेरे नाम से छोटे सेठ के रूप में जाने जाते थे लेकिन अब सभी मुझे इंडियन आइडल विजेता वैभव गुप्ता के नाम से जानने लग पड़े हैं और सभी कहते हैं कि यह हैं इंडियन आइडल विजेता के पिता बडे सेठ जी। बता दें कि वैभव गुप्ता की मां का निधन उस समय हो गया था जब वह बहुत छोटे थे। इसके उपरांत उनका पालन-पोषण उनकी चाची ने ही किया तथा अपने बेटे की भांति उसका पालन पोषण एवं ख्याल रखा। यही कारण है कि वैभव उसे ही अपनी मां कहते हैं। वैभव की छोटी मां ने कहा कि वह आज अपने-आपको को गौरवन्वित महसूस कर रही हैं। वैभव इसी तरह से परिवार का नाम रोशन करते हुए आगे बढ़ता रहे।

'हम हिन्दुस्तानी' की ओर से इंडियन आइडल-14 के विजेता वैभव गुप्ता को उनके उज्ज्वल भविष्य हेतु

हार्दिक शुभकामनाएं

विलुप्त होने से पहले हमें बचा लो : वन्य जीव

-आयुषी दवे

जब हम वन्यजीव या वाइल्डलाइफ शब्द सुनते हैं तो अमूमन हमारे दिमाग में सबसे पहले जंगल और वहां रहने वाले शेर, चीता भालू जैसे बड़े जंगल जानवरों का ख्याल आता है। दरअसल वन्यजीव उन सभी जीवों को कहा जाता है जिन्हें मनुष्यों द्वारा पालतू ना बनाया गया हो. वन्यजीवों में ना केवल जानवर बल्कि वो सभी पेड़ पौधे, कीड़े मकोड़े, कवक और सूक्ष्म जीव भी आते है जो अपने प्राकृतिक वातावरण में बिना मनुष्यों के दखल के रहते हैं। ये वन्यजीव पृथ्वी के हर महाद्वीप और लगभग सभी देशों में पाए जाते है. ये हमारी प्राकृतिक धरोहर का एक बहुत अहम हिस्सा हैं क्यूंकि पृथ्वी में पाए जाने वाले हर पारितंत्रों यानी इकोसिस्टम जैसे वन, रेगिस्तान, घासभूमि, मैदान, पर्वत, समुद्री क्षेत्र में इनकी अच्छी खासी संख्या देखी जा सकती है।

पर्यावरण को संतुलित करने में वन्यजीव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वन्य जीवन प्रकृति की विभिन्न प्रक्रियाओं को स्थिरता प्रदान करता है। प्रत्येक जीवित वस्तु आपस में जुड़ी हुई है। यदि केवल एक जीव भी ख़तरे में पड़ जाता है या विलुप्त हो जाता है, तो इसका पूरे पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव पड़ता है। यह खाद्य श्रृंखला यानी फ़ूड चेन को भी बाधित करता है, जिससे पर्यावरण में सदमे की लहर फैल जाती है। इसीलिए इन वन्यजीवों का संरक्षण बेहद अहम् हो जाता है। इसीलिए इस हेतु विश्व की बहुत सारी सरकारी, गैर-सरकारी संस्थाए निरंतर प्रयासरत हैं। जो सभी अलग-अलग स्तर पर अपने-अपने ढंग से वन्यजीवों को ना केवल संरक्षित कर रही हैं बल्कि अपने तमाम कार्यक्रमों के माध्यम से लोगो में इनके संरक्षण के प्रति जागरूकता भी फैला रही है।

ऐसे ही एक प्रयास के अंतर्गत संयुक्त राष्ट्र महासभा ने अपने 20 दिसंबर 2013 को हुए 68वें सेशन में हर साल 3 मार्च को विश्व वन्यजीव दिवस मनाने की घोषणा की। 3 मार्च की तिथि इसलिए निर्धारित किया गया ताकि इसी दिन 1973 में आईयूसीएन यानी इंटरनेशनल यूनियन फॉर कन्सेर्वटिव ऑफ़ नेचर अर्थात प्रकृति संरक्षण

के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ के 80 सदस्यों द्वारा सीआईटीईएस(साइट्स) समझौते पर हस्ताक्षर किये गए थे।

साइट्स जंगली जीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन सरकारों के बीच एक अंतरराष्ट्रीय समझौता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि जंगली जानवरों और पौधों के नमूनों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से प्रजातियों के अस्तित्व को खतरा न हो। 2013 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की घोषणा के बाद से ही संयुक्त राष्ट्र विश्व वन्यजीव दिवस अब वन्यजीवों को समर्पित वैश्विक वार्षिक कार्यक्रम बन गया है जिसे हर साल 3 मार्च को मनाया जाने लगा। इसमें हर साल वन्यजीव से जुड़े किसी नए विषय या थीम के अंतर्गत मनाया जाता है। इस साल 2024 में इसका विषय है 'लोगों और ग्रह को जोड़ना' वन्यजीव संरक्षण में डिजिटल नवाचार की खोज' इस वर्ष का पूरा एजेंडा इस बात पर केंद्रित रहेगा की कैसे डिजिटल नवाचार और तकनीकों की मदद से हम संरक्षण का काम कर सकते हैं और कैसे मनुष्य और वन्यजीवों के सहअस्तित्व का निर्धारण कर सकते हैं।

विश्व वन्यजीव दिवस का उद्देश्य लोगों को प्रकृति से जोड़ना और उन्हें जानवरो और पेड़ पौधों के संरक्षण के लिए प्रेरित करना है।भारत में भी वन्यजीव संरक्षण की दिशा में बहुत से प्रयास किये जा रहे हैं7 जिसके तहत 1972 में वाइल्डलाइफ प्रोटेक्शन एक्ट नामक सख्त कानून पारित किया गया7 नेशनल पार्क, वन्यजीव अभ्यारण, टाइगर रिज़र्व, हाथी रिज़र्व जैसे बहुत से संरक्षित क्षेत्र भी घोषित किये गए7 समय समय पर इनकी गणना भी की जाती है7 इनकी संख्या बढ़ने के लिए विभिन्न कार्यक्रम जैसे प्रोजेक्ट टाइगर, प्रोजेक्ट एलीफैंट, प्रोजेक्ट राइनो, प्रोजेक्ट स्नो लेपर्ड, प्रोजेक्ट वल्चर आदि चलाये जा रहे हैं7 वन्यजीव और प्रकृति बड़े पैमाने पर भावनात्मक और सामाजिक कारणों से मनुष्यों से जुड़े हुए हैं। वन्य जीवन के महत्व को पारिस्थितिक, आर्थिक और खोजपूर्ण महत्व के साथ-साथ जैविक विविधताओं के संरक्षण आदि के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। एक स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र के लिए विविधता आवश्यक होती है। उदाहरण के लिए पौधों पर विचार करें। पौधों की विस्तृत विविधता का अर्थ है अधिक उत्पादकता और बेहतर स्वास्थ्य। यदि पौधों की प्रजातियाँ कम हैं, तो उन्हें प्रभावित करने वाली बीमारी तेजी से और अधिक प्रभावी ढंग से फैलती है। अधिक विविधता का अर्थ है बेहतर प्रतिरोध।

वर्ल्ड इकनोमिक फोरम की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा वन्यजीव और प्रकृति में माध्यम से आता है। बहुत से लोग अपनी जीविका के लिए कहीं ना कहीं वन और वन्यजीवों पर आश्रित हैं इसीलिए इनका संरक्षण और भी ज्यादा जरुरी हो जाता है। वन्यजीवों का न केवल आर्थिक और सामाजिक महत्व बल्कि सांस्कृतिक महत्व भी है। ये शुरू से ही हमारी सभ्यता और संस्कृति के अभिन्न अंग रहे हैं7 इतना ही नहीं एक बेहतर मानसिक स्वास्थ के लिए भी प्रकृति और वन्यजीवों के करीब रहने की सलाह दी जाती है7

हर जगह लोग भोजन से लेकर ईंधन, दवाएँ, आवास और कपडे तक अपनी सारी जरूरतों को पूरा करने के लिए वन्यजीवन और जैव विविधता आधारित संसाधनों पर निर्भर हैं। प्रकृति हमें और हमारे ग्रह को जो लाभ और सुंदरता प्रदान करती है उसका आनंद लेने के लिए, ये जरुरी है की लोग यह सुनिश्चित करें कि पारिस्थितिकी तंत्र फलने-फूलने में सक्षम हों और पौधों तथा जानवरों की प्रजातियां भविष्य की पीढ़ियों के लिए अस्तित्व में रहने में सक्षम हों।

निश्चित ही इस दिशा में वैसे तो बहुत से काम किये जा रहे है परन्तु पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बनाए रखने के लिए अभी और प्रयासों की आवश्यकता है। जरुरत यह भी कि हम वन्यजीवों के महत्व को समझें, उनका होना एक वरदान समझ कर उनके होने का जश्न मनाएं और उनके संरक्षण की बात को केवल कागजी बात ना मान कर उसे अपनी जीवन शैली का हिस्सा बनाते हुए इस दिशा में निरंतर प्रयास करते रहें और दुनिया भर की सरकारी. गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा किये हुए प्रयासों को सफल बनाने में हम भी अपनी एक सक्रिय भूमिका निभाएं।

लोकसंस्कृति के भगोरिया पर्व का स्वागत करें

आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रो मे भगोरिया पर्व आते ही वासन्तिक छटा मन को मोह लेती है वही इस पर्व की पूर्व से की गई तैयारी से रियाज करने से ढोल ,बांसुरी की धुनों की मिठास कानों मे मिश्री घोल देती है व दिलों मे उमंगो की कशिश पैदा करती है ।व्यापारी अपने-अपने तरीके से खाने की चीजे गुड की जलेबी ,भजिये, खारिये (सेव) पान ,कुल्फी ,केले ,ताड़ी बेचते ,झूले वाले ,गोदना वाले इंतजाम करने मे जुट जाते है। जिप,छोटे ट्रक ,दुपहिया वाहन ,बैलगाडी पर दूरस्थ गाँव के रहने वाले समीप भरे जाने वाले हाट मे सज-धज के जाते है ।कई नोजवान युवक-युवतिया झुंड बनाकर पैदल भी जाते है ।ताड़ी के पेड़ पर लटकी मटकिया जिस मे ताड़ी एकत्रित की जाती है बेहद खुबसूरत नजर आती है ।खजूर ,आम आदि के हरे भरे पेड़ ऐसे लगते है मानों ये भगोरिया मे जाने वालो का अभिवादन कर रहे हो और प्रेम यहाँ प्रस्फुटित होकर संग चलने लगा हो ।वैसे बड़े-बूढ़े सभी इस पर्व का आनद लेते है।

भगोरिया हाट मे प्रशासन व्यवस्था भी रहती है । हाट मे जगह - जगह भगोरिया नृत्य मे ढोल की थाप से धुन - ''धिचांग पोई पोई..卐 जैसी सुनाई देती और बांसुरी ,घुंघरुओं की ध्वनिया दृश्य मे एक चुम्बकीय माहोल पैदा करती है । बड़ा ढोल विशेष रूप से तैयार किया जाता है जिसमे एक तरफ आटा लगाया जाता है ।ढोल वजन मे काफी भारी होता हैजिसे इसे बजाने मे महारत हासिल हो वो नृत्य घेरे के मध्य मे खड़ा हो कर इसे बजाता है ।एक रंग की वेश भूषा ,चांदी के नख से शिख तक पहने जाने वाले आभूषण ,घुंघरू पावों मे हाथों मे रंगीन रुमाल लिए गोल घेरा बनाकर मांदल व ढोल पर बेहद सुन्दर नृत्य करते है ।कई जगहों पर ताड़ी की बिक्री होती है जो की स्वास्थ्य वर्धक पेय है किन्तु पैसों की लालच मे मिलावट कर बेचीं जाने लगी है ।प्रेम, पृक्रति ,संस्कृति,उमंग उत्साह से भरा नृत्य का मिश्रण भगोरिया की गरिमा मे वासन्तिक छटा का ऐसा रंग भरता है की देश ही नहीं अपितु विदेशों से भी इस पर्व को देखने विदेशी लोग आते है इनके रहने और ठहरने के लिए प्रशासन द्वारा केम्प की व्यवस्था की जाने लगी है ।

लोक संस्कृति के पारम्परिक गीतों को गाया जाकर माहोल मे एक जोश का वातावरण भरा जाता है ।

पृक्रति और संस्कृति का संगम हरे भरे पेड़ो से निखर जाता है ।जंगलो के कम होने से व गावों के विस्तृत होने से कई क्षेत्रो मे कम्पौंड के अन्दर ही नृत्य करवाया जाकर भगोरिया पर्व मनाया जाने लगा है भगोरिया पर्व पर उपयुक्त स्थान मे व्यापारियों द्वारा ज्यादा से ज्यादा संख्या मे खाने पीने की चीजो की दुकान लगाना ,छाँव की बेहतर व्यवस्था ,पीने के पानी की सुविधा,झूले आदि की अनिवार्यता होनी चाहिए ताकि मनोरजन के साथ लोक संस्कृति का आनंद सभी ले सके ।शासन द्वारा भगोरिया पर्व पर जहाँ पर जिस रोज भगोरिया बाजार लगता हो उस दिन का स्थानीय अवकाश भी घोषित किया जाना चाहिए ।सांस्कृतिक पर्व भगोरिया की शुरुआत बड़केश्वर मंदिर,से धार जिले में होती है ।झबुआ, आलीराजपुर/धार /खरगोन ,आदि जिलों के गांवों के भगोरिया पर्व लोक गीतों एवम नृत्य से अपनी लोक संस्कृति को विलुप्त होने से बचाते आरहे है । इसका हमें गर्व है।

पहाड़ो पर टेसू
रंग बिखर जाते
लगता पहाड़ ने
बांध रखा हो सेहरा।
घर के आँगन में
टेसू का मन नहीं लगता
उसे सदैव सुहाती
पहाड़ की आबों हवा।
मेहंदी की बागड़ से
आती महक
लगता कोई
रचा रहा हो मेहंदी।
पीली सरसों की बगिया
लगता जैसे शादी के लिए
बगिया के हाथ कर दिए हो पीले।
भवरें -कोयल गा रहे स्वागत गीत
दिखता प्रकृति भी रचाती विवाह
उगते फूल आमों पर आती बहारें
आमों की घनी छाँव तले
जीव बना लेते, शादी का पांडाल
ये ही तो है असल में
प्रकृति के बाराती।
नदियां कल कल कर
उन्हें लोक गीत सुनाती
एक तरफ पगडंडियों से
निकल रही इंसानों की बारात।
सूरज मुस्कुराया
धरती के कानों में धीमे से कहा-
लो आ गई एक और बारात
आमों के वृक्ष तले।

-संजय वर्मा 'दृष्टि ', 125 बलिदानी भगतसिंह मार्ग मनावर (धार) मप्र

व्यंग्य

परीक्षाओं में नकल न होने के 'साइड इफेक्ट'

यूं तो प्रत्येक परीक्षा केन्द्र के बाहर बड़े-बड़े इश्तिहार लगाए जाते हैं, जिन पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा होता है कि परीक्षा में नकल करना पाप है, और यह सामाजिक बुराई है। फिर भी 'रघुकुल रीत सदा चली आई' की तर्ज पर नकल है कि आदिकाल से चलती ही आ रही है। यदि किसी रोज इस 'अपील' का ऐसा असर हो जाए और परीक्षाओं में नकल होना बिल्कुल ही बंद हो जाए, तो इसके कुछ गंभीर दुष्परिणाम भी हो सकते हैं। मसलन, ऐसे कई प्राइवेट स्कूलों को अपना बोरिया-बिस्तर गोल करना पड़ सकता है, जिनमें विद्यार्थी दाखिला ही इस आश्वासन के साथ लेते हैं कि उन्हें शर्तिया पास करवाया जाएगा और इस गारंटी को पूरा करने के लिए परीक्षा केन्द्र अधीक्षक की पैड सेवाएं ली जाती है। दूसरी तरफ नकल बंद होने के कारण आए ख़राब परीक्षा परिणामों के मद्देनज़र गुस्साए अभिभावकों द्वारा सरकारी स्कूलों पर, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में ताले जड़े जा सकते हैं। सरकारी और गैर सरकारी स्कूलों के इस प्रकार धड़ाधड़ बंद होने से पूरी शिक्षा व्यवस्था ही चरमरा सकती है, और विद्या के इन मन्दिरों में तैयार होने वाले समाज के भावी नागरिकों का प्रोडक्शन यकायक बंद हो सकता है। यही नहीं, प्राइवेट स्कूलों में अपना शोषण करवाकर भी जैसे-तैसे अपनी रोजी-रोटी का जुगाड़ कर रहे शिक्षक भी सड़क पर आ जाएंगे, जिससे कि बेरोजगारी के सेंसेक्स पर अभूतपूर्व उछाल आ सकता है। वहीं, सरकारी स्कूलों के शिक्षकों कों ख़राब परीक्षा परिणामों के कारण ख़राब हुई अपनी एसीआर को सुधरवाने के लिए शिक्षा विभाग के अधिकारियों की जेबें गर्म करनी पड़ सकती है, जिससे कि भ्रष्टाचार का ग्राफ तेजी से ऊपर की ओर बढ़ने लगेगा।

विभिन्न परिक्षा केंद्रों के आस-पास फ़ोटोस्टेट की दुकान वालों, मात्र परीक्षाओं के दिनों में ही अपनी जीरोक्सिग मशीन को पूरी लागत से भी कहीं अधिक रकम वसूल कर लेते हैं, को नकल न होने की स्थिति में अभूतपूर्व गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है। नकल करवाने वाले परीक्षा केन्द्र अधीक्षकों एवं इस कुकृत्य में सहयोगी उनके चपरासियों, क्लर्कों, सुपरवाइजरी स्टॉफ आदि को मिलने वाले सुविधा शुल्क एवं उपहारों का सिलसिला बंद होने की स्थिति में अपना सोशल स्टेटस बनाए रखने में काफी दिक्क़तें पेश आ सकती है। इतना ही नहीं, नकल न होने की स्थिति में पर्चियां बनाने जैसी उच्चकोटि की प्राचीनकाल से चली आ रही कला दम भी घुट जाएगा। नकल बंद होने के फलस्वरूप विभिन्न राज्यों के अथवा केंद्रीय शिक्षा बोर्ड, विश्वविद्यालयों के परीक्षा परिणामों में भारी गिरावट आने पर शिक्षा के गिरते स्तर को लेकर लोकसभा, विधानसभा अथवा राज्यसभा में धरना प्रदर्शन, विरोध प्रदर्शन ओर हंगामे जैसी अप्रिय स्थितियां उत्पन्न हो सकती है। मीडिया कवरेज के चलते देश की साख को अंतराष्ट्रीय स्तर पर बट्टा लग सकता है। कहीं भी नकल न होने की स्थिति में परीक्षाओं में फेल होने वाले छात्रों की बढ़ती संख्या के चलते युवा वर्ग में बैचेनी, निराशा एवं कुंठा जैसे नकारात्मक भाव जागृत हो सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आत्महत्या जैसी घटनाओं में बढ़ोतरी हो सकती है। सम्पूर्ण सामाजिक वातावरण तनावग्रस्त हो सकता है।

परीक्षाओं में नकल न होने के फलस्वरूप उपरोक्त दुष्परिणामों को ध्यान में रखते हुए सरकार को चाहिए कि वह नकल को लेकर यथास्थिति बनाए रखे। और परीक्षाओं में नकल रोकने जैसे अभियान को, जैसा कि अब तक होते आया है 'औपचारिक मात्र' बनाकर सिर्फ 'कागजों' तक ही सीमित रखा जाए।

-अंकित सोनी 'आदित्य', गांधीनगर, मनावर, धार (मप्र)

मंथन

प्रत्येक व्यक्ति अपने जन्म के साथ ही कुछ विशेषताएं या गुण ले कर पैदा होता है। कई बार ये गुण बचपन से ही सामने दिखने लगते हैं और कई बार बहुत देर तक इन गुणों की पहचान व्यक्ति के माता-पिता या समाज द्वारा नहीं हो पाती है। अनेकों लोग ऐसे हैं जिन्हे बचपन में ही अगर सही मार्गदर्शन मिल जाता है तो वो अपनी इन विशेषताओं के कारण समाज में अपनी एक पहचान बना लेते हैं अन्यथा कहीं गुमनामी में खो जाते हैं और समाज में किसी प्रकार का कोई योगदान नहीं दे पाते।

व्यक्ति सही समय पर उपलब्ध कराये गए सही अवसर का उचित प्रयोग कर पाये इसके लिए शुरू से ही एक सही सलाहकार या मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है और यह सलाहकार एक अध्यापक,मित्र,माता-पिता या समाज का कोई भी व्यक्ति हो सकता है। यूं तो बच्चे की प्रतिभा को सामने लाने के लिए माता-पिता न जाने कितने पापड़ बेलते हैं। लेकिन हमारे समाज में कुछ लोग ईर्ष्या व अज्ञानता के कारण इन प्रतिभाओं को सामने नहीं आने देते व इन्हें दबा देते हैं। परिवार में ही अनेक रिश्तेदार,जान-पहचान वाले लोग ही बच्चे को अपने कटाक्षों द्वारा हतोत्साहित करते हैं। दुर्भाग्यवश आगे बढ़ने के लिए आज आपके पास पैसा,चाटुकारिता,जान-पहचान,रौब,सत्ता,ताकत जैसे गुणों का होना आवश्यक है व समाज के लगभग सभी क्षेत्रों में अनेकों ऐसे समूह हैं जो इन सभी गुणों को तरजीह देते हैं और अपना एक तरफ़ा साम्राज्य स्थापित कर चुके हैं। इन समूहों से जुड़े लोग अपने हिस्से व उम्र की सभी उपलब्धि व उपाधियाँ प्राप्त कर चुके होते हैं लेकिन ये अपनी जगह से टस से मस भी नहीं होते। इनके गढ़ में सेंध लगाना नामुमकिन है और अगर आप इन समूहों से सम्बंधित किसी मंच पर अपनी प्रतिभा दिखाने का प्रयास करते भी हैं तो इस प्रकार के समूह आपको या आपके बच्चे को आगे बढ़ने के लिए अवसर नहीं देते।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी प्रतिभा सबके सामने आये तो इसके लिए आपके पास भी इन समूहों की विशेषताएं या गुण होने चाहिए। ऐसा अमूमन सभी क्षेत्रों में सभी प्रतिभाशाली लोगों के साथ होता है। उदाहरण के लिये लिखना एक विशेष कला या गुण है जहाँ लेखक विचारों के रूप में ईश्वर द्वारा भेजे गये बेहतरीन शब्दों व भावों को कोरे कागज़ पर उकेरता है। आज के समय का एक कड़वा सत्य यह है कि आज बेहतरीन यानि उम्दा शब्द लिखने वाले अपनी वजनी रचना को लिये पानी के नीचे कहीं दबे रहते हैं और उछले व दोयम दर्जे की शब्द माला लिये एक विशेष समूह पानी पर तेल की तरह तैर रहा है। यह समूह कभी उम्दा लेखनी को ऊपर नहीं आने देता। केवल वही व्यक्ति जो इस समूह की विशेषताएं रखता है या अपने जीवन मूल्य व सिद्धांतों को रौंदने की हिम्मत रखता है इनके साथ पानी पर तैर सकता है।

इसीलिये बहुधा यही देखने को मिलता है कि उम्दा कलाकार या हुनरमंद व्यक्ति सफलता के लिए अपने ऊसूलों व ईमानदारी को प्राथमिकता देने व इन समूहों से गुरेज करने के कारण तमाम जिंदगी गुमनामी व मुफलिसी में ही गुजार देता है। आज वास्तव में समाज में ऐसे मार्गदर्शकों, सलाहकारों व पारखी लोगों की आवश्यकता है जो अपने स्वार्थ या प्रसिद्धि को परे रख खुले दिल से विभिन्न क्षेत्रों में नई कपोलों को फूटने का अवसर दें जिससे ये प्रतिभाएं समाज में अपनी खुश्बू फैला सकें व देश की सेवा कर सकें।

इसके लिए जीवन के अनेकों संघर्षों व खट्टे-मीठे अनुभवों के साथ सफलता प्राप्त करने वाला व ज़मीनी हकीकत से जुड़ा व्यक्ति ही प्रतिभाशाली बच्चों व उम्दा या हुनरमंद लोगों के गुणों की पहचान कर सकता है तथा उन्हें आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है बशर्ते वो इन पानी पर तैरते समूहों के गुणों से परहेज करता हो व भली भांति मंथन करना जानता हो।

-दीपा डिंगोलिया , स्वतन्त्र लेखिका व अध्यापिका , दिल्ली

पॉलीथीन... आयुष्मान भवः ...

-डॉ. प्रदीप मिश्र, डी-1 रामविहार, सतना म.प्र.

एक समय था जब हमारे पिताजी कपड़े का थैला या कहें झोला लेकर दफ्तर जाते थे और शाम को लौटते वक्त सब्जी, किराना वगैरा उसी झोले में लेकर आते थे। इन्क्रीमेंट या डीए के एरियर्स मिलते, तो उस झोले में मिठाई भी होती थी। दफ्तर जाते वक्त नियम से कपड़े का एक झोला उनके साथ होता। साइकिल के कैरियर में हिफाजत से दबाया जाता था उसे। माँ अपनी बहुत पुरानी साड़ी से वह झोला बनाती। हमारी माँ की साड़ी कई रुप लेती थी- पहले तो वह निश्चिततौर पर साड़ी ही होती , फिर वह जरुरत के मुताबिक कभी छोटी बहन की फ्राक या बड़ी बहन का कुर्ता बन जाती तो कभी पर्दे की शक्ल में दरवाजे पर टँग जाती। हमारे घर में चादर कभी अलग से नहीं आई, बस जब जरुरत पड़ी, माँ की साड़ी का इस्तेमाल कर लिया। साड़ी, धुलने से पहले हमें टॉवेल का सुख भी देती थी।

जिस मुहल्ले में हम रहते, उसमें सभी लोग ऐसे ही थे-पिताजीनुमा, एकदम झोला छाप। झोला साथ न हो तो कोई बाजार नहीं करता था। हर घर में दो-चार झोले अनिवार्य रुप से होते थे, वरना बाजार से सामान कैसे आएगा? जो गरीब होते उनके झोले साड़ी आदि से बने थिगड़े लगे, मैले-कुचैले होते और अमीरों के झोले अच्छे कपड़ों के मजबूत क्वालिटी वाले होते। गरीबों से लेकर मध्यम वर्ग तक के लोग, अपना झोला खुद उठाते जबकि अमीरों के झोले उनके नौकरों के हाथों में होते। माँ भी जिस दिन बाजार जाती, कुछ मजबूत बेटे या बेटियों को साथ ले जाती। वजह सिर्फ झोला उठाना होती।

अब ऐसा नहीं होता। पिताजी जैसे क्लर्क, शिक्षक आदि तो अब भी हैं, साइकिलें भी हैं। गरीबी और मजबूरियाँ भी हैं, पर कपड़े का थैला गायब हो गया है-एकदम गायब हो गया है। अब कोई पिताजीनुमा इंसान दफ्तर के लिए निकलते हुए, साइकिल में कपड़े का थैला नहीं टाँगता, पर बाजार से भरपूर सामान लाता है- सब्जी-तरकारी, फल, किराना, अनाज, मिठाई, दवाई, टीवी, फ्रिज.....और भी बहुत कुछ या कहें सारा कुछ।

पन्नी में आता है सारा सामान। बाजार से आसमान या धरती भी खरीद कर लाना हो, तो हिन्दुस्तानी पन्नी का ही इस्तेमाल करेगा। पन्नी को अंग्रेजी में पॉलीथीन कहा जाता है। चीनियों और जापानियों ने पॉलीथीन का अपनी जुबान में अनुवाद कर लिया है, वे नहीं पता इसे क्या कहते हैं, पर जो भी कहते हैं अपनी जुबान में कहते हैं। हम हिन्दी वाले भी कमजोर नहीं हैं, हम इसे पन्नी कहते हैं। पन्नी कहने पर पढ़ाकू हँसते हैं- अन-सांईटिफिक लेंगुएज का इस्तेमाल करने वाले उन्हें बेवकूफ लगते हैं। मुँह बनाकर पॉलीथीन कहने वाले ही उन्हें भाते हैं। फिर वे ही पढ़ाकू, पन्नी का रुप धारण किए पॉलीथीन में भरकर, बाजार से सामान खरीद, घर आ जाते हैं और सामान को हिफाजत से रखने और पॉलीथीन को कचरे डिब्बे में, जानवरों के भोजन के लिए, जमीन को बंजर बनाने के लिए, बीमारियाँ फैलाने के लिए..... फेंकने के बाद, पॉलीथीन के नुकसान पर लेक्चर देने, कांफ्रेंस में चले जाते हैं।

जब जर्मन के कीमियागार हेन्स वोन पेचमेन ने पॉलीथीन बनाया तो उसने सोचा भी न था कि वह क्या बना रहा है। उसे पता होता कि वह इंसानियत के लिए मुश्किल पैदा करने का सामान इजाद कर रहा है, तो वह कई मरतबा सोचता कि अचानक बने इस पदार्थ को आगे बनाना जारी रखूँ या नहीं। उसने तो समाज के भले के लिए एक यौगिक बनाया, फिर उसे वात्सल्य भरी नजरों से देखा और उसके मुँह से बरबस निकल पड़ा, 'आयुष्मान भव.....!'

पॉलीथीन को उस महान् वैज्ञानी ने, यह भस्मासुरी वरदान दिया था। एक तरह से भगवाननुमा बन गया पॉलीथीन। उसकी आयु इतनी थी कि उसे अजर-अमर कहा जा सकता था। वह पानी में न तो घुलता था, न डूबता था। अग्नि भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी। उसे करंट भी नहीं लगता था। वह गर्म भी नहीं होता था। अब जब सर्वगुण संपन्न और गृह कार्य में दक्ष यह पदार्थ संसार में आ ही गया तो उसके तरह-तरह के उपयोग गढ़ लिए गए। प्लास्टिक के रुप में वह 'छा गए गुरु' वाली कंडीशन में आ गया।

अद्भुत पदार्थ है पॉलीथीन। जहाज, राकेट, पनडुब्बी, कार, स्कूटर, साइकिल, बिजली के स्विचों, कूकरों के ढक्कनों,प्लास्टिक और नामालूम क्या-क्या, से लेकर पन्नी बनाने तक में, इसने बहुत लंबा सफर तय कर लिया, तो अब यह हमारी लत् बन गया है। ऐसी लत् जो महामारी बन चुकी है। इसे महामारी का दर्जा इसके गुणों-अवगुणों की वजह से नहीं, बल्कि इंसानी चरित्तर की वजह से मिला है। एटम बम भी इंसानी चरित्तर की वजह से ही बदनाम हुआ है। फ्लुरोकार्बन और कार्बन डाई-ऑक्साईड भी मुश्किल में पड़े हैं।

कहते हैं ज्ञानियों ने क्षणभंगुर किस्म का पॉलीथीन तैयार कर डाला है- बायो डिग्रेटेबिल पॉलीथीन। अल्पायु होगा यह पॉलीथीन। अब आदमी की नहीं, बल्कि आविष्कार की आदत बदली जाएगी। नया पॉलीथीन इसलिए कि इंसान अपनी आदतें नहीं बदल रहा है-वह इसका बेजा इस्तेमाल करने पर उतारु है...। कैसी विचित्र बात है न ?अल्पायु पॉलीथीन भी आने चाहिए, पर इसकी वजह इंसानी बौड़मपना नहीं होना चाहिए।

मैं उस दिन के इंतजार में हूँ जब लोग साइकिल (जी हाँ साइकिल?) में कपड़े का थैला दबाकर काम पर जाते और आते मिलेंगे।

सार्वजनिक स्थलों पर मोबाइल फोन चार्ज करना आपको पड़ सकता है महंगा

हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक ने सार्वजनिक पोर्ट का उपयोग करके मोबाइल फोन चार्ज करने के खिलाफ चेतावनी जारी की थी। जूस जैकिंग एक प्रकार का साइबर हमला है जहां हैकर्स सार्वजनिक यूएसबी चार्जिंग पोर्ट के साथ छेड़छाड़ करते हैं , उन्हें मैलवेयर से संक्रमित करते हैं या हार्डवेयर परिवर्तन करते हैं जो उन्हें उनसे जुड़े उपकरणों से डेटा चोरी करने की अनुमति देते हैं।

अधिकांश हमले एंड्रॉइड और आईओएस दोनों मोबाइल उपकरणों को लक्षित करते हैं , पुराने डिवाइस अपने पुराने सॉफ़्टवेयर के कारण विशेष रूप से असुरक्षित होते हैं।

जब उपयोगकर्ता अपने उपकरणों को समझौता किए गए यूएसबी पोर्ट से कनेक्ट करते हैं, तो हैकर्स कनेक्शन का उपयोग मोबाइल उपकरणों को हैक करने और ईमेल, एसएमएस और सहेजे गए पासवर्ड जैसे व्यक्तिगत डेटा चुराने या फोन तक पहुंच प्राप्त करके मैलवेयर वितरित करने के लिए करते हैं।

-रवि रंजन , 8700146743 , नई दिल्ली

लघुकथा

हाथी के दाँत

''दिनेश! क्या तुम रासबिहारी को जानते हो?'' सुरेश ने प्रश्नात्मक लहज़े में पूछा

''हाँ,वह तो माँ काली का परम भक्त और बड़ा ही धर्मऽ.....''

इससे पहले कि दिनेश धर्मात्मा शब्द को पूरा बोल पाता सुरेश बीच में ही बोल पड़ा-''काहे का धर्मात्मा ?क्या तुम्हें पता है उसने अपने गाड़ी-बँगला कैसे अर्जित किये?''

''नहीं'' दिनेश ने संक्षिप्त-सा ज़वाब दिया।

''जानना चाहोगे?'' सुरेश ने छोटा-सा सवाल दागा

''हाँ'' दिनेश ने पुन: संक्षिप्त उत्तर दिया।

''अरे भाई! रासबिहारी एक छोटी-सी कम्पनी में जॉब करता था,वह जिसके साथ काम करता था उसने रासबिहारी को सारा काम सिखाया यहाँ तक कि दोनों? ने मिलकर एक बैगनार कार भी ख़रीद ली...''

इससे पहले कि सुरेश अपनी बात पूरी कर पाता दिनेश भी बीच में ही बोल पड़ा, 'हाँ, अच्छा तो है,इसमें उसके धर्मात्मा होने पर संदेह कैसे किया जा सकता है?''

''अरे भाई !पूरी बात तो सुनो !वह जो रासबिहारी के साथ काम करता था उसका नाम गौरव था और उसने ही बैगनार ख़रीदने में पूरी राशि व्यय की,सिर्फ़ काग़ज़ात रासबिहारी के नाम के थे''

''तो,इसमें क्या?'' दिनेश पुन: बीच में ही पूछ बैठा।

''तो क्या ?एक दिन वह भी आया जब दोनों के कारोबार अलग-अलग हो गये ।रासबिहारी ने बैगनार गाड़ी हड़प ली और उसका एक रुपया भी गौरव को नहीं दिया।'' सुरेश ने कहा

''अच्छा!'' दिनेश ने अचरज भरी नज़रों से देखते हुए कहा।

''हाँ,आज रासबिहारी बातें तो बड़ी भक्तिपूर्ण व धर्म-कर्म की करता है,पर जैसे ही उसका सामना गौरव से होता है तब उससे वह अपनी दृष्टि तक नहीं मिला पाता।'' सुरेश ने कहा

''शायद! इसे ही कहते हैं-हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और?'' दिनेश के ऐसा कहते ही वातावरण में चुप्पी पसर गयी।

-सतीश तिवारी 'सरस', नरसिंहपुर (म.प्र.)

सरकार ने वर्ष 2024-25 के लिए 89 करोड़ रुपए का बजट प्रस्तुत किया

हम हिन्दुस्तानी/ओम प्रकाश उनियाल

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने आज उत्तराखण्ड विधानसभा में प्रस्तुत बजट को समग्र, समावेशी, संतुलित और विकासोन्मुखी बताया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने विकसित भारत के चार स्तंभ, गरीब, युवा, महिला और किसान बताए हैं। आज प्रस्तुत बजट इन्हीं को समर्पित है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने वर्ष 2024-25 के लिए 89,230 करोड़ रुपए का बजट प्रस्तुत किया। जो पिछले वर्ष से 15.27 प्रतिशत अधिक है।औद्योगिक विकास और रोजगार को बढ़ावा देने के लिए हमारी सरकार ने 30 से अधिक नीतियां बनाई हैं और इसके सकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिल रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखंड की आर्थिक विकास की दर वर्ष 2022-23 में 7.63 प्रतिशत रही है। जो राष्ट्रीय औसत से अधिक है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2023-24 में भी लगभग यही दर अनुमानित है।मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी प्रति व्यक्ति आय में 12 प्रतिशत वृद्धि हुई है। वर्ष 2023-24 में प्रति व्यक्ति आय 2 लाख 60 हजार 201 रुपए रही। मुख्यमंत्री ने कहा कि नीति आयोग द्वारा जारी बहुआयामी गरीबी सूचकांक के अनुसार प्रदेश के 9 लाख 17 हजार 299 लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि गरीबों के कल्याण के लिए बजट में 5658 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। इसमें गरीबों के आवास के लिए 93 करोड़, खाद्यान्न आपूर्ति में 600 करोड़ और निशुल्क गैस रिफिल में 55 करोड़ रुपए की राशि शामिल है। उन्होंने कहा कि युवा कल्याण, तकनीकी शिक्षा और उच्च शिक्षा में कुल 1679 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। इसमें राष्ट्रीय खेलों के आयोजन के लिए 250 करोड़ रुपए भी शामिल है। मुख्यमंत्री अल्पसंख्यक मेधावी बालिका प्रोत्साहन योजना के लिए भी बजट में प्रावधान किया गया है। युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित करने पर भी ध्यान दिया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसान भाइयों के लिए बजट राशि को बढ़ाया गया है। वर्ष 2024-25 में कुल 2415 करोड़ रुपए का प्रावधान रखा गया है। इसमें दीनदयाल उपाध्याय सहकारिता किसान कल्याण योजना, मिशन एप्पल, किसान पेंशन, मुख्यमंत्री मत्स्य संपदा योजना पर विशेष ध्यान रखा गया है। उन्होंने कहा कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में जेंडर बजट में लगभग 14,538 करोड़ रुपए का प्रावधान रखा गया है। नंदा गौरा, मुख्यमंत्री महालक्ष्मी योजना, मुख्यमंत्री वात्सल्य योजना, गंगा गाय महिला डेयरी विकास योजना आदि में प्रावधान किए गए हैं।

चरित्र और हम

हमारा चरित्र ही हमारा सबसे बड़ा धन है, वैसे चाहे हमारे पास कितनी भी संपत्ति हो कितने भी हीरे जवाहरात हो जायदाद हो पर यदि चरित्र नही है तो सब व्यर्थ है। जो व्यक्ति निजी जीवन में कर्तव्यपरायण, सत्यनिष्ठ,स्नेहशील, सामाजिक जीवन में शिष्टता,लोगो के प्रति अगाध स्नेह धर्म के प्रति श्रद्धावान होता है वही चरित्रवान कहलाता है ना कि धनवान या कोई बड़ा पदाअधिकारी। एक बात और चरित्रवान की बात को हर कोई प्रमाणिक मानता है और उस पर चलना चाहता है। चरित्र के बल पर हम अनेकों कठिनाइयों को दूर कर सकते हैं सफलता प्राप्त कर सकते हैं उदाहरणार्थ जापान को ही ले लीजिए जिसने दो-दो विश्वयुद्ध झेले परमाणु हमलों में अपना सब कुछ गवां दिया लेकिन वहां के चरित्रवान नागरीको के बल पर आज वह देश विकसित देशों की श्रेणी में आ खड़ा हुआ है जानते हैं क्यों क्योंकि वहां का हर नागरिक सत्यता से कार्य करता है समय पर आना समय पर लौटना कार्य-समय में अपना कार्य पूरी तन्मयता और निष्ठा से पूर्ण करके ही घर जाता है वहां भ्रष्टाचार का नामो निशान नहीं है सभी लोग अपने राष्ट्र के प्रति, परिवार के प्रति अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित हैं तभी जापान आज पूरे विश्व में एक उदाहरण बनकर उभरा है। यदि हम चरित्रवान हैं हम निष्ठावान हैं तो समझिए हम संसार के सबसे अधिक धनी और सफल व्यक्ति हैं। अत: हमे अपने साथ ही अपनी अगली पीढ़ी को भी चरित्रवान बनाने का भरसक प्रयत्न करने चाहिए।

-डॉ.शिवदत्त शर्मा शिव, जयपुर राज.

स्वदेशी राज्य के सर्वप्रथम उद्घोषकर्ता

महर्षि दयानन्द सरस्वती

अंग्रेजों ने भारत को परतंत्रता की जंजीर में जकड़े रखने के लिए, भारतीयों को दासता की बंधन में बांधे रखने के लिए, भारतीयता को विनष्टता के कगार पर पहुँचा देने के लिए 1857 की स्वाधीनता संग्राम के पूर्व से ही भारतीयों पर दमन चक्र चलाना आरंभ कर दिया था, जो 1857 के पश्चात और भी तेज हो गया। उस काल में अंग्रेजों के द्वारा भारतीयों की आत्मा को बर्बर तरीके से कुचला गया, ताकि भारतीयों के मन में अंग्रेजों के विरुद्ध पुन: संघर्ष करने का विचार सपने में भी उत्पन्न न हो सके। लेकिन मुंबई की मोरवी रियासत के समीप गुजरात के राजकोट जिला अंतर्गत काठियावाड़ क्षेत्र में पिता कृष्ण (करशन) लालजी तिवारी और माता अमृता बाई (अम्बा बाई) के घर 12 फरवरी 1824 को जन्मे महर्षि दयानन्द सरस्वती (1824-1883) ऐसे क्रांतिकारी सन्यासी थे, जिन्होंने अंग्रेजों के उस दमन काल में साहस पूर्वक विदेशी राज्य का विरोध करते हुए सर्वप्रथम 1876 में स्वराज्य का उद्घोष किया था, जिसे बाद में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अपना कर्ममंत्र बनाते हुए आगे बढ़ाया था।वेदों के उत्कट ज्ञाता, पुन: उद्धारकर्ता,चिन्तक तथा आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग के ऐसे साधक हैं, जिन्होंने अपनी साधना और अंतर्चेतना से न केवल मानवीय जीवन के आदर्श मूल्यों के आधारभूत मानदंड स्थापित किए, बल्कि राष्ट्र और संस्कृति की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए ही अपना जीवन समर्पित कर दिया। वे अलौकिक सत्य के ऐसे साधक थे, जिन्होंने लौकिक जगत जीवन के कल्याण के लिए नवीन मानविन्दु स्थापित किया। वेदों के प्रचार-प्रसार के लिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत 1932 ईस्वी सन 1875 को गिरगांव मुम्बई में आर्यसमाज अर्थात श्रेष्ट जीवन पद्धति की स्थापना करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही वेदों की ओर लौटो नामक प्रमुख नारा दिया था। कर्म सिद्धान्त, पुनर्जन्म तथा सन्यास को अपने दर्शन का स्तम्भ बनाने वाले दयानन्द ने ही सर्वप्रथम प्रथम जनगणना के समय आगरा से देश के सभी आर्यसमाजों को यह निर्देश भिजवाया कि समाज के सब सदस्य अपना धर्म, सनातन धर्म दर्ज करवाएं।काठियावाड़ और बनारस में क्रमश: प्रारम्भिक और संस्कृत व वैदिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद अत्यधिक ज्ञान पिपासु स्वभाव के स्वामी दयानन्द, गुरु विरजानन्द से पाणिनी व्याकरण, पातंजल-योगसूत्र तथा समस्त वेद-वेदांग का अध्ययन कर गुरु दक्षिणा चुकाने के लिए विद्या को सफल कर दिखाने, परोपकार करने, मत मतांतरों की अविद्या को मिटाने, वेद के प्रकाश से इस अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करने, वैदिक धर्म का आलोक सर्वत्र विकीर्ण करने के उद्देश्य से भारत भ्रमण के लिए निकल पड़े, और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अर्थात विश्व को आर्य बनाते चलो की नीति पर चलते हुए सर्वप्रथम देशवासियों में मुगलों व अंग्रेजों से स्वतंत्रता की ललक जगाई व संपूर्ण भारत को आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक रूप से संगठित करने का कार्य किया। भारत के स्वाधीनता संग्राम में अस्सी प्रतिशत क्रांतिकारी आर्यसमाज की पृष्ठभूमि से थे। आर्य समाज से कई स्वतंत्रता सेनानी निकले, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मोहनदास करमचंद गांधी व लोकमान्य तिलक आदि भी स्वामी दयानन्द को अपना आदर्श मानते थे। दयानन्द के विचारों से प्रभावित होकर कई युवा व समाज सुधारक आगे आये व देश के निर्माण में अपना योगदान दिया।

-अशोक 'प्रवृद्ध'
करमटोली, गुमला नगर
झारखंड
gashok71@gmail.com

भारत भ्रमण क्रम में उन्होंने अंग्रेजी शासन में दीन हीन हो चुकी भारतीय जीवन को निकट से देखा, तो उन्हें महसूस हुआ कि इस प्रकार विपन्न व भयभीत जीवन के साथ मनुष्य सत्य को कैसे समझ सकता है? इसलिए उन्होंने एक साथ कई दिशाओं में कार्य आरंभ करते हुए अंग्रेजों के विरुद्ध जनजागरण प्रारंभ कर दिया। अपने जनसंपर्क और जनजागरण अभियान में उन्हें यह भी अनुभव हुआ कि भारत बैचेन है और संघर्ष के लिए तैयार है। बस उसे संगठन और मार्गदर्शन की आवश्यकता है। इसलिए उन्होंने इस कार्य का स्वयं नेतृत्व संभालते हुए इस कार्य में अपने गुरु भाईयों को भी सक्रिय कर कार्य का शुभारंभ कर दिया। उनके नेतृत्व में इस टोली ने समाज के प्रबुद्ध और प्रभावशाली व्यक्तियों को संगठित करना आरंभ किया। भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक वैभव को पुन: प्रतिष्ठित करने के लिए चिंतित उस कालखंड के लगभग सभी लोग स्वामी दयानन्द के संपर्क में आ गए। इनमें नाना साहब पेशवा, तात्या टोपे, हाजी मुल्ला और बाला साहब जैसे वीर महापुरुष भी थे। कार्य को आगे बढ़ाने के लिए संदेश वाहकों की टीम तैयार हुई। फिर दयानन्द के प्रवचन होने लगे और यह टोली वहाँ लोगों को संगठित क्रांति के लिए तैयार करने लगी। इससे परस्पर आपसी संबंध बने और एकता आई। इस संपर्क और संगठन के अभियान में रोटी और कमल एक प्रतीक चिन्ह बना। इस संपर्क कार्य के लिए

पुजारी, पुरोहित और साधु संतों को भी जोड़ा गया। इससे देश में स्वाधीनता का एक नई अग्नि प्रज्वलित होती नजर आई। 1857 की क्रांति की पृष्ठभूमि में स्वामी दयानन्द की प्रवचन सभाएं कानपुर, लखनऊ, मेरठ, लाहौर, इंदौर, आदि अनेक स्थानों पर हुईं। मेरठ क्रांति के समय स्वामी दयानन्द मेरठ में ही थे। समय के साथ क्रान्ति आरंभ हुई, किन्तु आशातीत सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। इससे स्वामी दयानन्द कतई निराश नहीं हुए। उनके मन में नकारात्मकता का कोई भाव न था। उनकी मान्यता थी कि शताब्दियों की दासता से मुक्ति किसी एक झटके में संभव में नहीं है। इसके लिए लंबा संघर्ष करना होगा। वे लोगों को समझाते थे कि प्रसन्नता एक आंतरिक संकल्प है। और प्रसन्नता की निरंतरता ऐसी आत्मशक्ति से उत्पन्न होती है जो सफलता और असफलता से ऊपर हो। उनके विचारों और प्रवचनों से समाज में एक नई ऊर्जा का संचार होने लगा और लोग नये सिरे से सक्रिय होने लगे। नई परिस्थिति में स्वामी दयानन्द गुरू स्वामी बिरजानंद के सलाह पर चलते हुए वैदिक सत्य ज्ञान की व्याख्या करने और जनजागरण कार्य में जुट गए। गुरु के सलाह पर अनुसार महर्षि स्वामी दयानन्द हरिद्वार आए। और वहां कुम्भ के अवसर पर पाखण्डखण्डिनी पताका फहराई। और दिखावे के कर्मकांड, अंध विश्वास, और वेद विरोधी बातों का जोरदार खंडन किया। उनका कहना था केवल गंगा नहाने, सिर मुंडाने और केवल भभूत मलने से स्वर्ग का मार्ग नहीं मिलता मिलता, इसके लिए प्राणशक्ति, ज्ञान शक्ति और आत्म शक्ति में तादात्म्य होना चाहिए।

स्वामी दयानन्द को हिन्दी भाषा से अत्यधिक लगाव था और वे भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी को बनाना चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि भारत के विभिन्न राज्यों में आपस में बोली जाने वाली आम बोलचाल की भाषा अंग्रेजी न होकर हिन्दी हो, जिससे हम अपनी संस्कृति पर गर्व कर सके। यद्यपि उनकी मातृभाषा गुजराती थी व धर्म भाषा संस्कृत थी, किन्तु हिन्दी एक ऐसी भाषा थी, जिसे भारत के अधिकांश लोग बोल, समझ व पढ़ सकते थे। इसलिए उन्होंने संपूर्ण भारत की आम भाषा के लिए अपने देश की सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा को बनाने को कहा, न कि एक विदेशी भाषा को। उनका कहना था -मेरी आंख तो उस दिन को देखने के लिए तरस रही है। जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा बोलने और समझने लग जाएंगे।

स्वामी दयानन्द ने सर्वप्रथम अपने धर्म अर्थात हिन्दू धर्म में फैली बुराइयों व कुरीतियों का अध्ययन किया व पूरे देश का भ्रमण किया। इस दौरान वे कई विद्वानों व पंडितों से मिले व उनके साथ शास्त्रार्थ करके उन्हें परास्त किया।इसके साथ ही उन्होंने इस्लाम, ईसाई, जैन, बौद्ध व सिख आदि अन्य धर्मों का भी गहन अध्ययन किया और उनमें फैली बुराई व गलत नीतियों के विरुद्ध उठ खड़े हुए। इस तरह उन्होंने केवल एक धर्म में फैली गलत बातों को निशाना न बनाकर सभी धर्मों में फैली कुरीतियों को समाप्त करना अपना उद्देश्य समझा। उनका मुख्य कार्य समाज को एक नई दिशा देने का था, ताकि लोग एक सभ्य, सुशिक्षित व स्वतंत्र समाज में रह सके।

स्वामी दयानन्द ने अपने लेखन द्वारा अभूतपूर्व जनजागरण किया और अपनी रचित सत्यार्थप्रकाश (1874 संस्कृत), पाखण्ड खण्डन (1866), वेद भाष्य भूमिका (1876), ऋग्वेद भाष्य (1877), अद्वैतमत का खण्डन (1873), पंचमहायज्ञ विधि (1875), वल्लभाचार्य मत का खण्डन (1875) आदि महत्वपूर्ण ग्रंथों से भारतीयों को राष्ट्र क्रांति के लिए आवाहन किया। जिससे सम्पूर्ण देश में अपूर्ण हलचल उत्पन्न होने के कारण देशवासियों में चेतना जागृत हुई। जिसके कारण कालांतर में भारत देश को स्वतंत्रता के सूर्य के दर्शन हुए। लेकिन दुखद स्थिति यह है कि सदैव राष्ट्रीय भावना और जनजागृति को क्रियात्मक रूप देने में प्रयत्नशील रहने वाले स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा, वेद के पूनरूद्धारक योगाभ्यासी स्वामी दयानन्द की हत्या व अपमान के कुल 44 प्रयास उनके 1863 में गुरु विरजानंद के पास अध्ययन पूर्ण होने के बाद लगभग बीस वर्षों के कार्यकाल में हुए। जिसमें से 17 बार विभिन्न माध्यमों से विष देकर प्राण हरण के प्रयास थे, फिर भी उनके प्राण हरण का कोई प्रयास सफल नहीं हो सका। लेकिन 30 अक्टूबर 1883 को दीपावली की संध्या को एक विधर्मी षड्यन्त्र सफल हो गया और विषयुक्त कांच चूर्ण मिश्रित दूध के सेवन से उनकी तबीयत बिगड़ने लगी और अजमेर के अस्पताल में उन्होंने इस संसार से विदा ले ली।

संतुलन अधिनियम : साझा जिम्मेदारियों के लिए साझेदारी को सशक्त बनाना

जिंदगी में सिर्फ बोझा ना उठाओ,
स्वयं को थोड़ा समझाओ,
एक दूसरे का हाथ बटाकर,
जीवन को खुशहाल बनाओ।

आज की तेज़-तर्रार दुनिया में, जिम्मेदारियों का बोझ अक्सर व्यक्तियों पर भारी पड़ता है, खासकर साझेदारी के भीतर। कई जोड़े खुद को अंतहीन काम के चक्र में फंसा हुआ पाते हैं, जिसमें राहत या तरोताजा होने की बहुत कम गुंजाइश होती है। हालाँकि, समर्थन और सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा देकर, हम इस बोझ को कम कर सकते हैं और दोनों भागीदारों के लिए अधिक सामंजस्यपूर्ण वातावरण बना सकते हैं।

श्रम का पारंपरिक विभाजन, जहां पुरुष मुख्य रूप से पेशेवर गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जबकि महिलाएं घरेलू काम संभालती हैं, दोनों पक्षों में जलन और नाराजगी पैदा कर सकती है। यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक साथी के पास अद्वितीय ताकत और क्षमताएं हैं जिनका उपयोग अधिक संतुलित जीवनशैली बनाने के लिए किया जा सकता है।

घरेलू कामों को केवल एक साथी के क्षेत्र के रूप में देखने के बजाय, जोड़े अधिक तरल दृष्टिकोण अपना सकते हैं, जहां व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और उपलब्धता के आधार पर जिम्मेदारियां साझा की जाती हैं। इससे न केवल दोनों पक्षों का बोझ हल्का होता है बल्कि एक-दूसरे के योगदान के प्रति गहरी समझ और सराहना भी बढ़ती है।

इसके अलावा, कठोर लिंग भूमिकाओं से अलग होने से व्यक्तिगत विकास और पूर्ति के नए अवसर खुलते हैं। जब व्यक्तियों के पास अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं का पता लगाने का लचीलापन होता है, चाहे वह कैरियर की आकांक्षाओं को पूरा करना हो या शौक और रुचियों में संलग्न होना हो, तो वे अपने रिश्तों में अधिक लचीले और संतुष्ट हो जाते हैं।

न्यायसंगत भागीदारी की दिशा में इस यात्रा में संचार महत्वपूर्ण है। अपेक्षाओं, प्राथमिकताओं और सीमाओं पर खुलकर चर्चा करके, जोड़े एक रोडमैप बना सकते हैं जो एक-दूसरे की जरूरतों और आकांक्षाओं का सम्मान करता है। इसमें सक्रिय रूप से एक-दूसरे को सुनना, चुनौतियों के प्रति सहानुभूति रखना और बिना निर्णय के समर्थन प्रदान करना शामिल है।

परिवर्तन को अपनाना कठिन हो सकता है, खासकर जब यह सामाजिक मानदंडों और अपेक्षाओं को चुनौती देता है। हालाँकि, आपसी सम्मान और सहयोग को प्राथमिकता देकर, जोड़े मजबूत बंधन बना सकते हैं और एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र बना सकते हैं जहाँ दोनों साथी फलते-फूलते हैं।

संक्षेप में, एक संतुलित और पूर्ण साझेदारी का मार्ग विविधता को अपनाने, जिम्मेदारियों को साझा करने और खुले संचार को बढ़ावा देने में निहित है। एक टीम के रूप में एक साथ काम करके, जोड़े जीवन की चुनौतियों को अनुग्रह और लचीलेपन के साथ पार कर सकते हैं, जिससे अंतत: एक खुशहाल और अधिक सामंजस्यपूर्ण मिलन हो सकता है।

-डॉ. माधवी बोरसे सिंह इंसा
अंतराष्ट्रीय शिक्षाविद
रावतभाटा (राजस्थान)

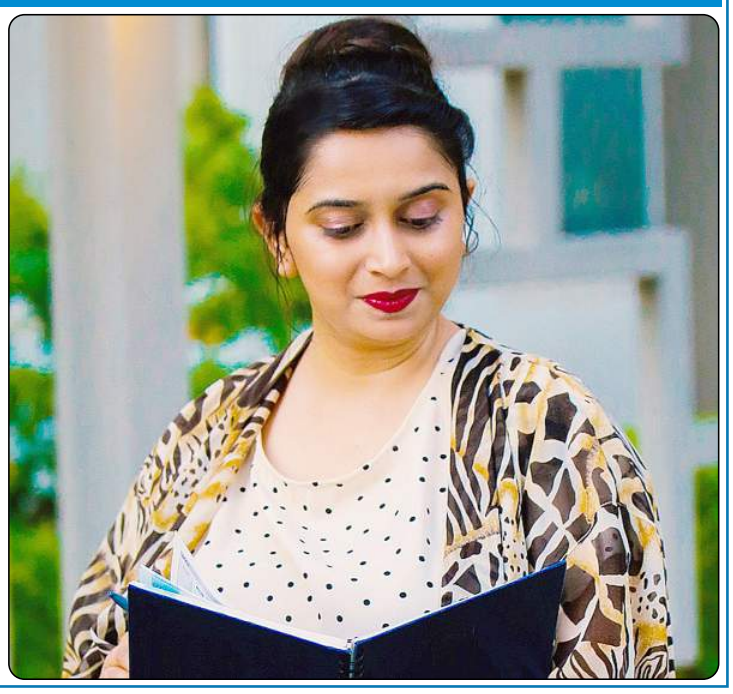

जीवन में हावी होता मानसिक तनाव को कम करने हेतु उचित प्रबंधन की आवश्यकता

हममें से अधिकांश लोग मानसिक चिंता और उदासी के शिकार है और इस समस्या से लगातार हर दूसरा व्यक्ति किसी न किसी अवसाद से जूझ रहा है । वर्ष 2020 के दौरान कोरोना वैश्विक महामारी के कारण यह आवसादों में लगातार बढ़ोतरी का दौर देखा गया था। इस प्रभाव के कारण अर्थव्यवस्था में काफी उतार- चढ़ाव देखा गया था। जैसे नौकरी छूटने का खतरा, व्यवसाय में हानि, पारिवारिक दूरियाँ, एवं सामाजिक एवं आर्थिक कमजोरी अवसाद के मुख्य मुद्दे रहे। इसके एक तीन वर्षों के अंतराल के बाद सभी व्यवस्थाओं में काफी सुधार हुआ है, परन्तु मानसिक अवसाद से काफी लोग अभी भी जूझ रहे है। अवसाद के कई कारण हो सकते है, परन्तु समय रहते हुए इन अवसादों पर रोक नही लगाया गया तो आगे चलकर यह एक काफी बड़े खतरे के रूप में दिखाई देने लग सकते है।

अपने स्वयं के अनुभवों से, हम यह भी जानते हैं कि चिंता और अवसाद की भावनाएँ हमारे कामकाजी जीवन में भी आसानी से आ सकती हैं। कभी-कभी, काम एक ट्रिगर बन सकता है और हमारे मानसिक स्वास्थ्य को खराब कर सकता है। ये भावनाएँ इतनी व्यक्तिगत और जटिल होती है कि काम पर बात करना असहज या अलग-थलग महसूस कर सकता है, खासकर जब हम अपने करियर की शुरुआत कर रहे हों। एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन में, 82त्न उत्तरदाताओं ने कहा कि वे काम पर मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बात करने में सहज महसूस नहीं करते हैं।

हम अभी ऐसी दुनिया में रहते हैं जो 'सकारात्मक' और 'नकारात्मक' या 'अच्छे' और 'बुरे' भावनाओं के बीच हम अक्सर जूझते रहते है; हम अभी भी ऐसी संस्कृति में रहते हैं जो रूढ़ीवादी एवं परम्परागत विचारों को महत्व देती है। हालाँकि ये विचार काफी हद तक परम्परागत होते है, ऐसा नहीं है कि ये सभी विचार हमेशा से गलत या सही होते है परन्तु इसे समय एवं परिस्थिति अनुसार अपडेट करने की आवश्यता है जिससे हमारे मानसिक विचारों में एक नई ऊर्जा का संचार हो सके एवं भावनात्मक स्वास्थ्य को मजबूती प्रदान की जा सके।

अवसाद पर काबू पाने के लिए कुछ कारगर तरीकों पर विचार कर सकते इससे तनाव, अवसाद एवं अपने नकारात्मक विचारो को कम किया जा सकता है ङ्क

विचारों को साथिओं से साझाँ करना ङ्क यह पहचानना सीखना होगा कि भावनाएं कैसे प्रकट होती हैं, और उन्हें लेबल करने के लिए उपयुक्त भाषा का उपयोग करने से हमें अपने साथियों, सहकर्मियों और दोस्तों के साथ मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर ढंग से संबोधित करने में मदद मिल सकती है।

नए दोस्त बनाए - मनुष्य के रूप में, हम स्वाभाविक रूप से अपने साथी-दोस्तों के बीच काफी समय बिताते है, हम अपनी खुशी अपने दोस्तों के साथ साझाँ करते है तो हमें अलग से एक नई खुशी मिलती है। हम सभी का दोस्तों का एक निश्चित दायरा होता है । यदि हमारा दायरा हमारे काम, ऑफिस के दोस्तों के इर्दगिर्द ही रहता है तब हम कंही न कंही एक निश्चित दायरे में ही बातचीत या अपना अनुभव साझा करते है। लगभग हम एक-दूसरे से परिचित होते है;

हमारी मानसिकता कंही न कहीं एक दूसरे से मेल खाती है। ऐसे समय में हमें हमारे दायरे से बाहर के दोस्तों से हमारे जीवन में चल रही हलचल को साझा करना एवं उनके अनुभवों तथा विचारों के बारे में जाने का एक अच्छा अवसर भी प्राप्त होता है। अत: हमें अपनी गुणवत्ता को बढाने और अपने अवसाद को कम करने के लिए नए दोस्त बनाने पर कार्य करना चाहिए; जिससे आपको अपने अवसादपूर्ण वातावरण को कम करने में मदद मिलेगी।

अपने अच्छे एवं नकारात्मक विचारों को व्यक्त करना ङ्क यदि आप अपने आप को किसी प्रकार का अवसाद महसूस कर रहे है, तो इसके बारे में आप अपने किसी नजदीकी दोस्त, अपने सहकर्मियों, रिश्तेदारों से अवश्य बात करे। अपने मन में आ रहे अच्छे-बुरे विचारों को व्यक्त करना किसी भी प्रकार के अवसाद को कम करने का सबसे सरल एवं कारगार उपाय होता है। अपने विचारों को व्यक्त न करना, अवसाद को बढ़ाने का सबसे बड़ा कारण बन सकता है।

अवसाद के मूल कारणों को जाने- कई बार देखा गया है कि बहुत से लोग किसी न किसी मानसिक तनाव से ग्रसित होते है, परन्तु उनके दिमाक में कई प्रकार के बुरे विचार घर कर जाते है, परन्तु ऐसा क्यों हो रहा है इस पर विचार न करके क्या हो रहा है पर जाते है। इसलिए तनाव के मूल कारणों को जानकर उसे संतुलन बनाने की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। कई बार समस्या इतनी अधिक गंभीर होती है उसका हल नहीं मिलने से तनाव से ग्रसित होना स्वाभाविक है, परन्तु आपके चिंता या तनाव करने से यह समस्या नहीं सुधरने वाली है; इसलिए मन को शांत कर समस्या का हल खोजने का प्रयास ही आपको तनाव एवं अवसाद से बचा जा सकता है।

अपने लिए पर्याप्त समय देना ङ्क हम अपने कामो में इतना उलझ जाते है कि अपने लिए समय निकालना काफी मुश्किल हो जाता है। काम के तनाव में दिन-रात लगे रहने से शारीरिक थकान के साथ-साथ मानसिक थकन भी आ जाता है; इस समय हमारा जीवन इतना उलझ जाता है कि अपने लिए समय ही नही दे पाते है इसलिए अवसाद होना स्वाभाविक है। अपने लिए समय दे अपने, अपने आप को संतुलित रखना आवश्यक है। इससे अपने गुणात्मक कार्यों में वृद्धि होगी।

पर्याप्त नींद लें - रात में अगर आप एक अच्छी नींद नहीं लेते हैं तो दिनभर थका-हारा महसूस करते हैं। अपर्याप्त नींद आपके मूड, मेंटल अवेयरनेस, एनर्जी लेवल और फिजिकल हेल्थ पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। इसलिए अगर आप तनाव से छुटकारा पाना चाहते हैं तो पर्याप्त नींद जरूर लें।

अपने कौशलों की पहचान कर उसे निखारने का काम करना - अवसाद से उबरने का एक माध्यम हो सकता है कि अपने कौशलों को पहचान करें एवं उनको निखारने के लिए निरंतर प्रयास करें । अपनी रूचि के काम को करना से आपके मन को शांत रहने के लिए ऊर्जा मिलती है ।

अपनी अहमियत की पहचान करना- हर व्यक्ति में अपना एक विशेष गुण होता है जिस गुण के कारण यह सभी से हट कर अपनी एक पहचान बनाता है। अपनी अहमियत को समझते हुए अपने आप को महत्वपूर्ण समझना होगा। अपनी कमियों एवं हार को एक सीख के रूप में लेकर आगे सुधारात्मक नजरिया के साथ काम करने के लिए आगे अग्रसर करना आवश्यक होगा।

पर्सनल और प्रोफेसनल कामों को अलग रखना ङ्क हम सभी अपने जीवन में किसी न किसी काम या व्यवसाय से जुड़े होते है । काम को काम की भांति करना सही होगा। काम हम हमारे जीवन को सरल बनाने एवं वित्तीय उपलब्धता के लिए करते है। परन्तु काम को ऑफिस एवं घर दोनों जगह एक समान करना अपने जीवन को उलझन में डाल सकता है। अत: अपने पर्सनल और प्रोफेसनल कामों को अलग रखना एक अच्छा प्रबंधन हो सकता है।

जब भी आप किसी कारणवश तनाव में हैं तो उस बारे में शांति से सोचें और समाधान का रास्ता खोजें। तनावपूर्ण स्थितियों को बिगड़ने न दें। घर के सदस्यों को लेकर कोई टेंशन है तो पारिवारिक समस्या-समाधान सेशन को बुलाएं। बातचीत से ही हल निकलेना न कि टेंशन लेने से। अधिकतर देखा गया है कि दूसरों के साथ अपनी समस्या को शेयर करने से समाधान मिल जाता है। इसलिए अपने जीवनसाथी, करीबी दोस्तों और पड़ोसियों से मदद मांगने से न डरें। अगर तनाव और चिंता बनी रहती है, तो अपने डॉक्टर से बात करें।

-श्याम कुमार कोलारे
सामाजिक कार्यकर्त्ता, छिन्दवाड़ा (मध्यप्रदेश)
मोबाइल : 9893573770

पहले खुद कुछ करो फिर बोलना

शीर्षक से स्पष्ट से है कि लेखिका उन लोगों की चर्चा करने वाली जो खुद तो जिंदगी में कुछ नहीं करते हैं और ना ही दुसरो को कुछ करने देते हैं। आज के समय में लोगो की सोच क्या से क्या हो गई है। जहाँ भारत अनेकता में एकता की पहचान रखता है, यहाँ हर धर्म, जातियाँ के लोग रहते हैं। उसी देश की एक सच्ची घटना पर आधारित आज का यह लेख है।

एक बहुत ही प्यारी सी लड़की जो अपने भारतीय सभ्यता, संस्कृति को अपनाते हुए कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करती है। कला के क्षेत्र में उस प्यारी सी लड़की का राष्ट्र स्तर पर चयन किया जाता है और उन्हे आंमत्रित किया जाता है कार्यक्रम में आने हेतु। यह किसी भी कलाकार के लिए बहुत ही खुशी का पल होता है और सभी चाहते हैं कि जो भी अपने है उन्हे बताया जाए। मगर वो प्यारी सी लड़की किसी शादी में रहती है जहाँ उसके भाई और बहन नही थे तो उसने अपने लोगों को बताया। उन लोगों ने बच्ची को प्रोत्साहित नही किया बल्कि उसे बूरा भला कहा। आप सभी सोच रहे होगे कि क्या ही बोला होगा। उनका कहना था - कि नाच-गाना में तो किसी को भी मिल जाता है, इसमे क्या खास बात है। ये सब समय बर्बाद करने का तरीका है। तुम नाचो और हमे देखे, आखिर कैसा नाचती हो। ताली हम भी बजा देगे। यह सुनकर उस प्यारी सी बच्ची का दिल टूट गया - उनके सामने तो नहीं मगर अकेले वो इतनी रोई कि उसका तबीयत खराब हो गया। लेखिका द्वारा एक मात्र सवाल सभी पाठको के लिए = आपके नजर में कौन श्रेष्ठ है वो युवा पीढ़ी जो अपनी कला और सभ्यता को भूल चूका है या वो जो अपनी कला सभ्यता और संस्कृति को आगे बढ़ाता हो। और सबसे बड़ी बात वो लोग ऐसा बात बोलते हैं जिन्हे अपने भारत की लोकनृत्य और लोकगायन आता ही नहीं, जिसका कही चयन हुआ ही नही, जो आज तक कही सम्मानित हुए ही नही। क्या वो लोग ये कहने योग्य हैं। यह जबाब सभी पाठक दे क्योकि यह एक आदोलन है एक ऐसी युवा के लिए जिसका चयन राष्ट्र स्तर कला और संस्कृति के लिए किया गया। बस कुछ लोगो के कारण और उस शादी से अकेले नही आने के कारण वो अपना सम्मान लेने नही जा पाई।

-मुस्कान केशरी, मुजफ्फरपुर बिहार
एम एस केशरी पब्लिकेशन की संस्थापिका

महिला दिवस पर विशेष

तुम करती ही क्या हो....

''आखिर तुम दिन भर घर में करती ही क्या हो''- पतियों को अक्सर यह कहते हुए पाया जाता है. क्या सचमुच जानना चाहते हैं कि पत्नियां दिन भर घर में क्या करती हैं.

सबसे पहले तो उनकी कुर्बानी देखिए कि बीस-पच्चीस वर्षों तक जिस घर में पली-बढ़ी, उसे छोड़कर जीवन भर का साथ निभाने वह दूसरे घर में जाती है. अपने सारे नाते-रिश्तेदारों से दूर, एक अनजान परिवार को अपना बनाने का हर संभव प्रयास करती है.

वंश-वृद्धि की खातिर अपने पेट में बच्चे को कुशलता से पालती है और नौ महीने बाद प्रसव की असह्य पीड़ा को झेलकर नारी जीवन की संपूर्णता प्राप्त करती है. हड्डियों को चटकाती प्रसव पीड़ा को कोई पुरूष बर्दाश्त भी नहीं कर सकता है, क्योंकि यह महाशक्ति ईश्वर ने सिर्फ स्त्रियों को ही प्रदान किया है.

बच्चे की परवरिश जितनी कुशलता से स्त्री कर लेती है इसकी तो कल्पना भी पुरूष नहीं कर पाएगा. खुशी-खुशी उसका मल-मूत्र साफ करती है. अपने शरीर का अमृत पिलाकर उसे नया जीवन देती है. एक ओर बच्चों के लिए वह उनकी पहली शिक्षक होती है तो वहीं दूसरी ओर पतियों की कुशल सलाहकार का भी कर्तव्य निभाती है. बुजुर्गों की सेवक और नाते-रिश्तेदारों के बीच संबंधों की कड़ी भी बनती है. अनुभवी प्रबंधक की तरह गृहस्थी की गाड़ी का संचालन करती है.

दैनिक कार्यों में, सुबह बिस्तर छोड़ने के साथ ही उसकी मशीनी दिनचर्या शुरू हो जाती है.

सफाईकर्मी की तरह सारे घर में झाड़ू -पोछा करती है. फिर नहा-धोकर पुजारिन के वेश में घर की सुख-शांति और समृद्धि के लिए ईश वंदना करती है. सभी के स्वास्थ्य और पसंद का ख्याल रखते हुए एक डायटिशियन के रूप में नाश्ता और खाने का प्रबंध करती है. बच्चों को तैयार कर स्कूल भेजती है. पति को भी आफिस जाने की सारी व्यवस्था करती है. इन सबके बीच परिवार के सभी सदस्यों की अलग-अलग फरमाइशें भी पूरी करते हुए उसके चेहरे पर कोई शिकन या झुंझलाहट नहीं बल्कि वात्सल्य और सुकून के भाव दिखाई देते हैं.

बच्चों को स्कूल और पति को दफ्तर भेजने के बाद वह कुछ फुरसत पाती है, तब खानसामा बनकर दोपहर के भोजन की व्यवस्था में जुट जाती है. सभी को भोजन कराने के बाद वह कामवाली बाई का रूप धारण कर लेती है. शाम के पहले पुन: घर की साफ-सफाई करती है और शाम की दिया-बाती का इंतजाम करती है. तब तक चाय का समय हो जाता है. चाय-नाश्ता से फुर्सत पाकर वह फिर रात के भोजन की व्यवस्था में भिड़ जाती है . खाने की मेज पर सभी के लिए गरमागरम और स्वादिष्ट भोजन परोसते हुए उसे स्वर्गिक आनन्द की अनुभूति होती है.

इतनी व्यस्तताओं के बावजूद सोने से पहले पत्नी धर्म का निर्वहन करते हुए

बिस्तर पर प्रेमिका की तरह वह पूर्ण रूप से पति को समर्पित हो जाती है, जहां उसे सिर्फ अपने पति की ओर से प्रेम और सम्मान की लालसा होती है. उसे स्वयं भी पता नहीं होता कि सुबह से रात तक वह न जाने कितने रूप धारण करती है. अपने शरीर और स्वास्थ्य पर ध्यान न देते हुए भी वह सारे काम को अपना ही काम समझ कर पूरी लगन और तन्मयता से करती है.

पतियों का नैतिक समर्थन और आंशिक सहयोग से वह अपनी जिम्मेवारियों का निर्वहन कर और भी कुशलता पूर्वक सकती हैं. घर-परिवार, बच्चे, बुजुर्ग माता-पिता आदि में सामंजस्य बिठाते हुए कभी यदि पति की उपेक्षा हो जाती है तब इसे गंभीरता से नहीं लिया जाना चाहिए, बल्कि उसकी निस्वार्थ कर्तव्य भावना को सलाम किया जाना चाहिए. पत्नियां यदि एक दिन भी अपना काम न करें तो सारा घर अस्त-व्यस्त हो जाएगा.

बिना कोई अवकाश लिए हर दिन हर पल, जो घर-परिवार की सुख-सुविधा का ध्यान रखती है....निस्वार्थ सेवा करती है, उससे यह पूछना हास्यास्पद लगता है कि ''आखिर तुम दिन भर घर में करती ही क्या हो?

-विनोद प्रसाद , सरस्वती विहार, अम्बेडकर पथ, पटना-800014 (बिहार)

क्या वह ज़माना बीत गया, जब हम डॉक्टर को ईश्वर अल्लाह का दर्ज़ा दिया करते थे?

वैश्विक स्तरपर आज हर देश ऐसा संकल्प लेता है कि वह अपने नागरिकों को बेहतर शिक्षा प्राथमिक सुविधाएं भरपेट भोजन व बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं,ज्यादा डॉक्टरों को उपलब्ध करवा कर दे सकें ताकि आपातकाल में या किसी महामारी से मुकाबला करने तत्पर रहे। परंतु साउथ कोरिया में पिछले माह की 20 फरवरी 2024 से जारी जूनियर डॉक्टरों की हड़ताल का कारण जानकर शायद मानव जाति ही नहीं सारी दुनिया के डॉक्टर भी स्तब्ध रह जाएंगे, क्योंकि एक जमाना था जब हम डॉक्टर को ईश्वर अल्लाह का दर्जा देते थे, परंतु साउथ कोरिया में वहां की सरकार ने ऐसी नीति बनाई है जिसमें सरकार हर साल 2000 डॉक्टरों को तैयार करेंगे, क्योंकि साउथ कोरिया जैसे विकसित देश में मेडिकल फैसिलिटी का बुरा हाल है वहां 1000 लोगों पर सिर्फ 2.5 डॉक्टर हैं और इस देश का हेल्थ सिस्टम 90 प्रतिशत तक प्राइवेट अस्पताल पर निर्भर है, इसी वजह से डॉक्टर काफी पैसा कमाते हैं। बस ! यही वजह है कि वहां के डॉक्टर प्रतिवर्ष 2000 डॉक्टरों को तैयार करने के डॉक्टर की पॉलिसी में अवरोध कर रहे हैं और 20 फरवरी से हड़ताल पर चले गए हैं जिससे मेडिकल सेवाएं अप हो गई है,जो किसी भी एंगल से उचित नहीं माना जा सकता और मानवता के खिलाफ है। मेरा मानना है कि हर देश की मेडिकल एसोसिएशन दक्षिण कोरिया के इस डॉक्टरों के इस कदम का विरोध दर्ज करने की आवश्यकता है जिसकी शुरुआत भारत की इंडियन मेडिकल एसोसिएशन द्वारा करने की शुरुआत की जानी चाहिए। क्योंकि मेरा मानना है कि दक्षिण कोरिया के डॉक्टरों की हड़ताल नैतिकता के विरुद्ध है। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, आम जनता को ज्यादा डॉक्टर और बेहतर मेडिकल फैसिलिटी देना सरकार का कर्तव्य है इसे रोकनेत या बाधित करने वाले डाक्टर मानवता के विरोधी हैं।

साथियों बात अगर कर हम दक्षिण कोरिया के डॉक्टरों की हड़ताल पर जाने की करें तो दक्षिण कोरिया में 10 हजार से ज्यादा डॉक्टरों और 80 फीसदी प्रशिक्षू स्टॉफ के हड़ताल पर चले जाने से स्वास्थ्य सेवाएं चरमरा गई है। इससे मरीज बेहाल हो उठे हैं। डॉक्टरों की व्यापक हड़ताल को देखते हुए दक्षिण कोरिया की सरकार ने उनके लिए अब गंभीर चेतावनी जारी कर दी है। सरकार ने दक्षिण कोरिया के हड़ताली डॉक्टरों से साफ कह दिया है कि या तो वह समय सीमा पर हड़ताल से वापस लौट आएं या फिर कानूनी कार्रवाई का सामना करने के लिए तैयार रहें।दक्षिण कोरिया के स्वास्थ्य मंत्री ने स्थानीय एसबीएस रेडियो को दिए एक साक्षात्कार में कहा कि अगर हड़ताली डॉक्टर दिन के अंत (29 फरवरी) तक वापस नहीं लौटते हैं, तो उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी दक्षिण कोरिया के स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि अधिकांश हड़ताली डॉक्टर समय सीमा के बावजूद काम पर नहीं लौटे हैं, उन्होंने चेतावनी दी है कि अगर डॉक्टरों ने हड़तल खत्म नहीं की तो उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि डॉक्टरों के काम बंद करने से अस्पतालों में अराजकता फैल गई है। बता दें कि लगभग 10, हज़ार जूनियर डॉक्टरों के अलावा लगभग 80 प्रतिशत प्रशिक्षु कार्यबल ने एक नोटिस सौंपने के बाद पिछले सप्ताह नौकरी छोड़कर हड़ताल पर चले गए। डॉक्टरों ने मेडिकल स्टाफ की कमी और बढ़ती उम्र वाले समाज से निपटने के लिए मेडिकल स्कूल में प्रवेश में तेजी से वृद्धि करने की सरकार की योजना का विरोध किया। बिल के खिलाफ डॉक्टर न्यायालय में चुनौती दे सकते हैं, लेकिन मरीजों का इलाज नहीं करना उनके कर्त्तव्यों का उल्लंघन है। नैतिकता के विरुध डॉक्टरों की इस हड़ताल से प्रदेश में विकट परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। ऐसा करने वाले डॉक्टरों के खिलाफ केस दर्ज किया जाए।

साथियों बात अगर हम हड़ताल के असर की करें तोबीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक- 20 फरवरी को शुरू हुई हड़ताल का सबसे ज्यादा असर मेजर सर्जरीज पर होगा। पहले ही दिन सरकार के ऊपर सवालिया निशान लगने लगे और मरीजों के घरवाले हड़ताल का विरोध करने लगे।डॉक्टर्स यूनियन ने कहा- सरकार नए मेडिकल कॉलेजेस खोलकर कॉम्पिटिशन बढ़ाना चाहती है। इससे हमारी सैलरी कम हो जाएंगी। हम ये कभी नहीं होने देंगे। दूसरी तरफ, सरकार ने डॉक्टरों की मांग को बेतुका बताते हुए कहा कि लोगों को ज्यादा डॉक्टर और बेहतर मेडिकल फेसेलिटी हर कीमत पर दी जाएंगी। अगर डॉक्टर हड़ताल वापस लेकर काम पर लौटते हैं तो ठीक रहेगा। ऐसा नहीं होने पर एक्शन लिया जाएगा।प्राईवेट हॉस्पिटल्स के भरोसे साउथ कोरिया।साउथ कोरिया में मेडिकल लॉबी बहुत दमदार मानी जाती है। यहां हेल्थ इंश्योरेंस के जरिए अस्पताल मोटी कमाई करते हैं। इस देश का हेल्थ सिस्टम 90 प्रतिशत तक प्राईवेट हॉस्पिटल्स के भरोसे चलता है। यही वजह है कि डॉक्टर्स भी काफी पैसा कमाते हैं।सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर ने कहा- जितने ज्यादा डॉक्टर्स बढ़ेंगे, उतना ज्यादा कॉम्पिटिशन बढ़ेगा और इसकी वजह से हमारी इनकम कम होती जाएगी। लिहाजा, हम नहीं चाहते कि सरकार ज्यादा मेडिकल कॉलेज खोलकर नए डॉक्टर्स तैयार करे। साउथ कोरिया के शहरों में तो हालात फिर भी ठीक हैं, लेकिन दूर-दराज के इलाकों में हालात बहुत खराब हैं। सरकार ने स्टाफ बढ़ाने का फैसला इसी तरह के क्षेत्रों को ध्यान में रखकर किया है। स्किन और प्लास्टिक सर्जरी के डॉक्टर्स तो बेहद गिनेचुने हैं।मरीजों के इलाज प्रभावित।बड़े पैमाने पर काम रुकने के परिणामस्वरूप सर्जरी, कीमोथेरेपी और सी-सेक्शन को रद्द और स्थगित करना पड़ा। साथ ही सरकार ने अपनी सार्वजनिक स्वास्थ्य चेतावनी को उच्चतम स्तर तक बढ़ा दिया। चो ने स्वास्थ्य पेशेवरों की कमी और उभरते जनसांख्यिकीय संकट का हवाला देते हुए कहा कि सरकार अपनी सुधार योजना के लिए प्रतिबद्ध है, जिससे मेडिकल स्कूल में प्रवेश में 65 प्रतिशत की वृद्धि होगी। उन्होंने कहा, अगर हम (वृद्धि का) दायरा कम करते हैं, तो इससे आवश्यक चिकित्सा कार्यबल उपलब्ध कराने में देरी होगी। मतदान से पता चलता है कि दक्षिण कोरिया की 75 प्रतिशत जनता सुधारों का समर्थन करती है और राष्ट्रपति , जिन्होंने हड़ताली डॉक्टरों पर सख्त रुख अपनाया है, ने अप्रैल 2024 के विधायी चुनाव से पहले अपनी अनुमोदन रेटिंग में वृद्धि देखी है।

साथियों बात अगर हम साउथ कोरिया सरकार के एक द्वारा उठाए गए एक्शन की करें तो,सरकार हर साल 2 हजार डॉक्टर्स तैयार करना चाहती है। आंकड़ों के लिहाज से देखें तो हर साल करीब 65 प्रतिशत ज्यादा डॉक्टर तैयार करना सरकार का लक्ष्य है। एक अनुमान के मुताबिक- 2035 तक साउथ कोरिया में 15 हजार और डॉक्टर्स की जरूरत होगी। अगर ऐसा नहीं हुआ तो देश का हेल्थ सिस्टम किसी भी वक्त चरमरा सकता है।खास बात ये है कि 90 प्रतिशत साउथ कोरियाई लोग सरकार के इस कदम का समर्थन कर रहे हैं और उन्होंने धमकी दी है कि अगर हड़ताल खत्म नहीं हुई तो वो डॉक्टरों के खिलाफ आंदोलन करेंगे।एक लोकल मीडिया नेटवर्क के मुताबिक- सरकार डॉक्टरों को यह भरोसा दिला सकती है कि नए डॉक्टर्स आने के बाद सीनियर्स की सैलरी पर कोई असर नहीं आने दिया जाएगा।दक्षिण कोरियाई कानून के तहत, डॉक्टरों को हड़ताल करने से प्रतिबंधित किया गया है और सरकार ने गुरुवार तक काम पर नहीं लौटने वाले डॉक्टरों को गिरफ्तार करने और मेडिकल लाइसेंस निलंबित करने की धमकी दी है। बिल के खिलाफ डॉक्टर न्यायालय में चुनौती दे सकते हैं, लेकिन मरीजों का इलाज नहीं करना उनके कर्त्तव्यों का उल्लंघन है। नैतिकता के विरुध डॉक्टरों की इस हड़ताल से प्रदेश में विकट परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। ऐसा करने वाले डॉक्टरों के खिलाफ केस दर्ज किया जाए।

साथियों बात अगर हम साउथ कोरिया सरकार द्वारा उठाए गए ताजा कड़े कदमों की करें तो, साउथ कोरिया में 20 फरवरी से जारी जूनियर डॉक्टर्स कीहड़ताल पर सरकार ने सख्त रवैया अपना लिया है। शुक्रवार तड़के पुलिस की स्पेशल टीम ने कोरियन मेडिकल एसोसिएशन के दफ्तर पर छापा मारा और यहां से कुछ डॉक्यूमेंट्स बरामद किए सरकार ने साफ कर दिया है कि अगर ये डॉक्टर जल्द ड्यूटी पर नहीं लौटे तो इनके खिलाफ क्रिमिनल केस दर्ज किया जाएगा और जुर्माना भी लगाया जाएगा इसके बावजूद इन डॉक्टर्स ने झुकने से इंकार कर दिया।लोकल मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक 10 हजार में से अब तक सिर्फ 565 डॉक्टर्स ड्यूटी पर लौटे हैं। सरकार ने इमरजेंसी के लिए आर्मी मेडिकल टीम को काम पर लगाया है। देश के 15 अस्पतालों में सिर्फ इमरजेंसी सर्जरीज की जा रही हैं।

अत: अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि क्या वह ज़माना बीत गया, जब हम डॉक्टर को ईश्वर अल्लाह का दर्ज़ा दिया करते थे? दक्षिण कोरिया के डॉक्टरों की हड़ताल क्या नैतिकता के विरुद्ध नहीं है?आम जनता को ज्यादा डॉक्टर और बेहतर मेडिकल फैसिलिटी देना सरकार का कर्तव्य है, इसे रोकनें या बाधित करने वाले मानवता के विरोधी हैं।

संपादक के नाम पत्र

हिंसकजनों और दुष्कर्मियों को बख्शा नहीं जाए

संदेशखाली में हुई हिंसा,आगजनी और दुष्कर्म की घटनाओं से स्पष्ट है कि ममता सरकार की लापरवाही ने मणिपुर को पीछे छोड़ दिया है , क्योंकि घटना स्थल और क्षेत्र में सरकारी तंत्र दब्बू बन कर शह भी देता रहा तथा भाजपा और? अन्य सियासी दलों को वहां जाने से रोका गया। खूंखार अपराधी शहंशाह शेख को राज्य सरकार फरार ही दिखाती रहती, गनीमत है कि हाई कोर्ट ने गिरफ्तारी पर स्पष्ट निर्देश दिए। पश्चिम बंगाल में समानांतर सरकार चलाने और ईडी टीम पर हमला करने से नहीं चूकने वाला शहंशाह शेख गिरफ्तारी और कोर्ट में जाते समय के दृश्य में वीआइपी की दिखाई दे रहा था। वस्तुतःशेख का टीएमसी से निलंबन पचपन दिन पूर्व किया जाना था। एक महिला सीएम के राज्य में महिलाओं पर अत्याचार से देश? शर्मिंदा है। अस्तु ऐसे हिंसक और दुष्कर्मी को किसी भी हालत में बख्शा नहीं जाए।

-बी एल शर्मा 'अकिंचन' तराना-उज्जैन

कोचिंग संस्थानों का बढ़ता मायाजाल घातक

पुराणों में विद्या के विषय में कहा जाता है - 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात विद्या वही है जो मुक्ति दिलाए। किंतु आज के समय में विद्यार्थियों पर पढ़ाई का अत्यधिक दबाव है। एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में जरा-सी नाकामी में जीवन को समाप्त करने जैसे आंकड़े चिंतित करते हैं। वैसे तो पढ़ाई का बोझ कम करने के प्रयास लंबे समय से किए जा रहे हैं किंतु कोई बदलाव आया नहीं। आज कोचिंग संस्थान पढ़ाई से ऊपर उठकर केवल कमाई का जरिया बन गए हैं। हर कोचिंग संस्थान का यही उद्देश्य है कि ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थियों को इस हेतु आश्वस्त करें कि उनके यहां ही पढ़ाई बेहतर है। इस तरह वे अच्छा आर्थिक लाभ उठाते हैं। किंतु उनकी ओर से पड़ रहे दबाव के बारे में कुछ नहीं सोचा जाता। इधर, सरकारी स्कूलों की हालत दिनोंदिन बदतर होती जा रही है जबकि कोचिंग संस्थान के मालिक धनाढ्य हो रहे हैं। यह सर्वविदित है कि सफलता का सब्जबाग दिखाते और सपने बेचते कोचिंग संस्थानों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है। कोचिंग के लिए ख्यात प्रमुख शहरों की तर्ज़ पर आज देश के लगभग सभी छोटे-बड़े शहरों से लेकर गली, मुहल्ले, कस्बों में भी कोचिंग संस्थान कुकुरमुत्ते की तरह हर जगह उग आए हैं। एक दौर था जब पढ़ाई में कमज़ोर छात्रों के लिए ही कोचिंग आवश्यक समझा जाता था, परंतु इन दिनों कोचिंग एक चलन ही नहीं, 'स्टेट्स सिंबल% बनता जा रहा है। कोचिंग नहीं लेने वाले विद्यार्थियों को आजकल कमज़ोर, औसत या प्रतिभाहीन मान लिया जाता है। अधिक प्राप्तांक या प्रतियोगी परीक्षाओं में मिली सफलता को ही विद्यार्थियों की प्रतिभा की एकमात्र कसौटी नहीं मानना चाहिए। यह इतिहास-सिद्ध सत्य है कि किसी एक क्षण की कौंध या प्रेरणा कई बार युगांतकारी परिवर्तन या असीमित संभावनाओं का वाहक बनती है।

बंगाल में अंतिम सांस ले रही क़ानून व्यवस्था

पश्चिम बंगाल के संदेशखाली से जो घटना सामने आ रही है उसमें कुछ भी नया नहीं है, वहां की सरकार द्वारा अक्सर क़ानून-व्यवस्था को ताक में रखकर अपने गैरजिम्मेदाराना रवैये का ही परिचय दिया जाता है। इसे तृणमूल सरकार की सत्तालोलुपता ही कहा जाएगा कि वह सबकुछ जानकर भी अनजान बनी रहती है। गुंडे-बदमाशों को कोई दंड न मिलने से उनके हौसले बुलंद होते हैं, बंगाल में इस समय यही हो रहा है। मणिपुर की घटना से आसमान सिर पर उठा लेने वाले विपक्षी भी संदेशखाली की घटना पर चुप हैं, मानो उनके मुंह में जुबान ही नहीं रही। इसमें कोई संदेह नहीं कि ममता सरकार द्वारा अपराधियों पर कार्यवाही का न होना उन्हें राजनीतिक कारण और इसके पीछे सरकार की मौन स्वीकृति ही दिखाई देती है। जो भी हो, किंतु अब केन्द्र सरकार को इस मामले में हस्तक्षेप करना ही चाहिए और बंगाल में राष्ट्रपति शासन की तरफ तेजी से कदम बढ़ाने चाहिए। बंगाल में शांति स्थापित करने और वहां की जनता को आतंकमुक्त करने का यही अन्तिम विकल्प है। इसी से कोई स्थायी समाधान निकल सकता है।

-अंकित सोनी 'आदित्य', गांधीनगर, मनावर, धार (मप्र)

भारत में राजनीति का अपराधीकरण

एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) के पास उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों के अनुसार , राज्यसभा के लगभग एक-तिहाई सदस्यों ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले घोषित किए हैं। एडीआर के मुख्य निष्कर्ष में राज्यसभा उम्मीदवार? में लगभग 36त्न राज्यसभा उम्मीदवारों ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले घोषित किए हैं, जबकि विश्लेषण किए गए उम्मीदवारों की औसत संपत्ति ?127.81 करोड़ थी। सुप्रीम कोर्ट ने माना कि मतदाताओं के सूचना के अधिकार का उल्लंघन करने के लिए चुनावी बांड योजना असंवैधानिक थी। एडीआर की एक रिपोर्ट के अनुसार, पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों की संख्या 2010 से 2019 तक दोगुनी हो गई है। एडीआर का तर्क है कि केंद्र द्वारा चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति की वर्तमान प्रथा है अनुच्छेद 14 और अनुच्छेद 324 (2) और संविधान की मूल विशेषताओं का उल्लंघन । भारत में राजनीति का अपराधीकरण एक गंभीर मुद्दा है जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। राजनीति में अपराधियों की भागीदारी न केवल लोकतांत्रिक प्रक्रिया को कमजोर करती है बल्कि राष्ट्र के विकास को भी बाधित करती है। राजनीतिक दलों की भूमिका तय करने की आवश्यकता है कि वे अपने उम्मीदवार चयन प्रक्रिया में अधिक पारदर्शी और जवाबदेह हों। भारत के चुनाव आयोग और अन्य संबंधित अधिकारियों को राजनीतिक दलों और भारत के लोगों को मिलने वाले उनके वित्तपोषण के बारे में पारदर्शिता उपाय करने की आवश्यकता है ताकि वे अपने वोट का प्रयोग करते समय सूचित निर्णय ले सकें। अब समय आ गया है कि इस खतरे को रोकने और लोकतांत्रिक व्यवस्था में विश्वास बहाल करने के लिए कड़े कदम उठाए जाएं।

-सीमा कुमारी, स्वतंत्र लेखिका

असमंजस से घिरी आज की युवा शक्ति

भावना ठाकर
'भावु' (बेंगुलूरु)
bt100564@gmail.com

'यंग इंडिया' शब्द कितना आत्मनिर्भर और परिपूर्ण लगता है! देखा जाए तो आज की जनरेशन कई रंगों में रंगी दिखती है। कहीं कोई आत्मविश्वास से भरपूर है तो कहीं कोई किंकर्तव्यविमूढ़। वैसे तो आज के युवाओं को परवाह नहीं ज़माने की आपखुदी और दबंगाई के जलवे इनके निराले है। रिश्ते के दायरे भी जानते है और अपना उल्लू सीधा करने के मायने भी जानते है। आज की युवा पीढ़ी को एक योद्धा ही कहूँगी, जन्म से लेकर ज़िंदगी का पूरा सफ़र खुद को साबित करने में स्पर्धात्मक ज़िंदगी जी रहे है। हर जगह पर रेस लगी है, ऐसे में आज की पीढ़ी जीवन को बखूबी जीना भी जानती है। लड़के तो अपनी ज़िम्मेदारीयाँ निभाने में माहिर है ही चाहे परिवार के प्रति हो, चाहे दोस्तों के प्रति या देश के प्रति। पर गर्व इस बात का है की आज कल की युवा लड़कीयाँ भी शिक्षित, स्वावलंबी और स्वतंत्र है। हर क्षेत्र में अपना परचम लहराते आगे बढ़ रही है। अपने पैरों पर खड़ी रहकर जीवनयापन के लिए किसी पर निर्भर नहीं रही। फिर भी कहीं न कहीं आज के दौर की युवा पीढ़ी की सोच में ठहराव नहीं दिख रहा। अपने लक्ष्य के प्रति असमंजस से घिरा और उखड़ा-उखड़ा लगता है जो विश्लेषण का विषय है।

आज के युवाओं में प्रतिभा और क्षमता तो है लेकिन इसे आवेगी और अधीर भी कहा जा सकता है। आज का युवा नई चीजें सीखने और खोजने में उत्सुक है। लेकिन वे हर कदम पर किसी और द्वारा निर्देशित नहीं होना चाहते हैं। ऐसे युवाओं के हाथों में देश का भविष्य है पर, क्या हम असमंजस से घिरी आजकल की युवा पीढ़ी पर भरोसा कर सकते है? आज के पच्चीस से लेकर तीस साल के युवाओं के सामने करियर चुनने की चुनौती मुँह खोले खड़ी है, वहाँ उतनी ही अहम् चुनौती जीवनसाथी के चुनाव की भी होती है। इसी जद्दोजहद में परिवार की अपेक्षाओं और खुद की पसंद के बीच वैचारिक द्वंद्व अलग से। आज के साठ-पैंसठ प्रतिशत युवा इसी अनिश्चय की स्थिति का सामना कर रहे है।

साथ ही आज की पीढ़ी कैरियर ओरियेंटेड है। नाम और सक्सेस उनकी लाइफ़ का ऐजेंडा है। उनको सबकुछ पा लेना है जिसकी वजह से करियर बनाने में इतने व्यस्त हो जाते है कि किसीके साथ रिलेशनशिप बनाने का समय ही नहीं निकाल पाते। कभी-कभी कुछ नौजवान जो अपने जीवन के तीसवें पड़ाव में हैं वो रिलेशनशिप में कमिटमेंट को एक जाल की तरह देखते हैं। वे इससे बचना चाहते हैं, उनके लिए, खुद को जानना-समझना और खुद का मालिक होना किसी और का हाथ थामने से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण होता है इसी चक्कर में न रिलेशन बनाते हैं न शादी को गंभीरता से लेते है और इन सब में इनकी पर्सनल लाइफ़ तितर-बितर हो रही है। नतीजा यह होता है कि यह भावनात्मक रूप से बहुत अकेले पड़ जाते हैं।

वर्तमान में करियर का चुनाव युवाओं के लिए बड़ी समस्या है। आज का युवा अपनी करियर पसंदगी में किसीकी दखल अंदाज़ी पसंद नहीं करता। परिवार द्वारा थोपे गए क्षेत्र से ज़्यादा उन्हें अपनी रुचि और अपने मनपसंद क्षेत्र में जाना ज़्यादा पसंद होता है। आज के दौर में बच्चों में खुद को प्रदर्शित करने की भावना प्रबल होती है और इस मामले में वो खुद को किसीसे पीछे नहीं रखना चाहते।

आज इतनी सारी अपोर्चुनिटी होने के बावजूद युवा अपना लक्ष्य तय नहीं कर पाते। कभी इंजीनियरिंग लुभाती है, तो कभी मैडिकल कभी बड़ी कंपनियों द्वारा दिए जाने वाले लाखों के पैकेज, तो कभी सिविल सर्विसेज। उस पर परिवार वालें अपने बच्चे को राजनीति में परचम लहराते पार्टी की किसी कुर्सी पर विराजमान होते देखना चाहता है। ऐसी परिस्थिति में युवा भटक जाते हैं और तय नहीं कर पाते कि कौनसा क्षेत्र सही रहेगा। जिसके चलते मानसिकता तौर पर अवसाद का भोग बन जाते हैं। इन सभी परेशानियों का कारण है युवाओं की एक अच्छे करियर के लिए अंधी दौड़। अच्छा करियर यानि बचपन से ही बच्चे को बताया जाता है कि उसे सबसे आगे निकलना है। माता-पिता की इन अपेक्षाओं के बोझ तले युवा दब जाते हैं। इससे उनकी जिंदगी निराशा की ओर मुड़ जाती है। करियर आज के दौर में हर यूथ की पहली प्रीयोरिटी है, लेकिन हैरानी इस बात को लेकर होती है कि आज का यूथ डिमांड से ज्यादा उस करियर को चुनने में दिलचस्पी दिखा रहा है, जिसमें उसका खुद का पैशन हो ये बात परिवार वालों को समझनी चाहिए। माना कि एक परिवार अपने बच्चे के जीवन के लगभग 5 से 7 साल शिक्षा में इस इरादे से निवेश करता है कि भविष्य खुशहाल हो। फिर भी न तो आर्थिक और न ही सामाजिक रूप से रिटर्न की कोई गारंटी होती है फिर भी बच्चें अपनी पसंद से अपनी नौकरियाँ नहीं पा रहे हैं। पर्याप्त विकल्प होने के बावजूद भी वह नहीं जानते कि उनके लिए सबसे उपयुक्त क्या है। क्योंकि आज के अधिकतर युवा जानते ही नहीं कि उसे समाज और शिक्षा ने जो तैयारी दी है, वह उसे किधर ले जाएगी। वह जानता है कि जो उसने सीखा है वह जीवनयापन के लिए उसे 'नौकरी' नहीं दिला सकता। खुद कुछ कर पाएं उसके के लिए तो उसे तैयार ही नहीं किया गया है। वह जानता है कि प्रक्रिया कुछ भी हो, सामान्यतः नौकरियां बिकती हैं। यही नहीं, अब तो अच्छे संस्थानों में प्रवेश के लिए भी कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं, जो वही कर सकते हैं, जिनके पास संसाधन और सिफारिशें हों। युवाओं का मनोबल तोड़ने में शिक्षा व्यवस्था और हर तरफ पसरा हुआ भ्रष्टाचार सबसे बड़े गुनहगार है। ऐसे में युवाओं की मनः स्थिति डाँवाडोल न हो तो ही ताज्जुब की बात है। कभी-कभी ऐसा होता है कि युवा मजबूरी में नौकरी कर तो रहे होते हैं लेकिन उनका रुझान खुद का मालिक बनने पर ज्यादा होता है। उनमें सहनशक्ति भी कम होती है और नौकरी का कड़ा अनुशासन उन्हें रास नहीं आता है। वे जल्दी से जल्दी बहुत सारा पैसा कमाना चाहते हैं लेकिन इसके लिए वे शॉर्ट कट की तलाश में रहते हैं।

ठीक वैसे ही जीवनसाथी पसंद करने के मामले में असमंजस से जूझना पड़ता है। इसका सबसे बड़ा कारण है विश्वशनीयता का अभाव! आज कल जैसा समय चल रहा है इसमें एक परफेक्ट लाइफ पार्टनर ढूँढ़ना एक चुनौती सा लगता है और फिर बात कुछ समय की नहीं पूरे जीवन की भी है। युवा एक ऐसा जीवन साथी चाहते हैं जो न केवल साथ निभाए बल्कि उन्हें समझे, इस उलझी सी दुनिया में सुलझे से कुछ पल साथ बिताएं। मगर इस आधुनिकता के दौर में ऐसा कोई मिल पाना थोड़ा तो मुश्किल है। आज का युवा यही सोचता है।

वर्तमान परिवेश में युवा वर्ग एक असमंजस की स्थिति का सामना इसलिए भी कर रहा है जहाँ रोज़गार है तो आमदनी अपेक्षित नहीं है। आमदनी अपेक्षित है तो मनोनुकूल जीवन साथी उपलब्ध नहीं है। और दोनो हैं तो परिजन की स्वीकृति नहीं है। इसी भंवर में फंसा बेचारा युवा शनैः शनैः अधेड़ावस्था की ओर अग्रसर होने लगता है। या फिर कोई युवा ये सोचते हैं कि शादी तब करनी चाहिए जब दिल से, मन से हम तैयार हो, सेटल होने के लिए। शारीरिक जरुरियात के चलते नहीं बल्कि जब ये लगे कि क्या मैं किसी एक व्यक्ति की जिम्मेदारी उठाने के काबिल हूँ ? क्या किसी एक व्यक्ति को मैं ताउम्र शिद्दत से चाह सकता या सकती हूँ? क्या मैं उस इंसान के साथ उसका हाथ थामें बुढ़ा हो सकता या हो सकती हूँ? क्या मैं अपने बच्चों को उसका साथ लेकर पाल सकता या सकती हूँ? या किसीको अपनी ओर से भरपूर अपनापन या सूख दे सकता या सकती हूँ? इन सारे सवालों के जवाब तलाशते उलझ जाते हैं।

वर्तमान में जैसे-जैसे लड़कियों की शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है वैसे-वैसे वे शादी से विमुख होती जा रही हैं। इसका एक मुख्य कारण है कि शादी के बाद लड़कियों की जिंदगी पूरी तरह से बदल जाती है। उनके पहनावे से लेकर उनकी पसंद के खाने तक, हर चीज़ में ससुराल और पति की मर्जी शामिल हो जाती है। सासू माँ चाहती हैं कि बहू उनके अनुसार रहे; उनके अनुसार कपड़े पहने; उनके अनुसार अपनी पसंद व नापसंद को तय करे।

साथ ही, कई बार बहू की नौकरी को लेकर भी ससुराल में दिक्कत लगी रहती है। ससुराल वाले चाहते हैं कि बहू नौकरी तो करें लेकिन घर भी बिल्कुल वैसे ही संभाले जैसे बाकी गृहणियाँ संभालती हैं।

साथ-साथ शादी के एक समय बाद बहू पर बच्चे पैदा करने का प्रेशर अलग से थोपना शुरू कर दिया जाता है। उसके दिमाग में यह बात अच्छे से डाल दी जाती है कि %बिना माँ बने कोई भी स्त्री पूर्ण नहीं होती%। और जब बच्चा हो जाता है तो बहू को हर पल ये एहसास कराया जाता है कि अब वो किसी की बहू, पत्नी या बेटी ही नहीं बल्कि एक माँ भी है, इसलिए अपने सपनों को पीछे छोड़कर सबसे पहले अपने बच्चे के बारे में सोचना चाहिए। और धीरे-धीरे वह लड़की जो खुले आसमान में उड़ना चाहती थी; जो बड़े-बड़े सपने देखती थी; जो अपनी जिंदगी को अपने हिसाब से जीना चाहती थी; अपनी ख्वाहिशों के महल को ढहा देती है और एक सामान्य सी गृहणी बनकर पति, सास, ससुर व बच्चों के लिए जीने लग जाती है।

ऐसी तमाम तरह की समस्याएँ हैं जिनका शादी के बाद अधिकांश लड़कियों को सामना करना पड़ता है। ऐसे में, वे लड़कियाँ जो अपने घर-परिवार या आस-पास हर रोज़ रिश्तों को घुनता हुआ देख रही हैं, उनके मन में शादी को लेकर नकारात्मक छवि बन जाती है, और वे उस स्थिति से गुजरना नहीं चाहतीं। अब वह पढ़ाई-लिखाई करके अपने करियर को ऊँचे मुकाम तक ले जाकर अपनी शर्तों पर जिंदगी जीने में यकीन रखती हैं।

दूसरा कारण आज के आधुनिक युग में हर कोई हाई-फाई लाइफस्टाइल चाहता है अगर पति-पत्नी दोनों कमाएंगे तभी शान से ज़िंदगी जी पाएंगे ये सोचकर युवक कामकाजी लड़की ज़्यादा पसंद करते हैं। लेकिन परिवार वाले सोचते हैं कि कामकाजी लड़की घर का काम, बड़ों की सेवा और छोटों को प्यार दे पाएगी? घर और ऑफ़िस के बीच सामंजस्य बिठाकर बेटे का और हमारा ख़याल रख पाएंगी? कई बार ऐसा भी होता है कि लड़का किसी सामान्य दिखने वाली लड़की के साथ रिलेशनशिप में होता है तब परिवार वालें रुप-रंग को महत्व देते रिजेक्शन का ठप्पा लगा देते हैं। भले ही देश आज कितना भी आगे क्यों न बढ़ रहा हो, लेकिन घर की बहू के लिए उनके दिमाग में पहले से ही एक माइलस्टोन सेट होता है कि बहू तो ऐसी ही चाहिए। अगर लड़की सुंदर है तो उसे हर कोई अपने घर की बहू बनाना चाहेगा। वहीं सांवली लड़कियों को कई बार एक लंबी चेकलिस्ट से गुजरना पड़ता है। लड़कियां कितना भी आज आगे निकल चुकी हैं लेकिन उन्हें इन परेशानियों से गुजरना ही पड़ता है।

इसी उधेड़बुन में कभी-कभी युवा तीस बत्तीस साल के हो जाते हैं और अंत में जो मिला उसे नसीब समझकर समझौता कर लेते हैं। कभी-कभी कुछ लड़के लड़कियाँ रिलेशनशिप बनाते भी है लेकिन रिश्ते की अहमियत को समझे बिना छोटी-मोटी बात पर ब्रेक अप कर लेते हैं; जिस वजह से और किसीके साथ जुड़ने से डरते है।आजकल तो शादी के मामले में लड़कियाँ भी उतनी ही चूज़ी हो गई है। लड़कियाँ खुद जब तक पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो जाती तब तक शादी के बारे में सोचती तक नहीं। और कई बार ऐसा होता है कि लड़कियाँ पढ़ लिखकर बड़ी-बड़ी कंपनियों में उच्च औधे पर विराजमान हो जाती है फिर उनको अपने लेवल का लड़का ढूँढ़ने में दिक्कत होती है। अगर लड़का अपने लेवल का मिल जाता है तो उनके परिवार वालों का स्टैंडर्ड ठीक नहीं होता तो कभी लड़के की कद काठी या आउट लूक ढंग का नहीं होता ऐसी परिस्थिति में लड़कियाँ चुनाव नहीं कर पाती और उम्र निकल जाती है। बेशक आज के ज़माने में तो जीवनसाथी पसंद करने के लिए भी कितने सारे प्लेटफार्म मिल रहे हैं जैसे कि ऑनलाइन चैटिंग-डेटिंग, मैट्रीमोनियल वेबसाइट, जीवनसाथी डॉटकोम, शादी डॉटकॉम जैसी ढ़ेरों साइट उपलब्ध है। किन्तु कई युवाओं को असमंजस के मारे लगता है कि पूरी ज़िंदगी का सवाल है यूँ अनजान लोगों पर भरोसा कैसे कर लें? इस वजह से ऐसी वेबसाइट को अवोइड करते हैं तभी उलझे-उलझे युवा न अपने तरीके से जीवनसाथी का चुनाव कर पाते है, न परिवार की पसंद पर मोहर लगा पाते हैं, न ऐसी वेबसाइट्स द्वारा चयन कर पाते हैं। ऐसी परिस्थिति में युवाओं को समझना चाहिए कि इतनी असंमजस से बेहतर है समझदार बनें। ज़िंदगी सबको सबकुछ नहीं देती। कहीं न कहीं समझौता करके ही ज़िंदगी जीनी पड़ती। हर चीज़ को पाने के लिए एक हद तक कोशिश करनी चाहिए। उम्र रहते उसमें से जो उत्कृष्ट है उसे अपनाकर आगे बढ़ना चाहिए इसमें ही बुद्धिमानी है।

याद पुरानी पर अनमोल

मीनाक्षी सुकुमारन
नोएडा
virgo67@ymail.com

ये बात 19/2/93 की है जब हम होटल पहुँचे पंकज उधास जी का साक्षात्कार करने। मन में एक अलग सा ही उत्साह था एक तो अपने सबसे पसंदीदा गज़ल व गीतकार को न सिर्फ देखना, मिलना पर उनका इंटरव्यू लेना। जितनी खुशी थी उतनी ही नर्वसनेस भी थी।

पर किसी तरह खुद को समेट हमने होटल के कमरे की बेल बजाई और जैसे ही दरवाज़ा खुला सफेद लिबास में चेहरे पर तेज, होठों पर मुस्कान लिए पंकज उधास जी को पाया और जैसे होश गुम ही हो गये, शब्द खो गए बस उन्हें देखते ही रह गए कुछ पल और बिना कुछ कहे भाग आए। वो भी चुपचाप अंदर चले गए। पांच मिनट बाद एहसास हुआ की हुआ क्या

हमने सिर पिट लिया अपना आखिर हो क्या गया था हमें।

कोई पहला इंटरव्यू थोड़ा था जो हम इतना घबरा गए कितने ही कितनी ही हस्तियों के कर चुके थे हर क्षेत्र से चाहे एक्टर हो, ऐक्ट्रेस, सिंगर, फिल्म निर्देशक, खेल जगत

फिर आज क्यों इतना शरमा और घबरा गए।

उथल पुथल सी मची हुई थी दिल और दिमाग में अब क्या करें इतना अच्छा अवसर खो दिया दुबारा बेल बजाएं तो उनका रवैया कैसा होगा, नाराज़ होकर डांट तो नहीं देंगे।

पर मिलना तो था इंटरव्यू तो लेना ही था साहस को बटोर कर पुनः बेल बजाई। फिर से दरवाज़ा पंकज जी ने ही खोला और मुस्कुरा करे बोले आप जी कहिए। हमने खुद को समेट हिम्मत कर कहा ''सर आपके बहुत बड़े फैन हैं इसलिए आपको रूबरू देख खुशी और घबराहट में कुछ कह नहीं पाए और बिना कुछ कहे चले गए प्लस माफ कर दीजिए'' वो बड़ी ही सादगी और संजीदगी से बोले कोई बात नहीं अक्सर ऐसा हो जाता, आप परेशान न हों।

तब जाकर थोड़ी जान में जान आयी और हमने दिल की बात रखी उनके सामने सर आपका इंटरव्यू लेना चाहते थे आल इंडिया रेडियो व राष्ट्रीय सहारा समाचार पत्र के लिए।

उन्होंने कहा मुझे कोई आपत्ति नहीं पर अभी निकलना है मेरा सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम में कार्यक्रम है।

क्या आप वहाँ आ सकते हैं वहाँ ग्रीन रूम में इंटरव्यू ले लीजिएगा। मैं आपको वी आई पी पास दे देता हूँ आप कार्यक्रम में भी शामिल हो जाइगा और इंटरव्यू भी ले लीजियेगा। चाहें तो मेरे साथ मेरे दोनों भाई मनहर उधास व निर्मल उधास भी हैं उनका भी ले सकते हैं।

दिल को इस से ज़्यादा क्या ही चाहिए था जिन्हें सिर्फ रेडियो, कैसट में ही सुना था आज साक्षात स्टेज पर गाते हुए सुनेंगे और देखेंगे।

उनकी विनम्र इतनी बोले आप हमारे साथ चलना चाहें तो मोस्ट वेलकम। हमने कहा सर हम पहुँच जाएंगे आपसे वहीं मिलते हैं।

ये कह निकल पड़े सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम के लिए और वहां पहुंच कर एक अलग ही माहौल था। बड़ा सा स्टेज जिस पर सफेद लिबास में पंकज उधास जी हारमोनियम के साथ अपनी गज़लों का गाते हुए। सब एक सपना सा लग रहा था पर ये खूबसूरत हकीकत थी जिसे हमने जीया।

इस तरह न सिर्फ उन्हें देखा, सुना रूबरू उनका इंटरव्यू भी लिया। साथ ही मनहर उधास व निर्मल उधास जी का भी।

ये दिन इतना खास और यादगार बन गया आज भी जब याद आता है एक खूबसूरत सपना सा लगता है।

कीमती यादगार अनमोल लम्हे जब न सिर्फ तीनों भाइयों से एक साथ मिलने का अवसर मिला, उन्हें सुनने का और इंटरव्यू का भी जो राष्ट्रीय सहारा में प्रकाशित हुआ और युववाणी आकाशवाणी नई दिल्ली में प्रसारित भी हुआ।

उसके पश्चात लंबे समय तक पत्रों के माध्यम से भी उन से संपर्क बना रहा।

कल 26 फरवरी 2024 जैसे ही खबर आई पंकज उधास जी नहीं रहे। दिल रो उठा और पीछे लौट गया उस दिन, उन पलों में जो हमने सजीव जिये थे। जिन्हें दिल में बसाया , पलकों पर बिठाया उन्हें कैसे कहें विनम्र श्रद्धांजलि।क्यों नियति के क्रूर हाथों ने यूँ छीन लिया उन्हें ? जितनी खूबसूरत उनकी आवाज़ उतनी ही खूबसूरत उनकी शख्सियत जिसे हम ने खुद सुना और देखा।

सवाल अब भी बस यही है कैसे कहें अलविदा आपको भीगी हैं आँखें, दिल है भारी रहेंगे आप सदा अजर,अमर तथा जीवित रहेंगे हमारे दिलों में अपनी गज़लों और गीतों में जो अनमोल धरोहर है न सिर्फ हमारे पास , हर आपके चाहनेवाले और संगीत प्रेमी के पास।

होली प्यार और मनुहार का त्यौहार

होली का त्यौहार है, प्यार और मनुहार का,
रंगों का साथ है, अबीर और गुलाल का।

होली हिन्दुओँ का वैदिक कालीन पर्व है। इसका प्रारंभ कब हुआ, इसका कहीं उल्लेख या कोई आधार नहीं मिलता है। परन्तु वेदों एवं पुराणों में भी इस त्यौहार के प्रचलित होने का उल्लेख मिलता है। प्राचीन काल में होली की अग्नि में हवन के समय वेद मंत्र 'रक्षोहणं बल्गहणम' के उच्चारण का वर्णन आता है।

होली पर्व को भारतीय तिथि पत्रक के अनुसार वर्ष का अन्तिम त्यौहार कहा जाता है। यह पर्व फाल्गुन मास की पूर्णिमा को संपन्न होने वाला सबसे बड़ा त्यौहार है। इस अवसर पर बड़े -बूढ़े, युवा -बच्चे, स्त्री-पुरुष सबमे ही जो उल्लास व उत्साह होता है, वह वर्ष भर में होने वाले किसी भी उत्सव में दिखाई नहीं देता है। कहा जाता है कि प्राचीन काल में इसी फाल्गुन पूर्णिमा से प्रथम चातुर्मास सम्बन्धी 'वैश्वदेव' नामक यज्ञ का प्रारंभ होता था, जिसमे लोग खेतों में तैयार हुई नई आषाढी फसल के अन्न- गेहूं, चना आदि की आहुति देते थे और स्वयं यज्ञ शेष प्रसाद के रूप में ग्रहण करते थे। आज भी नई फसल को डंडों पर बांधकर होलिका दाह के समय भूनकर प्रसाद के रूप में खाने की परम्परा 'वैश्वदेव यज्ञ' की स्मृति को सजीव रखने का ही प्रयास है। संस्कृत में भुने हुए अन्न को होलका कहा जाता है। संभवत- इसी के नाम पर होलिकोत्सव का प्रारंभ वैदिक काल के पूर्व से ही किया जाता है।

यज्ञ के अंत में यज्ञ भष्म को मस्तक पर धारण कर उसकी वन्दना की जाती थी, शायद उसका ही विकृत रूप होली की राख को लोगों पर उड़ाने का भी जान पड़ता है। समय के साथ साथ अनेक ऐतिहासिक स्मृतियां भी इस पर्व के साथ जुड़ती गई :

नारद पुराण के अनुसार ---परम भक्त प्रहलाद की विजय और हिरन्यक्शिपु की बहन 'होलिका' के विनाश का स्मृति दिवस है। कहा जाता है कि होलिका को अग्नि में नहीं जलने का आशीर्वाद प्राप्त था। हिरन्यक्शिपु व होलिका राक्षस कुल के बहुत अत्याचारी थे । उनके घर में पैदा प्रहलाद भगवान् भक्त था, उसको ख़त्म करने के लिए ही होलिका उसे गोद में लेकर अग्नि में बैठी थी मगर प्रभु की कृपा से प्रहलाद बच गया और होलिका उस अग्नि में ही दहन हो गई। शायद इसीलिए इस पर्व को होलिका दहन भी कहते हैं।

भविष्य पुराण के अनुसार कहा जाता है कि महाराजा रघु के राज्यकाल में 'ढुन्दा' नामक राक्षसी के उपदर्वों से निपटने के लिए महर्षि वशिष्ठ के आदेशानुसार बालकों को लकड़ी की तलवार-ढाल आदि लेकर हो-हल्ला मचाते हुए स्थान स्थान पर अग्नि प्रज्वलन का आयोजन किया गया था। शायद वर्तमान में भी बच्चों का हो-हल्ला उसी का प्रतिरूप है।

होली को बसंत सखा 'कामदेव' की पूजा के दिन के रूप में भी वर्णित किया गया है।'धर्माविरुधोभूतेषु कामोअस्मि भरतर्षभ' के अनुसार धर्म संयत काम संसार में ईश्वर की ही विभूति माना गया है। आज के दिन कामदेव की पूजा किसी समय सम्पूर्ण भारत में की जाती थी। दक्षिण में आज भी होली का उत्सव 'मदन महोत्सव' के नाम से ही जाना जाता है।

वैष्णव लोगों के किये यह 'दोलोत्सव' का दिन है। ब्रह्मपुराण के अनुसार --

नरो दोलागतं दृष्टा गोविंदं पुरुषोत्तमं।
फाल्गुन्यां संयतो भूत्वा गोविन्दस्य पुरं ब्रजेत।।

इस दिन झूले में झुलते हुए गोविन्द भगवान के दर्शन से मनुष्य बैकुंठ को प्राप्त होता है। वैष्णव मंदिरों में भगवान् श्रीमद नारायण का आलौकिक श्रृंगार करके नाचते गाते उनकी पालकी निकाली जाती है।

कुछ पंचांगों के अनुसार संवत्सर का प्रारंभ कृषण पक्ष के प्रारंभ से और कुछ के अनुसार शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में पूर्णिमा पर मासांत माना जाता है जिसके कारण फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को वर्ष का अंत हो जाता है और अगले दिन चैत्र कृषण प्रतिपदा से नव वर्ष आरम्भ हो जाता है।

इसीलिए वहाँ पर लोग होली पर्व को संवत जलाना भी कहते हैं। क्योंकि यह वर्षांत पूर्णिमा है अत- आज के दिन सब लोग हंस गाकर रंग-अबीर से खेलकर नए वर्ष का स्वागत करते हैं ।

इतिहास में होली का वर्णन ---

वैदिक कालीन होली की परम्परा का उल्लेख अनेक जगह मिलता है। जैमिनी मीमांशा दर्शनकार ने अपने ग्रन्थ में 'होलिकाधिकरण' नामक प्रकरण लिखकर होली की प्राचीनता को चिन्हित किया है।

विन्ध्य प्रदेश के रामगढ़ नामक स्थान से 300 ईशा पूर्व का एक शिलालेख बरामद हुआ है जिसमे पूर्णिमा को मनाये जाने वाले इस उत्सव का उल्लेख है।

वात्सायन महर्षि ने अपने कामसूत्र में 'होलाक' नाम से इस उत्सव का उल्लेख किया है। इसके अनुसार उस समय परस्पर किंशुक यानी ढाक के पुष्पों के रंग से तथा चन्दन-केसर आदि से खेलने की परम्परा थ।

सातवी सदी में विरचित 'रत्नावली' नाटिका में महाराजा हर्ष ने होली का वर्णन किया है। ग्यारहवीं शताब्दी में मुस्लिम पर्यटक 'अलबरूनी' ने भारत में होली के उत्सव का वर्णन किया है। तत्कालीन मुस्लिम इतिहासकारों के वर्णन से पता चलता है कि उस समय हिन्दू और मुसलमान मिलकर होली मनाया करते थे।

सम्राट अकबर और जहांगीर के समय में शाही परिवार में भी इसे बड़े समारोह के रूप में मनाये जाने के उल्लेख हैं।

विश्व व्यापी पर्व है होली ---

होलिकोत्सव विश्व व्यापी पर्व है। भारतीय व्यापारियों के कालांतर में विदेशों में बस जाने के बावजूद उनकी स्मृतियों में यह त्यौहार रचा बसा है और समय के साथ साथ यह पर्व उन देशों की आत्मा से मिलजुल कर, मगर मौलिक भावना संजोते हुए विभिन्न रूपों में आज भी प्रचलित है। इटली में यह उत्सव फरवरी माह में 'रेडिका' के नाम से मनाया जाता है। शाम के समय लोग भांति -भांति के स्वांग बनाकर 'कार्निवल' की मूर्ति के साथ रथ पर बैठकर विशिष्ट सरकारी अधिकारी की कोठी पर पहुंचते हैं। फिर गाने-बजाने के साथ यह जुलुस नगर के मुख्य चौक पर आता है। वहाँ पर सूखी लकड़ियों में इस रथ को रखकर आग लगा दी जाती है। इस अवसर पर लोग खूब नाचते-गाते हैं और हो-हल्ला मचाते हैं।

फ़्रांस के नार्मन्दी नामक स्थान में घास से बनी मूर्ति को शहर में गाली देते हुए घुमाकर, लाकर आग लगा देते है। बालक कोलाहल मचाते हुए प्रदक्षिणा करते हैं।

जर्मनी में ईस्टर के समय पेड़ों को काटकर गाड दिया जाता है। उनके चारों तरफ घास-फूस इकट्ठा करके आग लगा दी जाती है। इस समय बच्चे एक दुसरे के मुख पर विविध रंग लगाते हैं तथा लोगों के कपड़ों पर ठप्पे लगा कर मनोविनोद करते है।

स्वीडन नार्वे में भी शाम के समय किसी प्रमुख स्थान पर अग्नि जलाकर लोग नाचते गाते और उसकी प्रदक्षिणा करते हैं। उनका विश्वास है कि इस अग्नि परिभ्रमण से उनके स्वास्थ्य की अभिवृद्धि होती है।

साइबेरिया में बच्चे घर-घर जाकर लकड़ी इकट्ठा करते हैं । शाम को उनमे आग लगाकर स्त्री -पुरुष हाथ पकड़कर तीन बार अग्नि परिक्रमा कर उसको लांघते हैं।

अमेरिका में होली का त्यौहार 'हेलोईन' के नाम से 31 अक्टूबर को मनाया जाता हैं।अमेरिकन रिपोर्टर' ने अपने 12 मार्च 1954 के अंक में लिखा : हैलोइन का त्यौहार अनेक दृष्टि से भारत के होली त्यौहार से मिलता-जुलता है। जब पुरानी दुनिया के लोग अमेरिका पहुंचे थे तो अपने साथ हैलोइन का त्यौहार भी लाये थे। इस अवसर पर शाम के समय विभिन्न स्वांग रचकर नाचने-कूदने व खेलने की परम्परा है।

होली पर्व का वैज्ञानिक आधार

भारत ऋषि मुनियों का देश है। ऋषि-मुनि यानी उस समय के वैज्ञानिक जिनका सार चिंतन- दर्शन विज्ञान की कसौटी पर खरा-परखा, प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करता रहा ह। पश्चिम के लोग भारत को भूत-प्रेत व सपेरों का देश कहते हैं, मगर वह भूल जाते हैं कि विश्व में भारत ही एक मात्र देश है जिसके सारे त्यौहार, पर्व ,पूजा पाठ, चिंतन-दर्शन सब विज्ञान की कसौटी पर खरा- परखा है।

हमारे ऋषि-मुनियों ने विज्ञान व धर्म का ताना-बाना बुना और ताने-बाने से निर्मित इस चदरिया को त्योहारों व पर्वों के नाम से समाज के अंग-अंग में प्रचलित किया।

भारत में मनाया जाने वाला होली पर्व भी विज्ञान पर आधारित है। इसकी प्रत्येक क्रिया प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानव स्वास्थ्य और शक्ति को प्रभावित कराती है । एक रात में ही संपन्न होने वाला होलिका दहन, जाड़े और गर्मी की ऋतू संधि में फूट पड़ने वाली चेचक, मलेरिया, खसरा तथा अन्य संक्रामक रोग कीटाणुओं के विरुद्ध सामूहिक अभियान है। स्थान -स्थान पर प्रदीप्त अग्नि आवश्यकता से अधिक ताप द्वारा समस्त वायुमंडल को उष्ण बनाकर सर्दी में सूर्य की समुचित उष्णता के अभाव से उत्पन्न रोग कीटाणुओंका संहार कर देती है । होलिका प्रदक्षिणा के दौरान 140 डिग्री फारनहाईट तक का ताप शरीर में समाविष्ट होने से मानव के शरीरस्थ समस्त रोगात्मक जीवाणुवों को भी नष्ट कर देता है।

होली के अवसर पर होने वाले नाच-गान खेल-कूद, हल्ला-गुल्ला,विविध स्वांग, हंसी -मजाक भी वैज्ञानिक दृष्टि से लाभप्रद हैं । शास्त्रानुसार बसंत में रक्त में आने वाला द्रव आलस्य कारक होता है । बसंत ऋतु में निंद्रा की अधिकता भी इसी कारण होती है । यह खेल-तमाशे इसी आलस्य को भगाने में सक्षम होते हैं। महर्षि सुश्रुत ने बसंत को कफ पोषक ऋतु माना है।

कफश्चितो हि शिशिरे बसन्तेअकार्शु तापित-।
हत्वाग्निं कुरुते रोगानातस्तं त्वरया जयेतु।

अर्थात शिशिर ऋतू में इकट्ठा हुआ कफ,बसंत में पिघलकर कुपित होकर जुकाम, खांसी,श्वास, दमा आदि रोगों की सृष्टि करता है और इसके उपाय के लिए ---

तिक्ष्नैर्वमननस्याधैर्लघुरुक् षैश्च भोजनै-।
व्यायामोद्वर्तघातैर्जित्वा श्लेष्मान मुल्बनं ।।

अर्थात तीक्षण वमन, लघु रुक्ष भोजन, व्यायाम, उद्वर्तन और आघात आदि कफ को शांत करते हैं। ऊँचे स्वर में बोलना, नाचना, कूदना, दौड़ना-भागना सभी व्यायामिक क्रियाएं हैं जिससे कफ कोप शांत हो जाता है।

होली रंगों का त्यौहार ह। रंगों का हमारे शारीर और स्वास्थ्य पर अद्भुत प्रभाव पड़ता है। प्लाश अर्थात ढाक के फूल यानी टेसुओं का आयुर्वेद में बहुत ही महत्व पूर्ण स्थान है। इन्ही टेसू के फूलों का रंग मूलत- होली में प्रयोग किया जाता है। टेसू के फूलों से रंगा कपड़ा शारीर पर डालने से हमारे रोम कूपों द्वारा स्नायु मंडल पर प्रभाव पड़ता है। और यह संक्रामक बीमारियों से शरीर को बचाता है।

यज्ञ मधुसुदन में कहा गया है ----

एतत्पुष्प कफं पितं कुष्ठं दाहं तृषामपि ।
वातं स्वेदं रक्तदोषं मूत्रकृच्छं च नाशयेत ।।

अर्थात ढाक के फूल कुष्ठ ,दाह ,वायु रोग तथा मूत्र कृच्छादी रोगों की महा औषधी है।

दोपहर तक होली खेलने के पश्चात स्नानादि से निवृत होकर नए वस्त्र धारण कर होली मिलन का भी विशेष महत्त्व है। इस अवसर पर अमीर -गरीब, छोटे-बड़े, उंच-नीच, का कोई भेद नहीं माना जाता है यानी सामजिक समरसता का प्रतीक बन जाता है होली का यह त्यौहार।

शरद और ग्रीष्म ऋतू के संधिकाल पर आयोजित होली पर्व का आध्यात्मिक व वैज्ञानिक आधार है। जैसा की ऊपर वर्णित किया गया है कि हमारे सभी पर्व -त्यौहार विज्ञान की कसौटी पर खरे-परखे है। बस आवश्यकता है उसकी मूल भावना को समझने की। वर्तमान समय में होली पर्व भी बाजारवाद की भेंट चढ़ता जा रहा है। विभिन्न रासायनिक रंगों के प्रयोग ने लाभ के स्थान पर स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डालने का प्रयास किया है। कुछ व्यक्तियों द्वारा होली के हुडदंग में शराब या अन्य नशीले पदार्थों का सेवन करके वातावरण खराब करने का प्रयास किया जाता है।

जो पर्व आपसी भाई-चारे एवं वर्ष भर के मतभेदों को भुलाकर एक होने का है, उस पर किसी प्रकार की रंजिश पैदा करना होली की भावना के विपरीत है।

गुलाल में कुछ रंग इंसानियत के मिलाएं,
उसे समाज के बदनुमा चहरे पर लगाएं।
हर गैर में भी 'कीर्ति' अपनापन नजर आयेगा,
होली फिर से राष्ट्र प्रेम का त्यौहार बन जाएगा ।

और अंत में -होली के इस पवित्र अवसर पर अपने सभी देश वासियों के लिए एक विनम्र सन्देश -----

खून की होली मत खेलो, प्यार के रंग में रंग जाओ,
जात-पात के रंग ना घोलो, मानवता में रंग जाओ।
भूख -गरीबी का दहन करो, भाई-चारे में रंग जाओ,
अहंकार की होली जलाकर, विनम्रता में रंग जाओ ।
ऊँच-नीच का भेद ख़त्म कर, आज गले से मिल जाओ,
होली पर्व का यही सन्देश, देश प्रेम में 'कीर्ति' रंग जाओ।

-डॉ. कीर्तिवर्धन, विद्या लक्ष्मी निकेतन
53-महालक्ष्मी एन्क्लेव, जानसठ रोड,
मुज़फ्फरनगर, (उत्तर प्रदेश) मो. 8265821800

व्यंग्य राजनीति में अपने-अपने सुख

राजनीति में घाट घाट का पानी पी चुका नेता गुड़की इस बार तीन-चार महीने बाद मॉर्निंग वॉक में मिला। मुझे देख मेरे पास बैंच पर आकर बैठ गया। मैंने कुछ इधर-उधर की बातें कर उससे पूछा गुड़की तुम्हारी राजनीति समझ नहीं आती ।हर वर्ष अखबार की सुर्खियां बटोरते रहते हो । तुम्हे न तो

तुम्हारे जनआधार की चिंता और न अपनी प्रतिष्ठा की।

वह मुस्कुराते हुए बोला आज की राजनीति गिरगिटी सिद्धांत हीन और येन केन प्रकारेण सत्ता सुख प्राप्त करने की है । समय की धार को पहिचानना पड़ता है ।बस इसलिए एक सीधी लकीर पर चलना ठीक नहीं है , टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी पर आगे बढ़ना पड़ता है।

मैंने पूछा तुम समय-समय पर गिरगिट की तरह रंग बदल कर अपनी छवि क्यों बिगड़ रहे हो , इस बार भी तुमने नहीं पार्टी का दामन थाम लिया।

यह छवि बिगाड़ना नहीं कहलाता ,राजनीति की बहती धारा की ओर रुख करना होता है । मेरी वोट कमाने की क्षमता की जरूरत दूसरी पार्टी को भी बनी रहती है। ईश्वर की कृपा से मेरा जन आधार पूरे विश्वास से मेरे साथ जुड़ा हुआ है ।बस इसीलिए हर पार्टी का मेरे लिए बिना डोर बेल बजाये दरवाजा खुला मिलता है।

अब जल्द ही लोकसभा चुनाव आने को हैं । बीस पच्चीस दिनों में कई नेता की इस पार्टी से उस पार्टी में जाने के लिए भगदड़ मचेगी। मेरे साथ के मुंशीराम दो तीन दिनों तक दल बदलने की सुर्खियों में छाए रहे और फिर एन टाइम पर मीडिया में कह दिया मेरा अपनी मूल पार्टी छोड़ने का कोई इरादा नहीं है ।यह मीडिया की हवा हवाई बातें हैं। बेचारे की व्यर्थ में फजीयत बन कर रह गयी।अब उनकी प्रतिष्ठा घड़ी के पेंडुलम की तरह इधर उधर बनी रहने से घर की रही न घाट की।

गत तीन चार वर्षों में रामास्वामी ने दो-तीन पार्टियां बदल ली । मीडिया में अल्लम गल्लम अपनी बातें बोलते रहे उनकी बोल से पार्टी मुखिया ने उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया । कभी खुद ने आत्मविश्वास के भरोसे पार्टी बदल ली।

जब कहीं कोई संभावना किसी और नई पार्टी में जाने की नजर नहीं आई तो उसने नई पार्टी बना ली । कुछ लोग भी उससे जुड़ गए ।अनाप शनाप पैसा खर्च हुआ । पर राजनीति चली नहीं । पार्टी कें एक भी प्रत्याशी के जीतने की तो बात तो छोड़ो ,वह अपनी ही जमानत भी नहीं बचा सका । लोगों ने कहा बे पेंदे के लोटे का क्या भरोसा ।आखिर वह फिर से अपनी छोड़ी गई पार्टी में जाकर उसमें अपनी पार्टी का विलय करा कर फिर से उस पार्टी के रहमो करम पर जीना पड़ा।

अब आज की राजनीति में सिद्धांत हीनता स्वार्थपन और कुर्सी प्राप्ति ही सब कुछ है ।इसलिए जो जैसे भी अवसर मिले उसी के अनुसार लाभ की छलांग मार लेना चाहिए ।राजनीति में सभी के अपने-अपने सुख होते हैं।

-दिनेश विजयवर्गीय
215 मार्ग 4 ,रजत कॉलोनी ,बूंदी 323001 राजस्थान
मोबाइल 94131 28514

कविता व गीत संग्रह

ग़ज़ल

जब ये दुनियादारी शिद्दत से आज़माती है।
कम्बख़्त इन आँखों से नींद भाग जाती है।

वक़्त पर कुछ भूलने का हुनर बाकमाल है,
हमारे जिक्र पर तो याददाश्त चली जाती है।

क़ायदे मोहब्बत के कितने भी पढ़ लें मगर,
दिल की दोस्ती आँखों को बहुत रुलाती है।

हवा ज़रूरी है चिराग रोशन करने के लिए,
ये चिरागों से दुश्मनी तो आंधी निभाती है।

शाम ढले ही मिज़ाज बदल जाता है %बृजेश%,
जाने किस-किस की याद कितना सताती है।

-बृजेश माथुर, ए-605, बुलंद हाइट्स, क्रॉसिंग रिपब्लिक, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
फ़ोन - 9910695028

महिला दिवस पर विशेष

मैं नारी हूँ
मैं हूँ तो ये दुनियाँ हैं
मैं स्त्री ,महिला
मोहतरमा
नारी कहलाती हूँ ।

मैं माँ, बेटी,बहु,बहन,पत्नी
चाची, भाभी मौसी
नानी ,दादी के रिश्तों से
पहचानी जाती हूँ ।

मैं ममता, प्रेम,स्नेह
प्यार-दुलार-करुणा
की मूर्ति बन
अपना कर्तव्य निभाती हूँ ।

मैं घर की शोभा
परिवार की रौनक
महारानी से दासी तक
भूमिका में देखी जाती हूँ ।

अभिनेत्री, कवयित्री, विदुषी
खेत - खलिहानों में
फैक्ट्री - कारखानों की दीवारों में
पंचायत से संसद तक मेरी आवाज गुंजाती हूँ ।
मैं लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा का रूप हूँ
मैं बलात्कार -अगवा की शिकार होती हूँ
मेरी नुमाईशी विज्ञापनों में क्या दशा होती है
मैं पल-पल भोगी जाती हूँ ।

घर से निकल जब बाहर आई
घूंघट की घुटन से आजादी पाई
नारी होकर नारी जाति की दुश्मन हूँ
मैं घर-घर आदमी को नचाती हूँ ।

नारी उत्पीड़न की आवाज उठी
नारी उत्थान -अभिकरण ,आयोग बने
बच्चा पैदा करने वाली मशीन नहीं अब
पुरुषों के कंधे से कंधा मिला साथ निभाती हूँ

मैं नारी तो नारी ही रहूँगी
पुरुष की हमसफ़र रहूँगी
कष्ट सहना मेरी आदत है
सृष्टि की रचना कर पोषण कराती हूँ

मैं धैर्य - धीरज की देवी हूँ
धरती जैसी मुझमे सहनशीलता है
मैं प्रेम - प्यार - करना का सागर हूँ
मैं अपने पर आ जाऊँ तो सर्वनाश करवाती हूँ ।

मैं नारी नर की खान
मैं गृहणी-नारी - दासी
क्या मैं भोगविलास का साधन हूँ
मैं नहीं तो दुनियाँ नहीं,ये बात तुम्हें समझाती हूँ ।

-मईनुदीन कोहरी 'नाचीज बीकानेरी'
मो-9680868028

तेरी आंखें

तेरी आंखें जादू बनकर,
उतर गई, मन में प्रिय मेरे।
तेरे साथ कटे उस क्षण के,
साये होते गए घनेरे।
भोली-भाली, प्यारी-प्यारी,
तेरी वो कजरारी आंखें।
जाने कितने कत्ल करेगी,
मेरी जान, तुम्हारी आंखें।
खोई-खोई सी रहती हैं,
मेरी आंखें, शाम-सवेरे।
तेरी आंखें जादू...
जाने कितना रंग भरा है,
कितनी है, मदहोशी इनमें।
बिना कहे, सब कुछ कह जाती,
है अजीब, खामोशी इनमें।
ऐसी चितवन कहीं न देखी,
देखे हमने बहुत चितेरे।
तेरी आंखें जादू बनकर,
उतर गई, मन में प्रिय मेरे।

दर्शन कुमार जैन, मुंबई
मो- 98924-85885
darshankumar_jain@yahoo.co.in

दिल मुस्कराता है

दिल मुस्कराता है
याद कर बचपन की नादानियां
याद कर दादी-नानी की मनमोहक कहानियां
दिल मुस्कराता है
याद कर मम्मी को छिपकर पुकारना
याद कर मम्मी की डांट और उसका पुचकारना
दिल मुस्कराता है
याद कर छिपकर कॉमिक्स पढ़ना
याद कर डब्बे से चुराकर बिस्किट,टॉफी खाना
दिल मुस्कराता है
याद कर भर दिन पतंग उड़ाना
याद कर छोटू को साइकिल सिखाना
दिल मुस्कराता है
याद कर सावन के मेले का झूला
याद कर वो बर्फ का गोला
दिल मुस्कराता है
याद कर स्कूल से बंक मारना
याद कर छिपकर मॉर्निंग शो देखना
दिल मुस्कराता है
याद कर यौवन की छेड़खानियां
याद कर दोस्तों के संग लेट नाइट पार्टियां
दिल मुस्कराता है
याद कर पहला क्रस
याद कर पहला प्रेम पत्र
दिल मुस्कराता है
याद कर कॉलेज की मस्ती
याद कर पहली जॉब सलेक्शन की चिट्ठी
दिल मुस्कराता है
याद कर सेहरा बांधने का पल
याद कर किसी का हमसफर बनने का प्रण
दिल मुस्कराता है
याद कर पिता बनने का अविस्मरणीय क्षण
याद कर मुन्ने का रेंगते हुए आगे बढ़ने का पल
दिल मुस्कराता है याद कर्ज

-मृत्युंजय कुमार मनोज, टेकजोन-4, निराला एस्टेट ग्रेटर नोएडा (पश्चिम), उ.प.201306

प्रेरणा सभी से पाता हूं

स्वानत: सुखाय है लेखन मेरा
अदना सा मैं कलमकार हूं
गद्य और पद्य दोनों में
रचता अपना संसार हूं
प्रेरणा सभी से पाता हूं
बेहतर को अपनाता हूं
क्रम मेरा टूटा फूटा है
शब्दकोश भी छोटा है
मुझसे अच्छा लिखने वाले
असंख्य हैं संसार में
सत्कार सभी का करता हूं
रचनाकारों के परिवार में

-ललित महालकरी, इंदौर

अपने अपने रंग...

सबके अपने-अपने रंग हैं
सबके अपने-अपने ढंग हैं
वो अकेला खड़ा वहाँ पर
इसके देखो कितने संग हैं ।
रंग के रंग में रंग रहे सारे
चेहरे लग रहे न्यारे न्यारे
थाप चंग पर गा रहे होरी
रंगन के बह रहे परनारे ।
भेदभाव तनाव मिटाती
घर घर में खुशियाँ लाती
फागुन की शक्ल में होली
महीनों पहले ठाठ जमाती ।
सब पर उच्छृंखलता छाई
कर रहे हैं मन की भरपाई
लाल हरे पीले का संगम
भर रहा सब में तरुणाई ।
द्वेष की होली जलाकर
प्रेम का प्रहलाद बचाकर
भूल जाएं सब बीती बातें
आपस में अबीर लगाकर ।
हिलमिल करके सभी मनाएं
गले मिलें गुलाल लगाएं
होली हो लें संग हमारे
रंगोली जीवन बन जाएं ।

- व्यग्र पाण्डे, कर्मचारी कालोनी, बचपन स्कूल के पास, गंगापुर सिटी (राज.), मोबा. नं. 9549165579

धन्य धन्य वे प्राणी, रामचरण रति होय

धन्य अवध नगरी अति पावन ।
जहँ अवतरेउ राम सुखभाजन ।।
धन्य अवधपति कौशिल माई ।
जेहिके पुत्र भए रघुराई ।।
धन्य अवधपुर के नर नारी ।
राम दरश करि भए सुखारी ।।
धन्य पावनी सरयू मैया ।
जेहिमें स्नान करत रघुरैया ।।
धन्य जनकपुर नगर सुहावन ।
जेहिके रघुराई भए पाहुन ।।
धन्य वो बन जहँ राम निवासा ।
करहिं चरित बहु भाँति प्रकाशा ।।
धन्य वो भूमि चरण धरि रामा ।
धन्य बृक्ष जहँ प्रभु बिश्रामा ।।
धन्य धन्य सब कोल किराती ।
राम दरश करि उर न अघाती ।।
धन्य वे खग मृग बनचर प्राणी ।
सेवत रामचरण सुख मानी ।।
धन्य वो सरित सरोवर नाना ।
जेहिमें राम करहिं असनाना ।।
धन्य रीछ बन्दर वो सारे ।
राम काज लगि जीवन वारे ।।
धन्य वो निशिचर पातक भारी ।
राम बाण बिंध मोक्ष सिधारी ।।
धन्य धन्य वे प्राणी, रामचरण रति होय ।
ब्रह्मेश्वर यह दास तव, चरण में राखहु मोय ।।

-ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र, आरा, भोजपुर, बिहार
मो.नं. 8210058213

हम मालिक अपनी मर्जी के

न मैडम के, न सर जी के
हम मालिक अपनी मर्जी के।
ज्यादा की कोई चाह नहीं
इसलिए कोई परवाह नहीं
जो बोया वो ही पाया है
जो है वो खुद कमाया है
सत्ता के किसी दरबार में
नहीं प्रार्थी हम किसी अर्जी के
हम मालिक अपनी मर्जी के...
कबीर तुलसी के वंशज हम
मन की कहने का रखते दम
सच कहते सच ही सुनते हैं
नहीं झूठी बातें बुनते हैं
जो कहते वो ही करते हैं
नहीं करते वादे फर्जी के
हम मालिक अपनी मर्जी के ...
सम्मान सभी का करते हम
पर नहीं किसी से डरते हम
न किसी के तलवे चाटें
न किसी की जड़ हम काटें
जो प्राप्त है, वो पर्याप्त है
नहीं कायल हम खुदगर्जी के
हम मालिक अपनी मर्जी के ..
न मैडम के, न सर जी के
हम मालिक अपनी मर्जी के।

- डॉ. शैलेश शुक्ला, मझगवाँ, पन्ना, मध्य प्रदेश

महाठगबंधन

कभी गरियाते हैं,
तो कभी गले लगाते हैं
निज लाभ लोभ में
एक-दूजे को सहलाते हैं
एक पूरब एक पश्चिम,
एक उत्तर एक दक्षिण
देखो सब मिलकर अब
क्या-क्या गुल खिलाते हैं।
जनता को सदा छलते रहे
हक उनका ये निगलते रहे
विचारधारा मिले या न मिले
ये तेल में पानी मिलाते हैं।
करके वादा दिए के साथ का
हवा के साथ हो जाते हैं
अपने हित को नारों में
सदा जनहित ये बताते हैं।
एक-दूसरे को हमेशा ही
मौका मिलते ही नोचते रहे
देख शेर सामने अपने
गीदड़-गीदड़ मिल जाते हैं।
न कोई किसी की बहन
न कोई किसी का भैया
सबको बचानी है कैसे भी
अपनी-अपनी डूबती नैया
नकली वादे, नकली दावे
नकली इनके सब नारे हैं
लोकतंत्र का मजाक उड़ाते
ये लोकतंत्र के हत्यारे हैं।

- डॉ. शैलेश शुक्ला, मझगवाँ, पन्ना, मध्य प्रदेश

नारी वंदना

महिला दिवस की बधाई
हर महिला को ये सन्देश,
आधी आबादी को हर हक़ मिले,
पाए प्रेमपूर्ण परिवेश।
माँ, बहन, बेटी, पत्नी, प्रेयसी,
सहकर्मी या मित्र,
नारी हर रूप मे है सम्माननीय,
वंदनीय और पवित्र।
कापुरुषों, कुत्सित मानसिकताओं का हो ह्रास,
दुर्गा रूप प्रखर बने, अबला रूप बने इतिहास।
उन्मुक्त गगन, भयमुक्त समाज,
हर नारी का अधिकार,
बदले पुरुष-सत्तात्मक सोच समाज की
खुलें अवसरों के नव द्वार।
मानव जीवन की रचयिता नारी को
मिले समतामूलक समाज,
नारी की सुख, शांति, सफलता, समृद्धि,
बने समाज का रिवाज।

-बृजेश माथुर, ए-605, बुलंद हाइट्स, क्रॉसिंग रिपब्लिक, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
फ़ोन : 9910695028

कविता व गीत संग्रह

राम आए हैं

राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं, आए हैं,
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं।
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं, आए हैं,
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं।

तम घोर था निराशा का
दीप बुझा था आशा का
अब देखो चहुँ ओर सब
दिव्य-दीप जगमगाए हैं
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं, आए हैं,
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं।

थी सबकी बस एक चाह
निकले कहीं से कोई राह
राम की कृपा से देखो
राम खुद ही राह दिखाए हैं
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं, आए हैं,
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं।

काल-ग्रह सब भारी थे
दिवस सभी अंधकारी थे
अशुभ जो था बीत गया
शुभ दिन सब फिर पाए हैं
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं, आए हैं,
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं।

तप रही थी भूमि सारी
सूखी पड़ी थी हर इक क्यारी
प्यास बुझाने को मिट्टी की
अब मेघ घिर-घिर छाए हैं
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं, आए हैं,
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं।

मन में छाई थी उदासी
अँखियाँ थीं दर्शन की प्यासी
राम भक्तों के प्रयासों से
रामलला फिर घर आए हैं
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं, आए हैं,
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं।

दुष्टों का पलड़ा था भारी
सत्ता भी थी अत्याचारी
दुष्ट-दमन करके प्रभु राम
भक्तन को हर्षाए हैं
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं, आए हैं,
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं।

दुष्टों ने गोली चलवाई
मंदिर की राह में टांग अड़ाई
राम विरोधी थे जो सब
अब दर्शन को अयोध्या आए हैं
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं, आए हैं,
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं।

अयोध्या के भाग जागे
तेजी से बढ़ रही है आगे
राम अपने साथ देखो
विकास-लहर ले लाए हैं
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं, आए हैं,
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं।

संतोष अब सबको मिला
चेहरा भक्तों का खिला-खिला
दिन दुख के सब बीत गए
सुख-शांति अब सब पाए हैं
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं, आए हैं,
राम आए हैं, आए हैं, राम आए हैं।

- डॉ. शैलेश शुक्ला, मझगवाँ, पन्ना, मध्य प्रदेश

हम सनातन

हम सनातन, हम सनातन,
युगों-युगों से इस धरा पर,
बस बचे हैं हम यहाँ पर,
हम अधुनातन हम पुरातन।

सृष्टि का आगाज हम हैं,
कल भी थे और आज हम हैं,
सहस्त्रों वर्षों की कहानी,
दुनिया भर में है निशानी।

विश्व भर से ये कहेंगे,
हम रहे हैं, हम रहेंगे
अपनी जिद पर हम अड़े हैं।
हिमालय जैसे हम खड़े हैं,

वेद हम पुराण हम हैं,
सृष्टि का प्रमाण हम हैं,
मंत्र व ऋचाएं हम हैं
ग्रंथ व गाथाएं हम हैं।

इस धरा पर सब हैं अपने,
इतना ही हम जानते हैं,
पूरा जग परिवार इक है,
बस यही हम मानते हैं।

विश्व बंधुत्व की गाथाएं,
हम सदा से गाते आए,
सत्य और न्याय हेतु,
हाथों में ध्वजा उठाएं।

साहस शांति सद्गुण का,
सर्वत्र फैला प्रकाश हम हैं,
सर्व हितकारी भाव लिए
अनंत असीम आकाश हम हैं।

देव लोक हो कहीं भी,
उसे भू पर उतार लाएं।
मानवता के त्राण हेतु,
इस धरा को स्वर्ग बनाएं।

विश्व के कल्याण हेतु
भले हमारे प्राण जाएं।
अस्थि-दान देने वाले
दधीचि इस धरा ने पाए।

इस जगत का सार ये है,
मिथ्या सब संसार ये है,
दृष्टि जहाँ भी रही है,
माय है जो दिख रही है।

जीवन दर्शन के प्रणेता
विभिन्न विषयों के अध्येता
विश्व ने माना हमेशा
ज्ञान के हम रहे हैं नेता

प्रार्थनाओं में हमने,
विश्व का कल्याण मांगा,
यश व धन नहीं हमने,
मुक्ति और निर्वाण मांगा।

- डॉ. शैलेश शुक्ला, मझगवाँ, पन्ना, मध्य प्रदेश

गांव की बारात (दोहे)

शहरों के इस दौर में , गांव का नहीं ठौर।
शादी में दिन याद है , भूले अपने और।।
गांव से सब खाट ले ,सभी सजाते लोग।
बारात की सेवा में , नहीं करते ढोंग।।
पाहुन आए गांव में, गांव के मेह मान।
अतिथि देव पूजे सभी, रीति गांव की जान।
शहरों की चल रीति से , भूल गए है लोग।
असली में नकली मिला, आया है घर रोग।।
गांव का हर जीवन भला, ताजी मिलती पौन।
विवाह शादी धूम में , नकली खाते मौन।।
हाथ पांव को जोड़ के , अभिवादन कर प्रेम।
हँसते खुलते आप ही , पाहुन सेवक नेम।।
गांव चली बारात में , भली गांव की याद ।
तीन दिनों तक खूब ही, देनी होगी दाद ।।

-के एल महोबिया

मैं नारी हूं

पूजा हूं, अर्चना हूं
मैं इस जग की भवानी हूं

नारी हूं, उजियारी हूं
मैं पावन नित बहती गंगा हूं

ऊषा हूं, धरा हूं
मैं वट की शीतल छाया हूं

कविता हूं, कहानी हूं
मैं आदिशक्ति जगदंबा हूं

काली हूं, दुर्गा हूं
मैं रणभूमि की महाकाली हूं

देवी हूं, नायिका हूं
मैं हर महाकाव्य की गाथा हूं

गीता हूं, मीरा हूं
मैं अनुसुइया मरियम सीता हूं

स्त्री हूं, संगिनी हूं
मैं कृष्ण दीवानी राधा हूं

शबरी हूं, अहिल्या हूं
मैं प्रभु श्रीराम की पूजारन हूं

जननी हूं, अन्नपूर्णा हूं
मैं ईश्वर की निर्मित शक्ति हूं

माता हूं, बेटी हूं
मैं सम्मान की अधिकारी हूं।

-सुमन मीना (अदिति), दिल्ली

तेरा मेरा साथ है

तेरा मेरा साथ है जन्म जन्म का ,
दिल कैसा बेचैन है मेरे सनम का।
करके अपना प्यार निछावर तुम।
रीत निभाओ मेरे मीत जन्म का।
मेरे मन मंदिर में आ बस जाओ
फूले कलियां भौंरे गुनगुन गाओ।
मेरी आंखों में तेरी मूरत बसती
तेरे बिन प्यारे मेरी क्या हस्ती।
बंधी सांस डोरी में जन्म जन्म का
दिल बंजारे साथ मिले सनम का।
तेरा मेरा जन्म जन्म का साथ रहे
तेरी खुशबू महकें हाथों में हाथ रहे।
तेरे प्यार में भीगा तन मन और
ओ प्रिय साथी जीवन भर साथ रहे।
तेरा मेरा साथ सदा बना रहे ,
ओ दिलबर तेरी छाया में सुखद रहे।
तेरा मेरा साथ जन्मो जन्मो का
तेरी खुशबू से दमके मोती मनका।
बसंत बन जाओ सात जन्म का
फूलों सा खिल उठे रंग जीवन का।
मयकश आंखें कातिल मुस्कान
तुझे निहारूं साथी दिल दर्पण का।
एक दिन धीरे मेरे आशियाने में
दबे पांव सकुचाते पीहर से आई।
उस दिन से लेकर अब तक प्रिय
तुम और तेरी स्मृति दिल में छाई।
मिले जुले साथ रहें कसमें खाईं
सुप्त कली फूटी ली प्रेम अंगड़ाई।
खट्टी मीठी बातें करते दिन बीते
प्रेम रसीली याद बसी है नहीं रीतें।
तेरा मेरा साथ है जन्म जन्म का
जीना कैसा बिना प्रेम सनम का।

-के एल महोबिया

मन-मन भोले

मन-मन भोले मन-मन तोलें,
जीवन की स्वांसों-संग होलें,
पथिक बनें हम भोले पथ के,
जीवन में मनभर रंग घोलें।
मन-मन भोले ....
इच्छाओं से मन नहीं भरता,
अर्थ,मोह में डूब रहे,
कर लो भोले से एक विनती,
नाव भक्ति की चली रहे।
मन-मन भोले ....
जीवन की आपाधापी में,
बस भोले का ध्यान करें,
राग-रंग सब दुगुना होता,
बस भोले का मान धरें।
मन-मन भोले ....
श्वांसों की गिनती में भोले,
कभी चूक नहीं करते हैं,
जपते रहो जो भोले को तो,
भोले विराम नहीं करते हैं।
मन-मन भोले ...
भोले ध्यान में जब-जब हमनें,
अपने शब्दों को तोला,
भोले ने खुश होकर अपना,
खुशियों का झोला खोला।
मन-मन भोले ... (151/196 वां मनका)

-कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी 'राम'
गांधीनगर, इन्दौर (म.प्र.)

'चक्रव्यूह'

कामयाबी की दौलत छीनी या चुराई नहीं जाती।
चक्रव्यूह की रचना से यह कभी पाई नहीं जाती।।
आगे ही बढ़ना है तो खिलाइए कलियाँ हुनर की,
जीतने खातिर आबाद बगिया जलाई नहीं जाती।
काबिल बनना है तो पहले जगाइए ज़मीर अपना,
काबिलियत किसी कारखाने में बनाई नहीं जाती।
नज़रों में उठना है तो बदलना पड़ता है नज़रिया,
नकलची बन विजय-पताका फहराई नहीं जाती।
दिनकर न बन सको तो जुगनू बनकर दिखाइए,
कालिख मल-मलकर दीवाली मनाई नहीं जाती।
सूरत की चमक छलावे के सिवाय कुछ भी नहीं,
रूह में तेजस न हो तो हस्ती सजाई नहीं जाती।
किसी को गिराकर उठना उठना नहीं गिरना है,
चाटुकारिता से अपनी दुनिया बसाई नहीं जाती।
दिल में इक बार दरार आ जाए किसी वजह से,
लाख कोशिशें कर लेने पर भी खाई नहीं जाती।
कुछ कर दिखाना है तो कारनामे दिखाइए यहाँ,
करतूतें करके निश्छल दुआ कमाई नहीं जाती।
होशियार नहीं समझदार बनना सीखिए ऐ नादां,
धूर्तता की नींव पर जिम्मेदारी उठाई नहीं जाती।
खुद उठना सीखें पहले 'जन्नत' को गिराने वाले,
बुरे कितने भले बन जाएँ हर बुराई नहीं जाती।।

-प्रवीण जोरिया 'जन्नत', हिन्दी शिक्षक व साहित्यकार, कतलाहेड़ी , करनाल (हरियाणा)

दुनियाँ

दुनियाँ में तरह तरह के लोग ,
कौन जाने किसके मन क्या ,
वो ऐसा है वो वैसा क्यों ,
वो अपनी बातें छिपाता क्यों,

किसी की जिंदगी में कभी न बोलें,
न जाने किस मोड़ पर हम से सब बोलें,
जो जैसा करता भरता भी वैसा ,
क्यों किसी का हम मजाक उड़ाएं,

कहीं कोई किसी से खुश रहता,
कोई अंदर ही अंदर घुटता रहता,
मन की बातें कर लो किसी से,
क्या रखा तेरी मेरी करने से,

सबके जीवन में सुख दुख आते,
कोई इससे उभर जाता कोई टूट जाते,
आगे बढ़ने का प्रयास जो करता,
जीवन में यश,कीर्ति वही पाता,

सबके जीवन को अपनी कहानी,
सबकी अपनी अपनी जिंदगानी,
किसी के चेहरे पर खुशी झलकती,
किसी की आँखों में नमी दिखती,

-पूनम गुप्ता, भोपाल (मध्यप्रदेश)

कविता व गीत संग्रह

स्त्री

माँ , बहन,मित्र, प्रेमिका,
सबमें मैंने देखी थोड़ी-थोड़ी स्त्री,
किंतु विवाह के बाद पत्नी से मिल,
मूड स्विंग जैसे नये टर्म सीखे,
मैंने एक ही स्त्री में कई रूप देखे,
पत्नी के साथ चौबीसों घंटे गुज़ार,
मैंने स्त्री को सबसे ज़्यादा समझा,

हम पुरुष तंज़ कसते रहे कि,
स्त्रियों को ब्रह्म भी न समझ पायेंगे,
तो यह सच हैं क्योंकि,
ब्रह्मा भी पुरुष ही ठहरे,
नहीं ले आ पाए इतना निश्छल मन,
कि समझ लें स्त्री को आसानी से,

हर चीज़ में नफ़ा-नुक़सान ढूँढता पुरुष,
नहीं बचा पाया इतनी संवेदना,
कि समझ सके कैसे कोई स्त्री,
टीवी सीरियल में हो रही विदाई देख,
सारी स्त्रियों के भाग्य का नीर बहा लेती है,

श्रेष्ठता की तलाश में निकला पुरुष,
नहीं जुटा पाया इतनी नि:स्वार्थ पात्रता,
कि समझ सके कैसे कोई स्त्री,
परिवार के लिए अब तक का कमाया,
सारा करियर बिनकहे दाव पर लगा देती है,

हासिल करने की दौड़ में शामिल पुरुष,
नहीं बचा पाया इतना सौंदर्यबोध,
कि समझ सके कैसे कोई स्त्री,
आधे घंटे की पार्टी के लिए,
एक घंटे सजने में गुज़ार देती है,

नहीं समझ में आएगा पुरुष को कि कैसे,
श्रेष्ठता की होड़ वाली संवेदनहीन दुनिया में,
जीते हुए भी अछूती रही स्त्रियाँ,
और बहती रही भावनाओं की नदी में,
और गुणा गणित की कच्ची स्त्रियों को,
पुरुष भावनाओं के ख़रीद फ़रोख़्त में लूटता रहा,

एक बुढ़िया को सड़क पार कराता सिपाही,
उससे बची खुची उम्र का आशीष ले लेता,
माँ के हाथ के खाने की ज़रा तारीफ़ कर,
बेटा रसोई की आँच में घंटों खड़ा कर देता,
सात जन्मों के साथ के महज़ वादे पर,
पति स्त्री को पूरे दिन प्यासा रख लेता,

नि:स्वार्थ स्त्रियों ने पुरुषों को जन्म देकर,
दुनिया चलाने का अधिकार भी दे दिया,
और ऐसा नहीं कि इंसानी दोष स्त्रियों में न थे,
किंतु अगर स्त्रियाँ चलाती दुनिया,
तो समस्यायें जरा छोटी होती,

कभी खुद की उम्र घटाकर बताती,
किसी की पीठ पीछे शिकायत करती,
छोटी-छोटी बात का पहाड़ बनाती,
कभी बहू पर दहेज का तंज कसती,

पर कही विश्वयुद्ध न होते,
धर्म के नाम पर नरसंहार न होता,
क्यूँकि स्त्रियों ने श्रेष्ठता से सदा ऊपर रखा है,
मानवता और संवेदना को,

माँ , बहन, प्रेमिका, पत्नी, बेटी,
मैं शुक्रगुज़ार हूँ जीवन में आयी सारी स्त्रियों का,
जिन्होंने इस कठक़रेज़ दुनिया को,
जीने लायक़ बनाया,
गुणा-गणित में डूबे मेरी क़लम से,
भावपूर्ण कविता लिखवाया,

जब तुम प्रकांड पंडित ब्राह्म नहीं,
बल्कि कृष्ण या शिव बनकर आओगे,
इतना भी मुश्किल नहीं होगा समझना ,
राधा या सती में हर स्त्री को समझ पाओगे,

-विनोद दूबे, सिंगापुर

जमकर तू प्रतिकार

दुखियों की सदैव करें, आप रमेश पुकार
मदद करने से उसकी, करें नहीं इंकार

जीवन को न बना कभी, आप कभी अंधकूप
कोशिश ऐसी ही करें, रहे सदा ही धूप

जीवन आप करें नहीं, दु:ख में खुद तब्दील
हरदम गाड़े ही रहे, सुख की रमेश कील

जीवन में मिलती सदा, कभी धूप या छांव
मगर आप सदैव चले, सधे हुये ही पांव

जीवन में उसको रखें, सदैव अपने साथ
जो संकट में पकड़ता, सदा आपका हाथ

परिवार अगर बन गया, सुख का एक तालाब
फिर ना मिलेंगे गम तुझे, रमेश यहां जनाब

पड़े नहीं अन्याय की, आप पर कभी मार
अगर पड़े तो कर उसका, जमकर तू प्रतिकार

बुरे की यदि संगत की, तत्काल उसको छोड़
उससे अपने ही सभी, रिश्ते नाते तोड़

मन के भीतर रख सदा, भरोसा तू अटूट
दुश्मन को मत दे कभी, उसको रमेश छूट

जब तक ये जीवन रहे, तब तक रहती सांस
अत: कर ले तू आदमी, सभी काम ही खास

-रमेश मनोहरा , शीतला माता गली जावरा (म.प्र.), जिला रतलाम, मो. 9479662215

कौन है लाश

कौन है लाश,
क्यों मौन है लाश,
क्यों नहीं रहा अब
नैतिकता में विश्वास,
जिंदगियां क्यों खो रही उजास,
कह भी दो कौन है लाश,
क्यों उग्र है लालच,
दिखा देती जलालत,
व्यग्रता भरी है सब में
कहां छुप गई आस,
कौन है लाश,
क्यों मौन है लाश,
कब रुके दंगल,
कौन देगा संबल,
आग लगाने एक तीली काफी है
नहीं चाहिए तपन का बंडल,
लड़ते रहे तो छुप जाएगा मंगल,
क्यों दे रहे हर कोई
एक दूसरे को आघात,
कौन है लाश,
क्यों मौन है लाश।

-राजेन्द्र लाहिरी पामगढ़ छग

ख्वाबों का सफर

ख्वाबों का सफर, अनजानी राहों में,
चल पड़े हैं हम, दिल की बाहों में।
हर कदम पे नई कहानी है,
जिंदगी की ये अजब निशानी है।

आसमानों में, ऊंची उड़ानों में,
ख्वाब हमारे, सजते हैं अपने मन में।
कभी खुशियों की बरसात है,
कभी आंसुओं की जो बरसात है।

ख्वाबों के इस सफर में, हर रंग को चखा,
कभी सुनहरा तो कभी, नीला आसमां देखा।
हर मोड़ पे नया दृश्य है,
जीवन की ये सुंदर कृति है।

ख्वाबों में जो बसता है, सपनों में जो पलता है,
उसे पाने की चाहत में, हर मुश्किल से लड़ता है।
ख्वाबों का सफर, ना होता है आसान,
पर हर कदम पे, मिलती है एक नई पहचान।

-अनुराग उपाध्याय

नारी तुम सृजन करों

धीरज-ए-वरदान है मिला
तुम्हें जो प्रकृति से,
उससे तुम कुछ अर्जन करों
नारी तुम सृजन करो।
भौतिकी के वेग से तेज अनगिनत
प्रतिरोध उत्पन्न करने पर भी,
रसायन के कितने असंतुलित
समीकरणों को संतुलित किया तुमने
जीवविज्ञान के आक्सीडक्शन, रीडक्शन
और पाइथागोरस प्रमेय भी सुलझाया हैं
जीवन के कुछ पन्नो ने ना जाने क्यों,
यूँ तुमको उलझाया हैं
हैं बनी नहीं तुम इन उलझनों के खातिर,
अपने जहाँ से दूर, इनका विसर्जन करो
नारी तुम सृजन करो।
यूँ लाली, बिंदिया, झुमके, बाली....
को तुम खुद से विलग करो
सच कहते हैं कि लोग
जब तुम दिमाग में विज्ञान और
दिल में साहित्य से सजती हो,
खुदा कसम! बहुत खुबसूरत लगती हो
गले में सरस्वति का वास,
जब होंठो से कुछ गुनगुनाती हो,
है प्रतित होता ऐसा मानो जैसे
सारे जहां को मधुरस पान कराती हो।
सुनो...ठहरो जरा तुम अब !
ग़र कर दे कोई तारीफ़ तुम्हारी .
शहद की वो वर्षा भी करा दे
तो फिर भी तुम इतराना मत
तुम्हारे शारिरीक बनावट को भी
अगर तुम्हारा आन बताए
तो फिर भी तुम इठलाना मत
जरुरत-ए-जहां में अगर बनना पड़े
तो मेघ का गर्जन भी बन जाओ,
नारी तुम सृजन करो ।
तेज हवाओं को तुमनें मोड़ा है,
दो गैसों को मिलाकर जल बनाया है
राधा के रूप में, प्रेम किया
मीरा सा, इंतजार किया
जब आया दुनिया का अस्तित्व खतरे में,
दूर्गा बन तुमने संहार किया।
है फलीभूत बसती ऊर्जाएँ तुम में,
जैसे.... फूलों में बसती हैं महक
मृग में बसती है कस्तूरी
इन्द्रधनुष में बसते हैं रंग
अपनी ऊर्जाओं का ना तुम,
यूं अपघटन न करो तुम,
फेनिस्ट के नारे छोड़....
खुद का तुम अस्तित्व बनाओ
नारी तुम सृजन करो ।

-सरिता कुमारी यादव, पंडित पुर, सारण, बिहार

दुनियां है एक मेला

दुनियां है एक मेला, फिर भी इस मेले में
हर शक्स हैं अकेला।
कहने को बहुत सारे है अपने,
पर वक्त पर कोई साथ नहीं देता ।
बार बार दिल ये कहता है।
काश इस भीड़ में भी,
कोई मेरा अपना हों,
जो बिल्कुल मेरे जैसा हों।
वो पराया हो, पर अपनो से ज्यादा हो,
जो दूर रहता हों, पर मेरे सबसे करीब हों।
कोई हों, जो साथ दे,
आके हमें, संभाल सके।
मेरे बिन कहे,
मुझे समझ लें,
मेरी हसी मे
मेरा दर्द पढ़ लें।
मैं गलत हूं
मुझे डांट लें,
मुझे बेहद
प्यार दे।
कोई हो तो सिर्फ़ मेरा हों
मेरा बनकर रहे,
मेरे कहने पर भी
मुझे छोड़ कर ना जाएं।
बस हर पल साथ निभाए।

-कीर्ति देवानी, नागपुर महाराष्ट्र

शिव स्तुति

आओ मनाऐं खुशी से शिवरात्रि त्योहार !
भावों की जल संग भर लो अंजली,
अभिषेक करो शिवशंकर भोलेनाथ की !
पंचामृत भी डालो प्रेमभाव से हो,
लगाओ अक्षत गुलाल पूजा करो,
पुष्पमाला से संजाओं भोलेनाथ को,
उतारों आरती बारबार भोलेनाथ की !
भोले के चरणों में सिर को नवाया,
भक्तों को महाशिवरात्रि का त्योहार भाया,
भक्तों ने भंगठंडाई प्रसाद चढ़ाया,
बंटा प्रेम से प्रसाद बार-बार भोलेनाथ का !
भक्तों ने शिवरात्रि उपवास रखो हैं,
कंदमूल फल को प्रसाद रखो है, भक्त
चरणामृत पीवे, करे जीवन सफल, उद्दार
पुष्पमाला से संजा हैं भोले का मंडपद्वार !
गुफा में बैठें हैं शिव ओघढ़दानी बर्फ से
बन गये अमरनाथ ओ तुम्हारी जय हो,
आओ मनाऐं खुशी से शिवरात्रि त्योहार
बांटों प्रेम से प्रसाद बार-बार भोलेनाथ का !

- मदन वर्मा 'माणिक', इंदौर, मध्यप्रदेश
मो. 6264366070

गीत

महाशिवरात्रि मनाऐं धूमधाम
से सारा संसार!

भोले भंडारी महाशिव दानी,
रचाऐं भोले का विवाह,
महाशिवरात्रि मनाऐं धूमधाम
से सारा संसार !
इस दिन भोले बने थे दुल्हा और
दुल्हन बनी थी गौरा भूतप्रेत और
गण, गंधर्व सब बारात की शोभा
बनी थीं और सजा मंडप और द्वार,
महाशिवरात्रि मनाऐं धूमधाम
से सारा संसार !
सिर पर चन्द्र संजा हैं, नीलकंठ
भस्म रमावें, आशुतोष, गिरजा हैं,
डमडम डमरू बजा है, विषधर
कंठमाल ग्रीवा पर लिपटी और
हाथ में त्रिशूल पकड़ा है, तेजोमय
छटां हैं, रूद्रवान चेहरा हैं भोले
तेरी तेरी तेरी छटां निराली हरबार,
त्रिपुरारी तेरी महिमा अपरंपार,
महाशिवरात्रि मनाऐं धूमधाम
से सारा संसार !
ओ कैलाश के वासी नाचे खूब
हैं नंदी, उस पर क्या पाबंदी,
बारात जब पहुंची राजा
हिमालय के द्वार,
अजब विचित्र बाराती देख
रानी मैना हो गई बिमार, कैसा
वर चुना, यह देख मच गया हाहाकार,
जब सबने मिल समझाया,
तब पार्वती माता का विवाह हो पाया,
महाशिवरात्रि मनाऐं धूमधाम
से सारा संसार !
भोले की कृपा बनी रहे और मिले
आशीर्वाद बोलो ऊँ नम: शिवाय !

जयश्री वर्मा 'शिक्षिका', इंदौर, मध्यप्रदेश
मो. 6264366070

साइंस का कीर्तिमान

अंधविश्वास को कुचलता है विज्ञान का ज्ञान
इसके समक्ष नहीं चलता अंधविश्वास का अभिभान
यहाँ होंता है सिर्फ तथ्यों का मकान
सभी ऋतुओं के लिए श्रेष्ठ इससे बना परिधान
धरती हो या आसमान
विज्ञान ने चांद की सैर कराई है
गर्मी में शीत लहर दौड़ाई है
बड़ी-बड़ी दूरियों को पल में समेटा है
किसान को राहत दिलाई है
महिलाओं को राहत दिलाई है
कीजिए साइंस का सम्मान
बना लीजिए स्वंय को महान
बनेगी खूबसूरत पहचान
विशिष्ट होंता है इसका मान
हासिल होगा बड़ा कीर्तिमान

-खेमू पाराशर, भरतपुर, राजस्थान

कविता व गीत संग्रह

अंतिम पत्र

इधर मोदीवाद और उधर परिवारवाद
समाचार और विज्ञापनों में।
मोदी है तो मुमकिन, मोदी की गारंटी,
नारों में बस मोदी-2 और एक अकेला
सब पर भारी ,टीवी और अखबारों में।
टिप्पणी
कांग्रेस की आलोचना परिवारवाद को
लेकर जारी है,भाजपा में केवल 'मोदी'
के नाम का प्रचार,कौनसा वाद कहेंगें?

-बी एल शर्मा 'अकिंचन' तराना-उज्जैन

मजदूर गाथा

कुदाली और फावड़े, इनके है हथियार
इसके बिना चले नहीं, इनका कारोबार

जिस दिन मजूरी न मिले, भूखे ही सो जाय
अपनी पीड़ा को कभी, किसी से कह न पाय

होते है मां-बाप वे, जो दे इनको काम
मगर श्रम का मिले नहीं, इनको वाजिब दाम

बहता पसीना फिर भी, थकने का न नाम
पेट हेतु ही देखिये, करते दिन भर काम

बने गगनचुम्बी भवन, इनके हाथों यार
फिर भी देखो ये करें, झुग्गी से ही प्यार

लूटने के लिए है नहीं, कुछ भी इनके पास
रोज़ खोदते है कुआँ, रोज़ मिटाते प्यास

जैसी मिलती ज़िंदगी, उसमें ही ढ़ल जाय
मिलते है अगर गम तो, तनिक नहीं घबराय

पसीना बहाते सदा, कहलाते मजदूर
मगर होता है इनका, शोषण भी भरपूर

भूख गरीबी से सदा, रहते है लाचार
फिर भी रमेश ये करें, देखो इनसे प्यार

श्रम दौलत बनी इनकी, पूजे है दिन-रात
इसका अलावा न लगे, इनको दूजी बात

मने भले ही श्रम दिवस, इनके हित हर साल
उठते फिर भी पेट के, रोज़ असंख्य सवाल

-रमेश मनोहरा, शीतला माता गली जावरा (म.प्र.) 457226, जिला रतलाम
मो. 9479662215, 7999890997

जीवन मिट्टी का खिलौना है

मानव जीवन को पाकर,
हमें घमंड नहीं करना हैं!
जिंदगी दो पल की हैं,
हमें अच्छे कर्म करना हैं!

मेहनत करके हमें,
दो वक्त की रोटी कमाना हैं!
छोटी सी जिंदगी हैं,
हर पल खुश रहना हैं!

मिट्टी का बना शरीर,
मिट्टी में मिल जाना हैं!
मानव का जीवन एक,
मिट्टी का खिलौना हैं!

खाली हाथ आए हैं जग में,
और खाली हाथ जाना हैं!
बैर भाव का त्यागकर,
सबके दिलों को जीत लेना हैं!

-कृष्णा चौहान, अमेरी, तह.-बरमकेला जिला-सारंगढ़-बिलाईगढ़ (छ.ग.) मो.न.-6260891787

झूठ बोलता काजी

कहाँ किससे किसके पंगे हो गए?
इस कलयुग में ये अब धंधे हो गए।
अनगिनत खून करके पापी गंगा नहा रहा,
इज्ज़त देकर भी प्रतिष्ठित याचक हो गए ।

कही धर्म, कही जातिवाद पर,
कही रीति, कही समाज पर,
कहीं शानो-शौकत कही दिखावटी,
कहीं किसी की दुनिया है बनावटी !
बदल गए मौसम के मिजाज,
कहाँ हो मानसिक तनाव का इलाज?
यहाँ छोटी-छोटी बातों पर दंगे हो गए,
ना जाने किससे किसके पंगे हो गए?

माफियाओं का बोलबाला,
सत्य का हो रहा मूंह काला।
कन्याओं की सौदेबाजी,
पैसे के लिए, झूठ बोलता काजी।
विज्ञापन की भरमार,
शिक्षा पर बेरोजगारी का वार।
विवेकी, सदाचारी भी बेढंगे हो गए,
यथार्थ नंगे तो काल्पनिक चंगे हो गए,
राजा रंक पैसे से लालकाल भीखमंगे हो गए,
चोरी,छिनैति,हैवानियत,इस युग के धंधे हो गए ।

-प्रतिभा पाण्डेय 'प्रति', चेन्नई

तेरा मेरा साथ!

तू मेरी तरह,
मेरी नज़्म रहना हमेशा,
तेरे विश्वास पर विश्वास हमे,
रहता है हमेशा,
तेरी ख्वाहिश नहीं,
तू हकीकत चाहिए ,
तुम फरमाइश नहीं ,
मेरी चाहत रहे हमेशा !
तेरा मेरा साथ,
सुकुन और समय का हाथ,
जल्दी साथ का संयोग नहीं बनता,
यदि मिल गया तो, जुड़ गये जज्बात !
कोई शिकवा हो,
शिकायत कर लेना,
साथी मेरे हमदम,
बस और बस,
बेपनाह मुहब्बत कर लेना !
दौलत नहीं,
बस तेरा प्यार चाहेंगे,
दुख के बादल अपने आप, छंट जाएगे,
हम साथ हैं तो, धड़कन भी, धुन सुनाएंगे।

-प्रतिभा पाण्डेय 'प्रति', चेन्नई

एक निशानी

जो उसने दिया था मुझे एक निशानी
मिटाने चला उसकी सारी कहानी
नहीं कोई अब दुश्मनी होगी दिल से
नहीं कोई भी यादें होगी पुरानी
मिटाने चला उसकी सारी कहानी।
रह-रह के उठती है एक टीस दिल में
क्या जाने कैसी है ये रीस दिल में
जिसे समझा था मैं सुकूँ ज़िन्दगी की
जहन्नुम सी वो बन गई ज़िन्दगानी
जो उसने दिया था मुझे एक निशानी।
खुश कितना था मैं, जब गुमनाम था मैं
कहीं तो किसी का तब अंजाम था मैं
कि अब प्रश्न सा बन के मैं रह गया हूँ
कहाँ ढूँढ़ने जाऊँ उत्तर की रानी
मिटाने चला उसकी सारी कहानी।
है मुश्किल बहुत लौटना उस गली में
रहा न कोई अपना अब जिस गली में
है साथ चलने को तनहाई आतुर
मगर सौंप दूँ कैसे इसको जवानी
चला इसलिए आज मिटाने कहानी।
नहीं कोई अब दुश्मनी होगी दिल से
नहीं कोई भी यादें होगी पुरानी
मिटाने चला उसकी सारी कहानी
जो उसने दिया था मुझे एक निशानी
वो यादें पुरानी, थी उसकी निशानी।

- राजीव रंजन झा टीकरी कलाँ, नई दिल्ली-110041
98 99 415 201, 89 208 10 672

काच की ये चूडियां

बुन रही एक नई कहानी
कांच की ये चूड़ियां
कर रही सबको दिवानी
कांच की ये चूड़ियां ।
चूड़ियों के हौसलों को
देहरी ना बांध पाया
चूड़ियों ने पंख खोले
हद फलक ने जान पाया
है जिम्मेदारी की निशानी
कांच की ये चूड़ियां ।
है कहां लाचार कोमल
चूड़ी वाली ये कलाई
यूं करें हल सारी मुश्किल
खूब मर्यादा निभाई
लग रही है सबसे प्यारी
कांच की ये चूड़ियां ।
डोर रिश्तों का पकड़कर
आसमां को चूमती
किस कदर अपने हुनर से
बंजर धरा को सिंचती
ना तंज तानों से बेगानी
कांच की ये चूड़ियां ।
नब्ज के संगीत पर
आनंद में यह लास्य करती
क्रोध हो तो दुश्मनों का
काल बन विनाश करती
है यही शिव और शिवानी
कांच की ये चूड़ियां।

-रजनी उपाध्याय,वरिष्ठ कवयित्री, अनूपपुर-म0प्र0,7222959234

एक कदम तो बढ़ा

एक कदम बढ़ा जज्बा दिखा
तेरी मंजिल तो राह निहारें है
एक छ्लांग लगा के तो देख
वो मुकाम तो पास तुम्हारे हैं।
अपने दिल को छोटा न कर
अपने मन को, खोटा न कर
एक सपने सजा के तो देख
पूरे होंगे जरूर सपने सारे हैं।
आगे बढ़ खुद से हिम्मत कर
और अपना तू हौसला दिखा
ये वक्त नही है तेरे सोचने का
सफलता तेरी, राह निहारे हैं ।
आगे बढ़ तू सतत आगे बढ़
पीछे तू कभी मुड़ क न देख
मंजिल तुझको पहुंचना ही है
तेरी मंजिल तुझको पुकारे हैं।
तू कमजोर नही तू लाचार नही
तुझमें बल है तुझमें हौसला है
तुझमें आत्मबल है तू अटल है
तू साहसी है तू न हिम्मत हारे है।
तू कमर कस ले,मन दृढ करले
अपनी ये इरादे तू बुलंद कर ले
अपना पुरा आत्मविश्वास जगा
किस्मत के चमकेंगे तेरे सितारे हैं।

-अशोक पटेल 'आशु', मेघा,धमतरी (छ ग) मो. 9827874578

कहमुकरी

बात गुप्त है,
किसी को ना बताना,
शुरू येही से होता ,
सारे विवादों का फसाना ।
एक मुंह की दो कानों ने सुनी ,
चुगली चुगलखोरी करने लगी,
दिवार भी एहसास कर गए,
चिपकर दूसरे से कहमुकरी कर गए....!
नहीं नहीं हमने नहीं, हमने नहीं,
कही नहीं बात फैलाई है ,
तेरी बाते खुद खास खाई है,
जब तक मुंह सीला रहता,
कानों का पर्दा गिरा रहता,
जब चुगली की नियत बदली,
चौकसी हटता, वारदात घटती ,
फिर पछुआ पछताव का बहता,
सिर पकड़कर फिर खुब रोता ।।

-प्रतिभा पाण्डेय 'प्रति', चेन्नई

सिर पर चन्द्र सुशोभित हो रहे हैं !

सिर पर चन्द्र सुशोभित हो रहे हैं,
शिव की जटा में मां गंगा विराजे,
हो भोला डम-डम-डम डमरु बजे हैं,
डमरु बजे हैं, हो भोला डमरु बजे हैं !
हो पार्वती माता भी संज रही है,
भूतों की टोली भी नाच रही है,
शिव की बारात भी निकल रही हैं
मैना देवी संजा रही आरती थाल,
राजा हिमालय स्वागत को खड़ें हैं,
शिव बिन शक्ति अधूरी हैं, शक्ति
बिन शिव भी अधूरे हैं, बंध रहे
जन्मों के बंधन शिवरात्रि त्योहार !
देव गंधर्व सब पुष्प बरसाये,
पुष्प बरसाये अमृत बरसाये,
खुशियां भई नगरी, घरद्वार
हो भोला डम-डम-डम डमरु बजे हैं,
डमरु बजे हैं, हो भोला डमरु बजे हैं !

- नेहा ठाकुर 'नेह', इंदौर, मध्यप्रदेश मो. 62646070

तुम कुछ करके दिखाओगे

यह पढ़ाई चलती रहती है पीढ़ी-दर-पीढ़ी।
तू पढ़ पुस्तक को बनाकर कामयाबी की सीढ़ी।।
सब जा रहे चाँद पर, तू सूर्य पर जाकर दिखलाएगा।
अपना सपना पूरा कर, तू कुछ करके दिखलाएगा।।
सब निकाल रहे डीजल, पेट्रोल, पानी, जमीन से,
तुझे हवा से बनानी है, तुझे कुछ करके दिखलाना है।।
तुझे अपने सपनों के सोपानों को तय करना है।
बन नया भीमराव, संविधान तुझे गढ़ना है।।
छुआछूत तो उसने मिटाया, तुझे कुछ नया करना है।
बन कलयुग का राजा, नया इतिहास तुझे बनाना है।।
कोई दे रहे कई संदेश, तुझे पुस्तक नयी देनी है।
सब ज्ञानी के बीच में, तुझे ज्ञान का चर्चा करनी है।।
बाप रहा अनपढ़ लेकिन, तुझे पढ़ाया-लिखाया है।
लड़की के चक्कर में न रहना, भरोसा तुझ पर जताया है।
सब उड़ते हैं हौसलों की उड़ान, पर तू मंजिल पे उड़।
पढ़कर आगे बढ़ और नए दोस्तों से जुड़।
चल तू कदम-से-कदम मिलाते, जीत जिद्द पर अड़ी।
मेहनत कर कामयाबी मिलेगी, तेरे घर के आगे खड़ी।।

-यशवंत पात्रे, कक्षा आठवीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा नवीन, वि.खं लोरमी, जिला-मुंगेली छत्तीसगढ़।

तुम न उनसे हार जाना

राह में अगणित भले अवरोध आयें
रोक देने को तुझे प्रतिरोध आयें
भौंह टेढ़ी कर प्रचण्ड विरोध आयें
तमतमाये लाल पीले क्रोध आयें

किन्तु रण में पीठ अपनी न दिखाना
तुम न उनसे हार जाना।

राह तेरी हो भले तूफान वाली
शोर झंझा कर रहा हो, रात काली
टूटते हों वर विटप, बिखरी हो डाली
यूँ लगे ज्यों अब न हो सूरज की लाली

किन्तु इनके बीच अपना पथ बनाना
तुम न उनसे हार जाना।

थके हारे कदम तेरे डगमगायें
यूँ लगे ज्यों भार तन का सह न पायें
हौसला तेरा तुझे ही आजमाये
सांस आती क्या पता फिर लौट पाये

किन्तु तुम इस पीर को साथी बनाना
तुम न उनसे हार जाना।

समय को मत व्यर्थ खोना, कीमती है
सूचिका अविरल समय की घूमती है
अथक श्रम के पद सफलता चूमती है
और कर में जय पताका झूमती है

है तुझे हर कण्टकों के पार जाना
तुम न उनसे हार जाना।

-विंध्याचल सिंह बुढ़ऊं, बलिया, उत्तर प्रदेश

कविता व गीत संग्रह

मैं जब चला जाऊँगाँ

मैं जब चला जाऊँगा
तुम हिम्मत मत हारना
मुस्कुराता हुआ चेहरा
कभी उदास मत रखना
मैं दिखूँगा तुम्हें.....
आसमां के चमकते तारों में
बरसते उन बादलों में
वृक्षों की अविचलित खड़ी परछाईयों में ।
संध्याकाल का दीपक लिए,
जब तुम द्वार पर आओगी
सजल आँखों से देखकर बाहर,
जब तुम मुझे पुकारोगी ।
महसूस करना मुझे...
मैं आऊँगा...
ठण्डी हवा सा छू कर तुम्हें
मैं अपना प्रेम जताऊँगा ।
अगर कभी जो रोना आये.....
तो याद करना
बालक सा बनकर मैंने,
कितना तुम्हें हँसाया था
प्रेम के इस पावन बंधन में,
कुछ सुख के पल भी लाया था ।
अगर सत्य है प्रेम हमारा
फिर जन्म मरण का मोह नहीं
यदि ईश्वर ने चाहा तो.....
फिर से होगा मिलन हमारा ॥

-गौरव कुमार (युवा कवि एवं लेखक)
पटना, बिहार, 8678003464

केंद्रबिंदु

ऊंचे आसमान पर आज नारी
सफलतापूर्वक उड़ रही हैं,
लोकतंत्र के हर मजबूत
स्तंभ से जुड़ रही है,
बेटियां विज्ञान और वैज्ञानिकता की
बातें कर रही हैं,
दामन थाम चुकी है,
तो बताइए किसके कारण?
मजबूत प्रशासनिक व्यवस्था दे रही हैं,
कानून की रखवाली कर रही हैं,
उनकी सख्ती से व्यवस्थाएं सुधर रही है,
बेटियों को ही नहीं सबको
न्याय दिलवा पा रही हैं
तो बताइए किसके कारण?
वतन के सर्वोच्च पद को सुशोभित कर रही हैं,
पाखंडों से हट शिक्षा से सुधर रही हैं,
नि:स्वार्थ बेटे बेटियों को पढ़ा रही हैं,
पूरी पीढ़ी को आगे ले जा रही हैं,
संगीत के सुर महका रही हैं,
मधुर गीत गा रही हैं,
तो बताइए किसके कारण?
आज बेटियां बल्ले घुमा रही हैं,
डॉक्टर बन जिंदगियां बचा रही हैं,
अंतरिक्ष से शोधकर आ रही हैं,
शिक्षा की अलख जगा रही हैं,
तमाम कार्यों को करने के बाद भी
रोटियों पर बेलन चला
पूरे परिवार की क्षुधा मिटा रही हैं,
तो बताइए किसके कारण?
माता सावित्री बाई फुले है सबका केंद्रबिंदु,
सतलज,गंगा,यमुना,गोदावरी या हो सिंधु,
इस अकाट्य सत्य को भुला नहीं सकते,
किसी कल्पना को श्रेय दिला नहीं सकते,
यदि शिक्षा की इस देवी को भुला रही हो,
तो यकीनन अपने पैरों पर कुल्हाड़ी चला रही हो।

-राजेन्द्र लाहिरी पामगढ़ छग

मेरी कलम

ये कलम भी न कमाल करती है,
सही हाथ लगे तो मिसाल बनती है,
गलत हाथ लगे तो जंजाल बनती है।
तलवार से भी तेज है धार इसकी,
जो लग जाए तो जिंदा हलाल करती है।
साथ दे तो मालामाल करती है,
मुंह मोड़ ले तो कंगाल करती है।
बड़े-बड़े सिर झुकाते इसके आगे,
जो ठान ले तो जीना मुहाल करती है।

- अंकित सोनी 'आदित्य'
गांधीनगर, मनावर, धार (मप्र)

रौब झाड़ने की सनक

कुछ लोग, कुछ जातियां, कुछ वर्ग,
रौब झाड़ने की सनक
विरासत में पा लेना मानते हैं,
वो इन्सानों को इंसान नहीं जानते हैं,
क्या उनके शक्लोसूरत,
उनका रक्त,
अलग होता है?
दुनिया में आने के तरीके अलग होते हैं?
वो अलग तरह से हंसते या रोते हैं?
मानव होने का सामान्य सा बोध
क्यों नहीं कर पाते हैं?
क्यों नहीं सुधर पाते हैं?
जातिय गर्वोक्तता की सनक कब तक,
वे क्यों नहीं पा रहे
संवैधानिक व्यवस्था में रच बस,
दरअसल ये सब सिर्फ खुद को
सर्वोच्च व अन्य को निकृष्ट मानने की
एक मानसिक बीमारी के सिवाय
और कुछ नहीं है,
संवैधानिक शक्तियों की अक्षमता
ही सबसे ज्यादा जिम्मेदार है,
लागू करने वालों की नजर में
देश नहीं एक परिवार है,
आम अवाम बिना सोचे समझे
किन किन को पॉवर सौंप देते हैं,
जो बाकी काम करे या नहीं लेकिन
जो रौब झाड़ने की सनक पाल लेते हैं।

-राजेन्द्र लाहिरी पामगढ़ छग

डमरू घनाक्षरी

बमबम हरहर, बमबम हरहर,
बमबम हरहर, बमबम हरहर।

अवघट-मरघट, जमघट-पनघट,
अजर-अमर हर, अधर अचल धर।

जनम-मरण हर, सकल जगत चर,
चरण शरण नत, गटक गरल गर।

मन उपवन भर, छण-छण जप कर,
लगन मगन मन, धर चल जल भर।

दरसन जब कर, परसन तब हर,
तन-मन-धन अब, अरपन सब कर।

-राजकुमार निषाद 'राज', बिरोदा धमधा जिला-
दुर्ग छत्तीसगढ़, मो. 7898837338

गंगोदक सवैया

काम नेकी करौ जिंदगानी मिले
जानलौ आज पाहू बने मान जी।

साथ ले के इहाँ ले न जाना खजाना
कमालौ बने काम ला ठान जी।।

का भरोसा इहाँ जिंदगानी रहै
स्वांस डोरी बँधाये हवै जान जी।

राम के नाम लौ पार बेड़ा करै गा
करौ पाठ पूजा बने ध्यान जी।।

-राजकुमार निषाद 'राज', बिरोदा धमधा जिला-
दुर्ग छत्तीसगढ़, मो. 7898837338

माँ

माँ.....,
तु अमूल्य है,
तु ही जीवनदाता है,
तु ही अन्नदाता है,
तु है सर्वोपरि,
तु ही मेरी माता हैं,
जितना भी लिखूँ मैं,
तेरे बारे में,
सब कम लगता है,
क्योंकि तु ही मेरी माता है।
इस संसार ने,
मुझे कुछ खूब रूलाया है,
एक तुने ही संभाल है,
तुने ही मुझे सबारा है।।

-मुस्कान केशरी , मुजफ्फरपुर बिहार
एम एस केशरी पब्लिकेशन की संस्थापिका

नारी

नारी.....,
तु ही दुर्गा की रूप है,
तु ही माँ काली है
फिर आज तु क्यो छुकती है,
अपनी इच्छाओं को यूँ क्यो मारती है,
तु ही जननी है,
तु ही पालनहार है,
फिर आज तु क्यों लाचार है,
तु ही शक्ति है,
तु ही लक्ष्मी है,
फिर किसी के सामन क्यो हारती है,
तु ही माता है,
तु ही बहन है,
इस दुनिया में सबसे महान तु ही है,
तु ही बेटी है,
तु ही बहु है,
दो कुल को संवारने वाली,
तु ही है,
तु ही नारी है.....।।

-मुस्कान केशरी , मुजफ्फरपुर बिहार
एम एस केशरी पब्लिकेशन की संस्थापिका

सामंजस्य

जब आहत हृदय
शमशान बन जाए तो
उसमें लाशे नहीं
भावनाएं राख हुआ करती है।
जब विश्वासी हृदय में
बिखराव आ जाए तो
अपने और पराए नहीं
बस मौन रहा करता है।
जब वेदिती हृदय
राख बन जाए है
सुख और दुख नहीं
बस स्थिरता रहती है।
जब खंडित हृदय
अखंडित हो जाए तो
उसमें आह और वाह नहीं
बस जीवन की चाह रहती है।

-डॉ.राजीव डोगरा (युवा कवि व लेखक)
पता-गांव जनयानकड़, कांगड़ा हिमाचल प्रदेश
मो. 9876777233, 7009313259

बीच की दुनिया

हर जीव की एक दुनिया होती है,
पर मानवों की दुनिया कई होते हैं,
कुछ लोग सारी जिंदगी हंसते हैं तो
कुछ लोग सारी उमर रोते हैं,
एक दुनिया उन मासूमों की
जो ताउम्र शारीरिक कष्ट उठाते हैं,
तब कहीं जाकर परिवार को
दो जून की रोटी खिला पाते हैं,
इन्हें कोई मतलब नहीं फरेब से,
सीने में भी इंसानियत और
दया छुपाकर रखते हैं खाली जेब में,
एक दुनिया उसकी है जो होते हैं अमीर,
वक्त बेवक्त ताक पर रख सकते हैं जमीर,
जो सिर्फ सोचते हैं अपने लाभ,
जलाना या बुझाना पड़े चाहे चिराग,
पर क्या पता है कि सबसे अच्छी दुनिया
किताबों की दुनिया है,
जहां विज्ञान है,ज्ञान है,
सभी समस्याओं का बेहतर समाधान है,
सूरज,चांद,तारे और अंतरिक्ष है,
जो बताता मानव उत्पत्ति का अस्तित्व है,
किताबें हमें भान कराता है कि
कौन मुर्दा और कौन जिंदा है,
वहीं सिखाता कि किस लिए
बना हुआ हर बाशिंदा है,
एक यही तो सीख की दुनिया है,
हां सचमुच ही किताबों की दुनिया
जिंदों और मुर्दों के बीच की दुनिया है।

-राजेन्द्र लाहिरी पामगढ़ छग

मेरी नियति

तकदीर का खेल जैसे खेल कोई मदारी का,
मोल भाव कुछ शेष नहीं,सब वैसा जैसे इच्छा कृष्ण मुरारी का।

वश में नहीं कुछ भी किसी के, सब हिस्से है भगवान के,
कहानी तेरी मेरी एक सी, हम दोनों है परेशान से।

कुछ तेरा कुछ मेरा अधूरा, ख़्वाब कहा कोई पूर्ण है,
व्यथा मात्र है यह जीवन, कुछ भी कहां सम्पूर्ण है।

मेरे मन का हुआ कहां कुछ सब होते होते रह गया,
सपने में जो महल गढ़े थे सहसा यूंही वह ढह गया।

जैसा प्रभु ने भाग्य दिया सबकुछ मुझको स्वीकार है,
हम तो बस प्यादे है उनके खिलाड़ी तारणहार है।

अब नियति को नियत मान कर सब कुछ तुझको है सौंप दिया,
मैंने अपने भाग्य वृक्ष को तेरी मिट्टी में रोप दिया।

फले फूले यह तरुवर मेरा बस तेरा ही सहारा है,
प्रभु जी केवल तुम ही तुम हो और कौन हमारा है।

-अमित पाठक शाकद्वीपी, बोकारो, झारखंड
संपर्क सूत्र : 8935857296

तेरे खत

रहा इंतजार आयेंगे तेरे खत,
लिखा है हर रोज़ भूलना मत।
पूंछती थी तेरे बारे में हवाओं से,
एहसासों में रही तेरी खैरियत।

लिखा होगा तो हम तक नहीं पहुंचा,
शायद भूल गए होगे तुम मेरा पता।
फोन नहीं था तब जो हाल पूंछ लेते,
किस बहाने से हम तेरी खबर लेते।

मीलों दूर बस गए थे जब आशियाने,
अपने होकर भी रहे अपने बेगाने ।
दिलों की दूरियों हम बच्चे नाप पाते,
मेरे खत मिलते ही काश तेरे खत आते।

पता न चला दूरियों में जिंदगियां ढल गई,
बांटती जो गम वो चिठ्ठियां ही जल गईं।
दिन बीते और खबर आई कहां गुम हो,
बताया किसी ने कि दूर दुनिया से तुम हो।

काश वो पल कहीं छुप कर निकल जाते,
कुछ तो कभी तुझसे ही तेरी खैरियत पाते।
दु:ख की घडी के लम्हें कुछ कम हो जाते,
नही आ सके न सही काश तेरे खत आते।

-कंचन वर्मा, शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश

वो मर जाएगा

सत्ता वैसे भी
मारती है
तू भी निर्दयी मत बन;
बोए हैं सपने उसने
अपने लहू से सींचकर,
देखेगा ये फसल बर्बाद
फिर कैसे घर जाएगा।
वो मर जाएगा।।
गिरवी पड़ी है दीवारें
ऋण से दबी छत है;
हाय, बिलखेगा खेत वह
हाय, मिट्टी तड़पेगी,
हाय बिखरेंगे जब सपने
हारकर जहर खाएगा।
वो मर जाएगा।।
तमाशा उसकी बर्बादी का
बिरादरी वाले देखेंगे;
खुश होंगे कुछ रोता देख
वहीं बेटी ब्याह की लाज में
वो कैसे नजर मिलाएगा।
वो मर जाएगा।।
हाय, खुदा तेरे विधान में
क्यों किसानों को सुख नहीं;
मेहनत, परिश्रम और स्वेद से
जिसने धरा को सींचा है,
प्रकृति तेरे प्रकोप से क्यूं?
खेतिहर ही कर्ज़ चुकाएगा।
वो मर जाएगा।।

-रोहताश वर्मा 'मुसाफ़िर', खरसंडी, राजस्थान

कविता व गीत संग्रह

क्या नहीं चाहिए?

जरा बता तो दो ऐ ताक़त
क्या तुम्हें इस वतन में
मजलूम नहीं चाहिए,
गरीब लाचार नहीं चाहिए,
यदि हां तो कुछ करते क्यों नहीं?
तुम्हारे कारिंदे सुधरते क्यों नहीं?
पॉवर सिर्फ पैसे, पद और कद
बढ़ाने के लिए ही नहीं है,
उनका जीवन स्तर सुधारने के लिए है
जो इसके दायरे में रहते सही हैं,
गरीबों, दलितों पर
रौब जमाने के लिए नहीं है,
कैलेंडर से पांच साल निकल जाते हैं,
पर दिल का कालापन रह जाते हैं,
बिना कुछ कहे ही बहुत कुछ कह जाते हैं,
सत्ता कुछ चंद गिरोहों का धंधा नहीं,
संविधान के सफल क्रियान्वयन का
है एक उचित जरिया,
जहां चलना चाहिए एकमात्र नजरिया,
क्या देश का संपूर्ण विकास
संवैधानिक तरीके से संभव नहीं?
पॉवर के लिए कुछ भी असंभव नहीं।

-राजेन्द्र लाहिरी पामगढ़ छग

कहीं गुलामी की बेड़ी में....

कहीं गुलामी की बेड़ी में फिर से ना पड़ जाओ तुम।
दहन करो फिर से स्मृति,संविधान अपनाओ तुम।।

जाप-तप तुम करने लग जाओ,परम धाम को जाने को।
आ ना जाए कोई बैरी,तुझ पर दोष लगाने को
शंबूक की भाँति देखो,बेमौत ना मारे जाओ तुम।।
दहन करो फिर से स्मृति,संविधान अपनाओ तुम।

हो जाओगे फिर बेपर्दा,रीति पड़े निभाना सुन।
रखो वक्ष तुम खुले अपने,कर ये पड़े चुकाना सुन।।
बेबस किसी बहिन बेटी के,स्तन ना कटवाओ तुम।
दहन करो फिर से स्मृति,संविधान अपनाओ तुम। ।

एक सुहागिन की वो रात,अब फिर काली आ जाए ना।
लूटे आबरू रंग महलों में,डोली खाली आ जाए ना।।
लगे बहुत मासूम परी सी,इज़्ज़त ना लुटवाओ तुम।
दहन करो फिर से स्मृति,संविधान अपनाओ तुम। ।

दिए थे तुमको हक सारे,क्यों खोने उन्हें चले हो तुम।
लई खड़ग कर में शिक्षा,दुश्मन के साथ लड़े हो तुम।।
हक ये पड़े छीनना फिर,नारा जय भीम लगाओ तुम।
दहन करो फिर से स्मृति,संविधान अपनाओ तुम। ।

कहीं गुलामी की बेड़ी में फिर से ना पड़ जाओ तुम
दहन करो फिर से स्मृति,संविधान अपनाओ तुम

-मेहरानियाँ हिन्दुस्तानी

तुझे दर्शन देने आना पड़ेगा, आना पड़ेगा!

मंदिर संजाया भोले बाबा, तुझको आना पड़ेगा,
दिल में बसाया ओ भोले बाबा, तुझको आना पड़ेगा,
भक्त लगाये तेरे दर्शन को लंबी कतार ओ भोले,
मंदिर संजाया भोले बाबा, तुझको आना पड़ेगा !

होके नंदी पे सवार तुझे कैलाश से आना पड़ेगा,
महाशिवरात्रि पर बाबा को शिवडोलो संजेंगो,
शिवडोलो संजेंगो, नगरी भोलो रमेगो, खुशियां
ओ खुशियां उमड़ेगी सबका मन में बार-बार !

तुझको आना पड़ेगा, तुझको आना पड़ेगा,
सबको दर्शन देने आना पड़ेगा, यह विनती
सारे भक्त करें हैं बारबार, तुझको आना पड़ेगा,
दर्शन दे करो सबका उद्धार, तुझको आना पड़ेगा !

भोले भंडारी, तेरी महिमा है न्यारी,
आके दिखाना अपना चमत्कार ,
हम दर्शन को देंखे रस्ता बारबार,
तुझे दर्शन देने आना पड़ेगा, आना पड़ेगा !

- जयश्री वर्मा (शिक्षिका), इंदौर, मध्यप्रदेश
मो. 6264366070

तुझको आना पड़ेगा !

मंडप संजाया भोले बाबा,
तुझको आना पड़ेगा,
मन में बसाया ओ भोले बाबा,
तुझको आना पड़ेगा,
भक्त लगाये तेरे दर्शन को
लंबी कतार ओ भोले,
मंदिर संजाया भोले बाबा,
तुझको आना पड़ेगा !
नंदी पे सवार होके तुझे
कैलाश से आना पड़ेगा,
महाशिवरात्रि पर बाबा
को शिवडोलो संजेंगो,
शिवडोलो संजेंगो, नगरी
भोलो रमेगो, हो बाबा,
खुशियां का रहे ना पारावार,
भोले तुझको आना पड़ेगा !

- मदन वर्मा 'माणिक' इंदौर
मो. 6264366070

बहुत देर कर दी

प्यार टेसू सा
जो मौसम का रखता
प्यार का हिसाब यदि
गुलाब सा होता
खुश्बू बरकरार
किताबों
में रखा फूल
महकता रहता
सूखने के बाद भी
दूरिया यादों की
वाय फाय
मगर देर हो चुकी
चिड़िया चुग गई खेत
सपने बने आधार कार्ड
बुनते गिनते जाओ
उम्र गुजर जाए
हम कहा तुम कहा
अब ढूंढते है
तुम्हारे जैसे चेहरे
वो बगिया वो मकान
वो गलियां
मिलो भी तो पहचान
मुश्किल
झुर्रियों भरे चेहरे हो
मगर प्यार का रिचार्ज
ता उम्र का
जो यादों की मिसकॉल मारता
हरदम
जबतक तब तक न
निकले दम
बहुत देर कर दी
प्यार के दो शब्द कहने में
मै करता हूं प्यार तुमसे।

-संजय वर्मा 'दृष्टि', मनावर जिला धार मप्र

बातों के अक्षर

सुनो आकाश से तारों की आहट
दिल से लगे होठों को पता है
फूलों का गीत गाना

कभी-कभी होठों को
किसी आवाज की जरूरत नहीं होती
आंखें बता देती हैं न
आसमान तारों को गायब कर
तुमसे अपने बारिश भरे हाथ
मिला तो नहीं रहा है
क्या वह सूरज की तरह
घूम घूम कर उगना नहीं सीखेगा
उदास रहकर बढ़ते अकेलेपन में
अगर कोई बात कंधे थपथपाए
तो बात एक मीठे पानी का कुआं
अब मुश्किल यह है
कि हम अपनी बातों के अक्षरों को
मन के पटल पर किस तरह उकेरें

-डॉ टी महादेव राव ,
विशाखापटनम (आंध्र प्रदेश)

प्रणम्य भगवती-तनया

है हरकत में बरकत,
मुस्कान में है जान
बिटिया है मेरी किस्मत ,
बिटिया मेरी पहचान।।

बिटिया रानी, करे नादानी
गोद में कर दे, पानी-पानी
अर्द्धरात्रि में झूमती है
गोल-गोल घूमती है

कोमल कर से दाढ़ी खींचे,
किलकारी से जीवन सींचे
अर्द्धवार्षिक तनया मेरी
बोलने लगी है कन्या मेरी

जब भी मुंह खोलती हैं
बुआ, अम्मा बोलती है
बात-बात पर वह मुस्काए
सबके मन पर राज जमाए

तोता राजा उसका मीत
मोबाईल से भी करती प्रीत
झूम-झूमकर सुनती गीत
साहित्यिक जीवन में संगीत

खिलखिलाकर हंसती है
फफक-फफक कर रोती है
प्राण प्रिय सुप्रीति
सीने से सटकर सोती है

जगती में पहले जगती,
फिर जगती को जगाती।
मीठी - मीठी मुस्कान से,
खुशियां बरसाती।।

मुख-मण्डल पर दिव्य चमक,
प्रणम्य भगवती भाव।
लेता हूं आशीष भोरे,
छूकर दैवीय पांव।।

- सुनील चौरसिया 'सावन', 9044974084

जीना इसी का नाम

हर पल खुशियां हासिल करने में
हौसला जगाने के जस्बात
दूसरों का दुःख-दर्द दूर करने में
दर्द महसूस करने की क्षमता
हर किसी की किस्मत में ना होती
दूसरों की मदद को आतुर हो
सहयोग करने में सदैव तत्पर रहें
व्यस्तता होने से समयाभाव
आर्थिक तंगी से अभाव का बहाना
कार्य नियोजन की अकुशलता
सब में घुल मिलकर ना रह पाने से
सबको साथ लेने का एहसास
जिम्मेदारी निभाने का भाव जागता ।

जिस तरह से हम वर्ष भर में
तिथियां, त्यौहार व कार्यक्रमों को
अच्छे तरीके से मनाते आते हैं
जरूरतमंदों को आवश्यकतानुरुप
सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु
नैतिकता को सर्वोपरि मानते हुए
संवेदनशीलता का परिचय दें
आप खलनायक साबित ना होकर
सीमित संसाधनों में खुशियां दे
दूसरों को संतुष्टि, समाधान बांटकर
खुद उदार रवैया अपना लें तो
किसी मासूम जिंदगी का भला होगा
कोई जीवन संवर सकता है।

-डॉ. मनीष दवे, महालक्ष्मी नगर, इंदौर

जागने लगा है...

हर शहर एक जैसा लगने लगा है इन दिनों
इंसान सोते से ज्यों जगने लगा है इन दिनों

कितने धोखे कितनी मक्कारियां और गम
दर्द की आग में सुलगने लगा है इन दिनों

पुकारे किसको कि सुनाए ये दास्ताने दिल
खुद को ही ज़लज़ला कहने लगा है इन दिनों

ज़िंदगी के मौसमों में पतझड़ ही ठहर गया है
बहार की ख्वाहिश में बसने लगा है इन दिनों

कोशिश सही हो तो कामयाब हो इंतजार भी
इसी सच्चे उम्मीद पे चलने लगा है इन दिनों

-डॉ टी महादेव राव, विशाखापटनम (आंध्र प्रदेश)

जीवन अनमोल है

जीवन तो अनमोल है, गुरुजनों ने पढ़ाया,
संत जनों ने सत्संग में गाया, बुजुर्गों ने सिखाया,
सज्जनों ने अपनाया, मर्म इसका जो समझ पाया,
उसने अपनी जिंदगी के, हर पल को आनंदित बनाया ।

वाक्य नहीं है यह केवल, जीवन की संचित पूंजी है,
शुभ कर्मों की तरफ अग्रसित होने की कुंजी है,
जिंदगी एक बार ही मिलती है, सांसों पर टिकी धूरी है,
चौरासी लाख योनियों का ठहराव, मानव योनि ही है ।

प्राण तो पशु - पक्षियों, जीव जंतुओं में भी है,
परम तत्व से मिलन की यात्रा, यही पूरी होती है,
शरणागत हो ईश्वर की, सत्य पथ पर चलते रहना है,
जीवन को जन्म मृत्यु के, भवसागर से अवश्य तारना है।

संतों की वाणी का, मधुरतम अमृत प्रसाद है,
जिंदगी सतरंगी खुशियों का, अंतरंग एहसास है,
मौत से पहले फतह करो, मानव चंद दिनों का मेहमान है,
अगले पिछले कर्मों का लेखा-जोखा, यह जीवन तो अनमोल है।

-मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई, तमिलनाडु

प्यार करेंगे

तुम प्यार करोगे
आसमान टूट पड़ेगा
ऊपर पृथ्वी
जैसा है वैसा ही देखो
हां...आपको प्यार हो जाएगा
दिन में दिखाई देने वाला सूर्य
भी चंद्रमा के रूप में दिखाई देता है...
सच में प्यार हो गया
आप के आसपास
सभी पेड़
एक युगल गीत गाओ...
हां तुम्हें पसंद आएगा
आप स्वयं नहीं जानते
न केवल...
भले ही आप प्यार करते हों
वह स्पष्टत: नहीं जानती

-ओत्तेरी सेल्वा कुमार

वह सच है

स्वप्न समाधि में
सुबह में
अभी तक नहीं किया
बचे हुए होंगे
रात के सपनों का
तलाश शुरू होती है
उस तलाश में...
वास्तव में
विवाहित
ज्यादा फर्क नहीं...
यह सही है
क्या जीवन एक सपना है?
क्या सपनों में भी जान होती है?
लेकिन एक बात हम निश्चित
रूप से कह सकते हैं
कि हम वास्तविकता
से कहीं अधिक हैं
हम सिर्फ सपनों में
ही आराम से जीते हैं...
हाँ...
क्या वह सच है?

-ओत्तेरी सेल्वा कुमार

कविता व गीत संग्रह

सनातन संस्कृति समृद्धशाली विरासत

संस्कृति देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती
संस्कृति संस्कारों का बोध, दृश्यकला का प्रदर्शन है
इसमें आदर्शों, जीवन मूल्यों का व्यवस्थित निर्धारण
संस्कार, परिवार, शुद्धि व सजावट से परिभाषित है।

यथार्थ में सभ्यता और संस्कृति एक-दूसरे के पयार्य
सभ्यता में राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक भाग है
संस्कृति में कला, विज्ञान, संगीत, नृत्य की बातें होती
जीवन सुखी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यूनान, रोम, मिस्र, सुमेर और चीनी संस्कृतियों में से
भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम कृति में एक है
इसकी बहुरंगी विविधता, समृद्धशाली विरासत शैली
मानव जाति की कल्याणक सभी सीमाओं से परे है।

इसमें गौरवशाली मान्यताओं, परंपराओं का समावेश
जीवन सुनियोजित करके 'आत्मिक सौंदर्य' बताता है
भारतीय संस्कृति अध्यात्म व? भौतिकता का समन्वय
मूल्य दया, करूणा, प्रेम, शांति, सहिष्णुता बताता है।

संस्कृति में चार पुरूषार्थ धर्म, अर्थ, काम?, मोक्ष होते
चार आश्रमों में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास है
इसमें नवागत संस्कृति का उदारतापूर्वक ग्रहण होता
इसमें अनेक जातियों के श्रेष्ठ विचार समाहित होते है।

भाषा, खानपान, पहनावा, कला व संगीत में बदलाव
प्रकृति व पर्यावरण के अटूट साहचर्य संबंध चलाते है
बुद्ध, तुलसीदास, सुरदास और गांधीजी सभी नायक
विचारकों, महापुरूषों ने समन्वित रूप से संजोया हैं।

अलग-अलग धर्मों के लोग यहां एक साथ रहा करते
उनके पूजन स्थल 'शांतिपूर्ण' सहअस्तित्व दर्शाते हैं
साहित्य में रामायण, महाभारत, गीता, आदि प्रमुख
लचीलापन, क्षमाशीलता की समुचित अभिव्यक्ति है।

-डॉ. मनीष दवे, महालक्ष्मी नगर, इंदौर

परीक्षा की तैयारी

परीक्षा आई, परीक्षा लाई
सब मिल कर करो पढ़ाई ...

टाइम टेबल बनाकर पढ़ना
कर्तव्य समझा उसे निभाना
खूब मेहनत से करो तैयारी
डर के नहीं, बस! लगे रहो।

सही से दिनचर्या अपनाओ
हौसला सदा बना कर रखो
कोशिश से मुश्किलें हटाओ
परिणाम सदा अच्छे पाओ।

परीक्षा का कोई तनाव न लो
किताबी पाठ पे मन लगाओ
करत अभ्यास जीत जाओगे
ध्यान से लिखना सीख लोगे।

पढ़ाई को बोझ मत समझो
नित्य पठन में लगते जाओ
व्यायाम गतिविधियां करते
थोड़ा खेल-कूद जारी रखो।

सेहत का कुशल प्रबंधन हो
खान-पान पर खूब ध्यान हो
आत्मविश्वास बनाए रखकर
परिणाम अच्छे हासिल हो।

परीक्षा आई, परीक्षा लाई
सब मिल कर करो पढ़ाई ...

-डॉ. मनीष दवे महालक्ष्मी नगर इंदौर

आस्था जगाए रखो

अंतर्मन में दिव्यत्व से आस्था परिलक्षित होती
ईश्वर का नाम स्मरण से मन में श्रद्धा आती है।
आस्था के दीप प्रज्वलन से ईश्वरानुरागी बनते
ईश्वर की अनुभूति हमें नई ऊर्जा, प्रेरणा देती ।
आस्था के समुद्र में गोते लगा जीवन आनंद ले
जीवन को इस भवसागर पार ले जा सकते है।

हमें कठिनाईयों,परेशानियों का पता ना चलता
कष्ट, तकलीफों का एहसास कम हो जाता है।
आस्था से मानसिक स्थिरता अर्जित की जाती
ज्ञान, अनुभव एवं सुकर्मों से आस्थावान बनते।
सरल, सुलभ, कर्मशील व धर्मवान बनाने वाली
आस्था जज्बा है जो जीवन में प्राण भर देता है।

किसी को पत्थर में भगवान के दर्शन होते हैं तो
कोई पत्थर को देवता मान पूजा अर्चना करता।
भगवान में विश्वास से कृपा निर्बाधता से मिलती
सूर्य रौशनी, चंद्रमा की शीतलता, बरसात, हवाएं
दूसरी प्राकृतिक वस्तुएं बिना भेदभाव के मिलती
भक्ति बल प्रयोग से सफलता अवश्य मिलती है।

ईश्वर में अटूट विश्वास का फल जरुर प्राप्त होता
उनको अमीर-गरीब, छोटे-बड़े का भेदभाव नहीं।
ईश्वर व गुरु के प्रति आस्था संकल्पों को पूरा कर
ध्रुव, प्रहलाद जैसी ईश्वर की भक्ति अनन्य रही।
इस युग में माता-पिता, गुरु के आदर से कीर्ति हो
जीवन सार्थक होने में मानव देह क्षणभंगुर होती।

-डॉ. मनीष दवे, महालक्ष्मी नगर, इंदौर

भावनाएं कहने दो

यह भावातिशयता नहीं है अपनी भावनाएं कहने दो
कई संबंध एक व्यक्ति में स्थिति को अनाम रहने दो

आंखें मेरी नम हुई जब अपना कांधा तुमने बढ़ाया
पोंछकर मेरे नैनों की वर्षा स्नेह से साहस बँधाया
मातृ वात्सल्य में डूबी तुम्हें हृदय से मां कहने दो
कई संबंध एक व्यक्ति में स्थिति को अनाम रहने दो

विचलित मेरे मनस ने जब कभी पाई निराशा
थपथपाकर पीठ मेरा सहोदरी सी जगाई आशा
इस ममता मूरत को तुम बहन सी मन में बसने दो
कई संबंध एक व्यक्ति में स्थिति को अनाम रहने दो

व्याकुलता हुई जब संसार से और टूटा कई अंशों में
तुम ही तुम उपस्थित थी सांसारिक पीड़ा दंशों में
सुपुत्री की तरह तुमने सम्हाला तुम्हें बेटी कहने दो
कई संबंध एक व्यक्ति में स्थिति को अनाम रहने दो

राह भूला मंजिल को भूला जब कभी स्वयं से घबराया
स्नेहिल भावज सी तुमने सही मार्ग और लक्ष्य सुझाया
स्नेह औ प्रेम की देवी तुम्हें भाभी मान नमन करने दो
कई संबंध एक व्यक्ति में स्थिति को अनाम रहने दो

एकाकीपन के अंधकार ने जब मेरे अंतस को घेरा
दूर कर उस तम को तुमने सच्ची सखी सी डाला डेरा
आत्मीय माधुर्य हो तुम्हें प्रिय सखी संबोधित करने दो
कई संबंध एक व्यक्ति में स्थिति को अनाम रहने दो

मेरी पीड़ा और व्यथा को बांटने सदैव तत्पर तुम हो
गहन-यातना-जीवन में मंद स्मित का अवसर तुम हो
मेरे हर पल में उपस्थित तुम पर प्रेयसी नाम धरने दो
कई संबंध एक व्यक्ति में स्थिति को नाम रहने दो

किन-किन संबंध का माधुर्य और अपनापन मैंने है पाया
कह सकूंगा मैं संभव नहीं मिल तुमसे हर दुख बिसराया
तुम तुम्हीं हो और अनुपम तुम मेरी हो बार-बार कहने दो
कई संबंध एक व्यक्ति में स्थिति को अनाम रहने दो

-डॉ टी महादेव राव, विशाखापटनम (आंध्र प्रदेश), मो. 9394290204

वसंत

दिलों की बातें, आँसू कह जाते
खुशी -दु:ख में, पलकों की खिड़कियों से
झाँकते दूसरों की, मन की दुनियां।
बहुत दूर जाने
बहुत दिनों बाद
मिलने पर
ऐसे ढुलकते आँसू
जैसे गालों पर पड़ी हो ओंस
तब भीगता है मन
उन आंसू में से
कुछ आँसू ऐसे भी
जो बचाकर रखें
यादों की किताबों में
जब याद आयी
खोली किताब
किस्से अक्षरों में लिखे
आंसुओं में घुल गए
धूल गए।
वसंत में कोयल गाने लगी
प्रेम के गीत
मन की खिड़कियों से
अब आँसू नहीं लुढ़कते
इंतजार में सूख भी जाते
आँखों से आँसू।
वक्त को दोहराता
वसंत का मौसम
हर साल आता
मीठी आवाज कोयल के संग
जो मन की किताब के कोरे पन्नों में
टेसू की स्याही से
लिखने लग जाता प्रेम के गीत।

-संजय वर्मा 'दर्ष्टि', 125 ,बलिदानी भगतसिंह मार्ग, मनावर जिला धार (म प्र)

स्वप्न से परे स्त्री

वो स्वतंत्र थी
तो कैद की गई
वो सीधी थी
तो सताई गई
वो उन्मुक्त थी
तो चरित्रहीन कहलाई
वो प्रेम में थी
तो रुलाई गई
वो मुखर थी
तो चुप कराई गई
वो प्रतिभा थी
तो प्रतिबंधित कराई गई ।
वो दोषरहित थी
तो दोषी ठहरायी गई।
वो सृष्टिकर्ता थी
तो बांझन भी कहलाई गई।
वो स्वप्न से परे थी
उसे उसकी सीमा बतलाई गई
वो सहज थी,
वह असहज महसूस कराई गई।
वो स्वाभिमानी थी,
बारंबार तिरस्कृत कराई गई।
वो मुस्कुरा रही थी
देखो अश्रुपूरित कराई गई।

-अन्नू प्रिया, कटिहार , बिहार

मैं नारी हूं

पुरुषों के समाज में अबला कहलाने वाली बेचारी हूं,
सब कुछ सहकर चुपचाप आंसू बहाने वाली मैं नारी हूं।
पुरुष को जन्म देने से मरण तक देती हूं साथ पुरुष का,
उस वक्त भी होती जरूरी प्रदर्शन होता जब पौरुष का।
समाज में व्याप्त भेदभाव अनीति को सहना भी है,
न कोई आवाज उठाना और न कुछ कहना भी है।
समय बदलता युग बदलते पर न बदलता हाल,
त्रेता द्वापर से कलियुग आया हाल हुआ बेहाल।
सीता हो या द्रौपति सब हालातों के आगे थे हारे,
पुरुष प्रधान इस समाज में फिरती हैं मारे मारे।
हमारे त्याग और समर्पण का नहीं है जग में कोई मोल,
अत्याचार अन्याय होता हम पर और मिलते कड़वे बोल।
मां बेटी और बहु के रूप में आज भी संघर्ष करती नारियां,
पुरुष प्रधान समाज में कोई न सुनता इनकी सिसकारियां।
अब वक्त आ गया इनके लिए आवाज उठाना होगा,
सामाजिक समानता व अधिकारों का हक दिलाना होगा।।

-मुकेश कुमार सोनकर, रायपुर छत्तीसगढ़, मो. 9827597473

कम न समझो

तुम नारी को
कम न आंको
तुम नारी को
नहीं किसी से
कम वो
शक्ति, साहस, क्षमता
है भरी उस में कितनी
कभी न करना संदेह
घर के सारे काम हों
या ऑफिस
बाज़ार से खरीदारी
बच्चों की देखभाल,
लालन पालन
रिश्तों को संभालना, संवारना
सब भलीभांति कर लेती है
हाथ हैं दो पर शक्ति अपार
कभी भी भूल मत करना
उसे कमतर समझने की
नारी है जहाँ दुर्गा वहीं लक्ष्मी
और सरस्वती भी
इस धरा पर है सबसे बलशाली
तो वो है नारी ही
सृष्टि की जननी
माँ, बेटी, बहन, पत्नी, बहू
और उनसे जुड़े हर रिश्ते की सूत्रधार
कभी भी भूल से भी
कम न समझना नारी को
बस हो सके तो दे देना
उसके हिस्से का प्यार,मान
सम्मान जिसकी है वो पूरी हकदार
मत करना अत्याचार
मानसिक या शारिरिक
न ही मनमानी
नारी है बस ये सोच मत करना
तिरस्कार उसका
हो सके तो बस दे देना
उसके हिस्से का सम्मान,
प्यार जिसकी है वो हकदार
बड़े ही गर्व से
अदम्य साहस की मूरत है नारी
सहमी, डरी, कमज़ोर नहीं
जिसे समझ पैर की जूती
करते रहो तुम मनमानी
और अत्याचार पर अत्याचार
करती है त्याग
तो जानती है अपने
स्वाभिमान की रक्षा करनी भी
बस प्यार, समर्पण,
मान सम्मान की अभिलाषी
जिसे उसकी कमज़ोरी समझ
मत करना तिरस्कार
नारी है दुर्गा तो लक्ष्मी और सरस्वती भी
साहस, शक्ति ,सुख, समृद्धि ,
गुणों और ज्ञान की खान।।

-मीनाक्षी सुकुमारन, नोएडा

वृक्ष ही सांथ निभाय

बालक का जब जन्म हो ऐसे खुशी मनाय।
घर आंगन की बगिया में पौधा देय लगाय।

ज्यूं ज्यूं बालक हो बड़ा पौध वृक्ष बन जाय।
बालक नित्य क्रीडा करें पेड़ की ठंडी छांय।

सुंदर-सुंदर फूल खिले मन प्रसन्न हुई जाय।
बुलबुल छेड़े रागिनी तो कोयल तान सुनाय।

जब बालक तरुण भया दुल्हन घर ले आय।
मिलजुल कर दोऊ दंपति पौधा पुन: लगाय।

ऑक्सीजन सबको मिले मेघ नीर बरसाय।
भोजन को ईंधन मिले मीठे फल मिल जाय।

मिट्टी का रोके क्षरण और ओजोन बचाय।
मिले समिधा यज्ञ की और पुण्य मिल जाय।

पांच तत्व की देह यह वृक्ष ही तत्व मिलाय।
जीवन से मृत्यु तलक वृक्ष ही सांथ निभाय।

-परमानन्द राठौर गुराड़िया वर्मा

कविता व गीत संग्रह

दो गीत

(1) अज़ब ढंग है

ये भी अच्छा चलन ? चला है गाली खुद ही खुद को देना,
और न दे प्रतिक्रिया तो फिर ताली खुद ही खुद को देना।

स्वयं की ग़ल्ती न हो स्वीकृत औरों की ग़ल्ती गिनवाना,
कोई अगर बताये ग़ल्ती उसको अपनी आँख दिखाना।
अजब ढंग है तारीफ़ों की प्याली खुद ही खुद को देना,
और न दे प्रतिक्रिया तो फिर ताली खुद ही खुद को देना।।

खुद ही खुद विद्वान बने हम और दूसरे मूरख सारे,
जो हमको तरजीह दे केवल लगते हमको वो ही प्यारे।
ऐसी भी क्या आदत हमने पाली खुद ही खुद को देना,
और न दे प्रतिक्रिया तो फिर ताली खुद ही खुद को देना।।

सबका हित हो जिससे वो ही तो साहित्य कहा जाता है,
लेकिन अब का साहित्यिक क्यों अपने में ही बहा जाता है।
है महत्व औरों की बनिस्वत खाली खुद ही खुद को देना,
और न दे प्रतिक्रिया तो फिर ताली खुद ही खुद को देना।।

(2) यात्रा

बड़े भाग पाया मानुष तन,मान सको तो मानो
एक यात्रा खुद में जीवन,मान सको तो मानो।।

रहे सीखना जारी हरदम,फिर भी कुछ रह जाये।
सार-सार को गह ले मनुआ,बाकी सब बह जाये।
कई जगह पर भागे निज मन,मान सको तो मानो।
एक यात्रा खुद में जीवन,मान सको तो मानो।।

तेरा-मेरा कहते-कहते,बीत ज़िन्दगी जाये।
अंत समय आये तो लगता,खुद ही गये ठगाये।
प्राप्त न कर पाते मन का धन,मान सको तो मानो।
एक यात्रा खुद में जीवन,मान सको तो मानो।।

समय खूब फिर भी हम कहते, लिखने समय नहीं है।
सतत् गप्पियों के सँग रहते,लिखने समय नहीं है।
लेखन के प्रति नहीं समर्पण,मान सको तो मानो।
एक यात्रा खुद में जीवन,मान सको तो मानो।।

भाव शक्ति से हीन हुए हम,फिर कुछ कैसे लिख दें।
नहीं जेब में आना कैसे फिर हम पैसे लिख दें।
जो लिखता उसका अभिनंदन,मान सको ओ मानो।
एक यात्रा खुद में जीवन,मान ? सको तो मानो।।

-सतीश तिवारी 'सरस', नरसिंहपुर (म.प्र.)

आधुनिक भारत की नारी

हिंद देश की नारी हूं,
वंदन से है मेरी पहचान,
सब रिश्ते हैं मेरी वजह से,
यही तो है मेरी पहचान।
मत करना भूल समझ के मुझको अबला,
मैं आधुनिक भारत की नारी हूं,
देश के लिए जीती मरती हूं,
है मेरे लिए मेरा देश मेरी पहचान।
बीत गया वो दौर जब मेरी पहचान चार दिवारी थी,
पुरुष प्रधान समाज में उस वक्त मैं अबला और बेचारी थी,
पढ़ना लिखना मुझे न सिखाया गया उस वक्त,
कहते ये तो तौहीन तुम्हारी थी।
मैं आज के हिंद देश की नारी हूं,
राजनीति ,पढ़ाई और किसी क्षेत्र में पीछे नहीं अब मैं,
खुद लड़ाकू विमान चलाती,
हवाई जहाज की करवाती सबको सवारी हूं।

-डॉक्टर जय अनजान
बिलासपुर हिमाचल प्रदेश, हेलो 9418353461

ग़ज़ल

कभी आंखें मिलाओगे कभी नजरे चुराओगे।
वो तुमसे दूर जायेगा तुम जितना बुलाओगे।

खुशी दिखती नहीं है चेहरे पे ये नियत क्या है
घिरोगे तुम सवालों से, नज़र कैसे मिलाओगे।

तुझे हम देखते ही जो पूछेंगे छुपे कब तक
तुझे मजबूर कर देंगे, भला कितना छुपाओगे।

मुझे अपना बनाकर दूर चलते क्या जताना है
हम उतना पास आएंगे मुझे जितना सताओगे।

हमेशा साथ रहने की कसम लेंगे जहां पर है
यहां हमको निभाएगे क़सम तुमको निभाओगे।

-के एल महोबिया

सच्ची होली

तन रँगा बहुतों ने
मन जो रँगे
तब हो सच्ची होली।

बेशक ! कपड़े- लत्ते न भींगे
जब मन भींगे
तब हो सच्ची होली ।

जात-पात का भेद मिटे
ऊंच-नीच का भाव हटे
तब हो सच्ची होली ।

लाल -गुलाल सा
हर हृदय रंगे और मँहके
तब हो सच्ची होली ।

मन में द्वेष, बैर -भाव जो रहा भरा
फिर कोरी की कोरी होली
हृदय से हृदय जो रंग जाये
तब हो सच्ची होली ।

- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
ग्राम रिहावली, पोस्ट तारौली गुर्जर, फतेहाबाद, आगरा, उत्तर प्रदेश, मो. 9456994678

वक्त...

वक्त जी हां ! वक्त ;
जो किसी भी स्थिति में,
कोई भी परिस्थिति में,
किसी के पकड़ में नहीं आता।

जो मेहनतकश नर-नारी,
यह सभी के लिए बराबर है।
जो करता इसका सदुपयोग,
जीवन में होता सुफल योग।

राजा हो या रंक हो ;
सब करता इसका सम्मान।
वक्त के सम्मान से ;
सबका होता जगत में नाम।

वक्त के बिना जीवन भी ;
बे वक्त सा रहता है ।
समय दिनभर विचरण करता है
रातभर अकेले ही चलता है।

इसकी गति ना मंद ना मंथर है
ना तीव्र नहीं स्थिर-सा रहता है
यह सदैव समान अवस्था
में ही चलता रहता है

-सोनेलाल मुर्मू

अब ये कदम ना पीछे हटेंगे

ऐ सुन मेरे भाई मत बोल तीखा,
अभी तो मैंने बस चलना है सीखा।
पूरा है भरोसा स्वयं पर मुझको,
मुकद्दर से मैंने लड़ना है सीखा।

लगा ले चाहे कोई जोर कितना,
दुसाध्य है यारो मुझको जीतना।
तोड़कर रहेंगे हर एक आलान,
मैंने भी तो अब उड़ना है सीखा।

कहता हूँ जो वो मैं कर के रहूँगा,
जुल्मों सितम अब ना हरगिज सहूँगा।
मुझे बैसाखी की नहीं है जरूरत ,
अकेले ही मैंने लड़ना है सीखा।

चाहे जमाना ये कहर बरपाए,
राह में चाहे फूलों को बिछाए।
पड़ता नहीं अब कोई फर्क मुझपे,
शोलों पर मैंने चलना है सीखा।

हटेंगे ना पीछे अब कदम मेरे,
चाहे हो कोहरा जितना घनेरे,
करेंगे एकदिन अम्बर को वश में,
अनंत में विचरण करना है सीखा।

-कुमकुम कुमारी 'काव्याकृति'
मुंगेर, बिहार

तनया

दिव्यदृष्टि से बना असुरो से दूरी
सर्वज्ञ है तू फिर कैसी ये मजबूरी

आदि अनादि तू , तेरे रूप अनेक
अंतर्मन में निहार, निकट भी देख

मिलेंगे जग में भांति-भांति के लोग
गलती तेरी नही, यह है मृत्यु लोक

हम सब पंच तत्व के ही अंश है
पर कौन कृष्ण और कौन कंश है

लंकेश ने वैदही को भी छला था
विद्वान के मन में कपट पला था

असुर प्रवृति को तुझे ही जानना
सही गलत को भी तू पहचानना

मां बाप सहोदर का तू अधिमान
घटने न देना अपना स्वाभिमान

भान रहे जनक की तू है शहजादी
भार्या भगिनी तू है आधी आबादी

संभलना होगा खुद ही यहां पर
सेंध लगाते है लोग सूने मकां पर

जन्मदात्री, कल्याणी,चंडिका तू
कुमारी,महागौरी,भवानी,शिवा तू

रखना तनया तुम अपना ख्याल
कहत कवि मंगलेश जायसवाल

-डॉ मंगलेश जायसवाल, कालापीपल
मास्टर ट्रेनर,राज्य आनंद संस्थान (म. प्र.)
9926034568

मेरे भोलेनाथ

पावन गंगाजल लिया हमने अपने हाथ।
भोले बाबा आ गए देने अपना साथ।
अपने इस अभियान से कुछ होने लगे परेशान
भोले बाबा ही जाने उनका ये अभियान।
कुछ की बाते भी सुनी पर रुका नहीं अभियान।
हाथ मे गंगाजल लिया किया प्रभु का ध्यान।
अपनी निंदा ये नहीं है भोले का अपमान।
इतना सोचा चल दिए कुछ मैं है अभिमान।
कार्य प्रभु का है यहाँ जपते भोलेनाथ
अपनी परीक्षा खूब ली पर पकड़े रखा हाथ।
अपनी तो ये कामना जल हर घर पहुचाएं।
भोलेबाबा ने सुनी साथ वही तो निभाए।
मन में श्रद्धा को लिए जपने लगे शिव नाम।
गंगाजल जिसको दिया उसके हो गए काम।
सबकी विनती को सुने भोले ऐसे नाथ।
आ जाते है भागकर देने उसका साथ।
निंदा से डरते नहीं है ये प्रभु का काम।
लोगो का तो काम है निंदा करे सुबह शाम।

-राखी उपासना कौशिक धामपुर बिजनौर

दो कुंडलियां

जीने के दिन

जीने के दिन चार हैं ,मरने का दिन रोज ,
जो मरने से डर गया ,वही करे नित खोज ,
वही करे नित खोज,जिंदगी कैसे जीएं ,
भोजन कसरत सैर ,साथ फल का रस पीएं ,
जीवन है इक जंग ,दिवस खाने पीने के ,
करना मत आराम,घटें दिन नित जीने के ।

शरबत

शीतल शरबत पी रहे ,बूढ़े ,बाल ,जवान ,
इसके अवगुण से सभी ,शायद हैं अनजान ,
शायद हैं अनजान,कठिन उनको समझाना ,
ताजे फल का ज्यूस ,पिलाकर बात ज़माना ,
चाहो सोना यार ,भूल जाओ अब पीतल ,
पीओ ताजे ज्यूस ,छोड दो पीना शीतल।

-महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल म. प्र.
मो --9893836328

नारी मैं नारायणी

गर्भ से जिसकी,है सृष्टि जन्मी सारी,
उस क्षमता का नाम,है नारायणी ढ्ढ

सहज,सरल,शक्ति का आधार,
सूरज-सा तेज ,रोशनी की बौछार ढ्ढ

अमिट अनंत,अमर ज्योति,जागरण,
कण-कण की रचना में है समर्पण ढ्ढ

धीरता है दिखता,वीरता का है समागम,
शासन-प्रशासन हिला सके,है ढमाढमढ्ढ

संबंधों का सार, नारायण की जननी,
आरंभ और अंत का है सब कहानी ढ्ढ

श्रद्धा है,चन्द्रहास है, है निमात्री,
विशवास है संपूर्ण विश्व की है धात्री ढ्ढ

हाँ,मैं नारी हूँ, जो गुणों की खान हूँ ,
हर घर की नीव, संस्कृति का प्राण हूँ ढ्ढ

मैं सर्वोपरी, हूँ,मैं जगता की कल्याणी,
चूँकि मैं केवल नारी नहीं,हूँ मैं नारायणी ढ्ढ

-वर्षा शिवांशिका, कुवैत

होली : आँखों देखी

युवा दिलों में
हो रहा हुड़दंग
होली मिलन
प्रेमिका के संग।
कंचन सी गोरी के
गाल लाल-लाल
रंग और गुलाल
चुनड़िया संभाल।
रंग भरी झोली
अबीर भरा थाल
देवर और भाभी में
हो रहा प्यार।
रंगों में सरावोर
दृश्य नहीं है झूठ
गोरी कैसे पहचानें
पति कौन से भूत।
खेल रहे सब होली
खा रहें पुआ-पुड़ी
बच्चे-जवान-बुढ़ी
सबकी एक ही धूरी।
चड्डी पहने गप्पू जी
भंग में मदहोश
कुत्ता मुता मुँह में
नहीं किये कोई शोर।

-प्रभात कुमार धवन, धर्मशाला घाट
शहीद भगतसिंह चौक, पटना साहिब, बिहार, भारत

साहित्य सृजन

सरलग लिखत रहिबो हम,
तब कलम मा धार आही।

तब कहूं बन पाबो हम सब,
कलम के बढ़िया सिपाही।।

लिखबो गीत कविता लेख,
कहानी छंद अउ अलंकार।

तब जाके बनबो समाज मा,
एक बड़का साहित्यकार।।

-राजकुमार निषाद 'राज', बिरोदा धमधा जिला-दुर्ग छत्तीसगढ़, 7898837338

कविता व गीत संग्रह

दोहे - नारी

नारी से ही मीत है, नारी से ही प्रीत।
नारी से ही गीत है, नारी से संगीत।।

नारी से ही शान है, नारी से ही मान।
नारी से संसार है, नारी रूप महान।।

समता तन में है भरी, ममता मन में खूब।
नारी दरिया दिल बड़ी, दुनिया जाए डूब।।

नारी सृजनहार है, नारी पालनहार।
नारी से संसार है, नारी सुख आगार।।

सोती सबके बाद में, उठे खूब प्रभात।
नारी कोल्हू बैल सी, लगी रहे दिन रात।।

ममता समता का रहे, देखो मन में भाव।
माँ का आँचल दे सदा, बड़ी अनूठी छाँव।।

नारी रूप अनेक है, सभी रूप है नेक।
माँ का रूप अनूप है, देख सके तो देख।।

नारी की महिमा बड़ी, परोपकारी शान।
नारी ही माँ सावित्री, बांटे सबको ज्ञान।।

नारी का 'माँ' रूप तो, अद्भुत रूप अनूप।
सब नारी की देन है, सुर नर मुनि सब भूप।।

-भूपसिंह भारती, बल्डोदिया भवन, आदर्श नगर नारनौल (हरियाणा), मो 9416237425

अन्तर्मन के पट खोल

हर जीवन में आशा भरती,
खिड़की लाती है प्यार का संदेश,
भीतर देखो झांक कर अपने थोड़ा,
क्यों भरा है इतना राग द्वेष ।

दुखों को तुम अपने अलविदा कह दो,
वर्तमान में खुशी का कराओ,अपने दिल में गृह प्रवेश,
खुबसूरत रंग भरी इस दुनिया में,
तुम क्यों बैठे हो निऊद्देश्य ।

अंतर्मन के जब पट खोलोगे तो,
पाओगे हरि दुर्लभ सुंदर दर्शन विशेष,
ज्ञान ज्योति सहसा प्रज्वलित होगी,
नहीं रहेगा कोई अपराध शेष ।

जो जैसा है उसको वैसा अपनाना सीख लो,
नहीं रखो मन में कोई अपेक्षाएं व लोभ निवेश,
अपने भीतर जगाओ दूरदर्शी क्षमता तुम,
साधो अपने जन्म लेने का उद्देश्य ।

करो मन के विचारों को स्वच्छंद,
न रहे कोई अवसाद अवशेष,
'आनंद' में रम कर तुम फैलाओ.
जग में खुशियों का परिवेश ।

- मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई, तमिलनाडु

अथाह दर्द का समंदर

जा रहा हूं देखने अथाह दर्द का समंदर,
इन्हीं आंखों के सामने होगा हर मंजर,
आशंका तनिक नहीं है कुछ खोना पड़ेगा,
पर वक़्त बताएगा कितना रोना पड़ेगा,
रखना होगा एक पांव में अपना शरीर,
समय ही होगा सैनिक राजा और वजीर,
बस जिंदा रहने के लिए खाना होगा,
हर आवाज पे इधर उधर जाना होगा,
हालात रखेगी हर पैमाने पर नजर,
जा रहा हूं देखने अथाह दर्द का समंदर,
कराह होगा, चीखें होंगी होगा दर्द से तड़पन,
मरीज होंगे कनीग होंगे तेज रहेगा धड़कन,
कोलाहल होगा बाहर शोर तो अंदर खामोशी,
अनभिज्ञ होंगे विज्ञ होंगे कहीं पर मदहोशी,
क्या हिन्दू क्या मुस्लिम क्या सिख और ईसाई,
तन की बनावट प्रकृति ने नहीं जुदा बनाई,
तड़प हर ओर होगी क्या गरीब क्या सिकंदर,
जा रहा हूं देखने अथाह दर्द का समंदर।

-राजेन्द्र लाहिरी पामगढ़ छग

क्या होने लगा है

बेईमानी की रफतार बड़ी है
जयचन्दों की भरमार बड़ी है
समझते हैं कुछ लोग आजकल
निवाले से मुँह की लार बड़ी है

विरुद्ध देश के बातें करते
सच देखने से हैं डरते
दुश्मन को हैं गले लगाते
अपनों से तकरार बड़ी है

देश अपना है लोग अपने है
उल्टे काम उल्टे सपने हैं
क्यूँ लगता है कुछ को एसा
देश से कोई सरकार बड़ी है

वोट की इस राजनीति में
वक्त की इस परिणति में
स्तर का कोई नाम नहीं है
गालियों की बौछार बड़ी है

संसद की गरिमा तार तार है
जीता न कोई सबकी हार है
सच में लोग बड़े दुखी हैं
राजनीति में खार बड़ी है

सपने खूब दिखाते सारे
लोगों को बहकाते सारे
कितना कहो यकीन करें हम
वादों की भरमार बड़ी है

गरीव बेचारा भौंचक्का है
वो तो सबका वोट पक्का है
लुट जाना नियति उसकी
अपनी तो चलती यार बड़ी है

कौन से वादे कैसे वादे
उनके ठगने के थे इरादे
कर्जे बर्जे क्या माफ करेंगे
भाषण झूठे पर धार बड़ी है

गाली गलौच का लगा है सीजन
रोटी का तुम करलो प्रोवीज़न
करना धर्ना राम भरोसे
नीयत भैया मक्कार बड़ी है

खूब बढ़ गये रिश्ते मेरे
भाई भतीजा चार चुफेरे
मूर्ख हमको खूब बनाते
जनता भी होशियार बड़ी है

-सुरेश भारद्वाज निराश, धर्मशाला हिप्र

तन्हा जीवन

तन्हा है मन तन्हा है जीवन
तन्हा है अपना घर द्वार
तन्हाई से लवरेज है यौवन
तन्हा है मेरा सुना संसार

आवाज देकर किसे मैं बुलाऊँ
कौन सुनेगा हमरी ये पुकार
हर जीवन है जग में बेगाना
झुठे वादे झूठा है सब प्यार

कितने यहाँ आये कितने भुलाये
हर मोड़ पे मिला मोहब्बत के यार
पैसे की चमक में बिकता है अब
इश्क का सजा है जग में बाजार

रात तन्हाई दिन में बजे शहनाई
तन्हा बना ये जीवन का सार
अपने पराये ओढ़ के सब साये
किस किसको सुनाऊँ मैं मनुहार

काश ! ये मोहब्बत जग ना आता
ना आता ये इश्क का ज्वार
प्यार मोहब्बत में पागल ना होता
सच्चा होता जीवन का तार

-उदय किशोर साह
मो0 पो0 जयपुर जिला बांका बिहार
9546115088

ढ़ांचा एक सा

आंकलन करते हो तुम मेरा.....
मेरे उठने-बैठने का तरीका देखते हो,
चलने-बोलने से मुझको तोलते हो।
भाव-भंगिमा से एक रहस्य उपजाते हो,
कल्पना से फिर बहुत खूब सजाते हो।
एक दायरा गोल बना लेते हो,
मुझे फिर उसमें बैठा लेते हो!
मेरी प्रतिभा को बिना जाने,
अपनी प्रतिमा में मुझे चुनवा देते हो!
पर इतने से भी संतुष्टि नहीं मिलती....
कैसे खाती हूँ कैसे सोती हूँ,
जानने को फिर आतुर हो जाते हो।
क्या पसंद है क्या नापसंद ?
खबर सबका रखना चाहते हो!
आखिर क्यूँ.....?
क्यूँ आंकलन करते हो तुम मेरा.....?

नारीश्वर हूँ मैं भी,
तराजू में फिर क्यूँ बैठाते हो?
अब अबला नहीं,
नित प्रतिदिन होती सबला हूँ,
तेरी सरस्वती, तेरे संग कमला हूँ।
संग-साथ जीवन व्यतीत करती अर्धांगिनी,
ममतामयी, प्रेममयी तेरी ही सरला हूँ,
फिर क्यूँ आंकलन करते हो.....?

हर कली नारी ही है,
ढांचा एक सा,
हृदय एक सा,
ममता एक सी,
जीवन भी एक सा।
एक सा भाव,
एक सा भान,
एक सा सौन्दर्य,
फिर बराबर,
क्यूँ ना दे पाते मान.....?
ठेस पहुंचाते हो आंकलन कर मेरा स्वाभिमान...।

-प्रतिभा पाण्डेय 'प्रति', चेन्नई

शोषित नारी/मां भारती

कल मिली मुझे अप्सरा,
चीथड़े पहने हुई,
अस्मिता सी लूटी हुई,
मुझको बेगानी नही,
जानी पहचानी लगी।
बदहवास सी दौड़ती,
ठोकरे थी खा रही,
रोको कोई उसको जरा,
वाहनों से टकरा रही।
फिर जैसे तैसे उसको हम,
नजदीक अपने ला सके,
ढांढस बंधा धीरज दिला,
कुछ नीर उसको पिला सके।
चेहरे पे उसके तेज था,
पर पीड़ा से लवरेज था,
आंखे थी डबडबाई हुई,
लगती थी जहां की सताई हुई।
जब हमने पूंछा नाम तो,
पहले तो कुछ बोली नहीं,
फिर देखा सबको घूर के,
आंखे अंगारों भरी जैसे वर्षो से सोई नहीं।
वो नारी हूं मैं जो नग्न करके थी दौड़ाई गई,
वो नारी हूं मैं जो कई टुकड़ों में थी पाई गई,
वो बच्ची हूं मैं जिसको रोंदकर मारा गया,
वो ब्रद्धा भी जिसकी आबरू को ,
सरेआम उतारा गया।
वो मां भी हूं ,जिसके बच्चे,
आपस में सारे बंट गए,
धर्म मजहब सियासत में
आधे आधे छंट गए।,
वो नव विवाहिता पत्नी भी हूं,
जिसका पति अभी अभी शहीद हुआ,
वो गरीब भी हूं जिसका जीना,
मंहगाई में शदीद हुआ।
हां मैं ही हूं मां भारती ....
दर्द में कराहती ,
कोई नही पास अकेली रह गई हूं,
असहनीय पीड़ा दलन की सह रही हूं।।

-पूनम सिंह भदौरिया, सौरभ विहार, दिल्ली भारत

अखबार

बंद पड़ी सोच को ,
जब हिलाना ही नहीं है।

खबर पढ़कर भी जब ,
आवाज़ उठाना ही नहीं है।

टुकड़ा यह कागज का रद्दी नहीं,
तो और क्या हैं।

कब तक ,खुद को
दूसरे की आग से बचाओ गें।

नफ़रतों की चपेट में,
तुम भी तो आओ गें ।

यह बोले गा.....!
वो बोलो गा.....?

गलत को गलत ,
कहने को भी इतना सोचेगा।

तू क्यों,नही बोलेगा।
अच्छे समाज को कौन बनायेंगा।

कलयुग है, भाई कलयुग है।
यह तो सब रोते है।
सतयुग कोई बाहर से नहीं आयेगा।

-प्रीति शर्मा 'असीम' हिमाचल प्रदेश

भौंरा

गुन गुन करता, भौंरा आया
फुल कलियों मे है मंडराया
मधु मकरंद होठो से लगाया
छुपके फूलों से नेह लगाया।
तितलियाँ-
रंग-बिरंगी तितलियाँ है आयी
फुल-कली के, मन को भायी
है कुछ शर्मिलि कुछ शरमाई
पर !मीठी सी अहसास जगाई।
बाग़-बगीचा-
बाग़-बगीचा भी है, मुस्काया
सौरभता कण-कण में छाया
आम्र तरुवर अब सज आया
ऋतू वसंत का संदेशा आया।
कोकिला-
बहने लगी है शीतल पुरवाई
सौरभता अपने साथ में लाई
कोकिला मीठी कुक है लगाई
जैसे अमराई मे गुंजी शहनाई।

-अशोक पटेल 'आशु', मेघा,धमतरी (छ ग) 9827874578

आ गया है मधुमास

सर सर सर हवा चल रही,
धूल.. छू रहे आकाश।
गंध समा गई पुरवाही में,
आ गया है मधुमास।

खेत खार हैं नीले-पीले,
खग-भृंग हैं छैल-छबीले।
जिधर भी देखो जड़-चेतन में,
छा गया हैं उल्लास।
आ गया है, मधुमास...

बौर से महक उठी अमराई,
हर पेड़ों ने नव रंगत है पाई।
लाल लाल फूलों से लदे हैं,
सेमल और पलाश।
आ गया है, मधुमास....

सर सरिता में नव तरंग हैं,
हर जलचर में नव उमंग हैं,
ढके हुए हैं ताल कमल से,
नाच रहे जलघास।
आ गया है, मधुमास...

लोग बना रक्खे हैं टोली,
चहक रहे,कर हंसी-ढिढोली।
चेहरे सब खिल रहे फूल से,
नहीं दिखता कोई उदास।
आ गया है, मधुमास...

-जीवन चन्द्राकर 'लाल', बोरसी 52,दुर्ग (छत्तीसगढ़)

विदेशी सैलानियों की सुरक्षा का सवाल?

प्रभुनाथ शुक्ल
(स्वतंत्र पत्रकार)
Utter Pradesh, Mob-892400544
e-mail- pnshukla6@gmail.com

भारत घूमने आए विदेशी सैलानियों की सुरक्षा का सवाल हमारे सामने यक्ष प्रश्न बनकर खड़ा है। विदेशी सैलानियों के साथ दुष्कर्म की घटनाएं जहाँ हमें कटघरे में खड़ा करती हैं वहीं दूसरी उनसे मारपीट, लूट और अधिक पैसे वसूलने की घटनाएं भी आम हैं।हमारे देश की संस्कृति अतिथि देव भवः की है। झारखंड के दुमका में एक स्पैनिश महिला के साथ कथित तौर पर गैंगरेप की घटना हमारे लिए चिंता का विषय है। भारत हमेशा से विदेशी सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। यहां की प्राकृतिक बनावट और धार्मिक विविधता लोगों को यहां खींच लाती है। प्राकृतिक वातावरण विदेशी सैलानियों की पहली पसंद हैं। विदेशी पर्यटकों को भौगोलिक एवं प्राकृतिक बनावट के साथ विविधता में एकता की संस्कृति अपनी तरफ आकर्षित करती है।

दुमका में हुई सामूहिक दुष्कर्म की घटना कोई पहली वारदात नहीं है। भारत में अक्सर विदेशी पर्यटक इस तरह की घटना का शिकार होते हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से भारत का पर्यटन देश की संवृद्धि में अच्छी खासी भूमिका निभाता है। लेकिन इस तरह की घटनाएं जहां हमारे देश की छवि को नुकसान पहुंचती है वहीं विदेशी पर्यटक यहां आने से डरते और घबराते हैं। हजारों की तादाद में विदेशी सैलानी एक बार भारत आए तो भारत के ही होकर रह गए। लेकिन विदेशी सैलानियों के साथ इस तरह की घटनाएं मारपीट, ठगबाजी हमारी छवि को प्रभावित करती हैं। इसके अलावा हमारे पर्यटन व्यवस्था पर भी सवाल उठाती है। दुमका में हुई सामूहिक दुष्कर्म की घटना हमारी संस्कृति और संस्कार के खिलाफ है। इस घटना में शामिल दोषियों को सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए। केंद्र सरकार को राज्य सरकार से मिलकर आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

पर्यटन मंत्रालय को इस संबंध में विशेष कदम उठाने चाहिए जिससे ऐसी घटनाओं को रोका जा सके। ऐसी घटनाओं की फेहरिस्त बहुत लंबी है। बार-बार ऐसी घटनाएं होने के बाद भी हम आवश्यक कदम नहीं उठा पाते हैं। विदेशी पर्यटकों के लिए खास सुरक्षा के इंतजाम होने चाहिए। भारत आने वाले पर्यटकों के लिए जो सरकारी स्तर पर विशेष गाइड की व्यवस्था होनी चाहिए। यह सरकारी एजेंसी के माध्यम से होनी चाहिए। भारत आने वाले ऐसे पर्यटक कहाँ ठहर रहे हैं। कहां जा रहे हैं। उनके लिए कहां रुकना अच्छा रहेगा। सरकार की तरफ से उन्हें सारी सुविधा और सूचना उपलब्ध होनी चाहिए। सिविल पुलिस के बजाय इसके लिए अलग से विशेष पर्यटन पुलिस होनी चाहिए। पर्यटन पुलिस की विशेष जिम्मेदारी विदेशी सैलानियों की सुरक्षा के संदर्भ में होनी चाहिए। विदेशी पर्यटकों की सुरक्षा के लिहाज से सरकार को इस तरह की व्यवस्था के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। विदेशी पर्यटकों के साथ आमतौर पर भाषा की भी समस्या होती है ऐसे में उसके समाधान के लिए भी आवश्यक कदम उठाने चाहिए। दुमका में हुई घटना में भी पुलिस और पीड़ितों के बीच भाषा की समस्या देखने को मिली है।

भारत आने वाली विदेशी पर्यटकों के लिए केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय की तरफ से स्पष्ट गाइडलाइन भी होनी चाहिए। पर्यटकों को यह निर्देश होना चाहिए की आप जहां जा रहे हैं वहां की भौगोलिक स्थिति क्या है। अगर आप पहाड़ी या आदिवासी इलाके में घूमने जा रहे हैं तो वहां क्या समस्या हो सकती है। पहाड़ और दूसरी जगह पर जा रहे हैं तो क्या -क्या सावधानी बरतनी चाहिए। स्थानीय लोगों के बारे में भी जानकारी देना आवश्यक है। उनकी सुरक्षा को लेकर जहाँ खतरा हो सकता है इस सम्बन्ध में उन्हें आगाह करने की भी आवश्यकता है।

विदेशी दूतावास को भी भारतीय दूतावास से संपर्क में रहना चाहिए। उनकी सुरक्षा और सुविधाओं का ख्याल रखना हमारा दायित्व है। इस तरह की घटनाएं विदेशी पर्यटकों में असुरक्षा का जहाँ माहौल पैदा करती हैं वहीं हमारी सुरक्षा व्यवस्था पर भी सवाल उठाती हैं। विदेशी पर्यटकों की सुरक्षा या अन्य मामलों में सीधे केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय का हस्तक्षेप होना चाहिए। पर्यटन अब ग्लोबल शौक बन चुका है। पर्यटन से दुनिया भर के देशों को एक अच्छी खासी आए हो रही है। कोविड में जहां पर्यटन व्यवस्था पर प्रभाव पड़ा था वहीं अब पर्यटन उद्योग तेजी से आर्थिक समृद्ध की ओर बढ़ र रहा है। भारत वैश्विक पर्यटन केंद्र के रूप में उभर रहा है। भारत की जीडीपी में पर्यटन उद्योग अच्छी खासी भूमिका निभा रहा है।

भारत में विदेशी सैलानियों की संख्या दिनों-दिन बढ़ रही है। लेकिन दुमका जैसी घटनाएं पर्यटन उद्योग को कहीं न कहीं से प्रभावित करती है। दुमका की घटना को लेकर सियासी तीर भी चलने लगे हैं लेकिन यह राजनीतिक मुद्दा नहीं है इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। क्योंकि यह मामला विदेशी सैलानियों की सुरक्षा के साथ देश की अस्मिता से भी जुड़ा है। यह केंद्र और राज्य सरकार की दोनों नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि देश में आने वाली विदेशी पर्यटकों की सुरक्षा को गंभीरता से लिया जाए। विदेशी पर्यटक सड़क के किनारे टेंट लगाकर रहे हैं या समुद्र के किनारे, होटल में रहे या पहाड़ों पर उनकी सुरक्षा में किसी प्रकार की चूक नहीं होनी चाहिए। दुमका में स्पेनिश जोड़े सड़क के किनारे टेंट लगाकर रुके थे जहां स्थानीय लोगों ने वहां पहुंचकर उनके साथ कथित तौर पर गैंग रेप की घटना को अंजाम दिया और सामान भी लुटे।

भारत पर्यटन हब के रूप में उभर रहा है। अयोध्या में राम मंदिर निर्माण और काशी में बाबा काशी विश्वनाथ कारिडोर के निर्माण के बाद दर्शन के लिए विदेशी सैलानियों की संख्या बढ़ेगी। लॉकडाउन के बाद देश में तकरीबन हर साल एक करोड़ से अधिक विदेशी सैलानी भारत भ्रमण पर पहुंच रहे हैं। सबसे अधिक मार्च और अप्रैल में विदेशी सैलानियों का आगमन होता है। क्योंकि पर्यटन के लिए यह मौसम अनुकूल होता है जो पर्यटकों को काफी प्रभावित करता है। भारत में साल 2019 में एक करोड़ 8 लाख विदेशी पर्यटक घूमने आए। जिससे विदेशी पर्यटकों से सरकार को 2.10 लाख करोड़ की आय हुई। 2018 में 1.94 जबकी 2018 1.77 वहीं 1016 में 1.54 और 2016 में 1.35 लाख करोड़ की आय हुई। 2018 में 1.5, 2017 में 100 जबकी 2016 में 88.04 एवं 2015 में 80.27 लाख विदेशी सैलानी भारत घूमने आए। इस हालत में विदेशी सैलानियों की सुरक्षा सबसे अहम हो जाती है। ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए केंद्र और राज्य सरकार को मिलकर कठोर से कम कठोर कदम उठाने चाहिए जिससे दुमका जैसी घटनाओं पर विराम लग पाए और भारत में विदेशी पर्यटन को बढ़ावा मिल पाए।

कहानी था कौन

आज शर्वरी की तेरहवीं थी ।सारा घर मेहमानों से भरा था ।

आपसी बातचीत की आवजों से गूँज रहा था, अगर चुप थे तो केवल शर्वरी की माँ के होंठ जो चिपके हुए से प्रतीत हो रहे थे ।ना उनमें आवाज थी,ना ही वो खुल रहे थे ।बस आँखे थी,जिनके आँसू सूख चुके थे और साथ में दो व चार वर्ष के दोहिते थे जो कुछ समझ नही रहे थे लेकिन नानी की कोख में दुबके पड़े थे। शर्वरी की मौत का कारण सब बीमारी समझ रहे थे लेकिन वास्तविकता में उसको मारा गया था और इसका अहसास उसके पति आशीष को भी था कि अगर उसकी पुकार सुन ली होती तो आज उसकी दुनिया नही उजड़ती। घर में एक और शख्स सा था जो अब पछता रहा था लेकिन उसके लिए नही जो दुनियाँ छोड़ चुकी है बल्कि उसके लिए जो उसका बेटा था,अब बेटे और दो बच्चों का भार उसके ऊपर आ गया था।शर्वरी की सास ने भी नही सोचा था कि इस बार वापस नही आएगी। 6 वर्ष के वैवाहिक जीवन में दो बच्चों और चार अबॉर्शन जय चुकी शर्वरी इतनी कमजोर हो गई थी कि अब वह और ऑपरेशन या ऑपरेशन नहीं झेल सकती थी और डॉक्टर ने भी इसकी खासियत दी थी कि आपके इस तरीके की स्थिति इसके लिए घातक सिद्ध हो सकते हैं और अब इससे निपटने के उपाय सोच जा रहे थे दोनों ने तय कर लिया था की फैमिली प्लानिंग का जिम्माआशीष का होगा लेकिन दोनों को यह पता था कि अगर आशीष मां को यह सब देगा तो वो अपने बेटे को ये सब नही करने देगी ।सो उन्हें बिना बताये काम को अंजाम देने की सोचा लेकिन आशीष के मन में कुछ और ही चल रहा था और वो अपनी माँ को सब बता देता है और वो उसे ये सब करने के लिए साफ मना कर देती है। बेटा ऑपरेशन से बचा रहे इसके लिए बहु को समझा कर वो कुछ ताने उलाहने देकर वो उसे शब्दों से प्रताड़ित कर ,ओपरेशन के लिए तैयार कर देती है। शारीरिक व मानसिक तनाव झेल रही शर्वरी ओ टी में जाती तो जीवित है मगर वही पर सारी अभिलाषाएं छोड़ आकाश के पार अनंत सैर पर निकल जाती है। आज उसी की तेरहवीं है ।जिसमें माँ दुखी है और पति व सास पछता रहे है और दो मासूम बच्चे वो तो कुछ समझ ही नही रहे है कि माँ का आँचल हमेशा के लिए उनके सर से हट चुका है ।उन मासूमों को माँ के आँचल से दूर करने वाला था कौन ....ज?

-गरिमा राकेश 'गर्विता', कोटा,राजस्थान

मतदान है जरूरी, टिकाऊ सरकार है बनानी

-ओम प्रकाश उनियाल

निर्वाचन आयोग द्वारा लोकसभा चुनावों की तारीख घोषित होने से पहले ही राजनैतिक दलों के बीच सुगबुगाहट शुरु हो जाती है। गली-मौहल्लों में अपने आप को नेता बताने वाले छुट्टभइए, बड़े दल-बदलु व अवसरवादी नेता सक्रिय हो जाते हैं। राजनैतिक दल एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोपों की झड़ी लगाकर सीमाएं लांघने लगते हैं। लोकसभा चुनाव 2024 में होने हैं। सत्तापक्ष दुबारा सत्ता में आने की ताल ठोक रहा है। दमदार मुद्दे सत्ता पक्ष के पास भी नहीं हैं मगर सत्ता पक्ष के कुशल रणनीतिकार जनता के मन पर छाप छोड़ने के लिए विभिन्न प्रचार माध्यमों का सहारा लेने लगे हैं। सोशल मीडिया के हर प्लेटफॉरम पर जमकर विपक्ष को कोसा जा रहा है। साथ ही साथ लोकलुभावन योजनाओं का पिटारा खुलता ही जा रहा है। स्वाभाविक है अधिकतर नागरिक भी अपना रुख उधर ही करेंगे जिधर उन्हें अपना हित नजर आएगा। बात विपक्षी दलों की करें तो उनकी हालत खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे वाली बनी हुयी है। फिर भी देश की सत्ता संभालने का सपना सभी अपने-अपने नजरिए से देखने लगे हैं। विपक्षियों ने भाजपा को पटखनी देने के लिए गठबंधन भी किया हुआ है। जो कि खुद ही गांठों में बंधता नजर आ रहा है। सब कुछ निर्भर करता है मतदाताओं पर। मतदाता का कोई भरोसा नहीं होता कब पलटी मार जाए। कब किसकी उम्मीदों पर पानी फेर दें।'' पांच साल में एक बार, अवसर नहीं मिलेगा बार-बार।'' मतदाता यह फॉर्मूला लेकर चलें। अपने मत का प्रयोग जरूर करें। मतदान है जरूरी, टिकाऊ सरकार है बनानी।

सुप्रीम फैसलों ने बढ़ाया देश का मान

-रमेश सर्राफ धमोरा
झुंझुनू (राजस्थान)
मो. 9414255034
rameshdhamora@gmail.com

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में कई ऐसे फैसले दिए हैं जिससे देश का मान तो बढ़ा ही है। उसके साथ ही वो फैसले न्यायपालिका के क्षेत्र में भी मील के पत्थर साबित होंगे। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसलों से जहां हर देशवासी को गौरवान्वित किया हैं। वहीं देशवासियों का न्यायपालिका के प्रति विश्वास को भी सुदृढ़ किया है। सुप्रीम कोर्ट के इन फैसलों की पूरे देश में सराहना हो रही है। देश के आम आदमी को भी सुप्रीम कोर्ट के फैसले से यह महसूस होने लगा कि हमारे देश में न्याय कभी कमजोर नहीं हो सकता है। हालांकि पिछले कई वर्षों से देश में न्यायपालिका को कमजोर करने के आरोप लग रहे थे। जिनको सुप्रीम कोर्ट के फैसलों ने झूठला दिया है। सोमवार को वोट के बदले नोट के मामले पर सुप्रीम कोर्ट ने बड़ा फैसला सुनाया है। अब रिश्वत लेकर सदन में वोट दिया या सवाल पूछा तो सांसदों या विधायकों को विशेषाधिकार के तहत मुकदमे से छूट नहीं मिलेगी। सुप्रीम कोर्ट की 7 जजों की संवैधानिक पीठ ने सोमवार को अपना 25 साल पुराना फैसला पलट दिया। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस एएस बोपन्ना, एमएम सुंदरेश, पीएस नरसिम्हा, जेबी पारदीवाला, संजय कुमार और मनोज मिश्रा की संवैधानिक पीठ ने कहा कि हम 1998 में दिए गए जस्टिस पीवी नरसिम्हा के उस फैसले से सहमत नहीं हैं। जिसमें सांसदों और विधायकों को सदन में भाषण देने या वोट के लिए रिश्वत लेने पर मुकदमे से छूट दी गई थी। 1998 में 5 जजों की संवैधानिक पीठ ने 3-2 के बहुमत से तय किया था कि ऐसे मामलों में जनप्रतिनिधियों पर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता। कोर्ट ने अपने फैसले में कहा है कि अगर कोई घूस लेता है तो केस बन जाता है। यह मायने नहीं रखता है कि उसने बाद में वोट दिया या फिर स्पीच दी। आरोप तभी बन जाता है जिस वक्त कोई सांसद घूस स्वीकार करता है। संविधान के आर्टिकल 105 और 194 सदन के अंदर बहस और विचार-विमर्श का माहौल बनाए रखने के लिए हैं। दोनों अनुच्छेद का मकसद तब बेमानी हो जाता है। जब कोई सदस्य घूस लेकर सदन में वोट देने या खास तरीके से बोलने के लिए प्रेरित होता है। आर्टिकल 105 या 194 के तहत रिश्वतखोरी को छूट हासिल नहीं है। रिश्वत लेने वाला आपराधिक काम में शामिल होता है। ऐसा करना सदन में वोट देने या भाषण देने के लिए जरूरत की श्रेणी में नहीं आता है। सांसदों का भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी को नष्ट कर देती है। हमारा मानना है कि संसदीय विशेषाधिकारों के तहत रिश्वतखोरी को संरक्षण हासिल नहीं है। यह मुद्दा दोबारा तब उठा जब झामुमो विधायक सीता सोरेन ने अपने खिलाफ जारी आपराधिक कार्रवाई को रद्द करने की याचिक दाखिल की। उन पर आरोप था कि उन्होंने 2012 के झारखंड के राज्यसभा चुनाव में एक खास प्रत्याशी को वोट देने के लिए रिश्वत ली थी। सीता सोरेन ने अपने बचाव में तर्क दिया था कि उन्हें सदन में कुछ भी कहने या वोट देने के लिए संविधान के अनुच्छेद 194 (2) के तहत छूट हासिल है। इसी तरह कुछ दिनों पहले सुप्रीम कोर्ट ने एक बड़ा फैसला देते हुए राजनीतिक दलों के लिए चंदा जुटाने की पुरानी इलेक्टोरल बांड स्कीम को अवैध करार देते हुए इसके जरिए चंदा लेने पर तत्काल रोक लगा दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि इलेक्टोरल बांड की गोपनीयता बनाए रखना असंवैधानिक है। यह स्कीम सूचना के अधिकार का उल्लंघन करती है। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ के नेतृत्व में गठित पांच जजों की बेंच ने सर्वसम्मति से फैसला सुनाया था। अपने फैसले में चीफ जस्टिस ने कहा है कि पॉलीटिकल प्रोसेस में राजनीतिक दल अहम यूनिट होते हैं। पॉलिटिकल फंडिंग की जानकारी वह प्रक्रिया है जिससे मतदाता को वोट डालने के लिए सही चॉइस मिलती है। वोटर्स को चुनावी फंडिंग के बारे में जानने का अधिकार है। जिससे मतदान के लिए सही चयन होता है। याचिकाकर्ताओं ने इस योजना को लागू करने के लिए फाइनेंस एक्ट 2017 और फाइनेंस एक्ट 2016 में किए गए कई संशोधन को गलत बताया था। याचिकाकर्ताओं का दावा है कि कि इससे राजनीतिक दलों को बिना जांच और टैक्स भरे फंडिंग मिल रही है। तत्कालीन वित्त मंत्री अरुण जेटली ने 2017 के बजट में चुनावी इलेक्टोरल बांड स्कीम को पेश किया था। जिसे 2 जनवरी 2018 को केंद्र सरकार ने नोटिफाई किया था। दिसंबर 2019 में याचिकाकर्ताओं ने इस योजना पर रोक लगाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में एक आवेदन दिया था। इसमें मीडिया रिपोर्ट्स के हवाले से बताया गया था कि किस तरह चुनावी बांड योजना पर चुनाव आयोग, रिजर्व बैंक की चिताओं को केंद्र सरकार ने दरकिनार कर दिया था। चुनाव आयोग का मानना था कि चंदा देने वालों के नाम गुमनाम रखने से पता लगाना संभव नहीं होगा कि राजनीतिक दल ने धारा 29 (बी) का उल्लंघन कर चंदा लिया है या नहीं। विदेशी चंदा लेने वाला कानून भी बेकार हो जाएगा। भारतीय रिजर्व बैंक का मानना था कि इलेक्टोरल बांड मनी लॉन्ड्रिंग को बढ़ावा देगा। इसके जरिए ब्लैक मनी को व्हाइट करना संभव होगा। चुनाव आयोग व रिजर्व बैंक की आपत्ति के बाद सुप्रीम कोर्ट का फैसला अपने आप में ऐतिहासिक माना जा सकता है। कुछ दिनो पूर्व चंडीगढ़ मेयर चुनाव मामले में सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली बेंच ने बड़ा फैसला करते हुए आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार कुलदीप कुमार को मेयर घोषित कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि पीठासीन अधिकारी अनिल मसीह की तरफ से घोषित बीजेपी कैंडिडेट मनोज कुमार सोनकर को मेयर के तौर पर विजेता घोषित करने का फैसला अवैध है और उसे खारिज किया जाता है। शीर्ष अदालत ने कहा कि पूरे चुनावी प्रक्रिया को खारिज करने से लोकतांत्रिक सिद्धांत के लिए विनाशकारी होगा क्योंकि यह सब पीठासीन अधिकारी के मिसकंडक्ट के कारण हुआ है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि पीठासीन अधिकारी मसीह ने जानबूझकर आठ बैलेट पेपर को विकृत किया है। इसलिये उनके खिलाफ मुकदमा चलाए जाने के लिए नोटिस जारी किया है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में अनुच्छेद 142 के तहत विशेषाधिकार का इस्तेमाल करते हुए आदेश पारित करते हुए कहा था कि पूर्ण न्याय के लिए हम निर्देश जारी कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस और चीफ जस्टिस ने बैलेट पेपर और वीडियो का अवलोकन किया और खुद ही परीक्षण किया और पाया है कि वह विकृत नहीं है। शीर्ष अदालत ने कहा कि जो रिजल्ट शीट है उसमें 12 वोट याचिकाकर्ता कुलदीप को मिले हैं। जबकि 16 वोट बीजेपी कैंडिडेट मनोज सोनकर को मिले थे और 8 बैलेट पेपर को पीठासीन अधिकारी ने अमान्य करार दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने इन आठ बैलेट को मान्य करार दिया और कहा कि इनमें वोट कुलदीप कुमार के पक्ष में पड़े थे। शीर्ष अदालत ने कहा कि इस तरह से कुलदीप कुमार को कुल 20 वोट मिले हैं और उन्हें मेयर पद पर विजेता घोषित किया जाता है। भारत में इस तरह के फैसलों से लोकतांत्रिक प्रक्रिया मजबूत होगी। वहीं गलत कार्य करने वालों के मन में भी भय व्याप्त होगा। उन्हे लगेगा कि उनके गलत कार्यो पर कभी भी कार्यवाही की जाकर उन्हे कटघरे में खड़ा किया जा सकता हैं। इसलिये गलत काम करने वाला सौ बार अच्छे बुरे की सोच कर ही अपना कदम उठायेगा।

ट्रैवल

मंदिरों की नगरी मंडी

–दिनेश सिंह

मंडी, हिमाचल प्रदेश का एक प्रसिद्ध शहर है। इसका नाम मण्डव ऋषि के नाम पर हुआ है। कहा जाता है कि एक समय था जब मंडी व्यापारिक दृष्टि से काफ़ी महत्वपूर्ण थी। यह व्यास नदी के किनारे बसी हुई है। मंडी में कई रमणीय स्थल हैं।

हिमाचल का सांस्कृतिक और धार्मिक मिश्रण यहां के देवी देवताओं में भी है जो सजधज कर पालकियों में पुजारियों के कंधों पर सवार होकर मण्डी में मनाए जाने वाले ऐतिहासिक मेले में आज भी आकर एक अद्भुत रोमांचकारी देव समागम का दृश्य पेश करते हैं।

मंडी अपने धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व के लिए देशभर में प्रसिद्ध है। प्राचीन समय से यह रास्ता मारकंड और लद्दाख से मैदानों की ओर जाता था जो आज भी वैसा ही है।

राजा बानसेन के वंशज अजबर सेन ने 1527 ईसवी में मंडी नगर की नींव रखी थी।

मंडी को अक्सर 'वाराणसी ऑफ हिल्स' या 'छोटी काशी' या 'हिमाचल की काशी' के रूप में जाना जाता है। मंडी में करीब 81 शिव मंदिर हैं जिनमें भूतनाथ, त्रिलोकीनाथ, अर्द्धनारीश्वर और एक दशा रुद्र महादेव का अपना ऐतिहासिक महत्व है।

शिवरात्रि मेले में देश विदेश के सांस्कृतिक दलों के अतिरिक्त प्रदेश के लोक नर्तक दलों और लोकप्रिय गायकों और हास्य कवियों को बुलाया जाता है। महाशिवरात्रि मेले के पहले दिन मंडी की पुरानी रियासत के राजा के महल से भव्य जलूस निकाला जाता है जिसमें देवताओं के अलावा नगर और ग्रामीण जनता के सहित गणमान्य व्यक्ति भी सामूहिक रूप से भाग लेते हैं।

1648 में बानसेन के वंशज राजा सूरजसेन ने औलाद न होने के कारण घोषणा की थी कि उसकी मृत्यु के बाद मंडी रियासत की मूर्ति के रूप में राजा माधव असली शासक होगा। इसीलिए आज भी इस शिवरात्रि में शिव के साथ साथ उसकी पूजा भी लोकप्रिय है।

यह मेला 300-400 साल पहले राजा अजबेर सेन ने पुरानी मण्डी में शुरू किया था। लोगों का कहना है कि अजबेर सेन को कई दिनों तक सपनों में एक कामधेनू गऊ दिखाई देती रही जो वर्तमान मण्डी में स्थापित भूतनाथ मंदिर के पास शिवलिंग की पूजा करती थी। राजा ने उस स्थान को देखने का निश्चय किया और वहां शिवपिंडी के दर्शन होने पर उसने अपनी राजधानी भी पुरानी मंडी से वर्तमान मंडी में स्थानान्तरित कर दी थी।

महाशिवरात्रि पर्व को पूरे हिमाचल में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह पर्व प्रदेशवासियों के सामुदायिक जीवन का अभिन्न अंग है। महासू और मंडी में शिवरात्रि अत्यधिक लोकप्रिय है और पूरे सप्ताह पारंपरिक ढंग से मनाई जाती है। सप्ताह भर शिवरात्रि के दौरान सभी परिवारों में फलाहार बांटने का रिवाज है।

महासू में शिवरात्रि के दिन महिलाएं पकवान बनाने में व्यस्त रहती है। पुरुष इस दिन चौक पर शिव पार्वती की मूर्तियां बनाते हैं और गाते बजाते हुए रात भर शिव पूजा करते हैं।

त्रिलोकनाथ शिव मंदिर

नागरी शैली में बने इस मंदिर की छत टाइलनुमा है। यहां से आसपास के सुंदर नजारे देखे जा सकते हैं। मंदिर से नदी और आसपास के क्षेत्रों का खूबसूरत नजारा देखा जा सकता है। यहां भगवान शिव को तीनों लोकों के भगवान के रूप में चित्रित किया गया है। मंदिर में स्थित भगवान शिव की मूर्ति पंचानन है जो उनके पांच रूपों को दिखाती है।

भूतनाथ मंदिर

मंडी के बीचों बीच स्थित इस मंदिर का निर्माण 1527 में किया गया था। यह मंदिर उतना ही पुराना है जितना यह शहर। मंदिर में स्थापित नंदी की प्रतिमा बुर्ज की ओर देखती प्रतीत होती हे। मार्च में मनाए जाने वाली शिवरात्रि उत्सव का केंद्र भूतनाथ मंदिर होता है।

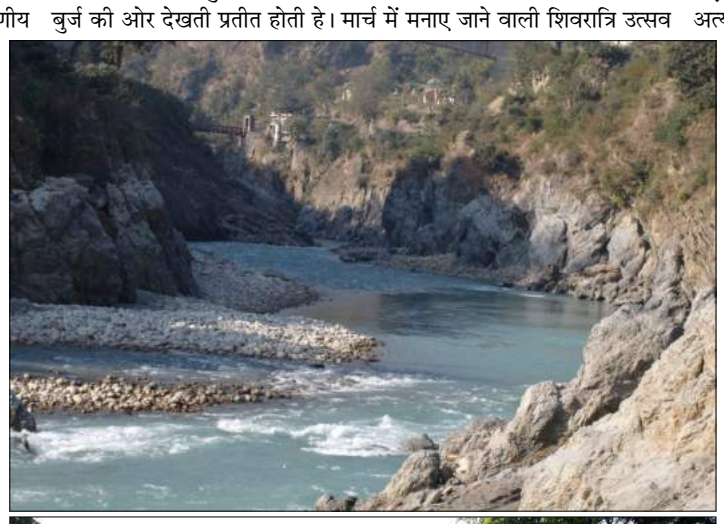

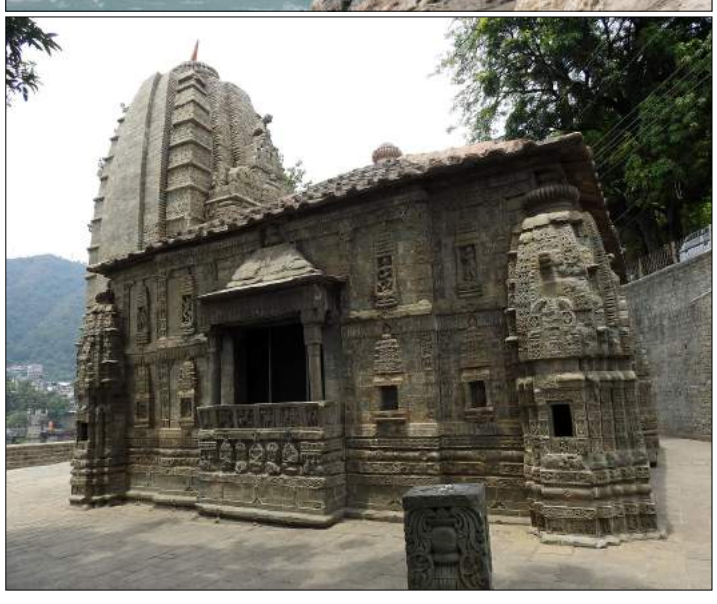

श्यामाकाली मंदिर

टारना पहाड़ी पर स्थित इस मंदिर को टारना देवी मंदिर भी कहा जाता है। राजा श्याम सेन ने 1658 ईस्वी में इस मंदिर का निर्माण कराया था। अपने वारिस के पैदा होने की खुशी में देवी को धन्यवाद देने के लिए उन्होंने यह मंदिर बनवाया। भगवान शिव की पत्नी सती को समर्पित इस मंदिर का पौराणिक महत्व है।

सुंदरनगर

मंडी से 26 किलोमीटर दूर सुंदरनगर भी अपने मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। खूबसूरत हरीभरी घाटियों के इस क्षेत्र में ऊंचें ऊंचें पेड़ों की छाया में चलना बहुत की सुखद अनुभव होता है। पहाड़ी के ऊपर सुकदेव वाटिका और महामाया का मंदिर है जहां हर साल हजारों भक्त दर्शनों के लिए आते हैं। एशिया का सबसे बड़ा हाइड्रो इलैक्ट्रिक प्रोजेक्ट सुंदरनगर का ही हिस्सा है। साथ ही यहाँ एक अत्यन्त मनोहर झील भी है। यहां रात का दृश्य बहुत ही सुन्दर होता है। शीतला माता और कुमारी माता का मन्दिर भी दर्शनीय है। यहां का स्नातकोत्तर संस्कृत महाविद्यालय में संस्कृत पढ़ने की उत्तम व्यवस्था है।

जंजैहली

मंडी से जंजैहली 82 किलोमीटर है। यह एक बहुत ही रमणीय स्थल है। मंडी से आप जंजैहली तक वाया चैलचौक-थुनाग से पहुँच सकते हैं यहां के ऊँचे ऊँचे पहाड़ और बर्फ से ढके पहाड़ मन मोह लेंगे।

अर्द्धनारीश्वर मंदिर

सातवीं शताब्दी में बना यह मंदिर स्थापत्य कला का बेजोड नमूना है। यहां भगवान शिव की सुंदर प्रतिमा स्थापित है। प्रतिमा आधे पुरूष और आधी महिला के रूप में है, जो दर्शाती है कि नारी और पुरूष दोनों का अस्तित्व एक दूसरे पर निर्भर है।

तत्ता पानी

तत्ता पानी का मतलब गर्म पानी होता है। चारों ओर पहाड़ों से घिरा तत्ता पानी, सतलुज नदी के दायें तट की खूबसूरत घाटी पर स्थित है। प्राकृतिक सल्फर युक्त इसका पानी बहुत शुद्ध और अलौकिक शक्तियों से युक्त माना जाता है। कहा जाता है कि इसके पानी से बहुत-से राजाओं के शरीर के रोग ठीक हो गए थे। सतलुज नदी के जल में उतार-चढ़ाव के साथ इसके जल में उतार-चढ़ाव आता रहता है।

बरोट

बरोट एक शानदार पिकनिक स्थल के रूप में लोकप्रिय है। मंडी से 65 किलोमीटर दूर मंडी पठानकोट हाइवे पर यह स्थित है। यहां का रोपवे और फिशिंग की सुविधाएं पर्यटकों को काफी आकर्षिक करती हैं।

शिकारी देवी मंदिर

समुद्र तल से 3332 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह मंदिर मानवीय शोर-शराबे से एकदम मुक्त है। सूर्योदय और सूर्यास्त के मनमोहक नजारे यहां से बहुत सुंदर दिखाई देते हैं। चैल चौक, जंजैहली, करसोग और गोहर से होते हुए यहां पहुंचा जा सकता है।

कमरुनाग

कमरुनाग मंडी जिले में सबसे ज्यादा पूजनीय देवता हैं। इन्हें वर्षा का देवता भी कहा जाता है। ऊँची पहाड़ियों में चारों और से देवदारों से घिरे इस देवता के मन्दिर में प्रत्येक वर्ष जून जुलाई में मेले का आयोजन होता है। हजारों लोग पैदल यात्रा करके यहां पहुंचते हैं। यहां तक श्रद्धालु वाया चैलचौक, रोहांडा, करसोग से होकर आ सकते हैं। शांत वादियों में स्थित इस स्थल की अपनी ही एक पहचान है।

पराशर झील

पराशर झील मंडी से करीब 40 किलोमीटर दूर उत्तर में स्थित है। पैगोड़ा शैली में बना संत पराशर को समर्पित तीन मंजिला मंदिर इसकी लोकप्रियता का मुख्य कारण है।

हिमाचल प्रदेश का भुंतर हवाई अड्डा मंडी से करीब 63 किलोमीटर की दूरी पर है। सबसे नजदीक रेलवे स्टेशन कीरतपुर में है जो मंडी से करीब 125 किमी की दूरी पर है।

***बी-2/20, फार्मा अपार्टमेंटस, आई पी एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली, 9868541320**

'आया राम गया राम' ने लंबे समय से भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित किया है

दल-बदल विरोधी कानून सरकार स्थिरता में कारगर होने की बजाय खरीद फरोख्त का तरीका है। ''दल-बदल क़ानून के दायरे से बचने के लिए विधायक या सांसद इस्तीफा दे रहे हैं. लेकिन ऐसा प्रावधान किया जाना चाहिए कि जिस पीरियड के लिए वो चुने गए थे, अगर उससे पहले उन्होंने स्वेच्छा से त्यागपत्र दिया, तो उन्हें उस वक्त तक चुनाव नहीं लड़ने दिया जाएगा. ''देशव्यापी कोई बहुत बड़ी वजह हो, आदर्शों की बात है या कोई बहुत उसूलों की बात है. तब तो ठीक है, लेकिन बिना वजह त्याग पत्र देने के बाद अगला चुनाव आप फिर से लड़ रहे हैं. तो ये तकनीकी तौर पर तो सही है. लेकिन व्यावहारिक तौर पर ये सारे लोग कानून में बारूदी सुरंग लगा रहे हैं. किसी भी कानून को तोड़ने वाले उसका तरीका निकाल लेते हैं, यहां जो तोड़ निकाला गया है, उसे रिसॉर्ट संस्कृति का नाम दिया जा रहा है।'' -डॉ. सत्यवान सौरभ

डॉ. सत्यवान सौरभ
रिसर्च स्कॉलर इन पोलिटिकल साइंस, दिल्ली यूनिवर्सिटी
कवि,स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार
(मो.) 9466526148
kavitaniketan333@gmail.com

दल बदल 'आया राम गया राम' अभिव्यक्ति के साथ शुरू हुआ, जिसने हरियाणा के विधायक गया लाल द्वारा एक ही दिन में तीन बार पार्टियां बदलने के बाद भारतीय राजनीति में लोकप्रियता हासिल की। यह 1967 में हुआ था। संसद ने इस मामले का उपयोग भारतीय संविधान में 10वीं अनुसूची को जोड़ने को उचित ठहराने के लिए किया। यह कानून सदन के किसी अन्य सदस्य की याचिका के जवाब में विधायिका के पीठासीन अधिकारी द्वारा सांसदों को दलबदल के लिए अयोग्य घोषित करने की प्रक्रिया स्थापित करता है। कानून के अनुसार, यदि कोई राजनेता स्वेच्छा से अपनी पार्टी छोड़ देता है या हाउस ऑफ कॉमन्स में वोट पर पार्टी नेतृत्व के निर्देशों की अवज्ञा करता है, तो वह दलबदल करता है। धारणा यह है कि विधायक इस व्यवहार से पार्टी व्हिप का उल्लंघन कर रहे हैं।

दल-बदल विरोधी विधेयक का उद्देश्य विधायकों को पाला बदलने से रोककर सरकार को स्थिर रखना है। दल -बदल विरोधी कानून ने भारत में बहस और चर्चा के बजाय पार्टियों और संख्या के आधार पर लोकतंत्र लागू किया।

इस तरह से यह असहमति और दलबदल के बीच कोई अंतर नहीं करता है, जिससे किसी भी पैमाने पर संसदीय बहस कमजोर हो जाती है। दूसरी ओर, यह कानून राजनेताओं को उनके राजनीतिक दलों से अनिश्चित काल के लिए बाध्य नहीं करता है। विभिन्न परिस्थितियों में विधायक अयोग्य ठहराए जाने के डर के बिना दल बदल सकते हैं। यह कानून किसी पार्टी को किसी अन्य पार्टी के साथ विलय की अनुमति देता है यदि उसके दो-तिहाई सदस्य इसे स्वीकार करते हैं। ऐसे में किसी भी सदस्य पर दलबदल का आरोप नहीं लगता। अन्य स्थितियों में, यदि कोई व्यक्ति अध्यक्ष या अध्यक्ष के रूप में चुना गया था और उसे अपनी पार्टी से इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया गया था। परिणामस्वरूप, वे पद छोड़ने के बाद फिर से पार्टी में शामिल हो सकते हैं।

भारत में परित्याग की अनेक घटनाएँ हुई हैं। कई विधायकों और सांसदों ने पार्टियां बदल ली हैं। 91वां संविधान संशोधन अधिनियम-2003 का लक्ष्य मंत्रिपरिषद के आकार को कम करना, दलबदलुओं को सार्वजनिक कार्यालय में प्रवेश करने से रोकना और भारतीय संविधान की 10वीं अनुसूची में सुधार करना था। पहले, विलय को एक राजनीतिक दल के निर्वाचित सदस्यों के एक तिहाई के दलबदल के रूप में परिभाषित किया गया था। संशोधन के बाद इसे कम से कम दो-तिहाई कर दिया गया। अदालत ने विधायक अयोग्यता के मामलों पर विचार करने में स्पीकर की व्यापक शक्ति की भी पुष्टि की।

यद्यपि हमारे देश के विधायकों की ओर से बार-बार और अपवित्र निष्ठा परिवर्तन के कारण होने वाली राजनीतिक अस्थिरता भारतीय संविधान की 10वीं अनुसूची के कारण काफी कम हो गई है, फिर भी भारतीय संविधान की 10वीं अनुसूची के अधिक तर्कसंगत संस्करण की आवश्यकता है। मणिपुर प्रशासन में कुछ मौजूदा विधायक हाल ही में विपक्ष में चले गए, जिससे राज्य में राजनीतिक अनिश्चितता पैदा हो गई। मणिपुर में दलबदल की यह राजनीति असामान्य नहीं है; हाल ही में कर्नाटक, मध्य प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश और उत्तराखंड में भी दलबदल हुआ है। विधानमंडल के सदस्यों द्वारा राजनीतिक दलबदल ने लंबे समय से भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित किया है।

दल-बदल विरोधी कानून ने निर्वाचित प्रतिनिधियों की आवाज को दबा दिया है। विधायकों द्वारा पार्टी अनुशासन का पालन न करना एक राजनीतिक समस्या है, और इसे अधिक आंतरिक पार्टी लोकतंत्र और पार्टी के सदस्यों के विकास के तरीकों के माध्यम से हल किया जाना चाहिए। भारत के संविधान का एक हिस्सा इसकी मूल भावना के ख़िलाफ़ है। यह दसवीं अनुसूची है, जिसे 52वें संशोधन द्वारा जोड़ा गया था। राजनीतिक दलबदल को रोकने के लिए 1985 में संसद द्वारा पारित किया गया, इसे आमतौर पर दलबदल विरोधी कानून के रूप में जाना जाता है। इसका उद्देश्य एक राजनीतिक दल के टिकट पर चुने गए विधायकों को दूसरे के प्रति अपनी निष्ठा बदलने से रोकना था। इसका उद्देश्य राजनीतिक स्थिरता लाना था।

तब से, इसने हमारे निर्वाचित प्रतिनिधियों की आवाज़ को दबा दिया है, संवैधानिक कार्यालयों को गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त कर दिया है और हमारे लोकतंत्र का मज़ाक उड़ाया है। दल-बदल विरोधी कानून 37 वर्षों तक स्थिर सरकारें सुनिश्चित करने में विफल रहा है। कुछ हालिया उदाहरण उद्धृत किये जा सकते हैं।इन विफलताओं के बावजूद, दल-बदल विरोधी कानून को छोड़ने के बजाय उसे मजबूत करने की मांग उठ रही है। मूल प्रश्न यह है कि क्या किसी पार्टी के विधायकों को अपनी वफादारी दूसरे के प्रति स्थानांतरित करने से रोकना कानूनी रूप से संभव है। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि पैसे के अलावा, 卐पद के लालच ने विधायकों के दल बदलने के फैसले में प्रमुख भूमिका निभाई।卐 इसमें बताया गया है कि 1967 के चुनाव के बाद, सात राज्यों में दल बदलने वाले 210 विधायकों में से 116 उन सरकारों में मंत्री बन गए, जिन्हें उन्होंने अपने दलबदल से बनाने में मदद की थी।

इससे यह सवाल उठता है कि क्या हमारे प्रतिनिधि केवल अपने राजनीतिक संगठन के प्रति ही जिम्मेदार हैं? या क्या उन लोगों की राय व्यक्त करने की भी उनकी कोई ज़िम्मेदारी है जिन्होंने उन्हें चुना है? भारत में, विधायकों द्वारा पार्टी अनुशासन का पालन न करने का प्रश्न एक राजनीतिक मुद्दा है, जो उनके और उनके राजनीतिक दल के बीच का मुद्दा है। यदि राजनीतिक दल चाहते हैं कि उनके सदस्य पार्टी लाइन पर चलें, तो उनके नेतृत्व को आंतरिक पार्टी लोकतंत्र, संवाद और अपने सदस्यों के विकास के रास्ते को बढ़ावा देने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। असली सवाल यह होगा कि संविधान को उन राजनीतिक दलों की मदद के लिए क्यों आना चाहिए जो अपने सदस्यों को एक साथ नहीं रख सकते। यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि दल-बदल विरोधी कानून हमारी विधायिकाओं के प्रभावी कामकाज से लगातार समझौता कर रहा है।

प्रिये की पाती

मेरे प्रियतम,
हृदयस्पर्श

यहां पर मां बाउजी समेत हमसब कुशलतापूर्वक रहते हुए तुम्हारी कुशलता की ईश्वर से कामना करते हैं। यहा का सब समाचार अच्छा है। कितने दिनों से तुम्हारे पत्र का इंतजार कर रही हूं पर तुम तो ठहरे निष्ठुर। कभी यह समझने की कोशिश की कि तुम्हारे बगैर कैसे जी रही हूं। मैं जानती हूं कि तुम क्यों नाराज हो। बाउजी ने तुम्हें बोल दिया था इसीलिए ना। पर ये भी तो सोचकर देखो घर में बैठकर रहने से तो काम नहीं चलने वाला। पेट के लिए कुछ तो करना पड़ेगा।

तुम अपने मन पर किसी प्रकार का बोझ न रखना। मां बाउजी की बातों पर ध्यान मत देना। वे अच्छे के लिए ही तो बोलते हैं। वे हमेशा तुम्हें याद करते हैं। तुम्हारे चले जाने के बाद बहुत अफसोस कर रहे थे। मैने उन्हें कितना समझाया तब जाकर अब उनका जी शांत है। प्रिये, सोचो तुम काम नहीं करोगे तो किस प्रकार से हमारी गृहस्थी चलेगी। वे अपने लिए नहीं हम दोनो के लिए ही भला चाहते हैं। कल हमारा भी तो परिवार बढ़ेगा। बच्चे होंगे। उनकी परवरिश करनी होगी। बिना पैसे के किस प्रकार करोगे? बूरा वक्त में कोई अपना नहीं होता। सब दूरी बना लेते हैं।

ये लो, मैं भी क्या अनर्गल लेकर लिखने बैठ गई। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। अपने सेहत का ख्याल रखना। समय पर खाना खाना। ज्यादा होटल वगैरह का खाना मत खाना। नहीं तो बीमार पड़ जाओगे। शहर में रहते हो। अच्छे लोगो से दोस्ती करना। वे तुम्हें मुश्किलों में साथ देंगे। बूरे लोगों से दूरी ही बनाए रखना। वैसे लोग ठीक नहीं होते। मेरी बातों का बूरा मत मानना।

प्रिये, हम दूर हैं तो क्या हुआ, तुम्हारे देह का वो प्यारा गंध मेरे आसपास भौंरे की तरह मंडराता फिरता है। मेरा अंग अंग पुलकित हो उठता है। ऐसा लगता है जैसे तुम यहीं कहीं हो मेरे आसपास ही। मेरे जनम जनम के साथी। मेरे हमसफर। तन्हाइयों में ये घर का चौखटा मेरा सहारा होता है जिसपे रोज तुम बैठकर मुझे गुदगुदाते थे। यहां जब भी बैठती हूं। ऐसा लगता है जैसे तुम्हारे पास ही बैठी हूं। रोज रात तुम मेरे सपने में आते हो। मुझे जगाते हो। मुझे अपने सीने से लगाकर खुब प्यार करते हो फिर चले जाते हो। तुम्हारी बहुत याद आती है।

आज हम परिस्थितियोंवश भले ही अलग हैं। पर हमारा भी एक दिन आएगा जब हम और तुम एक साथ होंगे।

तुम्हारे मन का मीत
हेमा

प्रदीप कुमार शर्मा, जमशेदपुर
मो. 8092231276

गैजेटेड ऑफिसर

लखनऊ। उत्तरप्रदेश की राजधानी। नवाबों का शहर। यहां का सचिवालय। भव्य, विशाल। इसी सचिवालय में घनश्याम शर्मा एवं विमल कुमार नौकरी करते हैं। दोनों क्लर्क के पद पर कार्यरत हैं। दोनों में गाढ़ी दोस्ती है। सुख-दुख में एक दूसरे का साथ देते हैं। ऑफिस में उनकी फ्रेंडशिप की मिशाल दी जाती है। एक साथ अलीगंज मुहल्ले में आस-पास रहते हैं। दोनों शेयरिंग बेस्ड सिस्टम के तहत स्कूटी से ऑफिस आते-जाते हैं। एक साथ काम करते हुए दस बरस बीत गए। कभी कोई मनमुटाव, अनबन नहीं।

दोनों बस एक चीज की आस लगाए बैठे थे, कि कब गैजेटेड ऑफिसर का प्रोमोशन एग्जाम हो और वे पास होकर साहब बन जाएं। रोजगार के लिए संघर्ष के दिनों में दोनों ने बड़ी कोशिश की कि अफसर के एग्जाम क्लीयर हो जाए, परंतु बड़ी मुश्किल से क्लर्क बन पाए थे।

घनश्याम जी कुछ एटीट्यूड वाले और शौकीन स्वभाव के थे। विभाग के अफसरों से अक्सर बहस हो जाती थी। वहीं, विमल जी थोड़े इंट्रोभर्ट स्वभाव के थे। अफसरों की आज्ञा का हमेशा पालन करना, बिना कुछ कहे, न नुकुर किए।

'पता नहीं आपका प्रोमोशन होगा भी या नहीं। बड़ी मुश्किल से घर चल रहा है। मेरे सारे शौक तो पहले ही मर गए। वर्मा जी की वाइफ भी बात -बात में टोन मारती है। मेरे वाले ये, मेरे वाले वो । मैं क्लर्क की बीबी जो ठहरी। एक बार आप अफसर बन जाओ। मैं भी दिखा दूंगी' -रमा ने कहा। रमा शर्मा घनश्याम जी की वाइफ। उधर विमल जी के घर का भी कुछ वैसा ही हाल था। उनकी वाइफ कामिनी ने भी अफसर बनने की बड़ी आशा लगा रखी थी।

खैर वो दिन भी आ गया। विभाग में 100 पदों पर ग्रुप 'बी' गैजेटेड ऑफिसर के लिए डिपार्टमेंटल प्रोमोशन एग्जाम का नोटिफिकेशन हो गया। दोनों इस सुनहरे अवसर को किसी भी हाल में गंवाना नहीं चाहते थे। रमा एवं कामिनी ने तो मनता मान रखा था। क्यों न माने! लोअर मिडिल क्लास का टैग हटने वाला था। कॉलोनी में गर्व से सर उठाकर चलेंगी और मेम साहब कहलाएंगी। साहब की बीबी। एग्जाम की तैयारी जोर-शोर से होने लगी। चार पेपर का एग्जाम था। घनश्याम जी पास होने को लेकर ज्यादा श्योर थे। विमल जी के घर दोनों ऑफिस के बाद छह से सात घंटे पढ़ाई करने लगे।

एक रात, 'देख लीजिए! उंघ रहे हैं। अरे जागिए। ऐसे एग्जाम पास होइएगा, पढ़िए। आपको क्लीयर करना ही होगा। मेरी इज्जत का सवाल है' - कामिनी ने कहा । दबाव दोनों तरफ़ था ।

एक महीने बाद। गर्रर.. गर्रर्रज विमल जी जल्दी कीजिए। लेट न हो जाएं। पहले दिन के एग्जाम से दोनों संतुष्ट थे। देखते-देखते चारों पेपर हो गए। 'भाई साहब! मैं तो पक्का पास होऊंगा। वर्मा जी ने कई बार मेरे क्लर्क होने पर टोन मारा है। अब देखना मैं भी दिखा दूंगा' चौथे दिन एग्जाम खतम होने के बाद, घनश्याम जी ने कहा। एग्जाम क्लीयर करने का कॉन्फिडेन्स और अफसरी की फीलिंग बोलने लगा था। विमल जी ने कहा- 'देखते हैं क्या होता है। मुझे फोर्थ पेपर में थोड़ा डाउट है।'

एक महीने बाद। 'संभवत: आज रिजल्ट आ जाएगा, बड़ी टेंशन हो रही है'- विमल जी ने स्कूटी के पिछले सीट पर बैठे हुए कहा। दोपहर तीन बजे के करीब। 'बधाई हो,बधाई हो, घनश्याम जी, कमाल कर दिया आपने। पार्टी चाहिए'- सेक्शन में लोग एग्जाम क्लीयर करने के लिए बधाई दे रहे थे। 'जी जरूर, थैंक्स, थैंक्स'- घनश्याम जी ने बधाई स्वीकार करते हुए कहा। उनके खुशी का ठिकाना न था। उधर विमल जी का चेहरा उतरा हुआ था। वो एग्जाम क्लीयर नहीं कर पाए। दु:खी थे। एक बड़ा चांस हाथ से चला गया था। 'बेटर लक नेक्स्ट टाइम विमल जी'-घनश्याम जी ने दिलासा देते हुए कहा।

शाम के समय, ऑफिस के बाहर घर जाने के लिए शर्मा जी का इंतजार करते हुए। 'यहां क्या कर रहे हैं, विमल जी। दोस्त का वेट मत कीजिए। शर्मा जी लॉबी में मिले थे। कह रहे थे कि अपने बराबरी वाले के साथ उठना-बैठना चाहिए। ऑफिसर को सोसायटी में अपनी इज्जत का ध्यान रखना चाहिए, लोग क्या कहेंगे'- शुक्ला जी ने कहा। विमल जी स्तब्ध होकर शुक्ला जी ओर देख रहे थे। 'ऑटो, ऑटो' -विमल जी ने इशारा किया।

-मृत्युंजय कुमार मनोज, पता- टेकजोन-4, निराला एस्टेट
ग्रेटर नोएडा (पश्चिम), उ.प.-201306

यात्रा हमारी सोच की

दिवंगत शासन श्री मुनि श्री पृथ्वीराजजी स्वामी (श्रीडुंगरगढ़) मुझे बात के प्रसंग में बोलते थे कि प्रदीप हमारे जीवन की जड़ हमारी सोच ही है जैसे नींव मजबूत होती है तो मकान की मजबूती बनी रहती है उसी तरह सोच हमारी अच्छी सही होती है तो हमारे जीवन की यात्रा आनन्द से चलती हैं ।सोच का प्रभाव पड़ता है मन पर , मन का प्रभाव पड़ता है तन पर , मन और तन दोनो का प्रभाव पड़ता है जीवन पर । इसलिये सोच हमारी महत्वपूर्ण है । जिस मनुष्य के हृदय में सही दृष्टिकोण हो उसकी सोच हमेशा यही होगी कि मुझे मिला हुआ दु:ख किसी को नही मिले और मुझे मिला हुआ सुख सबको मिले ।मन की सुंदर सोच है तो सारा संसार सुंदर नज़र आएगा और जैसे विचार वैसे शब्दों के चयन में विनम्रता-श्रद्धा-आदर-समर्पण-निष्ठा के भाव हो क्योंकि विचार एक भावनात्मक उपचार हैं, और आचार यह हमारे आत्मसम्मान के गुण को बढ़ाता हैं । हम जब भी अपना पथ प्रशस्त कर लक्ष्य बनाते हैं तो उसे प्राप्त करने के सही तरीक़े सोचते हैं और सदाचार की राह श्रद्धा-निष्ठा से सफलता प्राप्त करते हैं । तालाब एक ही है उसी तालाब मे हंस मोती चुनता है और बगुला मछली सोच -सोच का फर्क होता है7 आपकी सोच ही आपको बडा बनाती है 7 जैसी सोच होगी वैसी ही वाणी होगी 7 अग्नि चाहे दीपक की हो, चिराग की हो अथवा मोमबत्ती की लौ से हो इसके दो ही कार्य है जलना और प्रकाश करना यह हमारे विवेक के ऊपर निर्भर करता है कि हम इसका कहाँ उपयोग करें, यही लौ मनुष्य के शरीर को शांत भी कर देती है,यही लौ अन्धकार को दूर कर सम्पूर्ण जगत को प्रकाशमय कर देती है, अत: चिन्तन की बात यह है कि उपयोग करने के ऊपर निर्भर है वो उसी वस्तु से पुण्यार्जन कर सकता है तो थोड़ी चुक होने पर पापार्जन भी कर सकता है। अत: हम सदा अच्छा सोचें, अहर्निश खुश रहें। हँसते मुस्कुराते रहें। जीवन की यात्रा में आदत ही ऐसी बना लें कि गीत खुशी के गाते रहें।

-प्रदीप छाजेड़ (बोरावड़), छाजेड़ सदन, गणेश डूँगरी गेट के पास
सबलपुर रोड़, जिला - नागौर, राज्य - राजस्थान, पोस्ट - बोरावड़
नम्बर -9993876631

कहानी

बहुरिया

वो दिन अगास ह बनेच साफ रिहिस। फजरहा बेरा आय। दू-दू ठन करके गोड़ेला मन ह कोठा म बनाय अपन खोंधरा ले निकलत गिन। उत्ती म लल्हू बरन सुरुज ह टँगाय अस दिखत रिहिस। कउँवा ह काँव-काँव करत छानी के टिन वाले नाली म बइठिस; हुरहा दू ठन खपरा गिर गे। खपरईल मन ल उचाय बर जावत रिहिस, तइसने म रूपलाल ह बछरू ल देख परिस। कहिथे- अश्वनी के माँ..., अहा दे ओ ... बछरू हर ढिलागे हे; कतेक टेम के ढिलाय हे ते , गाय ह पियावत हे वोला।

लेना... पियन दे आज। अब कइसे करबे ढिलागे ते। बखरी ले मुखारी करके आवत केजा किहिस- अभिच ढिलाइस होही, तइसे लागथे; काबर कि अभिच तो अश्वनी बइला मन ल बांधे बर कोठार लेगिस हे। ढिलाय देखथिस ते बताबे करथीस। केजा ह चहा बनावत बहू प्रियंका करा चूल्हा मेर बइठिस। कहिथे- उतारँव का ओ...प्रियंका चहा ला, डबक गे तइसे लागथय। तभेच प्रियंका अपन कुरिया ले तुरते आइस, अउ चहा-गंजी ल उतारिस। तीनों झन बर कप म चहा ढारिस। ताहन प्रियंका के एक कनिक चहा ल देख केजा ह तोर चहा एकेच कनिक हे प्रियंका, अउँट गे का ओ... ले अउ एक कनिक... काहत अपन कप के चहा ल प्रियंका के कप म ढारिस। सहिच म केजा अपन बहू प्रियंका ल महतारी मया करै, अउ प्रियंका घलोक बड़ इज्जत करय अपन सास केजा ला।

कोठार ले अश्वनी आइस। कहिथे- बाबू...! ये दे अभीच मवसम बने रिहिस। देखना... लँघियावत नान-नान अउ कुटका-कुटका बादर छावत हे। आज ह पाँच दिन होगे असाढ़ लगे। सब मनखे ह आज-काली ल बरसा के लक्षण बतावत हे। बाबू, जादा पानी गिर-विर दिही, ताहन हमर खेत बाहरा ह बोवत नइ बनै; अउ लाइचोपी ल वो बाहरा ह बने मानय नहीं। अइसे करथन ग बाबू, चलो आज बाहरा म नाँगर ले जाथन। काली मँझन ले उरक जाही। दू ठन नाँगर फाँद लेथन। बछुवा मन ल मैं रेगा हूँ। आगू-आगू तोर नाँगर रह ही। केजा कहिथे- हाव। अश्वनी बने काहत हे। बाहरा ल पहिली बाँवत के नेंग कर देथन। गड़बड़ावय झन रे भई। डार के चूके बेंदरा, अउ पाग के चूके किसान के हाल बेहाल होथे। हम तीनों झन जाबोन गाड़ाबइला मा। नाँगर, बीजहा, बासी, पानी, रापा-कुदारी सब ल धर लेथन। प्रियंका ल घर म राहन दे। ताहन फेर तीनों झन पूरा तियारी कर के खेत चल दिन।

घर म प्रियंका रिहिस। प्रियंका ह बड़ सुघर अउ सिधुवी। ससरार आय एक-डेढ़ साल होय रिहिस। लासाटोला वोकर मइके आय। बिहाव के पहिली गुंडरदेही विकासखंड के हायर सेकंडरी इस्कूल कामता म जन्तुविज्ञान के शिक्षाकर्मी वर्ग एक रिहिस। उहिच इस्कूल म अश्वनी घलोक अंग्रेजी विषय के शिक्षाकर्मी वर्ग एक रिहिस। दुनोझन के मन एक-दूसर बर लग गे। सोच-विचार जम गे। इस्टाफ के सहयोग घलोक मिल गे। एके जाति अउ अलग-अलग गोत्र ल घलोक इँकर मनपसंद ह पसंद आगे। दुनोझन के घर-परवार ल घलोक कउनों दिक्कत नइ होइस। इँकर बिहाव बड़ बढ़िया निपटिस। प्रियंका ल तवेरा गाँव ससरार मिलिस। ससरार म सिरिफ तीन झन। तीनझन नंनद-डेढ़सास हर प्रियंका के ससरार आय के पहिली अपन घर-दुवार चल दे रिहिन। ससरार म प्रियंका ल घर-परवार अउ पारा-परोस म सब ले बढ़िया मया-दुलार मिलै। रूपलाल के सुख-सोहर के दिन कटन लागिस।

कुवाँर के महीना आइस। इतवार के दिन आय। सबोझन खा-पी के बइठे पानी-बादर, खेतखार, मुँही-पार, के गोठ गोठियावत राहैं। बीच-बीच म हँसी-मजाक घलो चलै। बदराहूँ घाम राहै वो दिन। रूपलाल ह खटिया म बइठे केजा ल अलगसनी के गमछा ल माँगिस। धुकत कहिथे- असाढ़ के कुहकी, अउ कुवाँर के घाम ह अबड़ जियान थे। तभेच केजा ह प्रियंका ल कथय, जाना ओ... एक कनिक अराम कर ले। जादा हलचल झन होय कर। कइसे जाहू ग... अश्वनी तुमन एके फटफटी म इस्कूल दुनोझन। अब तो छुट्टी मिल जाही का ग प्रियंका ला...अइसना म तो मिलथय का ग छुट्टी ?

अश्वनी कहिथे- लेना ओ... एक महीना अउ जाबोन इस्कूल कइसनो करके, ताहन छुट्टी ले लिही। जब ले प्रियंका के भारी पाँव के बात पता चले हे तब ले घर भर खुशी बगरे राहै। नवा अवइया सदस्य के सबोझन अगोरा म राहैं। ताहनेच अश्वनी कथय कि मैं हर खेत कोती ले थोरकिन घूम के आथेंव का ओ ?

खेती-किसानी म अश्वनी के बनेच लगाव राहै। धरती माई के सेवा बजावत बाप-महतारी ले देखे राहै। ताहन फेर अश्वनी ल बाईक चालू करत देख के प्रियंका घलो कहिथे- चलना महूँ जाहूँ, थोरिक बेर के गेय ले आ जाबोन।

नहीं, तैं मत जाओ... , रूपलाल-केजा काहते रिहिन, तभो ले % लेना आवत हन जल्दी..., हाँसत-हाँसत प्रियंका अश्वनी संग बाईक म बइठगे। इन्ला जावत देखके, अइसे लागिस जइसे बाँह म खुशबू समेटे पवन उड़िस।

अश्वनी अउ प्रियंका हाँसत-गोठियावत खेत मन ल घूम-घूम के देखत राहैं। प्रियंका तो अबड़ खुश राहै। कभू कोनों रूख के पाना ल सुल्हरे कस करै, त कभू धान के नान-नान , कोवँर-कोवँर पाना ल घेरी-बेरी टमरै।

चल घर जाबोन प्रियंका... अश्वनी काहते राहय, तभो ले एक कनिक अउ रुकना, ताहन जाबोन, बने लागत हे। मवसम घलो बढ़िया बनत हे। मस्त बादर घूमरत हे। बूँदा-बाँदी के लक्षण बनत हे। थोरिक बेर के गेये ले मौसम एकदम बदलगे। करिया-करिया बादर अगास ल तोप डारिस। पानी गिरई पड़पड़-पड़पड़ सुरू होगे। ताहन दुनोझन खेत ले निकलिन। आधाबीच म बरसा के धार बनेच लामगे। दुनोझन लकर-धकर कउहारुख करा जाके खड़ा होइन। बिजली चमकई, बादर गरजई अउ पानी गिरई अइसे लागय कि आज ये तिनोझन बिफर गेहें। पेड़ के खाल्हे म खड़े अश्वनी ह प्रियंका ल अपन कोती अउ खिंचीस। बिजली, बादर अउ पानी के तमतमई हर कम नइ होवत राहै। ताहन अश्वनी ह चल वोदे

-टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला, व्याख्याता (अंग्रेजी)
घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ़-भारत), सम्पर्क 9753269282

कसहीरुख के खाल्हे म जाबोन... , काहते-काहत दुनोझन दउँड़न लागिन, तइसने म हुरहा बिजली चमकीस अउ चिरी-रिरी गरजीस। फेर थोरिक बेर बर सब कलेचुप। रुखराई के हलई-डोलई बंद। अइसे लागिस, जइसे थोरिक बेर बर हवा चुप, धरती खड़े होगे, दुनिया थम गे।

साँझ के होवत ले अश्वनी अउ प्रियंका के घर नइ लहुँटे ले रूपलाल अउ केजा के जी पोतकी कस होगे राहै। दुनोझन घर ले निकल-निकल के देखैं। बहू-बेटा दूनों के दउहा नहीं। मवसम अभी तक खराब राहै। तरा-तरा के शंका मन म समावत राहै। दूनों के धुकधुकी बढ़त राहै। केजा के आँखी बोटबोटागे। केजा ल काँपत देख के रूपलाल ह अंदरे-अंदर कंदरत कथय कि तें काबर अतेक फिकर करत होबे , आवत होहीं, नहीं ते कोनों मेर रुके हो हीं। तइसने म गाँव के हेमसिंग ह आके बताथै- कका...! मटियाबाट म तुँहर घर के अश्वनी अउ बहू बेहोश परे हें। चलव जल्दी जाबोन। ये धनराज भइया घलो हे। हेमसिंग के गोठ ल सुनके केजा तुरते बेहोश होगे।

थोरिक समय के गेये ले पारा-परोस के मन सकलागें। माइलोगिन मन ह केजा ल सम्हालिन। चार-पाँच सियान अउ दू-चार जवनहा मन रूपलाल संग मटियाबाट कोती गिन। जा के देख के सब काहन लागिन- ओहो ! तोर करम फट गे रूपलाल, अउ हमर गाँव के घलो। उहाँ बड़ा भंयकर इस्थीति राहै। दू-तीन ठन रूख गिरे राहैं। कतको पेड़ के डारा-खाँधा मन टूटे राहैं। मेड़ मन घलो ओदरे राहै। केकरा-मेचका मरे फेंकाय राहैं। एकठन बड़ेजन अँसोड़िया मरे लामिलामा फरे राहै। पँड़की, पुचकी, करउँवा, भरदा चिरई मन मरे परे राहैं। दूठिन खुसरा चिरई घलो एके जगा पोट-पोट करत परे राहैं। ये सबला देखके अइसे लागय कि भगवान आज सब बर नराज हे। सब झन के देखते-देखत दूनों चिरई के जीव छुटगे। एकठन मेड़ के खाल्हे म अश्वनी नहीं..., भलुक वोकर माटी-काया बगरे राहै। सब सन्न खागें। सब झन कलेचुप एक-दूसर ल देखते रहिगें। थोरिक दूर म प्रियंका ह बेहोश परे राहै। लकर-धकर वोला गुंडरदेही प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र लेगे के बेवस्था करिन। पुलिस अउ स्वास्थ्य विभाग ल घलो खभर कर दिन। रातकुन सब बेवस्था होगे। बइरी कारीरात ले देके कटिस। दूसर दिन ग्यारा-बारा के बजत ले अश्वनी के काया पंचतत्व विलीन होगे। गाँव भर बड़ा दुख मनाइन।

0000

रूपलाल के बेटा-बहू ऊपर गाज का गिरिस, रूपलाल के घर-संसार म गाज गिरगे; सब सोहा होगे। वोला मुँड़ धर के रोना होगे। एकझन बेटा ह भगवान घर चलदिस। अइसन इस्थिति म कनवा के एकठिन आँखी, अउ कोनों के एकझन बेटा के जवई हर तकदीर के भाँड़ी ओदरे अस होथै। फुटहा करम के फुटहा दोना, पसिया बोहागे चारों कोना ह रूपलाल ऊपर फिट बइठे। तन काँटा कस सुखावन लागिस। मन बिन पानी के मछरी कस तड़पन लागिस। अब रूपलाल बर बड़ा बिस्कुटक इस्थिति होगे। सियनहीन केजा ह खटिया धर लीस। आधासिसी बहू हर अस्पताल म भरती राहै। मइके वाले मन के देखरेख म वोकर तिमारदारी चलत राहै। आखिर कब तक पता नइ चलथिस; सच ह कब तक झूठ-लबारी के बाना पहिरे रहिथिस। प्रियंका ल अश्ववनी के सरग सिधारे के बात पता चलगे। वोकर तबीयत अउ बिगड़गे। दुए-तीन दिन के गेये ले वोकर पेटपीरा उमड़ गे अस्पताल मा। कोथा अउ कनिहा म एकबज्जू पीरा भरगे। किस्मत के लेखा नइ मिटय भाई, मनखे चाहे कतको करय उपाई। घड़िक बेर के गेये ले प्रियंका के गरभ का खसलिस, वोकर बनत-सँवरत किस्मत खसलगे। केजा ल तो ये बात नइ बताये गिस। रूपलाल के तकदीर के तरिया सुखागे। बिपत्ति के आना; अउ कउनों ल नइ बताना, आज वोकरे बर बने हे तइसे लागत राहै। सोचथे- वा रे मोर तकदीर ! हे भगवान ! आज मोला मोर कोन जनम के पाप के सजा देवत हस मालिक। काहत रूपलाल ह खटिया म बइठत राहय, तइसने म गाँवेच के पंच्चू हर आ के वोला बताइस कि तुँहर सब खेत म कीरा झपावत हे ग कका..। रूपलाल कहिथे- अब का करँव बाबू...आ बइठ।

नहीं कका अभी नी बइठँव , महूँ ह खेत कोती जावत हँव। सिवनी बांध के पानी ढिलाय हे। हमरे खार के नाली म आगे। जावत हँव , देखहूँ, काहत पंच्चू निकलिस। ताहन फेर रूपलाल ह केजा के खटिया डाहर गिस। हूँत कराइस। केजा के न तो भाखा फुटिस, अउ न हालिस-डोलिस। केजा के नींद म ही परान छूटगे राहै।

तीन-चार महीना के बीतगे। घर म रूपलाल अउ प्रियंका भर रहिगें। नवा जनम पाय, पढ़े-लिखे प्रियंका ह खुद ल बड़ा मुश्किल म सम्हालिस। दुखे-दुख के घाम एकसठ बछर के उमर म रूपलाल ल जिनगी बिरथा लागन लागिस। अब ससुर-बहू के मया बाप-बेटी के मया होगे। दूनों एक-दूसर के अबड़ खियाल रखैं। दूनों के अंतरात्मा दुखत राहै, पर दूनों हर एक-दूसर मेर नइ फरिहावैं। रोज बिहनिया प्रियंका ह रूपलाल के ऊठते साठ वोकर दँतुन-मुखारी के बेवस्था करै। घर बुता ल निपटावै। राँधै-गढ़ै। खवावय-पियावै। इस्कूल जावत खानी रूपलाल बर प्रियंका के एक भाखा जरूर निकलै- बाबूजी! मैं इस्कूल जावत हँव। जल्दी आ जाहूँ। घर म रहिबे। ठेला-वेला कोती जादा बेर ले मत बइठबे-बुठाबे। इस्कूटी चालू करत प्रियंका ल हाव..., काहत देखते राहय वोला दिखत भर ले। ताहन फेर हे राम...हे भगवान..., काहत रूपलाल ल चुप करावत सुन्ना घर ह भारी मन ले सुसके कस लागै।

0000

बितत बखत ह मनखे के बड़े ले बड़े घाव ल भर तो देथय; फेर वोकर चिन्हा ल नइ मिटा सकै, अउ इही चिन्हा हर जीयत भर ले मनखे के दुख ल हरियावत रथै। जिनगी के काँचा उमर म सबर दिन बर जुग-जोड़ी के बिसरई के बात ल प्रियंका ह भला कइसे बिसरा जातिस। कहे गेय हे कि कोनों नारी के नर नइ हे, याने घर नइ हे, माने वोकर संसार नइ हे ते, सार नइ हे ; अउ घर-संसार तो सब के मनखे होथै। कोनों नारी के घर-संसार बिना वोकर सरग-सुख घलो बिरथा हे। आज प्रियंका अपन घर-संसार ल नानुक खपरइल-छानी के माटी के घरौंदा ल निहारत हे, काबर कि अपन मन-मयारू जिनगी के संगवारी अश्ववनी के अनमोल मया इही माटी के घरौंदा म समाय हे। अश्ववनी के सुरता के दौना के गंध वोकर जिये के आधार हे। अश्वनी के पिरीत के कँवल ल अपन कोख सरोवर म नइ बचाये सकिस, तेकर दुखगिधान हर बेरा प्रियंका ल ठोनकत रथै। वोकर मांग के रेगिस्तान म सदासुहागी कभू नइ फूल सकै। नारश्रृंगार सब बेकार, प्रियंका ऊपर सटिक बइठगे। सधारन फीका बरन साड़ी के घेरा म अब वोकर दैहिक जगत समागे। घर, गाँव, अउ इहाँ तक वोकर कार्यरत शिक्षा विभाग ल घलो इही लागन लागिस कि नव सांसारिक जीवन जइसे सपना प्रियंका बर नोहे। कभू-कभू इस्कूल म कोनों हर प्रियंका ले वोकर नवा जिनगी बनाय-बसाय के बारे म गोठिया देवय त प्रियंका ह सब ला बड़ा शांतिपूरवक जुवाब देवय कि मैं अश्वनी ल भुल ही नइ सकँव। वोकर घर म मैं बिहा के आये हँव ; अउ अब मैं ह ये घर ले मौत संग ही निकल हूँ।

लकड़ी म लगे घुना ल सब देख लेथैं, पर मनखे के घुना ल कोनों नइ देख पाँय। बस अइसना इँकर हालत रिहिस। सब कुछ रहिके दूनों ससुर-बहू मेर कुछुच नइ रही गेये रिहिस अश्वनी के बगैर। बेटा... बेटा...काहत दिन भर म रूपलाल दू आँसू जरूर ढरकाय। सियाना अवस्था के दुख पहाड़ अस होथय मनखे बर। जवानी के दुख सहा जथय, पर बुढ़तखानी के नइ सही जाय। प्रियंका ल जिनगी के संगी के गुजरे दुख तो रहिबे करे राहय, पर वोकर दुख तब अउ बढ़ जाय जब बाप बरोबर ससुर के औलाद बिछड़े दुख ल देखै। अपन कोती ले वोकर दुख हरे के उदिम करै, पर जेन ल जेकर दुख रही तेन उही जानथय। कोनों के दुख के आधा हिस्सा ल माँग के अपन मुँड़ म बोहे के जिनीस तो नोहे। पर इँकर हालत ह जस हाल माधव के, तस हाल उद्धव के कस सरीख राहै। प्रियंका के मन अगास म तरा-तरा के बिचार के बादर घूमड़ै। काँह ले अउ कइसे करके येकर बेटा ल लानँव, येकर मन होवै।। काय करतीस बिचारी हर। चाह के भी कुछ नइ कर पाय। बिचार के बदरी ल संकोच अउ डर के गरेरा उड़ा ले जाय। रूपलाल ल प्रियंका के फिकर राहय कि अब कइसे कर के ये ह अपन पहार कस जिनगी ल पार करही। वो सोंचय कि कइसनो कर के येकर घर एक घाँव अउ बस जाथिस। लोगन के रंग-रंग के गोठ ल सुन के वोकर हिरदय कलपै। मन करय कि प्रियंका ह ही अपन जिनगी के रस्ता ल अपन ढंग ले चुन लेतिस।

0000

करीबन तीन-चार बछर बीत गे अश्वनी ल सरग सिधारे। अब रूपलाल के मन प्रियंका ल हमेशा कुछू कहे के मन करै, अउ आज तो कही घलो दिस- प्रियंका ! एक ठिन बात कहँव का बहू ? रीस झन करबे बेटी। तोर बर काहत हँव रे भाई।

बोल न बाबूजी। का बात ए...काबर तुँहर बर रीस कर हूँ। बताव न काय बात ए ? प्रियंका मुँड़ म अँछरा डारत किहिस।

प्रियंका ! तोर सरी उमर हे नोनी। कब तक तैं अपन जिनगी ल अइसना काटत रहिबे। मोर काय ठिकाना। कब तक ये सुवाँसा चलत रही...कब तक तैं मोर संग म रहिके अपन जिनगी ल खुवार करत रहिबे... ? मैं तोर बाप अस आँव प्रियंका। मोर कहना ल मान बेटी। तैं अपन हिसाब से एकाध लड़का देख ले अपन जिनगानी चलाय बर। मैं तोला ये घर ले बेटी असन बिदा कर देहूँ। मोला गलत झन समझबे नोनी। मोर बेटा तो सबर दिन बर गेय। अउ ये बात ल तोर माँ-बाबूजी करा घलो रखे हँव। वोमन ल घलो मोर कहना वाजिब लागिस। ये दुनिया रंग-रंग के गोठियाथै। हँड़िया के मुँह ल तो परई ले तोपे जा सकत हे, पर मनखे मुँह ल कुछू जिनीस ले तोपे नइ जा सकै। रूपलाल थोरिक चुप होइस, ताहन प्रियंका कहिथे- बाबूजी, तुमन काहत हव। मैं ये सब अब नइ कर सकँव। मोर जिनगी म अश्वनी के सिवा कोनों नइ आइस; अउ अब कोनों नइ आ सकै। अब ये घर ले मोर अरथी निकलही बाबूजी। अउ हाँ , तुमन ल मोर ले कोनों तकलीफ होही, ते बता देवव, मैं खुद निकल जाहूँ। प्रियंका के गला भर्रागे। रूपलाल के मुँह डहर ले गोठ नइ निकल पाइस। प्रियंका के गोठ ल सुनके वो कँदरत बखरी कोती गिस। प्रियंका बरतन ल माँजे बर नल ठउर करा निकालिस।

दूसर दिन प्रियंका ल अपन ससुर के काली कहे बात रही-रही सुरता आवत राहै। अंदरे-अंदर वो कँदरत राहै। अपन आँसू ल अंदर धकेलत राहै। रस्ता कइसे कटिस, पता नइ चलिस। सवा दस बजे इस्कूल पहुँचीस। प्रार्थना के बाद कक्षा लगिस। रजिस्टर धरे कक्षा बारहवीं म गिस। पिरियड खतम होय के बाद इस्टाफ आइस। कुरसी म बइठिस। पूरा इस्टाफ के नजर प्रियंका पर परीस। सब ला प्रियंका बड़ उदास लागिस। वोकर चिंता अउ परेशानी सब ला इस्पस्ट लागिस। पर कोनों के वोला कुछू के हिम्मत नइ होइस। दूसर पिरियड खतम होय घंटी लगिस। प्रियंका लघुशंका बर उठिस। पाछू-पाछू सबले सीनियर लेडी टीचर कृषाण मैडम गिस। लहुँटत खानी प्रियंका ल कहिथे- काय बात हे प्रियंका मैडम, आप बहुत दुखी लगत हव। थोरिक समय तक चुप रहे के बाद अपन ससुर संग होय जम्मों बात कृषाण मैडम ल बतादिस। फेर थोरिक देर बाद कृषाण मैडम अपन बात ल राखिस- प्रियंका मैडम ! आप बिल्कुल स्वतंत्र हव। आपके ससुर के कहना गलत नइ हे, आप घलो अपन जगा म सही हो। आप अपन जिनगी ल, अपन दुनिया ल अपन हिसाब से चलाव। आप ल जौन उचित लागथय , वो करव। गोठियात-गोठियात दुनोझन इस्टाफ म पहुँचीन।

तीसरा पीरियड म प्रियंका कक्षा ग्यारहवीं म गिस। टेबल म रूमाल अउ पेन ल रखिस। डेरी हाथ म डस्टर धरे स्यामपट के बींचोबीच हेडिंग डारिस- लीवर का कार्य। बच्चों! इधर ध्यान दीजिएगा... काहत सुरू होइस - जइसे कि कल मैंने जिक्र किया था कि लीवर क्या है ?...तो लीवर ह्यूमन बॉडी एक बहुत इम्पॉर्टेंट पार्ट है। यह एक कशेरुकी प्राणियों में पाया जाता है। यह हमारे बॉडी के पाचन क्रिया के लिए आवश्यक जैव रसायन बनाने वाला पार्ट है। यह शरीर के पेट की दाईं तरफ ऊपर में डायफ्रॉम के नीचे होता है। अब आज देखते हैं लीवर का कार्य। लीवर के कुछ कार्य होते हैं । सभी कार्यों को एक-एक करके देखते हैं। दो-तीन फंक्शन को पहले फोकस करते हैं। काहत साइड हेंडिंग डालत गिस।

(शेष अगले अंक में)

छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी
नए दौर में लिखेंगे, हम मिल के नई कहानी

हम हिंदुस्तानी

Visit on

www.humhindustaniusa.com

We are also on

facebook

'हम हिंदुस्तानी' परिवार के

समस्त कवियों/ लेखकों के ध्यानार्थ

'हम हिंदुस्तानी' परिवार के समस्त कवियों और लेखकों के हम तह दिल से आभारी हैं जो सात समंदर पार से अपनी कलम से साहित और दीन-दुनिया से हमारे पाठकों को अवगत करवाते रहते हैं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हमारा प्यार इसी तरह से बना रहेगा। लेकिन आप सब से अनुरोध है कि आप अपनी केवल एक ही रचना भेजे, ताकि समस्त कविओं ओर लेखकों को स्थान मिल सके। एक लेखक केवल अपनी एक कविता और एक लेख भेज सक्ता है। एक से ज्यादा रचना/लेख भेजने वाले की किसी भी रचना पर विचार नहीं किया जाएगा। आप अपनी रचना बुधवार रात तक (Indian Time Zone) भेज सक्ते हैं।

नोट :-हमारे द्वारा प्रकाशित लेख, कविताओं एवं अन्य प्रकाशित करने योग्य सामग्री निःशुल्क प्रकाशित की जाती है। लेखक से किसी भी प्रकार का चार्ज नहीं लिया जाता। इसके अलावा कुछेक लेखक अन्य लेखकों के लेख अपने नाम पर भेज रहे हैं जोकि कॉपीराइट कानून का उल्लंघन है।

-मुख्य संपादक

रचना/लेख केवल व केवल

humhindustaniusawriters@gmail.com

पर ही भेजें।

*किसी अन्य मेल पर भेजी गई रचना पर विचार नहीं किया जाएगा।

मैं बोलूँगा तो बोलोगे कि बोलता है

मोदी के लिए यही समय है और सही समय है

हिन्दू धर्म के एक पवित्र ग्रंथ में ये वर्णित है जिसका भावार्थ ये है कि जब जब धरती पर पाप बढ़ता है तो उसके समूल विनाश के लिए ईश्वर पृथ्वी पर अवतरित होते हैं।भारत के संदर्भ में ये हजारों साल से होता रहा है।रावण था तो उसके विनाश के लिए श्रीराम अवतरित हुए।कंश और कौरवों के लिए श्रीकृष्ण धरती पर आए और ये सिलसिला चंद्रगुप्त मौर्य से लेकर राणा प्रताप तो कभी वीर शिवाजी के रूप में चलता रहा।आज आधुनिक भारत में नरेंद्र मोदी नाम का व्यक्ति उसी किरदार में भारत में अवतरित हो गया है।आजादी के बाद इस देश को जिस दिशा में जाना चाहिए था उससे ये रास्ता भटक गया था।देश के धर्म के आधार पर विभाजन के बाद भी नेहरू और गांधी के अदूरदर्शिता के कारण इस देश में मुस्लिमों की एक बड़ी आबादी रह गईजो आज इस देश के लिए खतरा बनकर रह गए हैं।वैसे मुसलमानों की बड़ी आबादी इस देश में अभी भी भाईचारे के साथ रहना चाहती है लेकिन ओबैसी जैसे नेता उंनको भड़काने का कार्य निरंतर करते रहते हैं।आज पश्चिम बंगाल और केरल की स्थिति कश्मीर जैसी होकर रह गई है।केरल भारत का हिस्सा ही नहीं लगता और वही हाल पश्चिम बंगाल का भी है।आज वहाँ एक क्रिमनल शाहजहां शेख को पुलिस कोर्ट के दबाब में पचपन दिनों के बाद पकड़ पाई।लेकिन उसे ममता सरकार जेल में पाँच सितारा सुविधा दे रही है।ध्यान रहे सन्देशखाली की घटना तृणमूल कांग्रेस के लिए वैसा ही साबित होगा जैसे सिंगूर की घटना साम्यवादियों के लिए हुआ था।आने वाले चुनाव में तृणमूल कांग्रेस को इसका बड़ा खामियाजा चुकाना पड़ेगा।वैसे इस बार पश्चिम बंगाल में बीजेपी और तृणमूल कांग्रेस में सीधा टक्कर है अगर बीजेपी तृणमूल कांग्रेस से ज्यादा सीट जीतकर ले आये तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए।मोदी का करिश्मा इस बार सर चढ़कर बोलेगा।इस बार बीजेपी सन्देशखाली की घटना को जोरशोर से उठाएगी और हो सकता है कि ये ममता बनर्जी के लिए ताबूत की आखरी कील साबित होगी।ममता बनर्जी का मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति हो सकता है ममता बनर्जी के लिए भारी पड़े क्योंकि अब वहाँ हिन्दू भी एकजुट हो रहे हैं।बीजेपी के लिए इस बार केवल केरल तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश से ही दिक्कत है वरना हिंदी भाषा भाषी क्षेत्र में बीजेपी क्लीन स्वीप करने जा रही है।इस बार मोदी के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को कोई रोकने वाला नही है इस बार विपक्ष केवल लड़ने के लिए लड़ रहा है वरना उंनको भी परिणाम मालूम है।जिस तरह अयोध्या में रामलला की प्राणप्रतिष्ठा हुई उससे ये साफ हो गया कि ये देश अब रामयुग में प्रवेश कर रहा है और इस समय जिस व्यक्ति के हाथ में देश की बागडोर है वह इसे मूर्त रूप देकर ही दम लेगा।अगले पच्चीस सालों तक बीजेपी को सत्ता में रहना चाहिए ताकि आजादी के पचहतर साल का पाप धुल सके।आजादी के बाद इस देश में जिस तरह तुष्टिकरण की नीति अपनाई गई उससे ये देश सीधे नर्क में जा रहा था।हिंदुओं को अपने ही राष्ट्र में रामनवमी के जुलूस निकालने पर दंगा का सामना करना पड़ रहा था।मुलायम सिंह यादव ने कारसेवकों पर गोली सिर्फ मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए चलवाया था।ये व्यक्ति हिन्दू के नाम पर कलंक था।उसका बेटा उसी के पदचिन्हों पर चल रहा है।लेकिन अब ऐसे गद्दारों की इस देश में मोदी के रहते कोई दाल गलने वाली नही है।आज मोदी जी के लिए सही समय है।मोदी जी के तीसरे टर्म में भारत का कायाकल्प होने जा रहा है।कुछ निर्णय आने वाले टर्म में ऐतिहासिक होने वाला है।पूरे देश के लिए एक कानून तो कैबिनेट की पहली मीटिंग में ही ले लिया जाएगा इसके अलावा कुछ कठोर निर्णय और लिया जाना है।आज मोदीजी की आने की खबर से ही पाकिस्तान में हड़कंप मचा हुआ है उन्हें डर है कि कहीं पी ओ के भारत का हिस्सा ना बन जाये या सिंध और बलूचिस्तान पाकिस्तान से अलग ना हो जाये और ऐसा होने की पूरी संभावना है।मोदीजी जानते हैं कि अगला पाँच साल ही उन्हें मिलनेवाला है और उस पाँच साल में देश को एक ऊंचाई पर ले जाने का आखिरी मौका है।मोदी जी के बाद इस तरह का कोई प्रधानमंत्री आये इसकी संभावना कम ही है।योगी आदित्यनाथ और अमितशाह भी अच्छे प्रधानमंत्री सिद्ध हो सकते हैं लेकिन मोदी का विजन बड़ा है।उस व्यक्ति में चीजों को समझने की अद्भुत क्षमता है।गुजरात आज मोदी जी के मुख्यमंत्री काल में जो प्रगति की वह उनके वहाँ से केंद्र में आने के बाद शिथिल पड़ गया है जबकि अभी भी वहाँ बीजेपी का ही शासन है लेकिन मौजूदा मुख्यमंत्री के पास वह विजन ही नहीं है।आज आप गुजरात के बारे में नया क्या सुनते हैं।वहाँ सरकार सिर्फ सरकार के नाम पर चल रही है।अब वहाँ नई नई परियोजनाओं का अकाल पड़ गया है।दरअसल व्यक्ति का विजन ही उसे महान बनाता है।आज विपक्ष का कोई नेता के पास कोई विजन नही है उनका काम सिर्फ मोदी को कोसना है और उसको हराने के ख़याली पुलाव पकाना है।पूरा विपक्ष केवल इसी खुशफहमी में जी रहा कि कोई चमत्कार हो जाये और मोदी हार जाए लेकिन ऐसा भविष्य में दूर दूर तक दिखाई नहीं दे रहा है।आज स्थिति ये है कि विपक्ष में कोई ऐसा नेता नही है जो मोदी के सामने ढंग से खड़ा हो पाए।आज कांग्रेस में नेताओं की ऐसी अकाल पड़ गई है कि लोगों को इस शताब्दी का महामूर्ख को अपना नेता स्वीकार करना पड़ रहा है।मैं तो हैरान हो जाता हूँ कांग्रेस के समर्थकों को देखकर, ये कैसे ऐसे नेता को स्वीकार कर सकते हैं, अगर आप ऐसे व्यक्ति को अपना नेता मानते हैं तो आपकी मूर्खता की तो कोई सीमा ही नहीं।जिस व्यक्ति का टेप केवल अदानी पर अटका हुआ हो वह देश को क्या नया विजन देगा।हैरानी तब होती है कि उसके इसी बात को उसके साथ चलने वाले नेता दिन रात सुनते रहते हैं जो उस व्यक्ति से नि:संदेह काबिल हैं।कांग्रेस के कई सीनियर नेता इस पार्टी को इसी वजह से चले गए लेकिन कुछ चमचे अभी भी बचे हुए हैं।इस चुनाव के बाद सबका भविष्य गर्त में जाने वाला है।अगर कांग्रेस को इस चुनाव में चालीस सीट भी लोकसभा की आ जाये तो ये उस पार्टी के लिए बेहद खुशी की बात होगी जिसकी संभावना कम ही लग रही है। आज देश का विपक्ष राजनीति में हासिये पर चला गया है क्योंकि इनके पास मोदी से टक्कर देने के लिए कोई चेहरा नही है।बिखरा विपक्ष एक बीजेपी जैसी संगठित पार्टी से कतई मुकाबला नहीं कर सकता है।केवल मुस्लिम वोटों के बदौलत इस देश में अभी शासन करना मुश्किल है लेकिन पचास साल बाद मुस्लिमों की आबादी बढ़ जाएगी तो ये संभव होगा लेकिन तब इस देश का एकबार फिर से बंटवारा होगा।ये बँटवारे का सिलसिला तबतक चलता रहेगा जबतक एक हिस्से में सिर्फ हिन्दू सिमट कर नही रह जाएं।मुस्लिमों के साथ हिंदुओं का रहना नामुमकिन है और इसका उदाहरण पाकिस्तान है जहाँ विभाजन के वक्त पाकिस्तान में 22 प्रतिशत हिन्दू थे जो घटकर दो प्रतिशत से भी कम हो गए हैं और उन दो प्रतिशत हिंदुओं को वहाँ जीना मुहाल हो रहा है।इस धर्म का बुनियादी सिद्धांत है कि उनके धर्म के अलावा दूसरे धर्म के लोग काफ़िर हैं।और काफिरों का कत्ल करना जायज़ है।इसलिए इस तरह की मानसिकता वालों के साथ कबतक निर्वाह हो पायेगा।आज इस देश में हिन्दू सुरक्षित है क्योंकि पुलिस और सेना है वरना आपका घर से निकलना मुश्किल हो जाये।आज मुस्लिम बहुल आबादी से हिंदुओं का तेजी से पलायन हो रहा है।हिन्दू बहुल आबादी में मुस्लिम आराम से रह लेते हैं लेकिन मुस्लिम बहुल आबादी में आजतक कोई हिन्दू सुरक्षित नहीं रहा।समाजवादी पार्टी और बी एस पी के कार्यकाल में उत्तरप्रदेश में आये दिन दंगे हुआ करते थे लेकिन आज योगी आदित्यनाथ के चलते उसपर कुछ लगाम लगा हुआ है।यकीन मानिए अगर गलती से भी वहाँ से बीजेपी हटी तो वहाँ फिर से वही स्थिति उत्तपन्न हो जाएगी।मोदी के बाद योगी ही सशक्त नेता हैं।बाकी किसीमें वह दम नही है।इस देश के सुनहरे भविष्य के लिए मोदी जी का प्रधानमंत्री बने रहना जरूरी है।आने वाले चुनाव के बाद मोदी जी के नेतृत्व में जो सरकार बनेगी वह भूतकाल में जो तुस्टीकरण के लिए कानून बना था उसमें संशोधन अवश्य करेगी और उसे करना भी चाहिए क्योंकि यहाँ की जनता कब किस लालच में बदल जाये ये कहना मुश्किल है इसका उदाहरण कर्नाटक में कांग्रेस सरकार का बनना था।दिल्ली में सबसे भ्रष्ट व्यक्ति को मुख्यमंत्री सिर्फ बिजली और पानी के लालच में बना दिया था ।इसलिए इस देश की जनता पर ज्यादा भरोसा नहीं कर सकते हैं।अगर कोई दल इनको सब्जबाग दिखा दे तो इनका हृदय परिवर्तन होने में देर नही लगेगा।इसलिए इस बार राम के नाम पर बीजेपी का बेड़ा पार होने वाला है लेकिन 2029के लोकसभा चुनाव में क्या होगा ये अनुमान लगाना मुश्किल है वैसे अगले पाँच साल में जो काम होगा उसके बदौलत तो2029का चुनाव भी बीजेपी ही जीतेगी क्योंकि बीजेपी को सत्ता में रहना आ गया है।अब ये बीजेपी अटल जी वाली बीजेपी नही है जो महज एक वोट मैनेज करने में असफल रही।आज की बीजेपी25सीट रहने के बावजूद40सीट वाली कांग्रेस को हराकर अपना कैंडिडेट राज्य सभा के लिए जीता देती है।अब बीजेपी भी वही चाल चल रही है जो पूर्व में कांग्रेस चला करती थी।आज हिमाचल सरकार की स्थिति डाँवाडोल है।मौजूदा स्थिति में ये सरकार कितने दिनों तक और चलेगी ये कहना मुश्किल है।सभी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत नही होते जो अपनी सरकार किसी तरह बचा ले जाये।आने वाले समय में हिमाचल प्रदेश में भी उठा पटक हो सकता है।लोकसभा चुनाव तक बीजेपी भी रिस्क नही लेने वाली।अभी तो बीजेपी का ध्यान लोकसभा चुनाव पर है जिसमें अपने लिये मोदी जी ने400 पार का लक्ष्य निर्धारित कर दिया है और उस दिशा में प्रयास भी हो रहा है।वैसे ये तय है कि बीजेपी और उसके सहयोगियों को मिलाकर एन डी ए को साढ़े तीन सौ से चार सौ के बीच सीट जरूर मिलेगी।

डॉ संजय श्रीवास्तव
मद्दू
मो. 7000586652
sanjaysrivastav4004@gmail.com

खुशहाल आर्थिकी पर से महंगाई का दाग मिटाना होगा

इस समय मोदी सरकार की प्राथमिकता आर्थिक सुधार कार्यक्रमों से जुड़ी हुई है। इसने देश में वैश्विक निवेश का केंद्र बना दिया है। टैक्स की व्यवस्था में बदलाव लाकर सरकार की आमदनी को बढ़ा दिया गया है। साथ ही मैन्युफैक्चरिंग हब बनाने के लिए माहौल भी तैयार कर लिया गया है। इन सबकी बदौलत लोगों का जिंदगी जीने का अंदाज बदल गया है। अर्थव्यवस्था के विकास से लोगों की आय और खरीदारी की क्षमता बढ़ने लगी है। इस वक्त मोदी सरकार का विशेष ध्यान गांव के लोगों को आर्थिक संबल प्रदान करना है। इसके तहत गांव में बिजली की व्यवस्था को तेजी से बढ़ाया जा रहा है ताकि इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक अप्लायंसेज को अधिकाधिक संख्या में उपयोग में लाया जा सके। खेती के लिए आधुनिकीकरण में किसानों को ड्रोन तक की व्यवस्था करके दी गई है। गांव को पक्की सड़कों के माध्यम से शहरों तक जोड़ दिया गया है ताकि अधिक से अधिक संख्या में दोपहिया व चार पहिया वाहन की सुविधा अभूतपूर्व ढंग से बढ़ाई जा सकें। हमारे देश भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसे कार्यक्रमों के साथ विभिन्न अंतरराष्ट्रीय कंपनियों को निवेश के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इससे भारतीय श्रमिकों के लिए रोजगार के नए अवसर खुल गए हैं। युवा वर्ग सरकारी नौकरियों पर निर्भर न रहकर देश-विदेश में हो रही प्रतिस्पर्धा में तेजी से अपनी काबिलियत को साबित कर आगे बढ़ रहा हैं। अर्थव्यवस्था में तेजी से आ रहे बदलाव को हम महसूस ही नहीं कर रहे बल्कि अनुभव भी कर रहे हैं मनमोहन सिंह के नेतृत्व में संप्रग सरकार के कार्यकाल में 2004 से 2014 के बीच अर्थव्यवस्था बदहाली के दौर से गुजर रही थी।उसके बाद मोदी सरकार ने लोगों की असीमित आकांक्षाओं पर खरा उतरते हुए पूरे परिदृश्य को जादुई ढंग से बदल डाला। संप्रग सरकार की कमजोर बुनियाद को देखते हुए विदेशी निवेशक भारत में निवेश से सिर्फ कतराने ही नहीं लगे थे बल्कि अपना पैसा यहां से निकलने की उतारी हो रहे थे। उस समय हमारे देश की स्थिति विश्व में दसवें पायदान पर थी जो 10 वर्ष के मोदी सरकार के कार्यकाल के दौरान पांचवें स्थान पर पहुंच चुकी है। यह अत्यंत गर्व की बात है कि दुर्बल और अस्थिर भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाना ताकि देश चहुंमुखी विकास की दिशा में अग्रेसित हो सकें। हम देख रहे हैं कि जीएसटी लागू करने से एकल कर व्यवस्था से राजस्व में भारी बढ़ोतरी हुई है और निवेशकों का भरोसा भी जागा है। इससे गरीबी दूर हुई है और लोगों को इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ शिक्षा, पेयजल, स्वास्थ्य और पोषण जैसी मूलभूत सुविधाओं का लाभ मिल पा रहा है। देश की अर्थव्यवस्था के लिए यह सुखद पक्ष है कि सकल घरेलू उत्पाद जीडीपी की वृद्धि दर पिछली तिमाही में 8.4% रही है जबकि अर्थशास्त्रियों के अनुमान के मुताबिक यह दर 6 से 7.2% के बीच रह सकती थी। आरबीआई ने भी तीसरी तिमाही में जीडीपी ग्रोथ रेट को 6.5 रहने का अनुमान जताया था। केंद्र सरकार ने जीडीपी वृद्धि दर को 7.6% रखने का लक्ष्य रखा था। लेकिन खुशी की बात है कि वास्तविक विकास दर इससे कहीं आगे निकल गई है। इसका वास्तविक कारण हमारी कुशल टैक्स प्रणाली और सब्सिडी पर लगे अंकुश का रहा है। इसके अतिरिक्त सर्विस सेक्टर में ग्रोथ स्टोरी बनी हुई है। मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में काफी काम हो रहा है और निवेशकों को? बहुत अधिक प्रोत्साहन मिल रहा है। रियल एस्टेट मार्केट से भी इकोनॉमी की रफ़्तार तेजी से बढ़ती दिखाई दे रही है, जिसका सीधा असर देश की फिजाओं में होने वाले विकासशील बदलाव को मुखरित करता है। जहां एक ओर हमारे देश की आर्थिक उन्नति हमें एक सुनहरे भविष्य का परिदृश्य दिखा रही है, वहीं विगत 10 वर्षों में शहरी और ग्रामीण परिवारों का मासिक उपभोक्ता खर्च दो गुना हो जाने की वजह से सामाजिक और पारिवारिक स्थिति में तनाव बढ़ता नजर आ रहा है। साथ ही यह भी चिंता का विषय है कि देश में प्रति परिवार कर्ज़ बढ़ रहा है। सन 2018 में पारिवारिक कर्ज 52.3 लाख करोड़ था जो मार्च 2023 तक 102.5 लाख करोड़ हो गया है यानि 5 साल में लगभग दोगुना। चौंकाने वाली बात यह है कि इस दौरान कमर्शियल बैंक से लोन की सालाना औसतन 14त्न बढ़ोतरी हुई है जबकि गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएससी) का कर्ज 24त्न की दर से बढ़ा है। संख्या में कम होने के बावजूद कमर्शियल बैंकों की कनेक्टिविटी बेहतर और आसान लोन प्रक्रिया की वजह से उनका प्रचार प्रसार तेजी से होना, शोचनीय विषय लगता है। एनएसएसओ द्वारा किए गए सर्वे के मुताबिक शहरों की तुलना में ग्रामीण इलाकों में पारिवारिक उपभोग पर होने वाले खर्च में वृद्धि शहरी और ग्रामीण माहौल में अंतर पैदा कर रही है। सन 2011-12 की तुलना में 2022-23 में मासिक खर्च में ग्रामीण इलाके में 164 प्रतिशत तो शहरी इलाके में 146 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आज देश की सबसे निचले स्तर की 5% ग्रामीण आबादी अपना औसत मासिक खर्च 1441 रुपए और शहरी क्षेत्र 2087 रुपए का बतला रही है, वहीं शीर्ष की 5% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में औसत मासिक खर्च 10581 रुपए और शहरी क्षेत्र में 20846 रुपए का आंकड़ा बता रही है। इस सर्वे से एक बात स्पष्ट रूप से समझ में आती है कि जहां देश विकास पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है वहीं पारिवारिक रूप से खर्चों की दरों में असीमित वृद्धि से जो दबाव महसूस किया जा रहा है वह गरीबी, बदहाली, बेरोजगारी, बेकरी के माहौल को बदल पाने में अक्षम है। हमें इस समय बढ़ती हुई महंगाई पर नियंत्रण लगाते हुए विकास के बारे में सोचना पड़ेगा ताकि इस देश में रहने वाले अपने आपको सुरक्षित और माकूल महसूस करा पाए। आर्थिक आत्मनिर्भरता के कॉन्सेप्ट पर औद्योगिक तकनीकी और इंडस्ट्रियल विकास को गति प्रदान करने के लिए मानव संसाधन की उपयोगिता और महत्व को कमजोर ना समझकर मजबूती प्रदान करना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि जहां प्रति व्यक्ति आय बढ़े वहीं खर्चों पर भी अंकुश लगाया जा सकें। प्रति परिवार आय और व्यय के हिसाब से संतुलित अर्थव्यवस्था को सबलता प्रदान करते हुए आवश्यकता और आपूर्ति के सामंजस्य को बनाने की दिशा में कोई रचनात्मक योजना का बनाया जाना अतिआवश्यक है। इससे जहां समाज में विश्वास और सहयोग का वातावरण बनेगा वहीं विकास की गारंटी भी होगी, तभी हमारी परिकल्पना का सुगठित, स्वाभिमानी भारत समृद्धता की ओर आर्थिक आत्मनिर्भरता से पहुंच सकेगा।

-डॉ. मनीष दवे, महालक्ष्मी नगर, इंदौर

क्यों महिलाएं अपने अधिकारों के लिए आज भी संघर्ष कर रही हैं?

डॉ. नीलम महेंद्र
Mob. 0091 92000-50232
drneelammahendra@gmail.com

जिस दिन किसी भी क्षेत्र में आवेदक अथवा कर्मचारी को उसकी योग्यता के दम पर आंका जाएगा ना कि उसके महिला या पुरुष होने के आधार पर, तभी सही मायनों में हम महिला दिवस जैसे आयोजनों के प्रयोजन को सिद्ध कर पाएंगे।

ईश्वर की बनाई इस सृष्टि में मानव के रूप में जन्म लेना एक दुर्लभ सौभाग्य की बात होती है। और जब वो जन्म एक स्त्री के रूप में मिलता है तो वो परमसौभाग्य का विषय होता है। क्योंकि स्त्री ईश्वर की सबसे खूबसूरत वो कलाकृति है जिसे उसने सृजन करने की पात्रता दी है।

सनातन संस्कृति के अनुसार संसार के हर जीव की भांति स्त्री और पुरुष दोनों में ही ईश्वर का अंश होता है लेकिन स्त्री को उसने कुछ विशेष गुणों से नवाजा है। यह गुण उसमें नैसर्गिक रूप से पाए जाते हैं जैसे सहनशीलता, कोमलता, प्रेम,त्याग, बलिदान ममता। यह स्त्री में पाए जाने वाले गुणों की ही महिमा होती है कि अगर किसी पुरुष में स्त्री के गुण प्रवेश करते हैं तो वो देवत्व को प्राप्त होता है लेकिन अगर किसी स्त्री में पुरुषों के गुण प्रवेश करते हैं तो वो दुर्गा का अवतार चंडी का रूप धर लेती है जो विध्वंसकारी होता है। किंतु वही स्त्री अपने स्त्रियोचित नैसर्गिक गुणों के साथ एक गृहलक्ष्मी के रूप में आनपूर्णा और एक माँ के रूप में ईश्वर स्वरूपा बन जाती है।

देखा जाए तो इस सृष्टि के क्रम को आगे बढाने की प्रक्रिया में जो जिम्मेदारियां ईश्वर ने एक स्त्री को सौंपी हैं उनके लिए एक नारी में इन गुणों का होना आवश्यक भी है। लेकिन इसके साथ ही हमारी सनातन संस्कृति में शिव का अर्धनारीश्वर रूप हमें यह भी बताता है कि स्त्री और पुरूष एक दूसरे के पूरक हैं प्रतिद्वंद्वी नहीं और स्त्री के ये गुण उसकी शक्ति हैं कमजोरी नहीं। भारत तो वो भूमि रही है जहां प्रभु श्री राम ने भी सीता माता की अनुपस्थिति में अश्वमेध यज्ञ उनकी सोने की मूर्ति के साथ किया था। भारत की संस्कृति तो वो है जहाँ कृष्ण भगवान को नन्दलाल कहा जाता था तो वो देवकीनंदन और यशोदानन्दन भी थे। श्री राम दशरथ नन्दन थे तो कौशल्या नन्दन होने के साथ साथ सियावर भी थे। भारत तो वो राष्ट्र रहा है जहाँ मैत्रैयी गार्गी इंद्राणी लोपमुद्रा जैसी वेद मंत्र दृष्टा विदुषी महिलाएं थीं तो कैकई जैसी रानीयां भी थी जो युद्ध में राजा दशरथ की सारथी ही नहीं थीं बल्कि युद्ध में राजा दशरथ के घायल होने की अवस्था में उनकी प्राण रक्षक भी बनीं। लेकिन इसे क्या कहा जाए कि स्त्री शक्ति के ऐसे गौरवशाली सांस्कृतिक अतीत के बावजूद वर्तमान भारत में महिलाओं को सामाजिक रूप सशक्त करने की दिशा में सरकारों को महिला दिवस मनाने जैसे विभिन्न प्रयास करने पढ़ रहे हैं। समझने वाली बात यह है कि आज जब हम महिलाओं के अधिकारों की बात करते हैं और लैंगिग समानता की बात करते हैं तो हम मुद्दा तो सही उठाते हैं लेकिन विषय से भटक जाते हैं। मुद्दे की अगर बात करें, तो आज महिलाएं हर क्षेत्र में अपने कदम रख रही हैं। धरती हो या आकाश आईटी सेक्टर हो या मैकेनिकल समाजसेवा हो या राजनीति महिलाएं आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रही हैं। और अपनी कार्यकुशलता के दम पर अपनी प्रतिभा का लोहा भी मनवा रही हैं।आज विश्व के अनेक देशों के शीर्ष पदों पर महिलाएं विराजमान हैं। इसके अलावा आज के आत्मनिर्भर भारत के इस दौर में अनेक महिला उद्यमी देश की तरक्की में अपना योगदान दे रही हैं। लेकिन यह तसवीर का एक रुख है। तस्वीर का दूसरा रुख है 2021 की एक सर्वे रिपोर्ट जिसमें यह बात सामने आती है कि 37 प्रतिशत महिलाओं को उसी काम के लिए पुरुषों के मुकाबले कम वेतन दिया जाता है। 85 फीसद महिलाओं का कहना है कि उन्हें पदोन्नति और वेतन के मामले में नौकरी में पुरुषों के समान अवसर नहीं मिलते। लिंक्डइन की इस सर्वे रिपोर्ट के अनुसार आज भी कार्य स्थल पर कामकाजी महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है। महिलाओं को काम करने के समान अवसर उपलब्ध कराने के मामले में 55 देशों की सूची में भारत 52 वें नम्बर पर है। इसे क्या कहा जाए कि हम वैश्विक स्तर पर महिला दिवस जैसे आयोजन करते हैं जिसमें महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार देने की बातें करते हैं लेकिन जब तनख्वाह, पदोन्नति, समान अवसर प्रदान करने जैसे विषय आते हैं तो हम 55 देशों की सूची में अंतिम पायदानों पर होते हैं।

जाहिर है कि जब इस मुद्दे पर चर्चा होती है तो अनेक तर्क वितर्कों के माध्यमों से महिला सशक्तिकरण से लेकर नारी मुक्ति और स्त्री उदारवाद से लेकर लैंगिक समानता जैसे भारी भरकम शब्द भी सामने आते हैं। और यहीं हम विषय से भटक जाते हैं। क्योंकि उपरोक्त विमर्शों के साथ शुरू होता है पितृसत्तात्मक समाज का विरोध। यह विरोध शुरू होता है पुरुषों से बराबरी के आचरण के साथ। पुरुषों जैसे कपड़ों से लेकर पुरुषों जैसा आहार विहार जिसमें मदिरा पान सिगरेट सेवन तक शामिल होता है। जाहिर है कि तथाकथित उदारवादियों का स्त्री विमर्श का यह आंदोलन उदारवाद के नाम पर फूहड़ता के साथ शुरू होता है और समानता के नाम पर मानसिक दिवालियेपन पर खत्म हो जाता है।

हमें यह समझना चाहिए कि जब हम महिलाओं के लिए लैंगिग समानता की बात करते हैं तो हम उनके साथ होने वाले लैंगिग भेदभाव की बात कर रहे होते हैं। इस क्रम में समझने वाला विषय यह है कि अगर यह लैंगिग भेदभाव केवल महिलाओं द्वारा पुरुषों के समान कपड़े पहनने या फिर आचरण रखने जैसे सतही आचरण से खत्म होना होता तो अमेरिका और यूरोपीय संघ जैसे तथाकथित विकसित और आधुनिक देशों में यह कब का खत्म हो गया होता। लेकिन सच्चाई तो यह है कि इन देशों की महिलाएं भी अपने अधिकारों के लिए आज भी संघर्ष कर रही हैं। दरअसल महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जब हम महिला अधिकारों के लिए लैंगिग समानता की बात करते हैं तो उसके मूल में एक वैचारिक चिंतन होता है कि एक सभ्य और विकसित समाज अथवा परिवार अथवा एक व्यक्ति के रूप में महिलाओं के प्रति हमारा व्यवहार समान,हमारी सोच समान, हमारा दृष्टिकोण समान, समान कार्य के लिए उन्हें दिया जाने वाला वेतन पुरुष के समान और जीवन में आगे जाने के लिए उन्हें मिलने वाले अवसर समान रूप से उपलब्ध हों। जिस दिन किसी भी क्षेत्र में आवेदक अथवा कर्मचारी को उसकी योग्यता के दम पर आंका जाएगा ना कि उसके महिला या पुरुष होने के आधार पर, तभी सही मायनों में हम महिला दिवस जैसे आयोजनों के प्रयोजन को सिद्ध कर पाएंगे।

–डॉ. नीलम महेंद्र

व्यंग्य

नई पीढ़ी नई सोच

–डॉ टी महादेव राव
अक्कय्या पालम
विशाखापटनम (आंध्र प्रदेश)
मो. 9394290204
mahadevraot@gmail.com

''क्या बात है? आंखें बहुत लाल हैं। कल रात सोए नहीं क्या?''

''कल रात ही नहीं, अब किसी भी रात मुझे नींद नहीं आएगी। जब तक मैं अपने लक्ष्य को हासिल न कर लूं। सारे दिन और रातें जागरण में ही गुजरेंगे।''

''अच्छा! ऐसा क्या संकल्प ले लिया तुमने''

''मेरा लक्ष्य है – सरकारी नौकरी हासिल करना।''

''वाह! बहुत अच्छा लक्ष्य है, लेकिन इसके लिए नींद को त्यागने की क्या जरूरत है?''

''ग्रुप, सिविल, आरआरबी, स्टाफ सिलेक्शन कमीशन इस तरह बहुत सारी सरकारी नौकरियों के लिए होने वाली परीक्षाओं में पास होने के लिए पढ़ना होगा न?''

''इतनी मेहनत से सरकारी नौकरी हासिल करके क्या करना चाहते हो?''

''क्या करना चाहूंगा? और क्या सोऊंगा।''

''क्या??''

''तुमने ठीक ही सुना है भाई! आंख भर नींद लेने के लिए ही मैं सरकारी नौकरी पाना चाहता हूं।''

''यह बात मेरी समझ में कुछ आई नहीं। कितना बढ़िया घर है और तुम दफ्तर में सोना चाहते हो?''

''घर में बीवी चावल नहीं है, किराना नहीं है, लेकर आइये। बच्चों की फीस भरनी है जाइए। सारा दिन बीवी की खिटपिट सुनने से बेहतर है, सरकारी कार्यालय में आराम से जी भर के सोएं।''''

''ओहो! दफ्तर में कुर्सी तोड़ते हुए सोना चाहते हो तुम?''

''ऐसे दफ्तर में जॉब मिल जाए जिसमें कोई झंझट न हो, तो उसकी कुर्सी जैसा आरामदेय, स्वर्ग जैसा सुखदेय और क्या हो सकता है? सोने के लिए सरकारी सुरक्षित और शांत जगह कोई है बताओ? और सच कहा जाए तो यह बात मैं नहीं कह रहा हूं। राष्ट्रीय हरित ट्रिब्यूनल के सदस्य डंके की चोट पर कह गए हैं– सरकारी अधिकारी दफ्तरों में सो रहे हैं और जब तक हम कोई आदेश न दें तब तक कोई काम नहीं कर रहे हैं। कहते हैं वह कुछ लोग प्रदूषण नियंत्रण मंडल के अधिकारियों की कार्यशैली पर आग उगल रहे थे।''

''तुम्हारी अवसरवादिता को लाखों नमन। उनकी गालियों को भी इस तरह सकारात्मक रूप से लेकर तुम सरकारी नौकरी पाने के लिए दिन रात एक कर रहे हो। उसके लिए खाना पीना सोना छोड़कर मेहनत कर रहे हो। जैसे ही वह नौकरी मिलेगी, खर्राटे भरते हुए आराम से सो जाओगे।'' अभी तक यही तो बता रहा हूं तुम्हें भैया! और अधिक जानकारी चाहिए आपको? किसलिए काम नहीं कर रहे हो, पूछने वाला कोई भी नहीं होता, क्योंकि किया जाने वाला काम एक पहाड़ की तरह इकट्ठा हो गया होता है। इसलिए हम क्या काम कर रहे हैं इस पर किसी को कोई स्पष्टता नहीं है। अगर ऊपर का अधिकारी पूछता है तो उसे पहाड़ दिखा कर कह सकते हैं कि कितना सारा काम है और अकेला में क्या कर सकता हूं? फिर क्या.... आराम से जी भर के सोते रहो।''

''ओ तेरी! बंद कर तेरी नींद का रामायण। अगर सरकारी अधिकारी काम नहीं करेंगे तो क्या जनता चुप रहेगी शिकायत नहीं करेगी?''

''अधिकतर जनता समाज में होने वाले दुर्व्यवहार, आलस्यता और भ्रष्टाचार को सहने की आदी हो हो गई है। अब यह बताओ भैया! हमारी आंखों के आगे इतने सारे गलत काम होते रहते हैं। क्या हमने कभी उनके खिलाफ आवाज उठाई? कभी किसी से कुछ पूछा? किसी भी तरह की अनुमति के बिना तुम्हारी इच्छा के अनुसार कोई भी व्यापार कर सकते हो! जितना चाहो प्रदूषण फैला सकते हो! जांच करने वाले सोते रहते हैं। नियमों को पुड़िया बना कर किसी भी सुविधा के बिना स्कूल और कॉलेज चला सकते हैं। जांच करने वाले नींद में रहते हैं। मतलब यह है कि जान बूझकर की गई गलतियों के लिए प्रायश्चित के कई कई उपाय उपलब्ध हैं, तो ऐसे लोगों को काम में दखल क्यों देना? बेवजह हमारी नींद खराब होती है है न?''

''सरकारी नौकरी में इतनी सारी सुविधाएं और इतने सारे आराम के विकल्प?''

''मतलब सभी सरकारी नौकरियां में इतनी सुविधाएं नहीं हैं। लेकिन कुछ नौकरियां तो बेगारी और पूरी तरह पूरी मेहनत के बल पर चलाना होता है। उसमें कितना भी काम करो, खत्म ही नहीं होता और ऊपर के अधिकारी भी संतुष्ट नहीं होते। कुछ जगहों पर के अधिकारी ईमानदारी और आदर्श जैसे शब्दों को पकड़े खुश रहते हैं, कोल्हू के बैल से पिसते रहते हैं। खुद तो सोते ही नहीं, औरों को भी नहीं सोने देते। ऐसे लोगों की कार्यकुशलता और शैली भ्रष्टाचारी और आलसी अधिकारी पसंद नहीं करते। यह अलग बात है अगर हुआ तो उन्हें कहीं अंडमान निकोबार जैसे जगहों पर भेज देते हैं प्रतिनियुक्ति पर।''

''यह बताओ –तनख्वाह लेने के बाद भी काम न करना, गलत है कि नहीं?''

''आपकी सोच कहां 1947 में अटकी पड़ी है। इसमें गलत क्या है? नेतागण चुनाव के पहले कई वादे किए कई आश्वासन दिए। चुनाव जीतने के बाद अपने चेहरे छुपाते हैं कि नहीं? अब यह बताओ सरकारी कर्मचारी क्या किसी को कोई वादा करता है कि यह काम करूंगा वह काम करूंगा। नहीं न। तो उनकी गलती कैसे निकाल सकते हो और यह गलत कैसे होगया? इसलिए प्रतिभा संपन्न मुझ जैसे लोग ही सरकारी पदों के लिए मुनासिब हैं, जैसा कि मैं सोचता हूं।''

''तुम्हें अपने आप पर बहुत भरोसा है भाई!''

''बड़े भैया! भरोसा मुझे खुद पर नहीं, इस व्यवस्था पर है। जब तक सबसे बड़ा रुपैया की सोच है और यह समाज पैसों पर आधारित है। पैसा ही सारे काम काज करता रहेगा और आदमी की कमजोरियों पर और हमारे चारों ओर होते अनैतिक आचार व्यवहार पर जब तक राजनीतिक नेताओं के वरदहस्त हैं, ऐसे में कर्मचारी क्या करेंगे– जी भर के सोने के अलावा?''

''इसीलिए तुम जैसे लोग सपना देखते रहते हो कि सरकारी नौकरियां मिल जाए और पैर पर पैर धरे सो सको।''

स्त्री और शोषण

स्त्री एक शोषित जीव है। उसे इंसान मानने के लिए ही लोगों का मन तैयार नहीं है। शोषण उसके आभूषण का पर्याय बन चुका है। आज के जमाने में ऐसी बात! जी हाँ, शोषण के तौर–तरीके बदल गए मगर खत्म होने की जगह बढ़ गए हैं। रूढ़ियों पर भारी मूसल चलाकर बहुत ही मुसीबतों के बाद वह देहरी के बाहर अपने अस्तित्व को खोज सकी है, फिर भी उसका जीवन अंधेरी सड़कों पर भटक रहा है। कार्यालय में, स्त्रियों को समान वेतन, अच्छे कार्य संबंधों, और संबाधित अवसरों का हक नहीं है। उन्हें समाज में अपनी पूर्ण क्षमता को विकसित करने के लिए न तो समान अवसर हैं और यदि अवसर उपलब्ध हों तो उन्हें प्राप्त करने के लिए साधन न देकर उसके हाथ काट दिए जाते हैं। घरवालों की निगरानी से दूर सरलता से शारीरिक शोषण के लिए उपलब्ध होती है ,यह सबसे निकृष्ट पहलू है। घर में, पुरुष के अहंकार का चाबुक उसकी पीठ लहूलुहान करता ही रहता है। पत्नी, बहन, बेटी और माँ के रूप में वह तरह–तरह के प्रतिबंधों को ढोती है। साथ ही दबी–कुचली स्त्रियों को आदर्श चरित्र बताकर शोषण स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जाता है। परिवर्तन केवल छोटे से वर्ग तक सीमित है। कामकाजी स्त्री की और भी अधिक दुर्गति है। व्यवसाय और घर दोनों की पूरी ज़िम्मेदारी उसके कंधों पर डाल कर उसे किसान का बैल बना दिया जाता है। उसके बाद तंज कसा कर उसका मानसिक स्वास्थ्य खराब किया जाता है। आज स्त्रियों के प्रति सकारात्मक परिवर्तन की आवश्यकता है। शोषण रोकने के लिए घर– बाहर सुरक्षित माहौल, शिक्षा का पूरा हक, और समाज में समानता का पूरा समर्थन आवश्यक है। शोषण के विरुद्ध कुछ आवश्यक कदम उठाए जाना बेहद जरूरी है :

1. शिक्षा और साक्षरता– नारियों को उचित– अनुचित के ज्ञान के लिए शिक्षा द्वारा जागरूक करना होगा।

2. मीडिया का सही उपयोग– मीडिया को सही रूप से उपयोग करके शोषण के खिलाफ जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है। ट्रोलर्स पर त्वरित कार्यवाही होनी चाहिए।

3. सामाजिक संगठनों का समर्थन– शोषण के खिलाफ संगठित होने के लिए स्थानीय समुदायों और सामाजिक संगठनों का समर्थन प्राप्त करना होगा। उनके संपर्क सूत्र सरलता से उपलब्ध हों।

4. कड़ी कानूनी कार्रवाई– शोषण के मामलों में त्वरित और कड़ी कानूनी कार्रवाई करने का अधिकार होना चाहिए। नारी आपत्तियों के लिए सहायक सेवाएं स्थापित होनी चाहिए।

5. स्वास्थ्य एवं सुरक्षा– नारियों के लिए स्वास्थ्य पर ध्यान देना प्राथमिकता होनी चाहिए। अपनी सुरक्षा के गुर बचपन से ही सिखा देना चाहिए। 6. परिवार की शिक्षा– घर में भी शोषण के खिलाफ ,लड़कियों को उचित ज्ञान देना चाहिए।

7. प्रेरणा स्थापना– उदाहरण के रूप में उन महिलाओं की कहानियों को शेयर करें जो शोषण से निकलकर सफलता की ओर बढ़ीं हैं। सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक पहचान पाने के लिए स्त्रियाँ न जाने कितने अँधड़ों का सामना कर रही हैं। समाज में स्त्रियों को उनके विचारों और अभिवृद्धियों को समर्थन मिलना चाहिए, जिससे एक समृद्ध और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना हो सके।

–दीप्ति सक्सेना, बदायूँ, उत्तरप्रदेश

अच्छे लोग अक्सर खुद के लिये बुरे सिद्ध होते हैं...

सीधे -साधे संत प्रवृत्ति के करुणावान लोग दूसरों के लिये अच्छा बनने के फलस्वरूप खुद के लिये बुरे बन जाते हैं !उनका खुद का जीवन दुखों से भर जाता है! वो खुद का जीवन जी ही नहीं पाते हैं !उनके खुद के जीवन में प्रत्येक कदम पर कांटें बिछ जाते हैं! दूसरों की वाहवाही खुद की बर्बादी का प्रमाण है! लेकिन अच्छे लोग करुणा के सिवाय किसी को कुछ दे भी तो नहीं सकते! लेकिन यह क्रूर दुनिया इसके बावजूद भी अच्छे लोगों को पलभर भी सुख चैन से नहीं जीने देती है !मानवता का यह इतिहास है! आहार, निद्रा, भय और मैथुन हरेक प्राणी में होते हैं! धर्म ही मनुष्य को पशु-पक्षियों से अलग करता है! लगता है कि आज के मनुष्य में धर्म बिलकुल सोया हुआ है! 200-300 वर्ष के चमत्कारी एकतरफा भौतिक विकास ने मनुष्य को पूरी तरह से उपयोगितावादी बना दिया है! आज का उच्च शिक्षित भौतिकवादी मनुष्य हरेक व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिति और अवसर को उपयोगिता के दृष्टिकोण से देखता है! यहाँ तक कि इन्होंने धर्म, नैतिकता और योगाभ्यास को भी निरा भौतिकवादी रुप दे दिया है!

ओशो कहते हैं कि संसार झूठ का व्यापार है! यहाँ झूठे सफल और भोलेभाले लोग असफल होते हैं! जिंदगी की दौड में सच्चे और भोलेभाले लोगों की गति फिसड्डी है! सच्चे और भोलेभाले लोगों की कोई पूछ नहीं है !और ऊपर से कथाकारों, संतों, मुनियों, स्वामियों, संन्यासियों, मौलवियों, पादरियों के सच्चा इंसान बनने के उपदेशों की मूसलाधार बारिश! सच्चे और भोलेभाले लोग इनके दुष्चक्र में फंसकर अपना सब कुछ गंवा देते हैं! न झूठ के पैर होते तथा न हो झूठों के पैर होते हैं! इसीलिये ऐसे व्यक्तियों की गति हवाई होते हैं! झूठ के संसार में ऐसे व्यक्तियों की गति राकेट की तरह होते हैं! झूठ और झूठों से भरे इस संसार की वास्तविकताओं को समझ लो! लेकिन ध्यान रहे कि बीच में तथाकथित सारे सुधारक टाईप के महापुरुष झूठ और झूठे लोगों के रक्षक बनकर खड़े हैं! ये लोग कभी भी वास्तविकता से परिचित नहीं होने देंगे! कुछ लोग राजनीति की ठेकेदारी कर रहे हैं तो कुछ लोग धर्म की ठेकेदारी कर रहे हैं! कुछ लोग नैतिकता के ठेकेदार बने बैठे हैं तो कुछ लोग योगाभ्यास के ठेकेदार बने बैठे हैं! सत्यवादी भोलेभाले लोग इनकी चक्की के पाटों के बीच पिस रहे हैं!

जो भी इस वास्तविकता को समझाने की कोशिश करता है, उसे चार्वाक, भौतिकवादी, जडवादी, नास्तिक, अधर्मी, पापी कहकर गालियाँ दी जाती हैं! यह बात जितनी सच 5000 वर्ष पहले थी, उतनी ही सच समकालीन वैज्ञानिक कहे जाने वाले आधुनिक युग में भी है! हुआ होगा बाहरी विकास, लेकिन भीतरी विकास में मनुष्य जगत् आज भी हजारों वर्ष पहले खड़ा हुआ है! स्वार्थ निकालने के सिवाय किसी को किसी से कोई मतलब नहीं है! धरती के प्रत्येक कोने पर उच्छृंखल भोगवादी जीवनशैली व्याप्त है! सनातन भारतीय अनुशासित संयमित जीवनशैली तो अपवादस्वरूप ही देखने को मिल रही है! हांलाकि लाख- लाख करोडी हजारों धर्मगुरु, योगाचार्य और सुधारक सनातन भारतीय जीवनशैली की आड में अपनी दुकानें चला रहे हैं! लेकिन परिणाम कहीं भी दिखलाई नहीं पड रहा है! वजह केवल एक ही है! वह वजह है इन तथाकथित धर्मगुरुओं की सात्विकता से रहित तामसिक भोगवादी- पदवादी- अहंवादी जीवनशैली !इनको सनातन भारतीय जीवन -मूल्यों के प्रचार व प्रसार से कोई लेना देना नहीं है !बस किसी तरह से इनकी दुकानें चलती रहें! धर्म, अध्यात्म, योगाभ्यास, नैतिक -मूल्यों आदि को माध्यम बनाकर अरबों- खरबों रुपये का मालिक बनकर धनपतियों वाला जीवन जीना ही इनका लक्ष्य है !पद, प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि,धन, दौलत, अहंकार, जमीन, जायदाद आदि अर्जित करना ही इनके जीवन का मुख्य उद्देश्य है! भीतर कुछ तथा बाहर कुछ अन्य ही! इसीलिये जनसामान्य भारतीय इनसे कुछ सीख नहीं ले रहा है! बडे और पढ़े-लिखे कहे जाने वाले भारतीयों को धर्म,नैतिकता, योगाभ्यास, जीवन -मूल्यों आदि की जरूरत है ही नहीं !इनको तो अनैतिक, गलत,अनुचित, अनुशासनहीन, धर्महीन और मूल्यरहित होने की छूट मिली हुई है! जनसामान्य धर्म करे तो भी पापी कहलाता है लेकिन बडे लोगों का पाप करना भी धर्म की श्रेणी में गिना जाता है! शासन, प्रशासन और कानून भी इनका कुछ नहीं बिगाड़ पाता है! भौतिक सुविधाओं का वास्तविक भोग तो यही लोग कर रहे हैं!

इसी भेदभावपूर्ण दुष्ट व्यवस्था से हताश होकर भारतीय ग्रामीण लोग जहाँ प्रतिदिन नशे पर 143 रुपये खर्च करते हैं तो शिक्षा पर 125 रुपये खर्च करते हैं! यह हमारे विकास की एक झलक है! विश्वगुरु और विश्व महाशक्ति बनने का दावा करने वाले हमारे देश की साढ़े इक्यासी करोड़ आबादी को मुफ्त में भोजन देना पड रहा है! यानि भारत के साढ़े इक्यासी करोड़ लोगों के पास प्रतिदिन खाने के लिये अनाज का भी जुगाड़ नहीं है! विडम्बना है कि आज तक भारत का कोई भी चुनाव किसान,खेतीबाड़ी, मजदूर, बेरोजगारी, शिक्षा,शोध, कानून व्यवस्था, बिजली, पेयजल,आवास, चिकित्सा, सुरक्षा को मुद्दे बनाकर नहीं लडा गया है! विभिन्न सरकारें विकास के मूलभूत कार्य तो करवाती नहीं हैं तथा आकंठ भ्रष्टाचार में डूबी हुई होती हैं! केवल इसीलिये लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ करते हुये नकली, झूठे, बेसिरपैर के मुद्दों के बल पर चुनाव जीते जाते रहे हैं !जनसामान्य को सम्मोहित करना कोई असंभव कार्य नहीं है! लगातार जनसामान्य के चेतन मन को बेहोश करके अवचेतन मन में जानबूझकर जबरदस्ती से गलत जानकारियां ठूंसी जा रही हैं! राष्ट्रीय मीडिया की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है! धनाड्य लोग रुपये खर्च करते हैं! धर्मगुरु लोग नेताओं के लिये थोक में वोट का जुगाड़ करते हैं! इस प्रकार के भ्रष्ट सिस्टम से चुने गये नेताओं से धनाड्य और धर्मगुरु लोग पांच वर्ष तक बहुतायत से गैरकानूनी काम करवाते हैं! इन तीनों के दुष्ट ठगबंधन में जनसामान्य किसान, मजदूर, मेहनतकश तथा मध्यमवर्गीय लोग पिसते रहते हैं! ऐसी व्यवस्था को लोकतंत्र कहें या लट्ठतंत्र कहें या लूटतंत्र कहें या कुछ अन्य कहें?

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार अच्छा, भला, मेहनती, देशभक्त और ईमानदार कहे जाने वाले किसान की सतरह राज्यों में प्रतिवर्ष आमदनी 20000 रुपये है यानि 1700 रुपये मासिक !इतने कम रुपये में गरीब के बच्चों की पढाई,चिकित्सा, भोजन, बिजली, पानी, कपडा, आवास, शादी ब्याह आदि किस तरह से हो सकेंगे? हरियाणा की कृषि समस्याओं पर आधारित कृषि विश्वविद्यालय की पत्रिका के अनुसार पौने तीन एकड के किसान को खेतीबाड़ी और पशुपालन से प्रतिवर्ष सवा लाख के लगभग घाटा हो रहा है! लेकिन सत्तासीन लोग किसान की आय को दौगुना कर दिये जाने का ढिंढोरा पीट रहे हैं!

इस देश की शिक्षा- व्यवस्था में अच्छे, भले,प्रतिभावान और मेहनती शिक्षक को कुछ भी नहीं करने दिया जा रहा है !इस देश की राजनीति में जमीन से जुड़े हुये देशभक्त, ईमानदार, कर्मठ, गरीब और निर्दोष लोगों को नहीं आने दिया जा रहा है! इस देश के सनातन धर्म और संस्कृति में मौजूद विभिन्न संस्थाओं में वास्तविक धार्मिक, संस्कृति प्रेमी और शुद्धात्मा सज्जन लोगों को निकट भी नहीं आने दिया जा रहा है! हरेक क्षेत्र में अपराधी,ठग ,भ्रष्टाचारी, लूटेरे, धूर्त, झूठे, वायदाखिलाफ और चोर- उचक्कों की भरमार है! अच्छे कहे जाने वाले लोग छिपते घूम रहे हैं जबकि अपराधी प्रवृत्ति के भ्रष्टाचारी लोग सरेआम अट्टहास करते हुये विचरण कर रहे हैं! अच्छे लोग डरे हुये हैं तो अपराधी लोग निर्भय हैं !अच्छे लोगों का सुख -चैन गायब है जबकि बुरे लोग निस्संकोच जीवन जी रहे हैं! एक दिन तो अच्छों को भी मरना है तथा बुरों को भी मरना है! लेकिन जब तक जीते हैं तब तक अच्छे लोग दुखी, प्रताड़ित,भयग्रस्त, अभावग्रस्त जीवन जीते हुये देखे जा सकते हैं !शास्त्रीय मर्यादाएं और संविधान सम्मत कानून आदि केवल अच्छे, भले, सज्जन, गरीब, गरीब, असहाय लोगों के पालन करने के लिये हैं!

हमारे नेता इतने देशभक्त और राष्ट्रवादी हैं कि वोट तो हिंदी मांगते हैं लेकिन बजट गुलामी की भाषा अंग्रेजी में पढते हैं! अपराध करने वाले भी भारत भाषाभाषी हैं तथा जिन पर अपराध होते हैं वो भी भारत भाषाभाषी हैं लेकिन सजा अंग्रेजी भाषा में मिलती है! अधिकांश न्यायालयों में वकील और न्यायाधीश अंग्रेजी भाषा में गिटपिट करते रहते हैं! न तो वादी को कुछ समझ में आता है तथा न ही प्रतिवादी को कुछ समझ में आता है! इसके बावजूद निर्णय आ जाते हैं! इस तरह की मूढता विश्वगुरु भारत में ही संभव है !यह पाखंड और ढोंग की परिकाष्ठा है! ऐसे विषम और हास्यास्पद हालात में अच्छे और भले लोगों को कौन पूछता है? किसी तरह लुक- छिपकर जीवन जीने की कोशिश रहती है! कहीं आडे चढ गये तो व्यवस्था सारे अच्छेपन, भलेपन, ईमानदारी, मेहनत, निष्ठा,सज्जनता आदि को पिछवाड़े से बाहर निकाल देगी!

-आचार्य शीलक राम, दर्शन -विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
मो. 9992885894

(कहानी) अनपढ़

अरे महेश,तुम !तुम यहाँ कैसे !आओ आओ बैठो।

जतिन ने लोकल बस में चढती हुई भीड़ में अपने कॉलेज के दोस्त महेश को देखकर बोला !तभी महेश भीड़ को चीरता हुआ जतिन के पास किसी तरह आ कर बैठ गया।

बातचीत में जतिन ने बतलाया कि वह तो पुणे में एक कम्पनी में काम करता है और यहाँ बॉम्बे में कुछ काम के सिलसिले में आया था,और आज रुक कर कल शाम तक वापस चला भी जायेगा !अच्छा तो तुम रुके कहाँ हो जतिन ने पूँछा तो महेश ने बतलाया कि वह आज ही आया है ,आते ही सीधे यहाँ चला आया,अब जाकर किसी होटल में रूम लेगा किराये से। ''अरे नही नही, अब तुम मेरे साथ मेरे घर चलो !आज वहीं रुकना !कल सन्डे भी है ,हम साथ मिलकर ढेर सारी बातें करेंगे !बहोत अच्छा लगेगा।'' ''पर तुम्हारी पत्नी, मेरा मतलब भाभी जी को बुरा तो नही लगेगा कि किसे पकड़ लाये हो ''महेश बोला।'' अरे नही भाई, मेरी पत्नी तो बहोत अच्छी है। उसे किसी के घर आने से कोई परेशानी नही होती !वह भोजन भी बहोत अच्छा बनाती है !एक बार खा कर तो देखो, ''जतिन बोला।'' अच्छा चलो ,तुम कहते हो तो ठीक है चलता हूँ,पर तुमने खाने का नाम लिया तो मुझे तो भूख ही लग आई !मैने आज सुबह से कुछ खाया भी नही है !आजकल बाजार में रास्ते चलते कुछ खाने का मन भी नही होता है ''मुकेश बोला।''अरे नेक काम में देर कैसी !मेरे पास घर की बनी कुछ मठरियाँ पड़ी हैं जब तक इन्हें ही खा लो।'' जतिन बोला।

''अरे ये तो बहोत स्वस्दिष्ट हैं बिल्कुल घर जैसा स्वाद है इनमें।''

''हाँ,तो ये घर की ही बनी है न।''

''घर की?'' महेश ने पूँछा।

''हाँ ,मेरी पत्नी ने बनायीं हैं !क्यो?''

''वैसे ही आजकल की लड़कियाँ कहाँ ये सब करती हैं न इसलिये।

मेरी पत्नी को तो घर का कोई काम नही आता और जो आता भी है ,वह तो वो भी नही करना चाहती।'' महेश बोला।

''कोई बात नही महेश, सभी की अपनी अपनी रुचि, अपने अपने शौक होते हैं !हमें किसी की तुलना किसी से नहीं करनी चाहिये !चलो अब घर भी आने वाला है !घर पर बैठ कर आराम से चाय पियेंगे और बातें करेंगे।'' जतिन ने कहा। और अब दोनों टैक्सी से घर आ गये। घर पर रामू काका ने दरवाजा खोला और जतिन ने महेश को ड्राइंग रूम में बैठाया और अंदर चला गया !महेश ने देखा कि घर तो ज्यादा बड़ा नही !दिख रहा था ,पर इतने व्यवस्थित तरीके से सम्भाला गया था कि बड़ा बड़ा और आकर्षक लग रहा था !तभी महेश हाँथ में चाय और पकौड़े ट्रे में लिये आया और बोला क्या सोच रहे हो भाई !इसे अपना घर समझो और आराम से बैठ कर चाय के आनन्द लो।

''पर जतिन, इतनी जल्दी तुमने पकौड़े कैसे बनवा लिये।'' महेश बोला।

''अरे,कोई मुश्किल काम नही !मैंने रास्ते से ही सुगंधा को फोन कर दिया था और उसने सारी तैयारी करके रखी थी।''

सुगंधा नाम सुनते ही महेश एक पल को तो ठिठक गया फिर उसने अपने आपको हिलाया !अरे ये वो सुगंधा हो ही नही सकती !कहाँ वो अनपढ़ ,गंवार और कहाँ यह सुघड़ गृहणी।

अब तो रात भी होने लगी थी और महेश ने अभी तक जतिन की पत्नी सुगंधा को देखा भी नही था । जतिन ने बताया कि वह कहीं पर म्यूजिक और एरेबिक कि क्लासेस लेती है ,तो वह इन लोंगों को चाय नाश्ता देकर अपनी क्लास में चली गई थी पर महेश बड़ा बेचैन था !उसे बार बार ऐसा क्यों लग रहा था कि कहीं यह वही सुगंधा तो नही है जिसके रिश्ते को महेश ने बड़ी बेदर्दी से ठुकरा दिया था !थोडा देर के लिए वह अकेला क्या हुआ,एक एक करके सारी घटनायें आँखों के सामने आने लगीं कि ,कैसे उसका और सुगंधा का सम्बंध तय हो गया था और जल्दी ही उनकी शादी भी होने वाली थी, यही कारण था कि दोनों आपस में बातें भी करने लगे थे,हालांकि उसके परिवार वालों को इनका बात करना पसन्द नही था पर,लड़के की जिद के आगे वे लोग कुछ नही बोल पाये थे,पर अचानक एक ऐसा झंझावात आया कि सब कुछ बदल गया !महेश को आज अपनी माँ के ऊपर बड़ा गुस्सा आ रहा था क्योंकि माँ की कोई सहेली के !कहने पर ही तो उसका और सुगंधा का सम्बंध टूटा था !टूटा क्या था ,इन लोंगों ने जिद करके तोड़ा था ,यह कह कर कि, सुगंधा पढ़ाई में कमजोर है।

''अरे, यह सब पहले क्यों नहीं सोचा !जब सम्बन्ध नही करना था तो हमारी बेटी को अपने प्रेम में क्यों फंसाया !उससे दो महीने तक बातें क्यों करते रहे।'' उसके पिता क्रोध में बोले थे।

अब महेश क्या बोलता !सब कुछ तो उसकी माँ का किया धरा था।

अचानक मीना चाची नैंसी का रिश्ता लेकर जो सामने आ गई !और नैंसी सुगंधा की अपेक्षा ज्यादा पैसे वाले घर की थी ,तो माँ को लगा कि नैंसी के साथ ब्याह होने से अच्छा दहेज मिलेगा और एक बड़े घर से सम्बन्ध जुड़ने से समाज में उनकी छवि भी ज्यादा अच्छी हो जायेगी !इसी कारण महेश के परिवार वालों ने सुगन्धा को अनपढ़ कहकर ठुकरा दिया था !हालाँकि उसकी मां कहती जा रहीं थी कि सुगंधा पढ़ाई में भले ही बहोत होशियार नही है ,पर वह हर प्रकार के गृह कार्य में दक्ष है ,और खाना तो इतना अच्छा बनाती है कि लोग उँगलिया ही चाटते रह जाते हैं ,और कम्प्यूटर का भी जरूरी वाला ज्ञान है उसे,,पर धन के लोभ के आगे सारे गुण तो निर्गुण हो गये थे !सुगंधा ने भी एक दो बार फोन करके महेश को अपने प्यार का वास्ता दिया ,लेकिन सब व्यर्थ ही रहा और फिर महेश ने अपनी माँ की जिद के आगे झुक कर ,नैंसी से विवाह कर ही लिया !नैंसी का ख्याल आते ही उसका मुँह कसैला हो गया !कैसी है वह !एक औरत जैसे कोई तो गुण उसमें नही है !एक रईस पिता की बिगड़ी सन्तान !नैंसी उसकी पत्नी बनने लायक कहीं से भी नही थी पर, अब क्या हो सकता था !महेश इन्हीं खयालों में डूबा था कि जतिन ने आकर उसकी तन्द्रा भंग कर दी। कहाँ खोये हो महेश !चलो खाना लग गया !खाना खाते हैं।

हाँ, हाँ, चलो चलो !कहते हुए दोनों भोजन की मेज पर आ बैठे !भोजन तो सच में बड़ा ही स्वादिष्ट बना था। रामु काका गरम गरम पूरी , कचौरी ला ला परोस रहे थे तो खाने में और मजा आ रहा था !बस अब और नही ले पाऊँगा कहते हुये जैसे ही महेश ने काका को रोका वैसे ही अंदर से सुगन्धा प्लेट में गरम कचौरियाँ लेकर आ गई मनुहार करने !अरे एक मेरे हाथ से ले लीजिये कहते हुये जैसे ही वह आगे बढ़ी तो दोनों की दृष्टि एक दूसरे से मिली और दोनों सुगन्धा और महेश एक क्षण को तो ठिठक ही गये,पर सुगन्धा तुरत सम्भल गई और दोनों की प्लेट में कचौरियाँ रख कर वापस किचन में चली गई पर महेश ,उसका तो बड़ा ही बुरा हाल था !न कह सकता था और न ही पचा सकता था !उसका तो जतिन से बात करने में भी मन नहीं लग रहा था !किसी तरह वह रात व्यतीत हुई !जतिन ने बहोत आग्रह किया कि दो चार दिन और ठहर जाये पर महेश अपनी पीड़ा उससे कैसे कहे !कहना तो वह बहोत कुछ चाहता था पर हिम्मत ही नही जुटा पाया और सुबह बड़े ही भरे मन से महेश अपने घर लौटा !घर पहुँचते ही देखा कि घर में रोज जैसी ही किच किच चल रही थी !आज कामवाली बाई सुनीता के हाँथो से कोई एक प्लेट टूट गई थी शायद ,इसीलिए नैंसी बड़ बड़ कर रही थी कि, तुझे इतना भी समझ में नही आता कि चीजें कितनी महंगी आती हैं अनपढ़ कहीं की....अनपढ़..जैसे ही महेश ने अनपढ़ शब्द सुना,उसका तो खून जी उबल गया !वह जोर से चीखता हुआ बोला'' तुम सुनीता को जो चाहे बोलो, मगर अनपढ़ कभी मत बोलना !तुम्हारे जैसे पढ़ी लिखी होने से तो अनपढ़ होना ज्यादा अच्छा।''

नैंसी ने आज पहली बार महेश का यह रूप देखा था !वह समझने की कोशिश करने लगी कि सुनीता को अनपढ़ कहना आज महेश को इतना बुरा क्यो लगा।

-ममता श्रवण अग्रवाल, अपराजिता
ऑथर, सतना, मो. 8319087003

टूम अर टूम रो टण्टो

आज का महामानव मोहमाया के जंजाल में ऐसा जकड़ा है कि उसे गहनता से सोचने, समझने, मनन करने का या तो समय नहीं है या वह इसकी जहमत नहीं उठाना चाहता। ऐसे लगता है कि इंसान आधुनिकता की दिखावटी चक्काचौंध में चौंधिया गया हैं। आज वह एकांत में बैठकर अपने फिजूल खर्चों पर विचार करने की हिम्मत नहीं करता अगर कोई हिम्मत कर भी लेता है तो परिवार के सदस्य उसकी बात को फीकी बात, पुरातनपंथी सोच का ताना कसते हुए हाशिये पर डाल देते हैं जहां से वह पुन: उस बात को पुरजोर से उठा ही नहीं पाता है। जबकि आसमान छूती महंगाई के दौर पर एक आम व्यक्ति अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाकर ही पार पा सकता है। आज हम अपने को परिवार, समाज, रिश्तेदारों में बड़ा धनाढ्य दिखाने के चक्कर में फिजूल खर्ची कर रहे हैं, जिनमें से कुछ रोजमर्रा के खर्चे होते हैं जिन पर कम धन खर्च होता है और कुछ खर्चे ऐसे होते हैं जो कभी-कभी किये जाते हैं लेकिन महंगे इतने होते हैं कि सालों की जमा पूंजी एक झटके में शून्य हो जाती है और हम कर्जदार हो जाते हैं।

सभी के घरों में ऐसा ही एक खर्चा है जिसे मां बोली में ''टूम'' यानि सोने के गहने कहते हैं। इस पर सबसे ज्यादा अनावश्यक खर्चा होता है जिसकी सहभागी बनती है हमारी मातृशक्ति। हमारी मां, बुआ, बहिन, पत्नी, बेटी शादी-विवाह, भात, छूछक, गृहप्रवेश इत्यादि अवसर आने से पहले ही घर के मुखिया को टूम(गहने) बनवाने के लिए माहौल तैयार करने लगती है। इसके लिए वो अपनी पड़ोसी व रिश्तेदारों का हवाला देती है कि उनकी बहू, बेटी के पास तो इस तरह की टूम(टेवटा, हार, मटरमाला, गजरा, बोरला, मांगटीका, गलकंठी, टड्डा, मैळ, हंसली, बाजूबंद, झूमका, इत्यादि) है। उसका डिजाईन बहुत बढ़िया है, मेरा डिजाईन बहुत पुराना हो गया, मुझे अब वह अच्छा नहीं लगता। इस तरह की तमाम बातें कही जाती हैं ताकि घर का मुखिया नई टूम करवाने की हामी भर दे। अगर मुखिया पैसे का बहाना करेगा तो तपाक से जबाव मिलेगा कि *पुरानी टूम दे दयो, थानै तो बस टूम गी घड़ाई देणी है* यानि नये गहने का मैकिंगचार्जेज देना होगा, आखिर में महिला सदस्यों के भावनात्मक दबाव के आगे बिना विचार किये मैकिंगचार्ज के नाम से हां कहनी पड़ती है, क्योंकि हमारी तर्कशीलता इतनी विकसित नहीं है कि हम उसे तर्क के माध्यम से समझा सकें। हम अपने घर या आस-पड़ोस में देखते हैं कि सभी महिलाएं नियमित रूप से नाक में नथ या कोका, कान में बाली या झुमका, गले में चैन या छोटा पैंडल, अंगूली में एक अंगूठी व पैर में पायल-बिछिया ही पहनती है और बाकी सोना (अनावश्यक) घर में कहीं छुपाकर रखने की परम्परा रही है। लेकिन आजकल सोने के भाव और डिजाईन खराब होने के भय से उन्हें बॉक्स सहित छुपाया जाना संभव नहीं है। इन गहनों के चोरी होन का भय हमेशा मन को चिंतित किये रहता है, कई बार गहनों पर झुंझाल आती है और लगता है कि *यह टूम कम और टण्टो ज्यादा है।* हमारी इसी चिंता को बाजारवाद ने गहराई से समझते हुए बैंक में लॉकर की व्यवस्था चालू कर दी ताकि हमारे से सुरक्षा के नाम पर प्रतिमाह किराये वसूली की जा सके। हम भी चिंता से बचने और सुरक्षा के लिए बैंकों में लॉकर किराये पर लेकर रखने लगे गए हैं, जिसका सालाना खर्चा साईज के हिसाब से तय है। छोटे साईज के लॉकर का विभिन्न बैंकों में किराया 2500 से 5000 रुपये व बड़े साईज का सालाना किराया 5000 से 10000 रुपये तक है। जो अनावश्यक गहनों को रखने का अनावश्यक सालाना खर्च जीवनपर्यंत आपको वहन करना पड़ता है। अनावश्यक सोना खरीद कर रखने से वह उपयोग में नहीं आता और उसका वजन भी बढ़ता नहीं है। अगर यही पैसा किसी कार्य में लगायें तो उससे परिवार को आर्थिक संबल और बच्चों को रोजगार मिलेगा।

आज परिवारों में जिस तरह शिक्षा बढ़ी है उसके अनुपात में ऐसी फिजूलखर्ची ज्यादा हुई है जिसका मुख्य कार्य केवल दिखावा है। आज सोने पर हो रहे अनावश्यक व्यय को रोकने की जरूरत आर्थिक रूप से कमजोर या मध्य वर्ग को सबसे ज्यादा है। जिसके पास अथाह धन संपदा है उसके कोई फर्क नहीं पड़ता। मध्यम वर्ग अपनी रोजना की मजदूरी में से पाई-पाई जोड़कर इक्कट्ठी करता है और बिना सोचे समझे एक दिन महंगे गहने खरीद कर उन्हें अलमारी में छुपाकर रखने को मजबूर होता है। ये गहने साल में दो-चार बार से ज्यादा नहीं पहने जाते हैं। यहां सोचने और विचारने वाली बात यह है कि हमारे इस कार्य से फायदा किसको हुआ, अगर विक्रेता (ज्वैलर्स) को हुआ तो क्या हमने पाई-पाई विक्रेता को आर्थिक संबल देने के लिए जोड़ी है।

इस बात को कुछ लोग नकारते हुए सोना खरीदने की पैरवी जरूर करेंगे और कठिन समय में काम आने का हवाला जरूर देंगे। अगर आप यह सोच कर सोना खरीद रहें हैं कि कठिन समय में काम आयेगा तो फिर आप गहने की जगह सोने का बिस्कुट या सोने गी डळी खरीदो ताकि आप पर मैकिंगचार्ज का भार नहीं पड़ेगा। आज प्रत्येक दस ग्राम यानि एक तोला के भाव का 8 से 10 प्रतिशत मैकिंगचार्ज लगता है। जो प्रत्येक दस ग्राम पर 5000 से 8000 रुपये होता हैं, यह राशि खरीदार के कभी काम नहीं आती है। अगर आपको ये गहने कठिन समय में बेचने पड़े तो मैकिंगचार्ज का पैसा वापिस नहीं मिलेगा। आज कमेरे वर्ग के परिवारों को गहनों के आर्थिक बोझ से बचाने की शक्त जरूरत है और यह जिम्मेदारी हमारी बहिन, बेटियों को आगे आकर लेनी चाहिए ताकि अपने घर को अनावश्यक आर्थिक भार से बचाया जा सके। आज हमें गहनों के खर्च में कटौती करके शिक्षा के खर्च को बढ़ाने की बहुत आवश्यकता है। शिक्षा का मंदिर ही एक ऐसा स्थान है जहां पर खर्च किया हुआ धन बच्चे सूद सहित वापिस ला सकते हैं। इसलिए हमें टूम (गहनों) पर अनावश्यक धन व्यय करने से हमें बचना चाहिए।

-पदमेश कुमार किसान
मृत्युभोज छोड़ो अभियान 9460001515

गर्मी में नींबू 20 के तीन ,दस का एक क्या इसे ही कहते महंगाई?

गन्ने के रस की दुकानमें ग्राहक ने दुकानदार से कहा भाई जरा नीबू ,अदरक,पुदीना भी गन्ने के साथ रख कर रस तैयार करना । दुकानदार ने कहा दस का गन्ने का रस का गिलास और उसमे दस का नीबू डालूंगा तो मुझे क्या बचेगा । बिना नीबू का मिलेगा । ग्राहक बोलै चलेगा भाई । तो जरा नींबूड़ा नींबूड़ा का गाना ही बजा दो। सोचना और समझाना वर्तमान में मुश्किल होता जा रहा । समझाने में बहस जन्म ले लेती है । अक्सर कई बार ऐसा हो जाता है की सामने वाला क्या सोच रहा है या फिर हम उसी अंदाज मे उसे देख रहे है मगर उसके बारे मे सोच नहीं रहे है । यानि ध्यान कही और है । ऐसे मे सामने वाला कोई नई बात सोच लेता है बात को पहले समझे बगैर दुसरो को कह देना भी एक नासमझी मानी जाएगी । एक वाक्या वो यूँ था - बाबूजी ने साहब के बंगले पर जाकर बाहर खड़े नौकर से पूछा साहब कहाँ है ?उसने कहा 'गए' यानि उसका मतलब था की साहब मीटिंग में बाहर गए ।बाबूजी ने ऑफिस में कह दिया की साहब गए इस तरह उड़ती - उड़ती खबर ने जोर पकड़ लिया ।।खैर ,कोई माला, सूखी तुलसी ,टॉवेल आदि लेकर साहब के घर के सामने पेड़ की छाया में बैठ गए । घर पर रोने की आवाज भी नहीं आरही थी ।सब ने खिड़की में से झाँक कर देखा ।साहब के घर में कोई लेटा हुआ है और उस पर सफ़ेद चादर ढंकी हुई थी । सब घर के अंदर गए और साथ लाए फूलो को उनके ऊपर डाल दिया । वजन के कारण सोये हुए आदमी की आँखे खुल गई ।मालूम हुआ की वो तो साहब के भाई थे जो उनसे मिलने बाहर गांव से रात को आये थे। सब लोग असमझ में थे की बाबूजी को नौकर ने बात समझे बगैर सही तरीके से नहीं की ।इसमें बाबूजी का कसूर नहीं था । कुछ दिनों बाद बाबूजी रिटायर होकर अपने गाँव चले गए । गाँव में उन्हें वहां के लोग नान्या अंकल कह कर पुकारते थे ।गाँव मे रिवाज होता है की मेहमान यदि किसी के भी हो अपने लगते है । गाँव मे उन्हें अपने घर भी बुलाते है ।वर्तमान में नींबू के भाव आसमान पर है ।लोग महंगाई नही पा रहे वाकई ना समझ है ।वो इसे मौसम की मार समझ रहे तो कई लोग महंगाई का अनुमान लगा रहे थे ।ऐसे में एक वाक्या याद आता है कि- गर्मी की छुट्टियों मे मेहमान आए बुरा न लगे इसलिए सामने वाले अंकल जो की बाहर खड़े थे जिन्होंने ही घर का पता मेहमान के पूछने पर बताया था । पता बताने के हिसाब से और नेक इंसान होने कव्यंग्य नाते गर्मी के मौसम मे ठंडा पिलाने हेतु पप्पू को दौड़ा दिया कहा कि-''जा जल्दी से नान्या अंकल को बुला ला।'' मेहमान कहाँ से आए की रोचकता समझने एवं आमंत्रण कि खबर पाकर वो इतना सम्मानित हुए जितना की कवि या शायर कविता/गजल पर दाद बतौर तालियाँ और वाह -वाह के सम्मान से जैसे नवाजा गया हो ठंडा पीने के लिए जैसे ही नान्या अंकल को मेहमानों के सामने भाभीजी ने निम्बू का शरबत दिया शरबत का गिलास होठों से लगाया तो नान्या अंकल को कुछ ज्यादा ही खट्टा लगा। सोचा शायद महंगाई के मारे शक्कर के भाव बढ गए हो इसलिए शक्कर ही कम डाली हो । दूसरा घूंट भरा तो फिर कहना ही पड़ा - भाभीजी इसमें आप शक्कर डालना शायद भूल गई हो ।भाभीजी बोली -क्या करे भाई साहब इनको डायबिटीज है इस कारण शक्कर कम ही डालने की आदत सी हो गई है । बढ़ती महंगाई पर पर्दा डालने की कोशिश मृगतृष्णा सी लगती दिखाई देने लगी । नान्या अंकल ने कहा- भाई शरबत बहुत ही खट्टा है, पीने से मेरे दांतों को बहुत तकलीफ़ होती है । महंगे नीबू के कारण शक्कर का भी बहुत अच्छा लग रहा था । जरा इमली को ही लिजिये, इमली का नाम सुनने पर या चूसने पर सामने वाले के मुँह मे भी पानी आ जाता है और जम्हाई लोगे तो तो सामने वाला भी मुह फाड़ने लग जाता है । कई लोग महत्वपूर्ण मीटिंगों मे आप को सोते या जम्हाई लेते मिल ही जायेंगे । ऐसा शरीर मे क्यों होता है ये मै नहीं जानता जो आप सोच रहे हो और ये भी नहीं जानता की नीबू अचानक महंगे क्यों हुए थे । विदेशो में घूमे जाने के हजारो किस्से नान्या अंकल मेहमानों को बता रहे मगर मेहमानों ने कहा- अंकल अपने देश में घूमने लायक एक से बढ़कर एक जगह है ,बस इस बात का वे बुरा मान गए और कहने लगे की मेरे 'मन की बात' को कोई ठीक तरीके से समझते क्यूँ नहीं और वे उठ कर चल दिए । कई सालो बाद वही मेहमान फिर गाँव मे आये तो उन्होंने नान्या अंकल को देखा जो की ज्यादा बुढे हो गए थे लेकिन अपने विचारो पर थे अडिंग । उनकी नजरे भी कमजोर हो गई ,किन्तु सामने वाले मेहमानों ने उन्हें पहचान ही लिया। वे एक दूसरे के कानो मे खुसर-पुसर कर कहने लगे यही तो है अंकल। उन्होंने सोचा की शायद उस समय हमसे ही कोई समझने की भूल हो गई हो क्षमा मांगने का और उनसे कहने और समझने का यही मौका है । सबने नान्या अंकल से माफी मांगी। नीबू जगह अब नान्या अंकल को छाछ पीने को दी । तब मन में एक ही ललक थी। नया अंकल को महंगे नीबू का शरबत देना था। तब उनके चेहरे पर ज्यादा खुशी दिखती।

संजय वर्मा 'दृष्टि'
125 शहीद भगतसिंग मार्ग
मनावर जिला धार म प्र
(भारत), मो. 9893070756

व्यंग्य

अंतरात्मा के अजब-गजब खेल

किसी शायर का बड़ा मौजू शेर कुछ यों है कि-वो कत्ल भी करते हैं,तो चर्चा तक नहीं होता और हम आह भी भरते हैं तो हंगामा हो जाता है।कारण यह है कि अन्तरात्मा बड़ी विचित्र चीज हो गई है आजकल।बला! का पता नहीं कब सो जाए और कब जग जाए?जी साहब!ठीक पढ़-सुन रहे हैं आप।असल में अब आत्मा,आत्मा न रहकर,जगने-सोने का इंस्ट्रूमेंट हो चुकी है,कुछ और हो चुकी है क्योंकि इसका जब मन करे,यह वही करती है,जो इसे करना होता है।जैसे कि जब इसका मन करे,यह पलटी मार हो जाती है,जब मन करे यह घर वापसी कर लेती है,जब इसका मन करे यह सोती रहती है कुंभकर्ण की तरह और जब जगना चाहे तो बैरन ऐसी जगती है कि कइयों की नींद ही हराम कर देती है।गजब की बात यह है कि एक राज्य में जब अंतरात्मा जगती है तो हंगामा खड़ा हो जाता है और यदि यही बेचारी आत्मा किसी दूसरे राज्य में जगती है,तो कोई इसकी चर्चा भी नहीं करता?असल में यह भी आत्मा के जगने पर ही होता है जी क्योंकि छोटे पर्दे पर चीख-चीखकर दिन-रात कां-कां करने वालों की भी आत्मा,नेताओं जैसी हो गई है।उनकी आत्मा भी कभी जगकर इस चैनल में फुदक जाती है,कभी उस चैनल में कूद जाती है।कभी-कभी तो यू-ट्यूब पर अपना ही घरबरिया चैनल शुरु कर देते हैं।वैसे आत्मा के इस ट्रेंड को देखकर तो अब जनता भी डरने लगी है कि कहीं ये नेता-वेता वाली आत्मा साधारण जनों में ना घुसने लग जाए।साहब फिर तो गजबे-खेला हो जाएगा कि कल को नेता-वेता की आत्मा किसी जनसामान्य में घुसी और पड़ौसी की बीबी को परेशान देखकर यदि आत्मा जग-वग गई तो भईया कमाल ही हो जाएगा क्योंकि फिर तो जो तमाशा होगा,उसकी तो सोशल मीडिया पर ऐसी ब्रेकिंग न्यूज़ बनेगी कि ब्रेकिंग न्यूज़ ही खुद पर शरमा जाएगी और कुछ भी कहने की स्तिथि में नहीं होगी।वैसे नेता-वेता की आत्मा जन सामान्य में घुसने का एक फायदा भी हो सकता है कि जैसे ही जनसामान्य लोगों में घुसेगी,हो सकता है काफी दिनों कोमा में जाकर सोई रहे मगर याद रखिए जिस दिन जनता की अंतरात्मा जग गई तो फिर जिन नेताओं की आत्मा जगती-सोती रहती है,उनकी खैर नहीं क्योंकि इधर जनता की आत्मा जगी,उधर नेता जी की नेतागिरी झड़ी।वैसे जनता की आत्मा जिस दिन जगकर-सजकर रजनी बाले की तरह सवाल करने लग गई,तो उसी क्षण नेता लोगन की तो खटिया खड़ी हो जाएगी और इस जद में बड़े मियां-छोटे मियां सब के सब लपेटे जाएंगे।वैसे खांसलीवाल बाबा की तर्ज पर कहना पड़ेगा कि-सब मिले हुए हैं जी।अच्छा!एक और हैरत की बात यह है कि यह तथाकथित नेताओं की आत्मा का जगने का एक खास वक्त है।यह एक तो तब जगती है जब खेला करना हो,उस टाइम तो यह बिना कुछ कहे जग जाती है साहब और ऐसी जगती है कि जगती-जगती की मूक प्यास को भी धूल चटा देती है।दूसरा यह तब जगती है जब भी बड़े वाले घर के चुनाव हो,तब यह अचानक जग जाती है और जगने के बाद इसकी खास विशेषता यह होती है कि इसका पता नहीं चलता कि यह जगी हुई है या सोई हुई है क्योंकि जगते हुए भी काम सारे यह सोती हुई आत्मा जैसे करती है और काम हो जाने के बाद वाचाल हो जाती है और इतनी वाचाल कि फिर यह जगी हुई आत्मा खांटी एंकरों की भी बोलती बंद कर देती है।वैसे अक्सर यह आत्मा पूरे चार साल ग्यारह महीने से दस दिन पहले जगती है तब इसका खेल सिर्फ फुदकने का ही होता है।बिल्कुल उस पंजाबी गाने की तरह कि कदे इस फूल पर,कदे उस फूल पर,यार मेरा तितलियां वरगा,ठीक वैसे यह चार साल ग्यारह महीने बाद जगी आत्मा इधर-उधर भागती रहती है ताकि अगले चार साल ग्यारह महीने तक मखमली बैड पर सोने का इंतजाम हो सके और हैरानी तो यह भी है कि यदि इस आत्मा के सोने के बैड को किसी ने भी हिलाया-डुलाया तो यह जग सकती है बीच में ही और खेला कर सकती है।अक्सर इस आत्मा ने अपने जगने के मौके सेट कर रखे होते हैं कि कब जगना है और किन शर्तों पर जगना है।वैसे ये जगने वाली अन्तरात्माएं बड़ी गजब की चीज हैं साहब!सुना है बिना लिए-दिए तो ये कभी जगती ही नहीं क्योंकि ऐसे जगने का क्या फायदा?वैसे हमने तो यही सुना था कि आत्मा सो परमात्मा पर कलयुग में तो कुछ भी हो सकता है जी।यहाँ तो आत्मा भी सोये रहती हैं और मनमाने तरीके से जग भी जाती हैं।सुना तो यही था कि आत्मा न जन्मती है,न मरती है और ना ही कुछ और।खैर,कलयुग में सब कुछ संभव है,वैसे खुदा भी आसमां से जब जमी पर देखता होगा....खैर,छोड़िए।

-कृष्ण कुमार निर्माण, करनाल,हरियाणा, मो. 9034875740

बड़े आकार के वाद्य यंत्रों का भी महत्व है

एक जानकारी के मुताबिक स्विट्जरलैंड में दुनिया के सबसे बड़े अल्पाइन हॉर्न फेस्टिवल प्रसिद्ध वाद्य यंत्र 'अल्पाइन' जोकि एक मीटर लंबे और चौड़े कप के आकर एवं कई जगह ये आठ मीटर के होते है। इन्हें कई नामों से पुकारा जाता है। विदेशी लोक संगीत जो कि आमतौर पर ऑस्ट्रेलिया आल्पस ,जर्मनी में बाबेरियनआल्पस ,और फ्रेंच आल्पस स्विस आल्पस में संगीत के लिए इस्तेमाल किया जाकर उत्सव को सेलिब्रेट किया जाता है।भारत के आदिवासी क्षेत्रों में विशेषकर झाबुआ, आलीराजपुर ,धार आदि जिलों में भगोरिया उत्सव के दौरान लोक संगीत हेतु बड़े आकार का ढोल नृत्य घेरे के मध्य खड़े होकर लोक संगीत बजाया जाता है। इसके संगीत में चुंबकीय आकर्षण होता है। इस ढोल की प्रेक्टिस व तैयारी एक माह पूर्व से की जाती है। कहने का मतलब ये है की लोक संगीत से जुड़े बड़े आकार के वाद्य यंत्रों का महत्व आज तक बरक़रार है। इन वाद्य यंत्रो से निकले लोक संगीत के आनंद की बात ही कुछ और है। लोक संगीत,लोक गीतों लोक नृत्य, लोक गायन , लोक कला कृति आदि के उपासकों को इन्हें संजोए रखने का कार्य प्रशंसनीय तो है ही साथी भावी पीढ़ी को इनकी विशेषता से परिचित भी करवाता है।

-संजय वर्मा 'दर्ष्टि', 125,बलिदानी भगतसिंह मार्ग (लोहार पट्टी) मनावर (धार) मप्र

बस कैसे न कैसे करके ऊंगली करना है... काफिला

अब बात यों हुई कि हम तो सीधे चुपचाप बैठ , अपने हर एप पर घूम रहे थे एप कहें तो हर वेबसाइट जिस पर हमारी जिंदगी में आनंद , सुकून के कुछ पल मिलते हैं बिताने के लिये तो हम कहाँ थे अरे हाँ ! मार्निंग वॉक कर रहे ज़रा सुबह-सुबह सोशल मीडिया पर यही समझ लो ।

वीना आडवाणी
तन्वी
नागपुर, महाराष्ट्र

अब हुआ यूं कि हम चलते-चलते सभी की पोस्ट देख रहे थे तभी हर बार की तरह इस बार भी घुमा फिरा के फिर एक पोस्ट पर नज़र पड़ गई । देखा, पढ़ा, सुना उस पोस्ट के हर एक विवरण को ध्यान से फिर सोचा चलो भाई इसी पोस्ट पर दूसरों की तरह ज़रा अपने भी विचार हम लिख दें । जैसा की पहले के लेख मैं मैंने बताया था कि फर्श से अर्श तक जाने वालों से सीखो , जलने कुढ़ने से अपना ही खून जला खुद का ही नुकसान न करें । ठीक उसी तरह से मिलते जुलते भावों से भरा लेख है ये मेरा बस थोड़ा बहुत अंतर है । अब क्या करें मेरा मन ही ऐसा है कि कोई किसी को जबरदस्ती ऊंगली करे तो थोड़ी फोकट की राय मैं भी दे देती । अरे फोकट की राय सुनकर यदि इक्का-दुक्का समझ जाए तो इसमें कोई बुराई थोड़ी है बस समझाना हमारी कलम का कर्तव्य, समझना न समझना ऊंगली कर्ताओं का कर्तव्य । अरे भाई क्यों किसी को ऐसे नहीं तोड़ सके तो वैसे तोड़ने की कोशिश कर रहे ? बहते पानी के दरिया को कोई फर्क नहीं पड़ता बीच में पत्थर आने पर वो तो उस पत्थर के ऊपर या साईड से कहीं से भी रास्ता बना के आगे बढ़ता ही जाएगा । वो तो आगे बढ़ जाएगा पर ऊंगली कर्ता का क्या वो तो वहीं अपना सा मुंह लिए खड़ा ही रह जाएगा धरा का धरा अपना सा मुंह लिए ये सोचेगा खुद के मन में ही , की अरे मैं फलाने को इतना कुछ सुना रहा पर फलाने के कान पर तो जूं भी नही रेंग रही । तो चलिए बताती हूं की असल में मेरी नज़र किस गलियारे में और कस तरह के पोस्ट पर गयी थी । दरअसल मेरी नज़र गई एक काफिले के ऊपर बनाए गये विडियो पर और उस विडियो पर कसे गये कटू शब्दों से भरे व्यंग्य पर । सोचा चलो फिर इन कटू शब्दों में सौम्यता भर इसे ही स्याही बना अपनी कलम में भर कागज़ों में उतार दूं ध्यान देने योग्य बात पुन: कह रही कटू शब्दों में सौम्यता का रसपान भर स्याही बनाना ।

चलो तो उस विडियो के अंतर्गत एक काफिला दिखाया गया , हो सकता है वो काफिला बहुत ही अमीर आदमी का हो जैसे अंबानी जी , टाटा जी , बिड़ला जी या हो सकता है किसी भी उच्च अधिकारी का हो या हमारे देश मतलब हमारे परिवार के वरिष्ठ उच्चाधिकारी का हो खैर क्या फर्क पड़ता है की काफिला किसका था । अब उस काफिले के अंतर्गत ये दिखाया गया की एक अधिकारी की कार के आगे पीछे अनेक कारें थी । अब ये बताइए की इसमें बुरा मानने वाली बात क्या है भला ? ये तो बहुत जरूरी है देश के किसी भी अमीर आदमी या उच्चाधिकारी की सुरक्षा ।

अरे ! आज-कल के वातावरण को देखो तो कितना घोर कलयुग है आंखें खुली हैं सब जानते भी हैं फिर भी ? यहाँ तो आए दिन लोग खबरों में सुनते , अखबारों में पढ़ते कि फलाने शहर , गली मौहल्ले मे खुलेआम किसी न किसी पर कहीं न कहीं हमला हुआ या मार दिया या अपहरण अन्य कितने अपराध हमारी आम जनता के साथ हो रहे । सोचने वाली बात यह है कि यहाँ तो आम जनता ही आम जनता का शिकार कर लेती है । पता ही नहीं चलता बहुत से अपराधों में तो की अपराधी कौन है । कौन कब कहाँ से घात लगाए बैठा कुछ कह नहीं सकते । अब ये तो हुई आम जनता की बात , कहने का मतलब यह है कि आम जनता ही जब दहशत में जी रही अपने आस-पास की जनता के बीच रहकर तो ज़रा तो सोचा होता कि ये तो उच्चाधिकारी या देश के सर्वश्रेष्ठ अमीर , अभिनेता वगैरह-वगैरह किसी का भी काफ़िला हो सकता है । इनके तो आम जनता से अधिक घात लगाने वाले शिकारी छुप छुपाकर बैंठे होंगे तो कैसे इनकी सुरक्षा में भला कोई चूक करे । साधारण शब्दों में विडियो बनाने वाले के भाव यह थे की इतनी सारी कारें आगे पीछे लेकर घर से निकलने वाला या जो भी हो वो बहुत पैसा उड़ा रहा । अब सोचो मेरे विचारों को पढ़ क्या अभी भी यही कहेंगे कि पैसों की बर्बादी हो रही या पेट्रोल की जो चीज़ जरूरी है वो तो जरूरी ही है ना । अब बहुत ज्यादा जरूरत से भरी उपयोगी चीज़ को भी व्यर्थ बताना मेरी नजरों में तो कहीं से भी सही नही । इंसान को कोई भी बात कहकर ऊंगली करने से अच्छा है की उस के कारणों को शांतिपूर्ण समझे और जब समझ में आ जाए तो मेरी तरह ऊंगली को ही सौम्यता भरी स्याही में तब्दील कर उकेर दो अपने विचारों को कागज़ों पर । अरे भाई भला ये कागज़ जैसी बेहतरीन चीज़ हम सभी के लिए तो बनी है जिस पर मन के भीतर उठे ज्वार-भाटा, प्रेम , दु:ख दर्द , खुशी सभी को लिख अपने भाव या सब बाँट सकते हम इन कागज़ों के साथ । चलो अब मैं बहुत टहल ली अपनी कलम भावों संग भी कागज़ों के गलियारों में खो कर अरे अपने भावों संग । अब ज़रा कुछ काम ही कर लूं घर का।

झूठी प्रशंसा

मृणाल शहर से लोकप्रशासन की पढ़ाई पूरी कर गाँव आया। उसे लगा कि गाँव अब भी वैसा ही है, जैसा गाँव से शहर जाते समय था। मन बड़ा दुखी हुआ। न गाँव में सड़कें थीं, न ही बिजली। पानी का अब भी रोना था। सड़क के दोनों ओर मक्खियों की दावत रहती। चार साल बाद मृणाल शहर से गाँव आया तो उसे लगा था कि गाँव की सारी परेशानियाँ खत्म हो गई होगी। पहले जैसा नहीं होगा किंतु यहाँ तो कुछ और ही था। यह देखकर मृणाल मन ही मन आग बबूला होने लगा। मृणाल अपने पिता जी से बोला- पिता जी, आप लोग किसे वोट देते हैं; और क्यों? मुझे समझ नहीं आता। अब हमारे गाँव के हर नागरिक साक्षर हो गए हैं फिर भी....। पिता जी ने कहाङ्क इन सब बातों को छोड़ो और बताओ तुम्हारी तबीयत कैसी है? नहीं पिता जी; मुझे यह ठीक नहीं लग रहा है। मैं लोकतंत्र की पढ़ाई करने गया था। और मेरा ही गाँव.....! शर्म महसूस हो रही। मृणाल रूआँसा स्वर में बोला। देखो बेटा; चुनाव का समय आता है तो नेता, जनता को कई प्रकार से प्रलोभन दे कर अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं, हम एक से भला क्या होता है? बात तो सही है पिता जी। मृणाल ने अपना सिर हिलाया,और शांत हो कर कमरे की ओर बढ़ा। अगले दिन चौपाल में कुछ वृद्धजन बैठे किसी विषय पर चर्चा कर रहे थे। मृणाल वहाँ पहुँचा। उनकी बातें सुनी; लेकिन किसी का चरण स्पर्श नहीं किया। वृद्धजन हैरान नजरों से मृणाल की तरफ देखने लगे, और आपस में बोलने लगे वाह! बेटा मृणाल; आज शहर जा कर संस्कार शहर में ही छोड़ आए। मृणाल बिना कुछ बोले वहाँ से निकल गया। वह गाँव के किसी भी लोगों से सीधे मुँह बात नहीं करता था।पता नहीं क्या करता है ये लड़का; बस! इधर से उधर मंडराता रहता है, कभी तालाब के किनारे मछुवारे संग बैठा रहता है, कभी अकेले बगीचे में घूमता है, समझ नहीं आता, कौन जाने शहर में क्याङ्क्या गुल खिलाया होगा।बात करना तो दूर देखता तक नहीं। कहीं ये.....! इन सब बातों से मृणाल को कोई फर्क नहीं पड़ता था। अपने में ही मस्त रहता था। एकाएक गाँव में बदलाव आने लगा। हर घर रौशनी फैलने लगी। पानी की परेशानी भी लगभग कम हो रही थी। गाँव के सरपंच महोदय आकाश जी कुछ युवाओं के साथ बातें करते दिखाई दिए। मृणाल भी वहीं पहुँचा, क्या बात है सरपंच जी! अब धीरेङ्कधीरे विकास होने लगा है, इस गाँव में बरसों बाद अच्छे से दीवाली मनाई जाएगी। उनकी प्रशंसा की मानो मृणाल पुल बाँधने लगा। सरपंच जी की बाँछे खिल उठी। झूठी मुस्कुराहट के साथ सरपंच जी बड़े खामोश रहते। मृणाल उनकी ठिठोली करते नहीं थकता। एक दिन नेताजी और कुछ साथीगण, सरपंच महोदय का सम्मान करने और अपनी तारीफें बटोरने गाँव में आये। सभी इस आयोजन से खुश तो थे ही लेकिन हैरान भी थे। अचानक बदलाव कैसे आ रहा है! सरपंच जी कुछ बदलेङ्कबदले नजर आ रहे हैं। मंच में नेता और उनके सहयोगी जो सिर्फ चापलूसी करते थे; सभी आए। नेता जी का गजमाला से सरपंच महोदय ने स्वागत किया। नेता और गाँव के सरपंच जी एक ही थाली के चट्टेङ्कबट्टे थें। एकङ्कदूसरे की तारीफ करते नहीं थकते। गाँव के विकास के बारे में नेता जी ने सरपंच को धीरे से कान में पूछ ही लिया। क्या बात है! आकाश जी आखिर आप अचानक विकास की ओर कैसे बढ़ गए? अपने जेब से पैसा लगाते हैं या..... कुछ और इरादा है....! सरपंच जी ने हैरानी से नेता की तरफ देखा। यही बात तो मैं आपसे पूछने वाला था! आखिर कौन है? जो विकास करवा रहा? कुछ दिनों से जेब खर्च के भी पैसे नहीं मिल रहे। जेब में चवन्नी तक नहीं है, सरपंच जी ने नेता के कान में फुसफुसाते हुए कहा। माइक पकड़ कर नेता जी ने सरपंच को शाबाशी दी। मृणाल और उनके पिता जी चैन-ओ-सुकून से बैठे भाषण सुन रहे थे लेकिन सच्चाई भी सामने लाना जरूरी था। मृणाल मंच में पहुँचा; नेता और सरपंच जी को मक्खन लगाते हुए बधाई दी और बोले वाह! आकाश जी आपके कार्यों की तो दाद देनी पड़ेगी। ये सब आपने किया है? मैं बता नहीं रहा बल्कि, आपसे पूछ रहा हूँ।मृणाल ऊँचे स्वर में बोला।इतने सालों से इस बंजर धरती में हरियाली कैसे नहीं आ रही थी; क्या गाँव वालों ने कभी इस ओर ध्यान दिया? नहीं न! आएगी भी कैसे, सरपंच जी की बुरी हालत कैसे हो गई? किसी ने सोचा है? गाँव विकास की ओर बढ़ रहा है ये तो खुशी की बात है न! सरपंच जी का पसीना निकलना शुरू हो गया। कार्यों के पैसे कहाँ जाते थे? क्या करते थे?किसी ने जानने की हिम्मत नहीं की; तो फिर अगली बार इन्हें वोट देने का कोई अधिकार नहीं है। सरपंच की पोल खुली। गाँव वालें आपस में खुसुरङ्कफुसुर करने लगे। नेता जी भड़क उठे; कौन हो तुम? तुमको हमारी बेइज्जती करने का हक किसने दिया? मृणाल ने दो टूक उत्तर दिया- मैं इस पूरे जिले का ''नया सी.ई.ओ.'' (मुख्य कार्यपालन अधिकारी) हूँ। नेता जी को जैसे साँप सूँघ गया। और सच्चाई सामने आ ही गई।

-प्रिया देवांगन 'प्रियू', राजिम जिला - गरियाबंद, छत्तीसगढ़

राजनीति के दरवाज़ें

राजनीति में शामिल लोग आजकल खेला करने में लगे हैं। खेला करने के लिए उसके भावात्मक पहलुओं का मास्टर होना जरूरी होता है। जिन्हें खेलने का ज्ञान है, वे किसी भी क्षेत्र में स्कोर करते हैं। हाल के वर्षों में, ट्रेंड-सेटिंग करने वाला खिलाड़ियों चलन जोर-शोर से चल रहा है। पहले पहल, यह मज़ा सा लगता है, लेकिन बाद में यह कलश में बदल जाता है। खिलाड़ियों को मज़े करने की ऐसी लत पड़ जाती है कि वे कबड्डी खेल रहे होते दिखाई देते हैं, लेकिन स्कोरकार्ड में रन दर्ज होते हैं। वे नीबू और सिरके से पहले दूध को बिगाडते हैं, फिर बिगाड़ा हुआ दूध अपने घर ले जाते हैं। किसी और के बिगाड़े हुए दूध से उनके घर में पनीर का दर्जा मिल जाता है। गाय दिखाने और बकरे मारने का यह खेल शतरंज से भी ऊपर का है। उनके लिए बकरे मारना गोलगप्पे खाने जैसा है। राजनीति में चिंता व्यापक है। ''बकरे की अम्मा'' कब तक खुशियां मनाएगी! राजनीति में शामिल लोगों ने अपनी विरासत में छोटी-बड़ी सभी प्रकार की दीवारों को लांघ लिया है। इसलिए राजनीति खेल का होता है। संविधान होता ही है दीवारें गिराने के लिए। लेकिन उन्होंने दीवारें गिराने का काम नहीं किया। उन्हें दरवाजों में राजनीतिक संभावना अधिक दिखाई देती है। इसलिए दरवाजे बनाने का काम हाथ में ले लिया है। दरवाजों में खोलने और बंद करने की सुविधा राजनीति के लिए बहुत जरूरी है। नगर-नगर और गाँव-गाँव में सफल राजनीति की धूम है। घोषणा-पत्र में छोटे से बड़े नए सभी प्रकार के दरवाजों का वादा किया जाता है। दरवाजे हवा में नहीं बन सकते हैं। इसलिए दरवाजों के लिए नई दीवारों की जरुरत पड़ती है।

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
व्यंग्यकार
मो. 73 8657 8657
drskm786@gmail.com

उधर लोग दरवाजों की उम्मीद में रहते हैं और और इधर दीवारें बनती जाती हैं। धीरे-धीरे वक्त आया जब दीवारों को प्राथमिक आवश्यकता माना जाने लगा। जहां दीवारें नहीं थीं, वहां लोग दीवार बनाने लगे। अगर दरवाजे हैं, तो विकास है, अगर दरवाजे हैं, तो लोक कल्याण है, अगर दरवाजे हैं, तो सुरक्षा और सुविधा हैं। कुछ लोग इसे इंडोर या आउटडोर गेम के रूप में भी देखते हैं। लोग अपनी अपनी दीवारों में बंद होकर गर्व महसूस करने लगे, इसलिए इसे उच्चकोटि की राजनीतिक सफलता कहा गया। दरवाजे ने उन्हें अवसर दिया कि मजबूरी या जरूरत के हिसाब से कुंडी खोल लेंगे, बंद कर लेंगे। समुद्र में दीवारें नहीं होतीं हैं, इसलिए यह नहीं जाना जा सकता कि बड़ी मछलियाँ राजनीति कैसे करेंगी, उनका व्यापार कैसे चलेगा, और उनके बच्चों का क्या होगा।

हाल ही में, कुछ लोग समझ गए कि एकता में बल है। लेकिन संकीर्णता की दीवारें मज़बूत हैं, और दरवाजे छोटे हैं। सबको पता है कि कुछ-कुछ दीवारों को गिराना पड़ेगा। हालांकि दरवाजे सभी खुल चुके थे, लेकिन सिर्फ थोड़ा ही खुले रह गए थे। वे एक-दूसरे को देखते ही हंसते रहे और कहते हमारा दिल भी तुम्हारा, हमारा भी तुम्हारा है। लेकिन किसी ने दीवारें गिराने को स्वीकार नहीं किया। सबने अपनी-अपनी दीवारों पर गठबंधन के इश्तहार अवश्य चिपका लिए, पर दरवाजा पूरा नहीं खोला। 'पहले आप पहले आप' में भरोसे की भैंस पाड़ा दे कर चली गई। एक बड़ी दीवार के पीछे, एक डीजे लगातार जोर से संगीत बजा रहा था - ''कुण्डी न खड़काओ राजा, सीधे अन्दर आ जाओ राजा।''

विश्व प्रसिद्ध सेठानी घाट हनुमान मंदिर की ग्वालिन महंत कौशल्या दास बाईराम

तप और संयम की उदात्त तपोमूर्ति के रूप में महन्त कौशल्या दास को यह नगर होशंगाबाद अब नर्मदापुरम हमेशा स्मरण रखेगा। तपस्वी या संयमी जहां भी रहे उसके लिये वही आश्रम और साधना स्थली है, किन्तु जो असंयमी है उसके लिए संयम की साधना के लिये वन जाने का कोई औचित्य नहीं है। महन्त कौषल्यादास घर में रही हो या मंदिर में, जब वे बचपन में ही अपनी पाँचों इन्द्रियों पर संयम रखकर निर्दोष कर्मो में प्रवृत्त रही है तब इनपर संतत्व के परम सौन्दर्य और परमात्मा की अनन्यकृपा अहर्निष देदीप्यमान रही है, जिसमें राग-द्वेष से भरा कोई भी रागी उनसे मिलने के बाद अपने दोषों को भस्मीभूत होते देखता और उसके मन की सांसारिक भावनायें मिट जाती और उसे सत्संग तथा भक्ति की प्रेरणा देती, जिसे आत्मसात कर वह प्रसन्न हो लौटता। मृदुभाषी,वाणी में ओज तथा मार्धुय, अपने बनाये नियमों में आबद्ध वे प्रतिदिन सुबह 4 बजे उठकर नित्यकर्म से निवृत्त हो पॉच बजे से आठ बजे तक पूजा-पाठ,ध्यान कीर्तन करती और फिर भगवान का भोग बनाकर उन्हें अर्पित कर स्वयं प्रसाद पाती। सुबह 10 बजे के बाद 12 तक एकांतवास में कीर्तन करती और बारह बजे से दो बजे के बीच ही किसी से भेंट करती। संध्या वंदन के बाद रात्रि 8 बजे प्रसाद ग्रहण कर पुन: रात्रि दस बजे तक जाप-कीर्तन के पश्चात विश्राम करती और किसी के भी घर-आने जाने से बचती थी। उनका यह नियमित समय होशंगाबाद में देखने को मिलता, वृन्दावन में 29 साल रहने के दरम्यान उनकी दिनचर्या इससे भी कठोर थी।

संत कौशल्या दास हमेशा कहा करती थी कि भगवान सभी पर कृपा करते है, एकमात्र राधारानी है जिनका कृपाकटाक्ष आत्मसात करने से भगवान सहज ही कृपा करते है। वे लौकिक-पारलौकिक भोगों और साधनों को तुच्छ समझती है और मन के दोष, मन की चंचलता, विषयों में आसक्ति आदि से मुक्त होने के लिये भगवान का भजन-कीर्तन से यह सब दूर होने का संदेश देती थी। वे सभी से कहा करती थी कि भजन मन,वचन और तन तीनों से ही करना चाहिये। भगवान का चिंतन मन का भजन है, नाम-गुणगान वचन का भजन है और भगवत भाव से की हुई जीव सेवा तन का भजन है। वे उसी भजन को सर्वोत्तम बताती जो बिना किसी शर्त या बिना किसी मनोकामना के किया जाये। तन से या मन से भजन न हो सके तो वचन से किये भजन को भी वे सार्थक होना बताती और कहती कि भजन की शक्ति से सब कुछ भजन मय हो जाता है। उनका मानना था कि उन्होंने भजन-कीर्तन से ही राधारानी और भगवान की कृपा प्राप्त कर उनके दिव्य चरणों की अनुभूति का परम आनन्द पाया है और उन्हें उन्हीं दयालु राधा रानी के चरणों की शरण मिली है, जहॉ से जन्म मरण का चक्र समाप्त हो जाता है।

संत कौशल्या दास जब भी भजन करती तब उनके भजनों के शब्दों की लहरियॉ उनके मन,आत्मा में गुंजित होकर महाशून्य में होकर उनके नवम चक्र में गुंथ जाती जो नवधा भक्ति की परमानुभूति में उन्हे स्थान कराती। वे हमेषा कहती मैंने अपने को खोकर उसे पाया है, तुम अपने को जीवित रखकर उसको पुकारों, उसकी षरणमें जाओं, मन को भटकाओं नहीं, अगर तुमने जाने का फैसला कर लिया तो समझे प्रभु इतने दयालु है कि वे तुम्हारे एक कदम बढ़ाने पर दस कदम आगे आकर तुम्हें थाम लेंगें। वे बहुत ही कम बोलती थी और उन्ही से बोलती थी जो उनकी वाणी की सार्थकता को समझे, षेष को राधे-राधे कर अपनी साधना में रम जाती थी। उनकी जप और कीर्तन को लेकर हुई बात के पष्चात मैं उनके जीवन के षेष पहलुओं पर अपनी बात करूँगा। वे सभी को जप और कीर्तन का महत्व बतला कर विश्वास करके उनकी षरण में जाने को कहती और विश्वास दिलाती कि जिसने नाम जप की शरण ली है, नाम ही वह शक्ति है जो तुम्हें अपना लेगा। वे नाम-नामी में अभेद बताती थी कि नाम के द्वारा अपनाये जाकर नामी भगवान के द्वारा सहज ही अपना लिये जाते है और जिसको भगवान ने अपना लिया , उसी का जन्म और जीवन सफल है, धन्य है।

होषंगबाद के ग्वालटोली मोहल्ले में ग्वाला समाज में सन् 1920 के लगभगं पन्नालाल निगोटे के घर बेटी के जन्म की खुशी थी वे इस क्षैत्र के सबसे बड़े एवं सम्मानीय किसान के साथ ग्वाल पंचायत के अग्रणी पंचो में गिने जाते थे। पन्नालाल की धर्मपत्नी सुबहशाम तुलसी की पूजा करती थी इसलिये निगोटे परिवार की इस नवोदित बहु ने अपनी बेटी का नाम तुलसी बाई रखा जिसे सभी प्रेम से तुलसिया कहने लगे। तुलसिया के जन्म के बाद इस श्री निगोटे के घर दो बेटों ने जन्म लिया जिसमें एक रेल्वे में चले गये तथा दूसरे होशंगाबाद में पहलवानी के क्षैत्र में रामभरोस उस्ताद के नाम से चर्चा में रहे।

नर्मदातट सेठानीघाट पर ग्वालसमाज का हनुमान मंदिर के मंदिर पर काशीनाथ बाबा की परमप्रिय एवं संतत्व की पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी जानकीदास बड़ी बाईराम सेवारत थी। माता-पिता के साथ बचपन में ही तुलसिया नर्मदाघाट स्थित हनुमानमंदिर जाया करती थी और वह जिस कोकिल कंठ से श्रीकृष्ण-राधा जी के भजन गाती उसे देख संत जानकीदास ने अपने तपोवल से समझ लिया था कि आगे चलकर यह बेटी उनकी उत्तराधिकारी के रूप मे रहकर धर्मपताका लहरायेगी। चूँकि महन्त जानकीदास स्वयं ग्वालिन बतलाई जाती थी और वे नेपाल के किसी ग्वाल परिवार से थी। उस समय लोग सरल हुआ करते थे और मंदिर और भगवान के लिये हस्तमुक्त दान किया करते थे तब उन्होंने जमीनें, नगदी आदि का अम्बार लगाकर महन्त काषीराम बाबा को सोंपा था जिसकी देन यह हनुमान मंदिर था। इसके अलावा काशीनाथ बाबा ने ग्वाल समाज से मिले दान से एक बड़ी धर्मषाला जिसमें गाय आदि की सेवा होती थी, बनवाया जो तिलकभवन के सामने है और उसभवन के सामने हरसाल रामलीला का मंच सजता है और कई बड़े भव्य आयोजन होते है।

तुलसिया बपचन से ही अपने माता-पिता या परिवार के साथ हनुमान मंदिर आती तो उसका मन जुगलकिषोरी राधारानी के भजनों को गाने में रम जाता था। वह जिस धुन और लय में निमग्न होकर भजन गाती उसे सुनकर सभी मंत्रमुग्ध हो जाते और इस तरह तुलसिया का पूरा समय पूजा-पाठ में निकलता। जिस समय मोहल्ले की सारी लड़कियॉ खेलों में व्यस्त रहती तब तुलसिया रामायण पाठ के अलावा राधारानी की भक्ति और महन्त जानकीदास की सेवा में निकालती। हनुमान मंदिर पर तब महिला संत जानकीदास और उनकी अग्रज षत्रुघनदास बाईराम जो जालौन जिले के पाण्डे परिवार की थी,द्वारा पूजा पाठ करती थी। गौषाला में गायों की सेवा और पूजा में तुलसिया का मन इन महिला संतो के सानिग्ध में गुजरने लगा और वह कब विवाह योग्य हो गई इसका पता तब चला जब उनके विवाह के रिष्तें आने लगे तब उनके पिता पन्नालाल जी ने बड़ी बाईराम जानकीदास से उनके विवाह के सम्बन्ध में चर्चा की तब उन्होंने कहा पन्ना, तेरी यह बेटी साधु बनेगी और उसका ग्रहस्थ जीवन नहीं है, इसलिये तू इसे मुझे सौंप दे। चूँकि तब तुलसिया के पिता पन्नालाल जी ने अपने सिर की पगड़ी उतारकर जानकीदास के चरणों मे रखकर कहा मैं, समाज में तुलसिया का रिश्ता पक्का करके आया हूँ अगर नही मानूगा तो समाज में बदनामी हो जायेगी और मैं जी नहीं सकूँगा। कहते है तब महन्त जानकीदास ने पन्नालाल जी को एक शर्त पर बेटी का विवाह करने की इजाजत दी कि विवाह के बाद जो भी हो उसे, तुम और पूरा समाज स्वीकारें तो तुम शादी कर दें। साथ यह भी कहा कि शादी के बाद भी तुलसिया सन्यासी हो जायेगी। लेकिन संतों की बातें संत ही समझते है, पूज्य महंत जानकीदास से बेटी की शादी की अनुमति मिलने के बाद पन्नालाल जी निगोटे खुशी-खुशी घर लौटे और शादी की तैयारी में जुट गये।

आत्माराम यादव
वीव वरिष्ठ पत्रकार, मो. 9993376616
श्री जगन्नाथ धाम, काली मंदिर के पीछे, ग्वालटोली, नर्मदापुरम, मध्यप्रदेश
atmaram.hindus@gmail.com

सन 1934-35 का साल रहा था तब नियत दिनॉक और समय पर पन्नालाल जी के घर बैतूल से बेटी को ब्याहने बारात आयी। बेटी तुलसियॉ के हाथों में मेंहदी रची और महिलाओ ने खुशी-खुशी विवाह के सभी गीत गाकर तुलसिया की भॉवर पड़वा कर बेटी को खुषी-खुषी दुखी मन से ससुराल बिदा कर दिया। किसी ने भी दुल्हन के मन की बात जानने की कोशिश नही की, सभी को अपना-अपना सुख और खुशी दिख रही थी जिसमें वे मग्न थे, लेकिन विधि ने तो कुछ ओर ही रच रखा था जिसे किसी ने भी नहीं जाना था, किन्तु बहू बनी तुलसिया के मन में वह सब हिलौर मार रहा था जो भविष्य में प्रगट होने वाला था। तुलसिया सुन्दर थी, चंचल थी, सहज थी, वह माता और पिता के कहने पर दुल्हन भी बन गयी और दुल्हन के लिबास में उसके शरीर ने सात फेरे ले लिये लेकिन मन वहॉ नहीं था। उसके दुल्हन बने शरीर ने अपनी ससुराल में दस्तक दी जहां दुल्हन के स्वागत की जोरदार तैयारी की गई और वर पक्ष की माताएं-बहने एवं उनका पूरा कुटुम्ब व रिश्तेदार इस नई दुल्हन को पकर खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहे थे, तो कुछेक वैवाहिक रस्मों की अदायगी कर रहे थे, किन्तु दुल्हन का मन तो कही और था जहॉ उसे जाना है। शाम को दूल्हा-दुल्हन जो दूसरे घर ठहराये गये वहॉ से दुल्हें के घर दूल्हा-दुल्हन की बॅधाई उत्सव को लेकर सभी तैयारी की गयी और सभी खुश थे कि पता चला कि दुल्हन तुलसिया कमरे में नही है। घर में दुल्हन की तलाश शुरू हुई, जो नही मिली। तब मोहल्लें के घरों में, सड़कों पर बस स्टेण्ड पर दुल्हन को तलाशना शुरू किया, लेकिन किसी को भी दुल्हन तुलसिया कहीं भी नहीं मिली। सभी इस घटना से दुखी हो गये और उनके मनों में कई प्रकार की आशंकायें जन्म ले चुकी थी। लोगों के मनों में अनेक प्रकार के ख्याल चल रहे थे कि आखिर दुल्हन तुलसिया कहा,किसके साथ चली गयी। लोगों ने वहॉ न किसी को आते देखा और न ही दुल्हन को अकेला या किसी के साथ जाते देखा। उन्हें यह अवश्य पहले ही पता था कि शादी से पूर्व ही दुल्हन षादी से इंकार कर सन्यासी होना चाहती थी। सभी को भय सता रहा था कि दुल्हन ने कहीं दुखी होकर आत्महत्या तो नहीं कर ली। बस मोहल्ले के सभी कुओं में, तालाब में लोगों ने दुल्हन की तलाश शुरू कर दी और यह मान लिया कि सन्यासी न बन पाने पर उनके द्वारा आत्महत्या कर ली गयी है। सारी रात सभी जगह तुलसिया की तलाश जारी थी। तब होशंगाबाद जाने के सीमित साधन थे जो घटाक्षेप जंगल और जानवरों के भय से रात को उपलब्ध नहीं होते थे। ससुराल पक्ष को खबर करने के लिये एक घोड़ागाड़ी का इंतजाम कर होशंगाबाद रवाना हुआ और उसके गायब होने की सूचना दी जिससे ग्वालटोली मे उनके घर पर भी कोहराम मच गया तथा मोहल्ले के लोग दुखी होकर अफसोस करने लगे।

पन्नालाल जी तड़के ही ब्रम्हमुहुर्त में अपनी बेटी के ससुराल से पहले ही दिन अचानक लापता होने पर किसी अनहोनी की आषंका से चिंतित, उसके मिलने की उम्मीद लिये हनुमानमंदिर आये, तब उन्होंने देखा कि उनकी बेटी दुल्हन के लिबास में महन्त जानकीदास के पास थी, जिसे देखकर उनकी ऑखों से अविरत ऑसू बहने लगे, तब महन्त जानकीदास बाईराम ने उनसे कहा कि मैं पहले ही तुम्हें चेता चुकी थी, विधि को यही बात मंजूर है इसलिये तुम अपनी बेटी तुलसिया से नहीं मेरी शिष्या महन्त कौशल्यादास से मिल रहे हो और उनसे आशीष लेकर घर जाओ। बात हवा की तरह ग्वालटोली पहुँच गयी कि तुलसिया ससुराल में नही चमत्कारित रूप से होशंगाबाद में हनुमान मंदिर में है, वह कैसे, किस प्रकार, बैतूल से घनघोर बियावान जंगल पार कर होषंगाबाद पहुँची, इस रहस्य कोई जान नहीं सका। तब पन्नालाल सहित उनकी ससुराल वालों ने भी वैवाहिक सम्बन्धों में उनकी अनिच्छा को अन्यथा न लेकर उनका सम्मान किया और उनके भक्तिमार्ग पर भक्त के रूप में जीवन अर्पित करने की दृढ संकल्प पालना को सर्वोच्च स्थान दिये जाने पर उनकी दिव्यता को नमन किया। तुलसिया ने गौशाला मे दुल्हन के लिबास का परित्याग कर साधुओं के वस्त्र धारण कर लिये और बड़ीबाईराम जानकीदास ने उन्हें सन्यस्थ प्रवेष की अनुमति देकर नया नाम कौषल्यादास दिया और वे बड़ीबाईराम महन्त कौषल्यादास के नाम से सारा जीवन तपस्वी की तरह 29 साल वृन्दावन में श्रीराधारानी की भक्ति करते हुये परिवार के आग्रह पर होषंगाबाद लौटी और 23 साल खेड़ापति हनुमान मंदिर स्थित संतकक्ष में व्यतीत किये। सेठानीघाट स्थित हनुमानमंदिर की ग्वालवंश की महन्त बड़ीबाईराम कौशल्यादास की पीढ़ी की तीसरी संत तुलसीदासबाईराम से वर्ष 1985 में मेरी पहली मुलाकात हुई तब वे अयोध्या और वृन्दावन में अपनी साधना के 32 साल व्यतीत कर लौटी थी तभी उनके सानिग्ध में सत्संग करते समय कब निकल जाता पता ही नहीं चलता था। मॉ नर्मदा और नर्मदा परिक्रमा को लेकर मेरे मन की जिज्ञासाओं सहित अनेक बातों के समाधान के दरम्यान उन्होंने धूनीवाले दादाजी गौरीशंकर महाराज के गुरू कमलभारती जी महाराज जो एक महान सिद्ध संत थे के विषय में जानकारी देते हुये उन्हें नर्मदा की विलुप्त हो चुकी परिक्रमा को उत्सव के रूप में सैकड़ों की सॅख्या में भक्तों के साथ किये जाने की बात बतायी और उन्हें किसी भक्त ने भेंट की प्राचीन पुस्तक दादाजी गौरव गाथा पढ़ने को दी जिसके महत्वपूर्ण अंशों को तब मैंने लिख लिया था जो आज देवकृपा से आस्था के दीप के माध्यम से आप तक पहुँच रही है।

महन्त कौषल्यादास सन्यासी होकर अपने धर्म का कठोरता से आचरण करती रही ।हनुमानमंदिर की समस्त जिम्मेदारी महन्त जानकीदास द्वारा उन्हें सौंपने के साथ उनके नाम पर पूरी सम्पत्ति किये जाने के पश्चात जालौन की पाण्डे परिवार की संत और जानकीदास बाईराम की शिष्या शत्रुघनदास को कौशल्यादास से ईष्या होने लगी तब उन्होंने उन्हें हटाने के लिये जालौन से अपने भतीजे सेवाचन्द पाण्डे सहित पूरे परिवार को बुलवा कर धर्मशाला में बसवा दिया और महन्त कौशल्यादास को अनेक प्रकार से तंग करने लगे। चूँकि इसके पूर्व महन्त षत्रुघनदास अपने गृहनगर जालौन से अपने भतीजे लखन पाण्डे को 1950 में बुलवा चुकी थी तब उनका भतीजा इस मंदिर में आई चढ़ोत्री को लेकर चंपत हो गया था जिसे कुछ लोगों ने स्टेषन से पकड़कर बड़ी बाईराम जानकीदास के सामने खड़ा किया तब ब्राम्हण के बेटे के द्वारा इस तरह के कृत्य से वे दुखी हुई और उन्होंने दया करके लखन पाण्डे को काषी भेजकर आचार्य की पढ़ाई करायी जिसका पूरा खर्च हनुमानमंदिर से ग्वाल महिला संत ने उठाया। जब लखन पाण्डे पढ़ाई करके लौटा तब तक मंदिर की पूरी जिम्मेदारी एवं पूरी सम्पत्ति पर महन्त जानकीदास जी ने अपनी शिष्या महन्त कौशल्यादास का नाम दर्ज करा दिया था। यह जानकर उसने येनकेन प्रकरेण मंदिर और सम्पत्ति को हथियाने के लिए अपनी चाची महंत शत्रुघ्न दास का सहारा लिया। वर्ष 1956-57 का वह समय था जब हनुमान मंदिर की पूरी जिम्मेदारी कौषल्यादास पर आ गयी वे सुबह-षाम पूजापाठ आरति के बाद गौषाला की गायों के चारे के लिये मंदिर के खेतों में भी व्यवस्था देखा करती थी। लखन पाण्डे ने अपनी चाची महन्त शत्रुघनदास के साथ मिलकर महन्त कौषल्यादास पर इतना दबाव डाला कि वे परेषान हो गयी, चूँकि वे सभी प्रकार का त्याग कर चुकी थी और किसी भी वस्तु में मोहन रख अपने प्रभु के चरणों मेंमन लगाये हुई थी। उन्होंने उनपर हो रहे इस अव्यवहारिक आचरण पर विचार किया कि वे सम्पत्ति की देखरेख के लिये सन्यासी नहीं बनी थी, भगवतभक्ति और उनके चरणों में अनुराग होने के कारण उन्होंने अपने पति का घर त्यागने में जैसे देर नही कि, वैसे ही वे महन्त जानकीदास के परलोक गमन के बाद अकेली पड़ गयी महन्त कौषल्यादास पर उनकी गुरूबहिन महन्त षत्रुघनदास एवं उनके भतीजे लखन पाण्डे की कुचेष्टाओं से तंग आकर हनुमान मंदिर की जिम्मेदारी लखन पाण्डे को लखन महाराज बनाकर हनुमान मंदिर छोड़कर रसूलिया स्थित खेत में कुटी बनाकर एकान्तवास को चली गयी। मंदिर की जिम्मेदारी मिलने के बाद लखन महाराज जो शास्त्री की पढ़ाई कर लक्ष्मणदास शास्त्री हो गये के द्वारा नगर में स्वयं के प्रवचन चालू कर लोगों से हनुमान मंदिर के हथियाने व अपने अधिकार जताने का काम शुरू किया तथा साथ ही महन्त कौशल्यादास का जीना दूभर कर दिया और ऐसे कुत्सित प्रयास करना शुरू कर दिये जिससे वे खेत से भाग जाये, आखिर कार उनका यह षड़यंत्र कामयाब हुआ और महन्त कौशल्यादास ने होशंगाबाद छोड़ने के अपने निर्णय से सभी को अवगत करा दिया।

वर्ष 1960 का वह समय था जब महन्त कौशल्यादास अपनी गृरूबहिन महन्त शत्रुघनदास को हनुमान मंदिर की जबावदेही सौपकर वृन्दावन चली गयी। चूँकि मंदिर की सम्पत्ति को खरीद-फरोक्त का अधिकार नही होने से ग्वाल समाज की पंचायत का इसमें दखल था। आठ साल बाद 1968 का वह समय था जब ग्वालटोली काली मंदिर पर वृन्दावन के पहुँचे हुये एक लंगड़े संत बड़े भव्य यज्ञ का आयोजन करना चाहते थे। समाजजन को इस यज्ञ की खुशी थी तब उस यज्ञ में अपनी पैठ बनाने के लिये लखन महाराज ने अपने प्रवचन की व्यवस्था कर ली और लक्ष्मणदास शास्त्री के रूप में अपनी विद्धवता की पैठ शुरू की लेकिन तब भी हनुमानमंदिर की व्यवस्था खर्च आदि ग्वाल पंचायत के हाथों में था तब लखन महाराज ने जालौन से अपने पूरे परिवार को मंदिर में बुलाकर बसा लिया और वे मंदिर की सम्पत्ति पर काबिज होते गये।

वृन्दावन और अयोध्या में 28 साल गुजारने के बाद 1989 में महन्त कौषल्यादास होषंगाबाद लौट आती है किन्तु लौटने के बाद लक्ष्मणदास षास्त्री, लखन महाराज ही बने रहे है और उन्हें मंदिर तथा धर्मषाला में ठहरने नही दिया। बाबजूद आने के बाद हनुमान मंदिर की सम्पत्ति पर वे समाज के कुछ लोगो एवं गणमान्य नागरिकों के हस्तक्षेप के उपरांत समस्त अधिकार लक्ष्मणदास षास्त्री बनाम पाण्डे के नाम कानूनी रूप से हस्ताक्षर द्वारा कर देती हैं। मजे की बात यह भी रही कि उक्त सम्पत्ति पर लक्ष्मणदास दास अपनी मूल बल्दियत छिपाकर अपनी चाची महन्त शत्रुघनदास को अपना पिता बतलाकर इस पूरी सम्पत्ति पर अधिकार करके मंदिर की जमीन पर रसूलिया में गीताभवन, षादी का हाल,दुकानें खड़ी कर अपने रिष्तेदारों के हाथों जिम्मेदारी सौंपता है, किन्तु जिला प्रषासन से इस बाबत बार-बार अवगत कराने एवं ग्वाल समाज द्वारा उनकी भूमि के इस मंदिर पर समाज के मुखिया को सर्वाकार बनाने की मॉग पर जिला प्रषासन कार्यवाही न कर महाराज के साथ हो लेता है। लौटने के बाद महन्त कौषल्यादास जी खेड़ापति हनुमानमंदिर के सामने षिवमंदिर के बगल के कक्ष में ठहरी जहॉ उन्होंने 23 साल पूजा-भक्ति कर गुजारे। तब अनेक बार मैं उनसे घन्टों सत्संग करता और उनकी मधुरवाणी सुनकर प्रसन्न होता। उन्होंने अपने जीवन के अनेक प्रसंगों से मुझे अवगत कराया किन्तु अपने उत्तराधिकार को लेकर हनुमान मंदिर के पुजारी लखन महाराज को लेकर किसी भी प्रकार की कार्य-कार्यवाही करने से इंकार करते स्वीकारा कि साधु-संतों को इसका मोह नहीं, इसलिये वे साल तक हनुमानमंदिर प्रसंग को छोड़ सभी प्रकार का सत्संग करती। उनके द्वारा मेरी धर्मपत्नी संगीता और बेटी लेखा को अनेक शिक्षाप्रद प्रसंग सुनाने के अलावा मंत्रों को अपनाकर घर में सुख-शांति लाने की सीख दी, जिसका उन्होंने लाभ उठाया।

91 साल की उम्र में वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ्य हो गयी तब अपने प्राण त्यागने का आभास से भाई को अवगत कराया तब भाई अंतिम समय उनकी सेवा का पुण्य पाने का निवेदन कर उन्हें अपने घर ले आये जिसके एक सप्ताह बाद 19 दिसम्बर 2012 को उक्त सन्यासिन ने अपने छोटे भाई राम भरोसे निगोटे उस्ताद के घर प्राण त्यागे। महंत कौशल्या दास को अपनी मृत्यु का आभास दो दिन पूर्व ही हो जाता है और वे नश्वर देह को हरियाली अमावस्या के दिन त्याग कर परमात्मा के चरणों में जाने की बात अपने भाई सहित सभी परिवार को बता मृत्युपूर्व ही बता देती है जिस पर परिवार के लोग विश्वास नहीं करते,किंतु संत वचन मिथ्या नहीं होता यह समझकर उनसे मिलने लोगों का तांता लगा रहा और वे अपने बताये दिन बुधवार 19 जुलाई 2012 हरियाली अमावस्या की सुबह प्राण त्याग देती है। यह दुर्भाग्य किन्तु दुखद बात थी कि उनके हनुमान मंदिर छोड़ने के 52 सालों में एक भी दिन उनके गुरूभाई लखन महाराज द्वारा उनसे न मिलने का दुख उन्हें रहा किन्तु वे परमात्मा की इच्छा बतलाकर विस्मृत कर जाती लेकिन देह त्यागने से पूर्व उन्होंने परिवार से इच्छा व्यक्त कि थी कि उनके गुरूभाई को खबर कर दे, वह अन्तिम समय में मिल ले, भाई रामभरोस दादा स्वयं लखन महाराज के पास पहुँचकर मिलने का निवेदन करके आये पर, इंतजार के बाद भी लखन महाराज कठोर हदय रखकर उनसे मिलने नहीं आये। वे मिलने आने पर लखन महाराज को उनकी सारी गल्तियों के लिये माफी देना चाहती थी, लेकिन वे नहीं आये तब उन्होंने कहा कि अगर वे उनसे नहीं मिले, तो उनके मरने पर आ जाये, नहीं आने पर वे अपने पार्थिव षरीर को धर्मषाला व गोषाला के स्थान पर अपना निवास बनाये गुरूभाई लखनमहाराज के पास ले जाने पर उनके पार्थिक षरीर के दर्षन करने पर माफ करने के अपने निर्णय से परिवार को अवगत कराती है, परिजन उनकी इस इच्छा को पूरा करते है। महन्त कौशल्यादास के गोलोकवासी होने की खबर पूरे नगर में आग की तरह फैल जाती है और होशंगाबाद शहर ही नहीं आसपास के गॉवों-शहरों के हजारों लोग उनके अन्तिम दर्षन और षवयात्रा की पालकी में षामिल होने आ जाते है। गाजे-बाजे के साथ रामधुन गाते हुये ग्वालटोली से उनके पार्थिकष्षरीर को पालकी में सजाकर धूमधाम से विदा किया जाता है और उनकी अन्तिम यात्रा का पड़ाव उनकी इच्छानुसार सेठानीघाट स्थित लखनमहाराज के यहॉ पालकी पहुँचती है तब समाज की ओर से भेजे व्यक्ति द्वारा लखन महाराज को यह बात बताकर अपनी गुरूबहिन कौषल्यादास के दर्षन करने का आग्रह करते है, किन्तु एक घन्टे तक महन्त कौषल्यादास का पार्थिक षरीर पालकी में रखा उनका इंतजार करता है, पर लाख कोषिष के बाद लखन महाराज अपनी गुरूबहिन के दर्षन के लिये न आकर आचार्य के रूप में षास्त्री जैसे पद की गरिमा नहीं कलंकित करता है। संत की षव पालकी में शामिल दो हजार से अधिक लोग उन्हें धिक्कारते हुये आक्रोषित होते है पर कोई उपद्रव न करने की अपील पर षांति से पालकी को कंधे पर रख खेड़ापति हनुमान मंदिर ले जाकर कुछ समय ठहर राजघाट की ओर प्रस्थान करते है जहॉ हनुमानमंदिर की अंतिम महिला महन्त कौषल्यादास की षवयात्रा अनमने मनों का बोझ लिये जय श्रीराम, राधारानी की जय, जयगोपाल जैसे गगनभेदी जयकारों के मध्य पंचतत्व मे विलीन हो जाती है किन्तु इस बात का यक्ष प्रष्न छोड़ जाती है कि उनके षव का अपमान करने वाले लखन महाराज के प्रति समूचा समाज जड़वत क्यों बना रहा?

वायु प्रदूषण से

भारतीयों के पांच साल हो रहे कम

दिल्ली दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर, जहां के लोगों के जीवन के 11.9 साल कम हो रहे हैं। वहीं वायु प्रदूषण की वजह दुनिया 29 प्रतिशत प्रेगनेंसी लॉस हुआ। इसमें से अकेले 77 प्रतिशत प्रेगनेंसी लॉस भारत में हुआ, जबकि पाकिस्तान में 12 प्रतिशत और बांग्लादेश में 11 प्रतिशत मामले सामने आए हैं। -अमित बैजनाथ गर्ग, वरिष्ठ पत्रकार

वायु प्रदूषण पर हाल ही में शिकागो यूनिवर्सिटी की ओर से जारी रिपोर्ट में चिंताजनक आंकड़े सामने आए हैं। रिपोर्ट में दुनिया भर के जिन छह देशों में रहने वाले लोगों की जिंदगी पर वायु प्रदूषण का सबसे ज्यादा असर पड़ रहा है, उनमें भारत का भी नाम शामिल है। रिपोर्ट के मुताबिक, वायु प्रदूषण भारत के लोगों की जिंदगी के पांच साल कम कर रहा है, जबकि सिर्फ दिल्ली की बात करें तो स्थिति और भी ज्यादा खराब है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के तय मानक पांच माइक्रोग्राम पर क्यूबिक मीटर की तुलना में देश का सूक्ष्म कण वायु प्रदूषण लोगों की जिंदगी के पांच साल कम कर रहा है। रिपोर्ट में दिल्ली को दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर बताते हुए कहा गया कि वायु प्रदूषण का यहां रहने वालों के स्वास्थ्य पर सबसे ज्यादा असर पड़ रहा है और उनकी जिंदगी के 11.9 साल कम हो रहे हैं।

वहीं 2000-2016 के बीच भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में वायु प्रदूषण के प्रेगनेंसी पर असर को लेकर लैंसेट की ओर से स्टडी की गई है। शोध में सामने आया कि तीनों देशों में प्रदूषण की वजह 29 प्रतिशत प्रेगनेंसी लॉस यानी गर्भपात हुआ। इसमें से अकेले 77 प्रतिशत प्रेगनेंसी लॉस भारत में हुआ, जबकि पाकिस्तान में 12 प्रतिशत और बांग्लादेश में 11 प्रतिशत मामले सामने आए। इस स्टडी में 34,197 महिलाओं को शामिल किया गया था, जिनमें से 27,480 महिलाओं ने मिसकैरेज और 6,717 स्टिल बर्थ (बच्चे की हार्ट बीट गायब होना) झेला। शोध में कहा गया कि प्रदूषण बढ़ने के साथ मानव स्वास्थ्य का खतरा भी बढ़ गया है।

शिकागो यूनिवर्सिटी में प्रो. माइकल ग्रीनस्टोन ने कहा कि वायु प्रदूषण से दुनिया भर के लोगों के जीवन पर पड़ रहे प्रभाव का तीन चौथाई हिस्सा सिर्फ छह देशों बांग्लादेश, भारत, पाकिस्तान, चीन, नाइजीरिया और इंडोनेशिया में है। आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि वायु प्रदूषण मानव स्वास्थ्य के लिए दुनिया का सबसे बड़ा बाहरी खतरा बना हुआ है। मानव जीवन पर वायु प्रदूषण से सबसे ज्यादा खतरे के मद्देनजर वैश्विक वायु गुणवत्ता अवसंरचना के लिए सामूहिक मौजूदा निवेश अपर्याप्त लगता है। एचआईवी-एड्स, मलेरिया और टीबी के लिए हर साल बड़े वैश्विक कोष का निवेश किया जाता है, लेकिन वायु प्रदूषण के लिहाज से ऐसा नहीं है।

स्विस फर्म आईक्यूएयर की लाइव रैंकिंग के मुताबिक, दुनिया के सबसे प्रदूषित 110 देशों की सूची में भारत के तीन शहर राजधानी दिल्ली, कोलकाता और मुंबई हैं। सूची में दिल्ली पहले नंबर पर है। यहां का एक्यूआई 254 है, जिससे दिल्ली पूरी दुनिया में सबसे प्रदूषित शहर है। इसके बाद रैंकिंग में चौथे स्थान पर 216 एक्यूआई के साथ कोलकाता है। इसके बाद दसवें स्थान पर मुंबई है, जहां एक्यूआई 155 रिकॉर्ड किया गया। हाल ही में कानपुर में सात दिन में तीन मौतें सांस लेने में दिक्कतों के चलते हो चुकी हैं। वहीं मेरठ में एक युवक को तेज बुखार आया और रेस्पिरेटरी सिस्टम फेल हो गया। नतीजा युवक की अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। डॉक्टरों का मानना है कि पॉल्यूशन ने फेफड़ों में ऑक्सीजन का लेवल घटा दिया है। पॉल्यूशन से फेफड़ों की नलियां सिकुड़ चुकी हैं। ऑक्सीजन की इनहेलिंग धीरे-धीरे घट रही है। ओपीडी और क्रिटिकल केयर यूनिट में आ रहे मरीजों की जांच में ऑक्सीजन लेवल ठीक नहीं मिल रहा है।

चीन के गुआंगडोंग प्रांत में प्रदूषण से होने वाली प्रीमैच्योर डिलीवरी को लेकर एक शोध हुआ। इस शोध में शामिल 687 महिलाओं को प्रीमैच्योर डिलीवरी हुई थी और 1097 महिलाओं को कम वजन वाले बच्चे हुए थे। इनकी तुलना 1766 हेल्दी बर्थ वाली महिलाओं के साथ की गई। गौर करने वाली बात यह है कि चीन के इस प्रांत में पूरे देश के औसत से कम प्रदूषण रहता है। चीन में भी उत्तर भारत की तरह सितंबर-अक्टूबर से वायु प्रदूषण बढ़ना शुरू होता है और गर्मियों में कम होता है। इस शोध में यह पता चला कि प्रेगनेंसी के पहले और आखिरी महीने में महिलाओं और गर्भस्थ शिशु को प्रदूषण से सबसे ज्यादा नुकसान होता है। वहीं अमेरिका में होने वाले कुल प्रीमैच्योर बर्थ में तीन फीसदी की वजह प्रदूषण होता है। ऐसे बच्चों की संख्या 16 हजार है। प्लोस मैगजीन के मुताबिक, दुनिया भर में करीब 60 लाख बच्चे प्रदूषण की वजह से समय से पहले जन्म ले रहे हैं। इनमें से आधे बच्चे अंडरवेट यानी कम वजन के हैं। अजन्मे शिशु के लिए सबसे सुरक्षित स्थान होता है मां की कोख, लेकिन दिल्ली-एनसीआर सहित पूरे उत्तर प्रदेश में वायु प्रदूषण से मां की कोख में पल रहे शिशु भी सुरक्षित नहीं है।

बढ़ता प्रदूषण बुजुर्गों और छोटे बच्चों के साथ अजन्मे बच्चों पर भी असर डाल रहा है। यही वजह है कि डॉक्टर इस जहरीली हवा में गर्भवती महिलाओं को बाहर निकलने से रोक रहे हैं। खासतौर पर गर्भावस्था के शुरुआती और आखिरी समय में महिलाओं को घर में ही रहने को कहा जा रहा है। अधिकांश डॉक्टरों ने गर्भवती महिलाओं के लिए ऑनलाइन कंसल्टेंसी शुरू कर दी है। जरूरत पड़ने पर ही महिलाओं को चेकअप के लिए अस्पताल बुलाया जा रहा है। डॉक्टरों का कहना है कि हवा में बिखरे हैवी मेटल्स मां की सांस के जरिए अजन्मे बच्चों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। वायु प्रदूषण नवजातों के दिल, दिमाग और फेफड़ों के लिए घातक है।

पीडियाट्रिक डॉ. अनुपमा वर्मा का कहना है कि प्रदूषित हवा में सांस लेने पर पॉल्यूशन प्लेसेंटा को पार कर भ्रूण तक पहुंच रहा है। प्रदूषण खून के जरिए पोषक तत्वों को शिशु तक पहुंचने से रोकता है। इससे शिशु के दिमाग और फेफड़े सही से डेवलप नहीं हो पाते हैं। बच्चों में हार्ट में परेशानी, सांस की जन्मजात बीमारी, न्यूरो डवलपमेंट पर दुष्प्रभाव, लंग्स की मैच्योरिटी पर भी असर होता है। कई बच्चों में ऑटिज्म और बौद्धिक दिव्यांगता की भी समस्या देखी गई है। चिंता की बात यह है कि गर्भावस्था की शुरुआती जांच में ही भ्रूण में प्रदूषण के कण मिल रहे हैं। लंबे समय तक अगर बच्चा इस प्रदूषण के संपर्क में रहता है तो उसे कैंसर होने का खतरा भी बना रहता है। डॉ. वर्मा कहती हैं कि हवा में कार्बन मोनोऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड या नाइट्रोजन डाइऑक्साइड का लेवल ज्यादा होने से अर्ली डिलीवरी ही नहीं, बल्कि मिसकैरेज के मामले भी बढ़ सकते हैं।

वायु प्रदूषण से बचाव के लिए समाधान के रूप में डॉक्टर सांस के मरीजों के साथ ही बच्चों से लेकर बड़ों तक को मास्क लगाने की सलाह दे रहे हैं। वरिष्ठ स्त्री और प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. अनुपमा कालिया गंगवाल का कहना है कि सबसे पहले तो मास्क लगाना सभी के लिए अनिवार्य होना चाहिए। वहीं योग और व्यायाम करना चाहिए, जिससे हमारे फेफड़े मजबूत होंगे। इसके अलावा भीड़भाड़ वाली जगहों पर कम से कम ही जाना चाहिए। डॉ. अनुपमा यह भी कहती हैं कि स्वस्थ और पौष्टिक आहार लेने से शरीर मजबूत होगा, जिससे वायु प्रदूषण से लड़ने में मदद मिलेगी। वहीं वजन लेकर चलने में हांफने, तेज न चल पाने, सीढ़ी चढ़ने में सांस फूलने, जल्दी-जल्दी सांस लेने और मुंह से सांस लेने जैसे लक्षण दिखने पर फौरन चेकअप कराएं।

***राज आंगन, ए-9, श्री राणी नगर, 30 नंबर टेंपो स्टैंड के पास, पालड़ी मीणा, आगरा रोड, जयपुर, राजस्थान, भारत., मोबाइल : +91 78770 70861**

विपक्ष का वश चले तो बिना चुनाव ही हटा दे मोदी को

-डॉ. हरिकृष्ण बड़ोदिया

इसमें कोई शक नहीं कि मोदी के विजय रथ को रोकने के लिए इंडी गठबंधन एड़ी चोटी का जोर लगा रहा है। वह उस असंभव को संभव बनाने की जुगत में है जो उसे दिल्ली की गद्दी पर आसीन करा दे। इसी प्रत्याशा में विपक्ष के कुछ प्रमुख विपक्षी दल विगत 3 मार्च को पटना के गांधी मैदान में इकट्ठे हुए और एकत्रित भीड़ को देखकर गदगद दिखाई दिए। उन्हें लगा कि बस अब दिल्ली का किला फतह होने में कोई देर नहीं है। लेकिन ऐसा होगा यह तो भविष्य के गर्भ में छिपा है किंतु उन्होंने मंच से जो कुछ कहा उसने प्रधानमंत्री मोदी को वह आधार दे दिया जिसके दम पर वह विपक्षियों पर हमेशा तीखे प्रहार कर जनमानस को अपने पक्ष में करने में महारत रखते हैं।

गांधी मैदान पर एकत्रित इन विपक्षी नेताओं में से हर एक ने कहा कि इतिहास साक्षी है कि परिवर्तन की बयार हमेशा बिहार से वही है और इस बार फिर यहीं से परिवर्तन होगा जो मोदी को सत्ता से हटा देगा। लेकिन इन नेताओं के भाषणों में ना तो गंभीरता थी और ना तथ्यात्मकता थी। बे सिर पैर की बातें कर जिस तरह राहुल ने कांग्रेस को अर्श से फर्श पर ला दिया उसी तरह का मोदी फोबिया का वायरस यहां नेताओं में दिखाई दिया। इस रैली में लालू यादव के भाषण की बहुत चर्चा हो रही है। इसलिए नहीं कि उनका भाषण बहुत प्रभावशाली था बल्कि इसलिए कि लालू ने अपनी भड़ास में मोदी के विरुद्ध अनावश्यक टिप्पणी कर इंडी गठबंधन की मुसीबतें बढ़ाने का काम किया। जिसने मोदी को एक बार फिर गठबंधन पर तीखा हमला करने का मौका दे दिया। लालू ने कहा कौन है मोदी, मोदी कोई चीज है क्या? यह आजकल परिवारवाद पर हमला कर रहा है। कहते हैं हम (विपक्ष के लोग) परिवार के लिए लड़ रहे हैं। उनके (मोदी के) पास परिवार नहीं है। उन्हें बताना चाहिए कि उनके बच्चे क्यों नहीं हैं। सच तो यह है कि मोदी हिंदू ही नहीं हैं क्योंकि उन्होंने अपनी मां के निधन पर दाढ़ी ही नहीं बनाई थी, बाल ही नहीं कटवाए थे। मोदी राम रहीम के बंदों में देश में नफरत फैला रहे हैं।

कैसी विडंबना है कि हिंदुओं के पवित्र माह सावन में राहुल और प्रियंका गांधी को मटन बनाकर खिलाने

वाले लालू मोदी के हिंदू होने पर सवाल खड़े कर रहे हैं जो यह भी नहीं जानते कि किसी परिवार में यदि अपने पिता या मां के देहांत पर बड़ा बेटा बाल दे दे तो छोटे भाई का बाल देना अनिवार्य नहीं है। वस्तुतः ऐसा बोलकर लालू ने न केवल अपनी कुंठा प्रदर्शित की बल्कि तेजस्वी की तथाकथित शालीन राजनीति पर कुठाराघात कर दिया। तेजस्वी ने पिछले बिहार विधानसभा सत्र में विश्वास मत के प्रस्ताव पर बड़े शालीन शब्दों में अपनी बात रखी थी। यही नहीं जितनी भी कटुता नीतीश के प्रति उनके मन में रही होगी उन्होंने होठों पर नहीं आने दिया था। किंतु लालू ने सब गुड गोबर कर दिया। जो लालू पूछ रहे हैं मोदी कौन है वह अपने बारे में बताएं या ना बताएं कि वह कौन हैं लेकिन उसका जवाब जनता के पास है कि लालू एक सजायाफ्ता भ्रष्टाचारी हैं जिन्होंने चारा घोटाला कर करोड़ों की संपत्ति अर्जित की। ऐसा व्यक्ति किसी ईमानदार, निष्ठावान, राष्ट्रभक्त और सेवाभावी नेता नरेंद्र मोदी पर उंगली उठाएगा तो निश्चित ही जनता उसको कभी मान्य नहीं करेगी। लालू ने मोदी पर कीचड़ उछाल कर न केवल इंडी गठबंधन की मुसीबतें बढ़ा दीं बल्कि वही गलती दोहराई जो 2019 में राहुल गांधी ने मोदी को चौकीदार चोर है का नारा देकर की थी।

देश की जनता में मोदी की जो छवि है ऐसी छवि आज भारत तो क्या दुनिया भर में किसी नेता में दिखाई नहीं देती। तब मोदी पर प्रहार करना स्वयं अपने पर प्रहार करने जैसा ही है। लालू ने कहा हमें दिल्ली पर कब्जा करना है। इसे विपक्ष की तानाशाही न माना जाए तो क्या माना जाए। विपक्ष का बस चले तो वह मोदी को बिना चुनाव के ही सत्ता से हटा दे। आज मोदी और भाजपा जिस स्थिति में है उस स्थिति को पाने के लिए इंडी गठबंधन को 2029 का इंतजार करना पड़ेगा और संभव है तब मोदी जैसा ही भाजपा का कोई कद्दावर नेता आ जाए और विपक्ष के दिल्ली की गद्दी पर कब्जा करने के मंसूबे यूं ही धरे के धरे रह जाएं। इंडी गठबंधन की इस जन विश्वास महा रैली में उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और सपा नेता अखिलेश यादव की आधारहीन भविष्यवाणी भी समझ से परे है। उन्होंने कहा भाजपा कहती है कि बिहार और उत्तर प्रदेश की सभी 120 सीटों पर वह जीत हासिल करेगी किंतु मैं कहता हूं अबकी बार भाजपा की 120 सीटों पर हार होगी। बिहार की 40 और उत्तर प्रदेश की 80 सीटों पर भाजपा ने जीत का दावा किया है। अखिलेश की भविष्यवाणी क्या हंसी का कारण नहीं बन रही। 2019 में सपा और बसपा में चुनावी गठबंधन था और तब सपा को मात्र 5 सीटें मिली थीं जबकि बसपा को 10 सीटें मिली थीं। इस बार भाजपा अखिलेश के किस गणित से बिहार और यूपी की सभी 120 सीटें हार जाएगी यह अखिलेश ही जानें। अगर यूपी और बिहार में सपा की जीत की संभावनाएं होती तो अखिलेश यादव राज्यसभा की सीट नहीं हारते और ना ही नीतीश कुमार पाला बदलकर एनडीए में जाते। आज तो इनके दलों के नेताओं में भगदड़ मची है जो भाजपा में जाने की होड़ में शामिल हैं। सपा और आरजेडी ही नहीं बल्कि कांग्रेस तक को छोड़कर कई कद्दावर नेता भाजपा में चले गए क्योंकि उन्हें इन दलों का भविष्य अंधकारमय दिख रहा है। वैसे इसमें कोई शक नहीं कि विपक्षी गठबंधन का हर नेता अपनी कमियों को जानता है और उनको छुपाने की कोशिश में नए-नए जुमले गढ़ता है जो ज्यादातर उसी के विरुद्ध दिखाई देने लगते हैं। ऐसा ही कुछ तेजस्वी के भाषण में नजर आया। उन्होंने बिहार के एम वाय समीकरण पर स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि कुछ लोग कहते हैं आरजेडी मुस्लिम यादव की पार्टी है लेकिन हम कहते हैं यह माई (रूद्ध)ही नहीं बल्कि बाप(क्क्क) की भी पार्टी है जिसमें क्क से बहुजन, एक, से अगड़ा दूसरे, से आधी आबादी महिला और क्क से पुअर यानी गरीबों की पार्टी है। निश्चित ही तेजस्वी ने बाप का अच्छा विश्लेषण करवाया है। लेकिन सच्चाई देश जानता है कि राजद माई अर्थात राबड़ी देवी और बाप यानी लालू यादव की पार्टी है जो परिवारवादी राजनीति का ऐसा उदाहरण है जिसमें राबड़ी देवी और तेज प्रताप जैसे अल्प शिक्षित भी मुख्यमंत्री और मंत्री बन जाते हैं। आश्चर्य तो तब होता है जब तेजस्वी भ्रष्टाचार पर भाषण से भाजपा को घेरने की कोशिश करते हैं जबकि भ्रष्टाचार पर तो उन्हें बोलना ही नहीं चाहिए। क्योंकि उनका पूरा परिवार इस घिनौने गड्ढे में आकंठ डूबा है और यह बीते दिनों की ही बात ही नहीं बल्कि आज भी जमीन के बदले नौकरी मामले में लालू सहित उनके परिवार के अधिकांश सदस्य आरोपी हैं।

वस्तुत : जन विश्वास रैली में जितने विपक्षी नेता थे उन सब का निशाना मोदी थे। बस नहीं था तो वह रोड मैप जिसके जरिए ये देश की जनता का भला करेंगे। राहुल गांधी का वही घिसा पिटा मोदी पर बड़े उद्योगपतियों से सांठगांठ का आरोप, नफरत के विरुद्ध मोहब्बत की दुकान, वही जाति जनगणना का रोना, वही उत्तर दक्षिण का विभाजन, वही पिछड़ों को अपने पाले में लाने का बेसुरा राग। अधिकांश नेताओं का वही 15 लाख रुपए न देने का रोना तो मोदी को झूठों का सरदार कहना। लेकिन जनता सब जानती है कि यूपीए के 10 सालों में क्या हुआ और मोदी ने 10 सालों में क्या किया।

तालाबंदी से बिगड़े हमरे सगरे काज...!

-दिनेश गंगराड़े

कोरोना का तीसरा ,चालीसवाँ, नुक्ता अभी कल ही निपटा है,मजबूरन सरकार की ताला लटकाउ नीति से हमरे सगरे ज़रूरी काज बिगड़े पड़े है।इस कंठ सुखाउ गर्मी में, गर सब कुछ सामान्य रहता तो हम सीजन में कुंटलों आम,गन्ना,फलों का ज्यूस गटक जाते,हजारों आइसक्रीमें गले के नीचे सटका देते।आखातीज की हजारों शादियों में लाखों मावाबाटी,जलेबियां, खोयापाक का हमारे पेट मे कब्रस्तान होता। शिकंजी,फरसाण,व बंगाली हम गले-गले तक 'पैक' कर लेते।कई क्वारें,कई क्वारियों को ब्याव में नज़र से 'चेक' कर लेते। कइयों के ससुर,सालियाँ मिलती,कितनो के दालान बांसते, पर सत्यानाश जाएं इस कोरोना का जिसके सिसकते रोने से कई लोग पॉजिटिव होकर,काल के मुंडे में समा रहे है। 'चटकें' हुए नरमुंडों को %दो जख%भी सुकून का नसीब नही हो रहा हैरिश्ते-नाते,व इंसानियत के सारे पुल ध्वस्त हो रहे है।कोरोना रिएक्शन टाइम में लोगो के सारे रूटीन कार्य बिखरे व बिगड़ गए है।गर्मी की इन दोपहरियों मे हमारे 'किरसानी'काम ठप्प हो गए है।गेंहू कटाई,खेत सफाई,नरवाई फूँकने में हमारा,बापड़ा किसान पिछड़ गया हैफसल बेचने,व किरसानी धंधे के बाद हमारे काश्तकार इस ग्रीष्म ऋतु में दूध सप्लाई ठप्प करने,फसलों के दाम बढ़ाने, इंसानों की कीमत घटाने,कृषि को लाभ का दर्जा देने जैसे मुद्दों पर आंदोलन करने से बंचित रह गए।बेकारों ,को काम चाहने हेतु,सरकार का पुतला फूँकन कार्यक्रम करना था,राज्य कर्मचारियों को भत्ता, लत्ता,बढ़ाने हेतु हाथ मे लेने थे गत्ता!मझधार में भटकी 'सत्ता' के कई नुमाइंदे ,कुर्सी के वास्ते%दबाब% की कर रहे थे राजनीति,क्योंकि उन्हें चाहिए था माल मत्तापर कोविद19 ने कर दिया मातम का व्यापार सस्ता!इस साल की ग्रीष्म में उतरती कईयों की गर्मीहज़ारो बेटियां ब्याही जाती,हज़ारो कुंवर,जंगे शादी के मैदान में (सु)वर सिध्द होतेकई क्वांरी दुल्हनें सचमुच घर बसाती,लुटेरी दुल्हनें,दूल्हों को दिल व माल से लुटती,फर्जीबाड़ा करती,पकड़ाती,खानादानी दुल्हनों के सात फेरों में कई दूल्हे शहीद होते,गाना बजता-'कटा-कटा बेचारा बकरा' कई छोरियां ब्याव में एक दिन फूट-फूट कर रोती और उम्र भर होने वाले पति को रुलाती लोग कहते-' रुलाती है बेटियां' शादी के बाद, गिरगिट से रंग बदलते बेटेगर्मी चरम पर ज़मी पर होती और अव्यवस्थाएं आसमां परव्यापार दौड़ता और व्यापारी इस भीषण गर्मी में ठंडी अलमारी(ऐसी)के पास पड़तेकई हज़ारो छात्र अपने जीवन के 'इम्तहान' में व्यस्त रहते और उधर नई सत्ता का पुराना खेल चलतापाला बदल,मंत्रिपद में दखल और पॉलिटिक्स गिरगिट की मानिंद रंग बदलतीइधर कानून,नून लेने तथा व्यवस्था तेल लेने जातीव्यवस्था लचर व राजनीति में भचर-भचर होती,बिचौलिए लाभ व लोभ की गाजर खाते गचर-गचर,जिन्हें कुछ नहीं मिलता,वें खट्टे अंगूर धारी आहें भरते,उपदेश देते-'मिथ्या है ये जगत सचराचर' सारी चर-अचर माया पर खींच तान मचतीगरमी और राजनीति चरमोत्कर्ष पर रहती,नैतिकताएं,सच्चाई,मानवता आदत अनुसार धूल चाटती नज़र आती।कुर्सी और उसका खेल डाल-डाल और भय्याजी पात-पात पर दिखतेसोमरस मंगल में दंगल करवाताश्री,खंड-खंड होता और चटोरे 'श्रीखंड' मय !शादियां उफान पर और बारातें 'तूफान' मय होती किंतु हाय रे दुर्भाग्य कोरोना का रोना उफान पर तथा कोविद19 वायरस गली-गली,पॉजिटिव बन मौत का तांडव नृत्य कर रहा है।कई लड़की के बाप एक जिम्मेदारी से मुक्त एवं होने वाला पति,एक मीठी मुसीबत से युक्त होता।गौर काबिल है कि एक बालू के कण का चौथाई'कोरोना'वायरस ने समूचे विश्व को आर्थिक,शारीरिक,मानसिक रूप से ठप्प कर दिया है।140दिनों में ही 7लाख लोगों को इस धरा से उठा दिया है, याने कोरोना की लीलने की दर औसतन 6000नरमुंड प्रतिदिन है।जब कोरोना जैसा अति सूक्ष्म कण ने दुनिया में रेल,बस,चीलगाडी,जहाज तक रोक दिए है,गर कोरोना के दादा ट्रैफिक पुलिस में होते तो क्या आग मूततेरोना ये है कि कोरोना को रोते-रोते अब तो आंखों का पानी तक सूख गया है,और अब तक सात लाख आंखें पथरा गई है।मानवता सिसक रही हैं, विश्वास,सच्चाई विलुप्ति के कगार पर है, भुखमरी का भंडारा शुरू होने को हैं।माया-मोह बिखर गया है।अर्थ व्यवस्था जार-जार है।सारी दुनिया आज लॉकडाउन है।बंद पर भी ताला जड़ दिया हैजन्म देने वाले 'ब्रह्मा' का डिपार्टमेंट भी इन दिनों बंद है।पालनहार 'विष्णु' का महकमा ही सर्वत्र 'महक' रहा है।संहारक 'महेश' का ही दफ्तर इन दिनों रात दिन सतत खुला है और चल नही वरन दौड़ रहा है।महांकाल ने 'थर्ड आई' ओपन कर दी है।यमराज ओव्हर टाइम कर-कर के लोगो को निपटाने में लगे है।कभी फुर्सत को तरसती 'जनता' फिलहाल शुध्द फुर्सत में है।लोग सोते-सोते थक गए है,बैठे-बैठे उकता गए है,विवश है।लॉक डाउन नही यह खाक डाउन है।चौतरफा सिर्फ डाउन ही डाउन है।शवयात्रा को पुण्य कार्य का ठेका मानने वाले,अब ठेके पर दफन हो रहे है।कयामत टूट पड़ी है,सब कुछ असामान्य सा है।गर्मी में गर्मी पड़ रही थी लेकिन अब बरसात में पानी नही,गर्मी ही पड़ रही है।सब कुछ उलटा-पुलटा हो रहा है।

*समरपार्क,दीप पेलेस कालोनी, एस एस गॉर्डन, निपानिया, इंदौर452010मप्र

पुरानी मनोहारी बनाम नई झिलमिलाती इंदौर...!

मदन वर्मा 'माणिक'
इंदौर, मध्यप्रदेश
मो. 6264366070

पुरानी साठ-पैंसठ वर्ष पहले की बात हैं उस वक्त और उससे पहले इंदौर बहुत छोटा था यहां की आबादी महज ढाई-तीन लाख होगी। प्रकृति की सुंदरता कायम थी। चारों ओर हरियाली, बाग, बगीचे, वन उपवन और कुवें-बावड़ियां, मंदिरों की सुंदरता, पिकनिक स्पाट, सुंदर-सुंदर तालाब, हाट-बाजार एवं मिलों की रौनक तथा तीज-त्यौहार पर आपसी सौहार्द ये सब भविष्य के आगोश में यादों का पिटारा बनकर रह गया है।

अब कच्चे खपरैल, मिट्टी गारे, पतरे, चद्दर के, पटाव के, कवेलु के मकान इक्का-दुक्का रुप में ही दिखाई देते हैं। सीमेंट-कांक्रीटीकरण का जाल और बहुमंजिला इमारतें, पाश कालोनियां, और बड़ी सड़कों, बड़े चौराहों ने, मॉल कल्चर और चाट चौपाटी, बड़े रेस्टोरेन्ट, पब, बार, बड़ी सितारा होटलें, पार्टी कल्चर, शहर के बाहर फार्म हाउस संस्कृति के फैलाव ने आधुनिकता की नई इबारत तय की हैं।

वार त्योहार मनाने में इंदौर शहरवासियों का एक अलग ही जोश उमड़ता हैं। बड़ा ही अनूठा मेलमिलाप, आपसी सौहार्द, अपनापन, भाईचारा पहले भी था और आज भी हैं। समय बीतने के साथ थोड़ा हटकर बदलाव जरुर आया है। छ- सात दशक पहले की ढाई लाख आबादी आज पैंतीस लाख के आसपास तक पहुंच गई है। आपसी व्यवहार में समय रहते बदलाव आया है। अधिकांश लोग बाहर से भी रोजगार, व्यवसाय, शिक्षा के लिए यहां बस गये हैं। त्योहारों में मकर संक्रांति, महाशिवरात्रि, होली, रंगपंचमी की गैर, वैशाखी, राखी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, अनंत चतुर्दशी की विश्वप्रसिद्ध झांकियों, नवरात्रि गरबा, दशहरा, दिवाली, क्रिसमस, प्रकाशोत्सव, नानक जयंती, क्रिसमस व अन्य त्यौहारों को बड़ी धूमधाम से इंदौर में मनाया जाता हैं। अनंत चतुर्दशी को रंगबिरंगी विद्युत छटाओं से झिलमिलाती मनोहारी झांकियां लगभग सौ वर्षों से निकल रही हैं, जिन्हें लाखों लोग बाहर से देखने शहर में आते हैं। ये झांकियां रातभर निकलती हैं। पुराने समय में बसा जूनी इंदौर और नयी बसावट वाला इंदौर, नई सड़क मतलब जवाहर मार्ग, एम. जी. रोड़ मतलब महात्मा गांधी मार्ग, सुभाष मार्ग, किला मैदान रोड़, पलासिया, केशरबाग, माणिकबाग, अन्नपूर्णा, बिजासन रोड़, आसपास के छोटे-छोटे गांव ऐसे पचासों गांव अब शहर की आबादी व सीमा में मिल चुके हैं। आज बिलकुल अलग नजारा हैं शहर का बड़ी सड़कें, विशाल चौराहे, अनेक फ्लायओवर ब्रिज, रिंग रोड़, बायपास रोड़, भविष्य में ऐलिवेटेड ब्रिज व मेट्रो ट्रेन भी शहर के विकास-विस्तार में शामिल होगी। वर्तमान सिटी बसें उपनगरीय बसें शहर की जनता में लोकप्रिय है। शहर पुराने समय में चलने वाले तांगों-टेंपों-नगर सेवा (मिनीबसों) से मुक्त है। मेरे मन की याद गली-शहर की गलियां- विशेष रूप से खाने के शौकीनों के लिए प्रसिद्ध स्थल,ठीये व गलियां मशहूर हैं: सराफा, छप्पन दुकान, राऊ चौराहा, छावनी व मालवा मील चौराहा, मल्हारगंज, राजबाड़ा, राजमोहल्ला, सुखलिया की मिठाईयाँ, चाट, समोसे-कचौरी-आलूबड़े-छोले टिकिया, गुलाब जामुन, भुट्टे का कीस, दही बड़ा, भजिए, आईसक्रीम, श्रीखंड व गाजर का हलवा के लिए प्रसिद्ध है।कई बार हमने भी इन व्यंजनों को खाने का आनंद उठाया हैं।

साहित्यकार का स्वाभिमान एवं अभिमान एक दृष्टि में (आत्म मंथन)

स्वयं की लेखनी से लिखे हर शब्द पर लेखक का अपना दायित्व होता है । यदि साहित्यकार के स्वभाव में अभिमान का प्रवेश हो गया तो, उसकी रचनाओं की सुंदरता कहीं खो जाती है । भीड़ में वह अपने को कुछ पलों के लिए गौरवान्वित महसूस करता है, परंतु उसके अंदर से वह संजीवनी प्राण लेखन शक्ति धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है । उत्साह वर्धन के लिए कुछ हद तक लेख की प्रसंशा की जा सकती हैं, लेकिन किसी को अपने से निम्न बता कर केवल अपने लेखन की बढ़ा चढ़ा कर प्रशंसा करना अभिमान है और यह सर्वथा अनुपयुक्त है। जो सच्चे साहित्यकार है, उनकि अनुपम साहित्यिक कला माता सरस्वती का दिया हुआ आशीर्वाद व उनका अपना स्वाभिमान है , जिसका मान वह पूरी तरह मर्यादाओं में रखकर अपने द्वारा रचित साहित्य का सृजन करते वक्त करते हैं ।अभिमान स्वयं का शनैःशनैः पतन होता है और स्वाभिमान ईश्वर को धन्यवाद और समर्पण कर प्राप्त किया हुआ आशीर्वाद होता है जो हमें उत्कृष्ट लेखन करने की आत्मिक दिव्य शक्ति प्रदान करता है । स्वाभिमान के साथ प्रस्तुत की गयी रचना का आकर्षण बहुत अलग होता है । स्वाभिमानी साहित्यकार लगातार सीखने व स्वयं को निखारने का प्रयास करता है, उसके लिए लेखन कला की उत्कृष्टता महत्वपूर्ण होती है। अभिमानी साहित्यकार अपने आगे दूसरे साहित्यकार के अच्छे लेखन की प्रशंसा नहीं करता और नहीं उसके मन में सीखने की इच्छा होती है ।

-मोनिका डागा 'आनंद' , चेन्नई, तमिलनाडु

बरगुलिया,माजम होली पूजन में महत्व

बरगुलिया, बर्बुले,भरभोलिए के नाम से जाना जाता है। गाय के गोबर से बने ऐसे उपले होते हैं जिनके बीच में छेद होता है। इस छेद में रस्सी डाल कर माला बनाई जाती है।होली पूजन के समय होली पर चढ़ाई जाती है एक माला में सात भरभोलिए होते हैं।होलिका दहन के समय यह माला होलिका के साथ जला दी जाती है।भारतीय जन मानस व संस्कृति में गाय के गोबर का अपना विशेष महत्व है। होली पर भी इसका महत्व देखने को मिलता है।वही प्रसाद में माजम,हार कंगन जो शक्कर से निर्मित होते है।बाजारों में खूब बिकते है।बड़े सुंदर बने होते है।इन्हें देखकर राहगीरों के पग रुक जाते है।वे इसके बारे में दुकानदार से जरूर पूछते है।क्योकि ये साल भर में होली के समय ही दिखते और बिकते है।मोहल्लों में कई स्थानों पर होलीदहन किया जाने लगा है।सुझाव है कि यदि होली दहन एक ही स्थान पर किया जाए तो पर्यावरण के पक्ष में ज्यादा उपयोगी होगा।अत: बिना पत्तियों के वृक्षो को बेजान समझकर होली के लिए ना काटे। कंडे की होली दहन हेतु संकल्प लेवे ताकि पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सके।

संजय वर्मा 'दृष्टि'
125 शहीद भगतसिंग मार्ग
मनावर जिला धार म प्र
(भारत), मो. 9893070756

देश की आर्थिक प्रगति को लगे पंख, इस बढ़ती रफ्तार से सारा देश खुश।

कहां जा रहा है कि इस वक्त जैसे देश की अर्थव्यवस्था को मानो पंख लग गए हैं पिछले दिवस ही केंद्र सरकार ने चालू वित्त वर्ष 2023- 24 की तीसरी तिमाही में जीडीपी के आंकड़े जारी किए है जो इस बात के संकेत दे रहे हैं कि भारत की अर्थव्यवस्था इस वक्त तेज गति से आगे की ओर बढ़ रही है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में देश की आर्थिक विकास दर 8.4त्न है जबकि अनुमान था कि यह आंकड़ा 6.5 फीसदी रह सकता है। अर्थव्यवस्था में यह तेजी मैन्युअल फैकचरिंग, माईनिंग कंस्ट्रक्शन क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन के कारण हो रही है। एनएसओ ने दूसरे अग्रिम अनुमान में देश में देश की वृद्धि दर 2023-24 में 7.6 प्रतिशत रहने की बात कही थी अत: आंकड़ों से पता चलता है कि भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में अपने विकास दर गति को बरकरार रख रहा है। अत: कह सकते हैं कि यह अर्थव्यवस्था में बढ़ती वृद्धि दर हमारे देश के प्रधानमंत्री के अथक प्रयासों का ही नतीजा है जो दिन रात देश की तरक्की के सपने देख रहे हैं एवं सभी को इसके लिए प्रेरित भी कर रहे हैं। देश की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था को लेकर आज सारा ही देश गर्व कर रहा है, खुशी भी जाहिर कर रहा है। स्वयं हमारे प्रधानमंत्री भी इसके लिए काफी उत्साहित है जो उन्होंने मीडिया के माध्यम से जाहिर भी किया है। वित्त वर्ष 2023-24 की तीसरी तिमाही में आर्थिक विकास दर 8.4त्न रही है जो भारतीय अर्थव्यवस्था की ताकत और क्षमता को दर्शाती है हमारे प्रयास देश के लिए और भी तेजी आर्थिक विकास के लिए जारी रहेंगे जिससे 140 करोड़ भारतीयों को बेहतर जीवन जीने और एक विकसित भारत बनाने में मदद भी मिलेगी। कह सकते हैं कि वर्तमान समय में हमारे देश को एक ऐसा कर्मयोगी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रूप में मिला है जो शुरू से ही अपने पहले कार्यकाल से हि देश को विश्व में एक बड़ी आर्थिक शक्ति बनाने के लिए प्रयत्नशील है, जो 'लोकल फार वोकल' का नारा भी देता है तथा देश की प्रगति की आर्थिक रफ्तार को तेज गति से पंख लगाने का प्रयास भी करता है।

-मनमोहन राजावतराज, नई सड़क, शाजापुर

कांग्रेस-मुक्त भारत का नारा और कांग्रेसियत-युक्त सियासी नजारा

भारत की राजनीति का वर्तमान दौर दो-ध्रूवीय टकराव का है, जिसमें एक ध्रूव पर कांग्रेस एवं उसके सहयोगी दल हैं, तो दूसरे ध्रूव पर अकेली भाजपा उन सबको ललकारती हुई दिख रही है । गत संसदीय चुनाव के दौरान भाजपा की ओर से 'कांग्रेस-मुक्त भारत' का जो नारा ईजाद किया गया, उसका शोर अब तो बढता ही जा रहा। केन्द्र में हुए सत्ता-परिवर्तन और कांग्रेस के अप्रत्याशित क्षरण के बावजूद देश के विभिन्न राज्यों में हुए विधान-सभा-चुनावों के दौरान भी यह शोर सियासी फिजां में तैर ही रहा है । इस नारा का प्रभाव कहिए या भाजपा के चमत्कारी नेता नरेन्द्र मोदी व अमित शाह के नेतृत्व का परिणाम; कांग्रेस जिस तेजी से देश भर में घटती-सिमटती जा रही है, उसे देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत जल्दी ही एक न एक दिन भारत उसी तरह कांग्रेस से मुक्त हो जाएगा, जिस तरह अंग्रेजों से मुक्त हुआ । ऐसे में जाहिर है, 'कांग्रेस-मुक्त' होने से भारत का उतना ही भला होगा, जितना गोरे अंग्रेजों के चले जाने और उनकी बनायी सत्ता-व्यवस्था पर काले-कांग्रेसी अंगरेजों के काबिज होने से हुआ । अर्थात, अंग्रेजों के चले जाने के बावजूद अंग्रेजी औपनिवेशिक रीति-नीति, सोच-संस्कृति, पद्धति-परिपाटी के रूप में सारी अंग्रेजियत कांग्रेस के नेतृत्व में बदस्तुर कायम ही नहीं रही, बल्कि फलती-फुलती भी रही । नतीजा यह हुआ कि लोग-बाग बरबस ही यह महसूस करने लगे कि कांग्रेसियों से अच्छा तो अंग्रेजों का शासन ही था । मेरा इशारा इस ओर है कि चेहरा बदल जाना पर्याप्त नहीं है, नये चेहरों के चाल-चलन अगर न बदले । ट्रेन का ड्राइवर बदल जाने और ट्रेक वही का वही बने रहने से गंतव्य नहीं बदल सकता ।

मनोज ज्वाला
मो. 6204 00 6897
E-mail : jwala362@gmail.com

देश के यशस्वी प्रधानमंत्री व भाजपा के चमत्कारी नेता नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत अंग्रेजों की औपनिवेशिक हस्तक बनी कांग्रेस के शासन से मुक्ति की ओर आगे बढ रहा है, यह सुखद और आशाजनक है ; किन्तु महज सियासी सत्ता से कांग्रेस का सफाया हो जाने के बावजूद सियासत में कांग्रेसियों की विरासत, या यों कहिए कि कांग्रेसियत का बचा रहना उतना ही दुर्भाग्यपूर्ण होगा, जितना अंग्रेजों के चले जाने के बाद हमारे देश में अंग्रेजियत का आज तक बने रहना त्रासदपूर्ण है । हालांकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का रुझान कांग्रेसी विरासत को बचाए रखने के प्रति कतई नहीं है, किन्तु कांग्रेस ने देश की राजनीति का जो ट्रैक बना रखा है, उसे बदलने की दिशा में अभी कोई उल्लेखनीय काम दीख नहीं रहा है; इस कारण यह आशंका बलवती होती जा रही है कि देश में बदलाव की बह रही तेज आंधी के थपेडों से बडे-बडे विषवृक्षों के धराशायी हो जाने के बावजूद उनकी जडें यथावत कायम न रह जाएं और कालान्तर बाद वे फिर नये रौब के साथ फुनग न जाएं । आशंका यही और इतनी ही भर नहीं है, बल्कि यह भी है कि बदलाव की

इस आंधी में अंधेरी रात को जिस दस्यु-दल के विरूद्ध पूरा नागरिक समाज लामबंद हो गया है, उस दल के चतुर-शातिर दस्यु अफरा-तफरी का लाभ उठा कर नागरिकों की भीड में शामिल हो जोर-जोर से चिल्ला रहे हैं- पकडोज़..पकडो !

ऐसे कई चतुर-शातिर अवसरवादी मेरी व्यक्तिगत जानकारी में हैं, जो कल तक इस देश की राष्ट्रीयता को कुंद करने वाली कांग्रेस के बडे झण्डाबरदार थे, साम्प्रदायिक तुष्टिकरण ही जिनकी नीति थी, वन्देमातरम व भारतमता का जो उपहास उडाते नहीं अघाते थे, वे रातों-रात लम्बी छलांग लगा कर आज भाजपा में शामिल हो विधायक-सांसद बन बैठे हैं । क्या ऐसा समझा जा सकता है कि दल बदल कर भाजपा में आ जाने मात्र से वे कांग्रेसी मनोवृत्ति से उबर कर अब राष्ट्रवादी बन गए, या बन जाएंगे ? गौरतलब है कि हमारे देश में कांग्रेस महज एक राजनीतिक दल का नाम नहीं है, बल्कि यह अंग्रेजी उपनिवेशवाद की प्रतिनिधि और औपनिवेशिक राजनीति की भारत-विरोधी संस्कृति का सरंजाम भी है । इसकी स्थापना ही अंग्रेजों ने अपने औपनिवेशिक एजेण्डे को क्रियान्वित करने के लिए किया हुआ था । लाल-बाल-पाल और सुभाष चन्द्र बोस ने इसमें राष्ट्रवादी संस्कार डालने की कोशिश की, तो उनका हश्र क्या हुआ, सभी जानते हैं । महात्मा गांधी ने इसे अपने 'हिन्द-स्वराज' दर्शन से देशज स्वरूप प्रदान कर देशव्यापी बना दिया तब उनकी उस लोकप्रियता की वैसाखी के सहारे अपना सियासी कद बढा कर पूरी कांग्रेस का अपहरण कर लेने के पश्चात अंग्रेजों से सत्ता-हस्तान्तरण की दुरभिसंधि कर नेहरू ने किस कदर महात्मा के विचारों की धज्जियां उडा कर गांधीवाद को सिर्फ बौद्धिक विलास की वस्तु बना कर रख दिया, यह सत्य पूरी दुनिया जानती है । उसके बाद से अंग्रेजी उपनिवेशवाद का एजेण्डा ही कांग्रेस के हाथों बेरोक-टेक लागू किया जाता रहा, इस तथ्य को भी कोई झुठला नहीं सकता ।

जिस तरह से अंग्रेजों ने अपनी सोची-समझी कूटनीति के तहत अंग्रेजी शासन के विरोधी स्वर को भी अपने अनुकूल बनाने के लिए कांग्रेस की स्थापना की थी, उसी तरह से आजादी के बाद कांग्रेस-विरोधी राजनीति के उठते स्वर को अनुकूल बनाने के लिए यद्यपि कांग्रेस की ओर से अंग्रेजों की तर्ज पर कोई सुनियोजित संगठन खडा नहीं किया गया ; तथापि ऐसे राजनीतिक दल कांग्रेसियों के द्वारा ही बनाए-चलाए जाते रहे हैं, यह निर्विवाद सत्य है । कांग्रेस से निकले हुए लोग ही भिन्न-भिन्न अवसरों पर देश के विभिन्न राज्यों में विविध नामों से दल बना-बना कर कांग्रेस-विरोध के नाम पर गैर-कांग्रेसी सत्ता की राजनीति करते रहे । कांग्रेस-विरोध में निकले स्वरों के राग-सुर तो बदलते रहे, किन्तु नेताओं के हाथ एक-दूसरे से मिलते ही रहे । कालान्तर बाद उन तमाम दलों का संयुक्त विरोध भाजपा से होने लगा और उन सबका भाजपा-विरोध इस कदर बढता गया कि कांग्रेसि-्वरोधी भी कांग्रेस के ही सहयोगी बने रहे । इसके मूल में %वोट-बैंक% बनाने-रिझाने की %मुस्लिम-तुष्टिकरणवादी राजनीति% रही थी, जो आज भी है । राजनीति में %सब कुछ चलता है', ऐसा कह कर वंशवाद व परिवारवाद के साथ-साथ 'दल-बदल' को भी न केवल प्रश्रय दिया जाता रहा, बल्कि सुविधावाद व अवसरवाद को भी राजनीति का आवश्यक रंग बना दिया गया । धार्मिक सम्प्रदाय एवं जातीय समुदाय विशेष को वोट-बैंक बना-बना कर उनके तुष्टिकरण और आरक्षण की अवांछित प्रवृतियां कांग्रेस ने की कायम है । विधायकों-सांसदों की हैसियत-अहमियत एवं सुख-सुविधा, वेतन-भत्ता में अनावश्यक अतिशय बढोतरी कर-कर के समाज में एक 'माननीय' तबका और उनकी चमचागिरी-विचौलियागिरी करने का धंधा कांग्रेसियत की ही देन है, जिसका लाभ सभी दल के लोग उठाते रहे हैं । मेरे कहने का मतलब यह है कि अंग्रेजी उपनिवेशवाद की प्रतिनिधि-कांग्रेस ने ही इस देश में राजनीति की कांग्रेसी संस्कृति और तदनुसार राजनीतिक परम्पराओं का निर्माण किया, जिसे सभी दलों ने बिना किसी परिवर्तन के स्वीकारा और अपनाया ।

अब जब कांग्रेस-मुक्त भारत का नारा लगा कर भाजपा द्वारा संसद व विधान-सभाओं में नये-नये संख्या-समीकरण बनाये-बदले जा रहे हैं, तो उसके सांसदों-विधायकों के चिन्तन-आचरण में भी परिवर्तन होना चाहिए, जो कहीं भी दीख नहीं रहा है । भाजपा-शासित राज्यों के विधायकों ने भी अपने-अपने वेतन-भत्ते स्वयं बढा-बढवा लिए । भाजपाई सांसदों-विधायकों के ठाट-बाट, लाव-लश्कर, नाज-नखरे सब वैसे ही हैं- कांग्रेसियत से सराबोर । एक नरेन्द्र मोदी को छोड कर किसी ने ऐसी कोई नजीर पेश नहीं की है अब तक, जो कांग्रेसियत से रहित हो । जिस तरह से कांग्रेसियों द्वारा गांधी के हिन्द-स्वराज को तिलांजलि दे कर सत्ता-सुख भोगना ही अपनी प्राथमिकताओं मे शामिल कर लिया गया, उसी तरह दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म-मानव दर्शन का ज्ञान औसत भाजपाइयों को आज भी नहीं है । अपने वैचारिक अधिष्ठान की उपेक्षा कर सत्ता हासिल करने के लिए आदर्शवादिता से रहित जिस राजनीति का ईजाद कांग्रेस ने किया है, उस कांग्रेसियत से भाजपा भी कतई मुक्त नहीं है । अपने राजनीतिक अधिष्ठान की वैचारिकता के प्रशिक्षण और तदनुसार राजनीतिक आचरण सुनिश्चित करने की ठोस व्यवस्था किये बिना भाजपा के 'कांग्रेस-मुक्त भारत' अभियान का परिणाम भी 'सत्ता-हस्तान्तरण' की तरह 'सत्ता-परिवर्तन' तक ही सिमट कर रह जाएगा, इससे इंकार नहीं किया जा सकता । क्योंकि, भाजपा द्वारा आंख मूंद कर कांग्रेसियों को अंगीकार करते हुए 'कांग्रेस-मुक्त भारत' का नारा लगाना 'कांग्रेसियत-युक्त सियासत' को ही दोहराना है । कांग्रेस का सफाया करने के जोश व जुनून में भाजपा के भीतर की कांग्रेसियत का उन्मूलन होने के बाजाय, बाहर से बे-रोक-टोक आ रहे कांग्रेसियों के कारण भाजपा का ही कहीं कांग्रेसीकरण न हो जाए, इस ओर भी भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को ध्यान देना चाहिए, तभी यह नारा सार्थक होगा ; अन्यथा 'अंग्रेज-मुक्त भारत' के अंग्रेजीकरण जैसी एक नयी त्रासदी की पुनरावृति भी हो सकती है।

कहानी परवरिश

मधु, ''सुना है तुम्हारी बेटी अंजू ने स्कूल में टॉप किया है, बहुत-बहुत बधाई है !'' फोन पर मधु की पुरानी सहेली गीता बात कर रही हैं ।

हां, बहुत-बहुत धन्यवाद गीता !

गीता ने आगे कहा, ''मैंने तो यह भी सुना है, तुम अंजू को आगे पढ़ने के लिए लंदन यूनिवर्सिटी भेज रही हो, क्या यह सच है !'' मधु, !

मधु, हां गीता ! गीता फिर बोल पड़ी, मधु, देखो स्कूल में टॉप किया है वह तो बहुत अच्छी बात है, यही किसी कॉलेज में दाखिला करवा दो अंजू का, लड़की है ! कहां तुम उसे सात समंदर पार भेज रही हो पढ़ने के लिए अकेली । कहीं ऊंच-नीच हो गई तो क्या करोगी, बुरा मत मानना मधु ! मैं तो देखो,तुम्हें आगाह कर रही हूं । मधु बोली, गीता मुझे मेरी परवरिश पर पूरा भरोसा है, तुम अपने पुराने ख्याल छोड़ दो, आज के जमाने में बेटा और बेटी दोनों एक समान है । अंजू ने इतनी मेहनत से पढ़ाई की है,उसे लंदन यूनिवर्सिटी में स्कॉलरशिप मिला है । हमारा पूरा परिवार उसके साथ है । अंजू अपनी मर्यादाओं और हमारे घर के संस्कारों को अच्छी तरह जानती हैं । वह अब छोटी बच्ची नहीं है । हमारे संस्कार ही बच्चों के जीवन की नींव और सुनियोजित विकास में सहायक है, यह उन्हें सही और गलत में फर्क करना सीखाते हैं । तुम अपनी सोच बदल दो गीता । अपनी परवरिश पर यकीन रखो।

– **मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई, तमिलनाडु**

औरतों पर अत्याचार ,आख़िर क्यों ?

औरत ने जनम दिया मर्दों को
मर्दों ने उसे बाज़ार दिया
जब जी चाहा मसला, कुचला
जब जी चाहा दुत्कार दिया .....

फ़िल्म साधना के इस बहुचर्चित, निराशावादी और यथार्थवादी गीत में गीतकार साहिर लुधियानवी ने पूरी ऊर्जा उंडेलकर रख दी है। स्त्री की परेशानी, पीड़ा, तकलीफ़, तनाव, तड़फ को जीवंत कर दिया है गीतकार ने। औरतों को घर की सेविका-चाकर-दासी-मज़दूर -कठपुतली- पैरों की जूती समझने वाली पुरानी, रूढ़ीवादी, मर्द मानसिकता के मुंह पर करारा चांटा है ये गीत।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति में नारी का स्थान ऊंचा है।'' यत्र पूज्यते नारी, रमंते तत्र देवता: ''अर्थात् जहां पर नारियों की पूजा होती है, वहां देवताओं का निवास हुआ करता है। जिस देश में हर एक व्यक्ति के लिए औरत अनुकरणीय-अभिनंदनीय-वंदनीय होनी चाहिए उसी देश में अगर उसका मानसिक-शारीरिक-भावनात्मक शोषण, दमन, उत्पीड़न होता है तो यह शर्मनाक है। देश वासियों के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। नारी को भोग-विलास की वस्तु मानकर उन पर अत्याचार-बलात्कार जैसी घृणास्पद घटनाओं में वृद्धि होती जा रही है। बलात्कार जैसी ज्वलंत समस्या पर निर्माता, अभिनेता आमीर ख़ान के अपने टी वी कार्यक्रम क्सत्यमेव जयते (4 मार्च, 2014) में खुलकर, बेबाक बातें बताई गईं थी। कई पीड़ितों ने जब आपबीती सुनाई तो देखने वाले दर्शकों के दिल दहल उठे। सुनने वालों के दिमाग़ सुन्न हो गए। कई औरतों के आंसू रुक नहीं रहे थे। गैर मर्दों के अलावा जब कोई परीचित, रिश्तेदार भी ऐसी नीचता पर उतरे तो किस पर और क्यों विश्वास करें?

हाल ही में मानवता को शर्माकर करने वाली घटना घटी, कर्नाटक राज्य के बेलगावी शहर के निकट। गांव की 42 वर्षीय महिला के घर पर 400 लोगों का झुंड़ पहुंचा। घर पर हमला बोलकर उसे तहस-नहस किया गया। यही नहीं, अमानुषता दिखाते हुए उस महिला को निर्वस्त्र किया गया। बिजली के थंबे से बांधकर मारा-पीटा गया। महिला का कोई दोष नहीं था। उनका बेटा गांव की धनवान लड़की को प्रेम में पड़कर भगा ले गया था, इसलिए उन्हें ये सब भुगतना पड़ा। 2022 की एक रिपोर्ट के अनुसार बलात्कार के सबसे ज़्यादा 5399 केस और महिला उत्पीड़न के सर्वाधिक केस 45058 राजस्थान में ही दर्ज किए गए।

एक तरफ हम हिंदुस्तानी इक्कीसवीं सदी की ओर बढ़ने का दंभ भरते हैं, भारत देश को महाशक्ति बनाने के सपने संजोए बैठे हैं, दूसरी ओर अपनी नीचता, हैवानियत-शैतानियत का नंगा नाच दिखाकर देश की छवि धूमिल करने वालों की कमी नहीं। औरतों पर होने वाले अन्याय पर अपना रोष प्रकट करते हुए सुप्रसिद्ध लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने एक जगह कहा है, ''यदि आज बलात्कारियों को बधिया करने की सज़ा दी जाए तो वह सपने में भी हमला करने की बात सोचने से डरेगा। मगर भारत में ऐसी असरदार सज़ा लागू नहीं है, क्योंकि यहां पुरूष सत्ता प्रबल है।'' ऐसे ही क्रांतीकारी विचारों पर आधारित है निर्देशक अवतार भोगल की फ़िल्म जख़्मी औरत (1988)। फ़िल्म में दिखाया गया है कि महिला पोलिस इंसपेक्टर नायिका (डिंपल कपाड़िया) को अकेला पाकर कुछ अपराधी तत्व अपनी हवस का शिकार बनाते हैं। ऐसे भूखे भेड़ियों को सबक सिखाने नायिका उन पर केस करती हैं। लचर कानून व्यवस्था के चलते सभी आरोपी क्निर्दोष ˙ छूट जाते हैं। प्रतिशोध की ज्वाला में धधकती नायिका अपनी डॉक्टर सहेली की मदद से सभी आरोपियों का क्पुरूषत्व ˙ छीनकर, उन्हें कठोर दंड देती हैं।

बिहार के एक शहर में पड़ौसी द्वारा यौन शोषण की शिकार विधवा महिला ने वारदात के कुछ घंटों बाद, रणचंडी का रूप धारण कर लिया। अत्याचारी पर घासलेट छिड़कर आग के हवाले कर दिया। वो तड़फ़ - तड़फ़ कर जल मरा। उसी तरह उत्तर प्रदेश में एक युवती के साथ रेप करने वाले युवक को पीड़िता ने अपने घर बुलवाया। पीड़िता के साथ शादी करने के लिए उस पर दबाव डाला गया। मगर युवक ने साफ मना किया। गुस्साए घरवालों ने उसे मौत के घाट उतार दिया। इस तरह के ढेरों उदाहरण पेश किए जा सकते हैं।

माना कि बदले की भावना से प्रेरित होकर जुल्म का जवाब जुल्म से देना तर्कसंगत, न्यायसंगत नहीं है। ख़ुद ही गवाह,वकील और जज बनकर निर्णय लेना घातक है। लेकिन ऐसी बातों से अत्याचारियों तक कड़ा संदेश पहुंचता है कि औरत के अंदर की चिंगारी अब ज्वालामुखी बनकर उन्हें जलाकर राख कर सकती है। कोई भी बेटी, बहन, बहू, भाभी किसी भी गैर मर्द को अपना शरीर स्वेच्छा से छूने तक नहीं देती है। फिर ये कौन होते हैं उनके शरीर से खिलवाड़ करने वाले? औरत कोई मन बहलाने वाला खिलौना नहीं जिससे हर कोई खिलवाड़ करे।

पहले दिल्ली, फिर मुंबई, कोलकाता आदि शहरों में होने वाले गैंगरेप चिंताजनक, संतापजनक हैं। मानवता के मुंह पर कालिख़ पोतने वाली, समाज को शर्मसार करने वाली कमीनी हरकतें देखकर शैतान भी शर्माता होगा। क्या ये वही भारत देश है जहाँ लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा देवी आदि की पूजा की जाती है? विशेष अवसरों पर कुंवारी कन्याओं को उचित मान - सम्मान देकर उन्हें पूजा जाता है। ऐसी पवित्र भूमी पर दरिंदे कैसे पैदा होते हैं? कब समाधान निकालेगा इस जटिल समस्या का?

आसान नही है शिव होना

प्राण तो सबको प्रिय हैं। परंतु पृथ्वी के झुझारू रूप से चलने हेतु , हर कल्प में प्राण रूपी शक्ति को खुद से पृथक करने के लिए रुद्र होना पड़ता है। नि: स्वार्थ भक्ति से तो कोई भी आकर्षित हो जाता है। परंतु प्रेम वश असुरों के भी हो जाने के लिए भोलेनाथ होना पड़ता है। कमल तो किसी को भी मोह ले। परंतु कंटीले फल बेल पत्र से ही खुश हो जाने के लिए शंभु होना पड़ता है। शीतलता सबको प्रिय है। परंतु किसी की शीतलता बनी रहे, इसके लिए उसे सर पर धारण करने के लिए चंद्रशेखर होना पड़ता है। गंगा की चंचलता सबको भाती है। परंतु उसके धरती पर अवतरण हेतु ,उसके वेग को जटाओं में धारण करने के लिए गंगाधर होना पड़ता है ! सुंदर पशु-पक्षी सबको प्रिय हैं। परंतु हेय और भय के भाव से देखे जाने वाले सर्प को भी अपने कंठ में स्थान देने के लिए पशुपतिनाथ होना पड़ता है। पुष्प के आभूषण तो कोई भी ग्रहण कर सकता है, परंतु मनुष्य के जीवन पश्चात भी उसको राख के रूप में अपने पास रखने के लिए महादेव होना पड़ता है। अमृत तो सब चाहते हैं। परंतु दूसरों के अमृत हेतु, खुद विषपान करने के लिए नीलकंठ होना पड़ता है। मित्रों की रक्षा तो हर कोई करता है, परंतु वचनानुसार अधर्मी बाणासुर की रक्षा में कृष्ण से युद्ध करने के लिए शंकर होना पड़ता है। भविष्य को जानकर भला कौन अनहोनी होने देता है?

परंतु त्रिकालदर्शी होते हुए भी दक्ष के यज्ञ में जाने की सती की इच्छा का सम्मान रखने के लिए शिवाप्रिय होना पड़ता है। काल से भला कौन जीत सका है? परंतु भक्त मार्कण्डेया के प्राणों हेतु यम तक को समाप्त करने के लिए महाकाल होना पड़ता है। मनुष्यों के देव तो बहुत मिलेंगे , परंतु निशाचरों तक को अपनाने के लिए महेश होना होता है। शव तो एक दिन सब ही होते हैं।परंतु काली को शांत करने हेतु शव बनने के लिए शिव होना होता है। जो सर्प और कार्तिकेय के मोर को मित्रता सीखा दें, वो शिव हैं जो नंदी और गिरिजा के शेर की शत्रुता भुला दें वो महादेव हैं। जो भांग से भी प्रेम करे, दूध से भी, विष भी जिसका हो, अमृत भी वो शिव ही हो सकते हैं। नृत्य भी जिसका हो, संगीत भी, राग भी जिनका है, वैराग्य भी, वो महादेव ही हो सकते हैं। आसान नही है शिव होना।

हर पल त्याग, और बलिदान करना पड़ता है। मात्र भांग और धतूरे से नही। प्रकृति के हर कण से प्रेम करना होता है।

-मेधावी महेन्द्र, पी जी ई टी
टाटा मोटर्स पुणे

देश के लिए मंथन कब होगा ?

हर सत्र में और सवजनिक तौर पर विपक्षी पार्टी व उनके राजनेताओं का केंद्र सरकार पर हमाला रहा है ग़रीबी बेरोजगारी महंगाई भष्टाचार व युवा वर्ग की भूमिका कहा सटीक बैठ रही है इस पर काम अभी बहुत करना होगा।आये दिन कुछ लालची लोग चंद पैसों के लिए अपने जमीर का सोदा कर देते हैं पेपर लीक कहीं धांधली के कारण पटवारी परीक्षा हो या पुलिस भर्ती इन सभी परीक्षाओं में फर्जीवाड़ा का बोलबाला हो रहा है। युवा वर्ग पढ़ लिख कर दर दर भटकता फिरता है। भ्रष्ट तंत्र अभी भी अपना फंन फैलाये खड़ा है। भारत सरकार ने विगत कई वर्षों से सुधार की कोशिश जरूर की है पर ऊपर से नीचे तक जो काई लगी हुई थी उसे साफ करना ही होगा। ग़रीबी बेरोजगारी भष्टाचार व महंगाई ने भारत के आमजन की कामर तोड़ कर रख दी है। हमारे बुजुर्ग या बुद्धिजीवी अपने जमाने के किस्से सुनाते हैं तो ऐसा लगता है कि वह दौर बहुत मनभावन लोकलुभावन जनहितैषीयो का मायालोक होगा जहां टंके सैर खाजा टंके सैर भांजी मिलती थी । जब सिर्फ देश को शिक्षा व सर्व विकास को ले जाने की चुनौतियां थीं सब अपनी अपनी जीवन की गाड़ी चलाने में सक्षम थे। जैसे जैसे देश की प्रगति व उन्नति हो रही है मेहनती लोग कम हो चुकें हैं अब सिर्फ पैसा ही कर्म हो चुका है मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है । पैसे के पीछे भागम भाग लगी हुई है यह पैकेजों का दौर है साहब , तभी तो बेरोजगारों की फौज है देश में सभी को सरकारी नौकरी ही चहिए? भेंड़चाल की इस कतार में पेलमपेल मची हुई है जहां पद 20 या 25 है वह उसे पाने वालों की संख्या हजारों में होती है क्या यही भविष्य है भारत का ? सरकारें करें तो क्या करें यह तो टाट का पैबंद ही लग सकता है । कोशिश व मेहनत तो अपने को ही करना होगी सरकारें एक जगह ठीक करतीं हैं तो दूसरी ओर झोल आ जाता है। भष्टाचार की बानगी पर कुछ नियमों में फेरबदल व आनलाईन सुविधाओं से किसान गरीब को कुछ प्रतिशत राहत जरूर मिली है पर जहां निरक्षरता है पढ़ें लिखे लोग नहीं है उन्हें तो बड़े बाबूजी का रास्ता नापना पढ़ता है उनके दर पर धोक देनी पड़ती है। वर्तमान समय में कुछ लोग जागरूक व शिक्षित समाज में पैरवी कर लेते हैं पर दलित आदिवासी गरीब किसान मजदूर की आवाज को सुनाने के लिए भी ऐसा विभाग बने जहां वंचितों को हर रोज हर एक परेशानियों का समाधान मिलें। निचले स्तर पर इसकी शुरुआत हो साप्ताहिक नहीं हर रोज जनता की सुनवाई के लिए एक विभाग संयुक्त रुप से हर विषयों पर जनमानस का संकटों को खत्म करने के लिए ठोस व कारगार साबित हो। हर गांव शहर मोहल्ला चौपाल में पढ़ें लिखे रिटायर अधिकारी वकील राजनेता न्यायाधीश महिलाएं पुरुष सभी राष्ट्रहित में देशसेवा के मानव कल्याण के लिए समर्पित रहे लोगों की समास्याओं को सुनें निराकरण करें सम्बंधित विभाग व भारत सरकार के पास हर एक बात पहुंचे जिससे नीति आयोग हो या अन्य विभाग सभी मूलभूत सुविधाओं व जनमानस की अपेक्षाओं पर खरा उतरने हेतु सजगता से काम करें। सिर्फ एक दिन जन सुनवाई से गुलशन को सजाने से कुछ ही लोगों को लाभ मिल सकता है पर अगर हर रोज राजा प्रज्ञा का हाल जानें गा तो भविष्य की गतिविधियों में क्या क्या सुधार की आवश्यकता है क्या क्या परेशानी देश में हैं यह मालूम देश के प्रधानमंत्री को पढ़ेगा यह जरिया सीधे जनमानस का साक्षात्कार का पटल बन सकता है। गरीब मजदूर किसान युवा वर्ग को दर दर भटकना नहीं पड़ेगा उन्हें सुविधा सुरक्षा मिलेगी दु:ख तकलीफ़ से निजात मिल जाएगी ओर भ्रष्ट तंत्र पर यह मजबूती से प्रहार होगा। हाल में हम देखें जो क्षेत्र सेवा के थे वह वर्तमान में बड़ी इंडस्ट्रीज व व्यावसायिक का नकाब पहन कर कमाई का जरिया बन गये है। सेवार्थ में परामर्थ की तस्वीर पैसे कमाने का मिशन हो चुकी है? और हों क्यों नहीं जब लाखों करोड़ों रुपए खर्च कर के इन की पढ़ाई में खर्च होते हैं इन डिग्रीयों को पाने के लिए दिन रात मेहनत के बाद पैसे को पानी की तरह बहाया जाता है तो फिर क्यों कोई इसे धर्मांध या परामर्थ में कौन लगाएगा? अस्पताल हो या न्यायालय और फिर शिक्षा के लिए बने स्कूल कालेज सभी जगह पैसों की बलिहारी है महंगी हो चुकी शिक्षा से समाजिक चेतना धुमिल हों चुकी है। भारत में ही नहीं विदेशों में शिक्षा व्यवसाय बन चुकी है वह की डिग्री हासिल कर के अपने देश में कमाईं के लिए बड़े पैमाने पर स्कूल कालेज अस्पताल यह अन्य निजी व्यवसाय सभी आम जन की या मध्य वर्गीय परिवारों की पहुंच से दूर है। कुछ जगहें ऐसी हैं जहां पैसे का मूल्य समझ में आता है लोग इन जगहों से दूर रहना चाहते हैं पर समय का पहिया चक्रव्यूह में फंसता जाता है। सरकारी योजनाओं के नाम पर तोल-मोल के बोल की बात होती है वहीं पैकेजों का खेल की मायावी लोक में तड़पता आमजन की पुकार को कौन सुनेगा? आटा दाल चावल नमक तेल दुध ईंधन के चक्कर में लगा हुआ आम आदमी महंगाई के जोरदार प्रहार से बच नहीं पा रही है । एक बार कोई चीज के दाम बढ़ जाये उसके बाद कम होने में सालों लग जाते हैं। मरता क्या नहीं करता उसे तो जीवन यापन के लिए उन सभी सामान को खरीदता ही है चाहे मंहगा हो या सस्ता पर उस समय उसकी व्यवस्था जरुर गड़बड़ जाती है। आजादी के बाद से इन समस्याओं का समाधान निरंतर खोजे जा रहें हैं पर उलझले बहुत है सुधार की कोशिश ओर तेजी से होनी चाहिए। सभी सम्बंधित विभागों को इस पर चिंतन की आवश्यकता है। जिसे विपक्ष भी उठता रहता है इस पर एक बार लोकसभा व राज्यसभा में चर्चा हो की आजादी के बाद से ग़रीबी बेरोजगारी भष्टाचार व मंहगाई ओर युवा वर्ग के लिए क्या किया और क्या करना है भविष्य में इनके सन्दर्भ में मंथन करना चाहिए। क्यों कि चिंतन से ही सकारात्मक सोच का पिटारा खुलेगा।सभी मिलजुल कर आमजन एक साथ इस अमृत काल में अमृत मंथन करने से ही तो भारत में खुशहाली और समृद्धि आयेंगी। अब विष तो नहीं निकलेगा वह अब अमृत ही निकलेगा। इन सभी विषयों पर अब गहन अध्ययन कर मंथन की आवश्यकता है।विकासित भारत के लिए यह समास्याओं का हो जायेगा या सिर्फ प्रयास करने की शुरुआत हो जाये तो भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी ताकत व विश्व का सिरमौर कहलायेगा।

-लेखक हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग नसिया इन्दौर मध्यप्रदेश
मोबाइल 9826084157

पर्यावरण संतुलन के लिए बेहद जरूरी है वन्य जीवों का संरक्षण

वन्य जीव हमारी धरती के अभिन्न अंग हैं लेकिन अपने निहित स्वार्थों तथा विकास के नाम पर मनुष्य ने उनके प्राकृतिक आवासों को बेदर्दी से उजाड़ने में बड़ी भूमिका निभाई है और वनस्पतियों का भी सफाया किया है। धरती पर अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए मनुष्य को प्रकृति प्रदत्त उन सभी चीजों का आपसी संतुलन बनाए रखने की जरूरत होती है, जो उसे प्राकृतिक रूप से मिलती हैं। इसी को पारिस्थितिकी तंत्र या इकोसिस्टम भी कहा जाता है। धरती पर अब वन्य जीवों और दुर्लभ वनस्पतियों की कई प्रजातियों का जीवनचक्र संकट में है। वन्य जीवों की असंख्य प्रजातियां या तो लुप्त हो चुकी हैं या लुप्त होने के कगार पर हैं। पर्यावरणीय संकट के चलते जहां दुनियाभर में जीवों की अनेक प्रजातियों के लुप्त होने से वन्य जीवों की विविधता का बड़े स्तर पर सफाया हुआ है, वहीं हजारों प्रजातियों के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। वन्य जीव-जंतु और उनकी विविधता धरती पर अरबों वर्षों से हो रहे जीवन के सतत् विकास की प्रक्रिया का आधार रहे हैं। वन्य जीवों में ऐसी वनस्पति और जीव-जंतु सम्मिलित होते हैं, जिनका पालन-पोषण मनुष्यों द्वारा नहीं किया जाता। इन्हीं वन्य जीवों, वनस्पतियों और उनके आवासों को सुरक्षा प्रदान करने को वन्य जीव संरक्षण कहा गया है तथा इनके संरक्षण के लिए लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रतिवर्ष 3 मार्च को 'विश्व वन्यजीव दिवस' मनाया जाता है। प्रतिवर्ष यह दिवस एक खास विषय के साथ मनाया जाता है और इस वर्ष 'विश्व वन्यजीव दिवस''लोगों और ग्रह को जोड़ना-वन्यजीव संरक्षण में डिजिटल नवाचार की खोज' थीम के साथ मनाया जा रहा है।

योगेश कुमार गोयल
वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक
नजफगढ़, नई दिल्ली-11004.
9416740584, 9034304041.
ई मेल: mediacaregroup@gmail.com

जीव-जंतुओं की तमाम प्रजातियां और वनस्पतियां मिलकर अत्यावश्यक पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करते हैं और सही मायनों में वन्य जीव हमारे मित्र है, इसीलिए उनका संरक्षण किया जाना बेहद जरूरी है। हमें भली-भांति यह समझ लेना चाहिए कि इस धरती पर जितना अधिकार हमारा है, उतना ही इस पर जन्म लेने वाले अन्य जीव-जंतुओं का भी है। लेकिन आज प्रदूषित वातावरण और प्रकृति के बदलते मिजाज के कारण भी दुनियाभर में जीव-जंतुओं और वनस्पतियों की अनेक प्रजातियों के अस्तित्व पर दुनियाभर में संकट के बादल मंडरा रहे हैं। वन्यजीव दिवस मनाए जाने के उद्देश्यों में विभिन्न किस्म की वनस्पतियों तथा जीव-जंतुओं पर ध्यान केन्द्रित करना, उनके संरक्षण के लाभों के बारे में जागरूकता फैलाना, पूरी दुनिया को वन्यजीव अपराधों के बारे में स्मरण करवाना और मनुष्यों के कारण इनकी प्रजातियों की संख्या कम होने के विरूद्ध कारवाई करना शामिल हैं।

समस्त स्थलीय और जलीय जीवों के लिए वन्य जीवों का बने रहना अत्यावश्यक है। हिन्दी अकादमी दिल्ली के सौजन्य से प्रकाशित अपनी चर्चित पुस्तक 'प्रदूषण मुक्त सांसें' में मैंने विस्तार से यह उल्लेख किया है कि विभिन्न वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की संख्या में कमी आने से समग्र पर्यावरण किस प्रकार असंतुलित होता है। पर्यावरण के इसी असंतुलन का परिणाम पूरी दुनिया पिछले कुछ दशकों से गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं और प्राकृतिक आपदाओं के रूप में देख और भुगत भी रही है। लगभग हर देश में कुछ ऐसे वन्य जीव पाए जाते हैं, जो उस देश की जलवायु की विशेष पहचान होते हैं लेकिन जंगलों की अंधाधुंध कटाई तथा अन्य मानवीय गतिविधियों के चलते वन्य जीवों के आशियाने भी लगातार बड़े पैमाने पर उजड़ रहे हैं। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा दुनिया के जंगली जीवों और वनस्पतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 'विश्व वन्यजीव दिवस' के आयोजन का निर्णय लिया गया। महासभा ने यह सुनिश्चित करने में साइट्स की महत्वपूर्ण भूमिका को भी मान्यता दी ताकि वह सुनिश्चित कर सके कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से प्रजातियों के अस्तित्व को खतरा नहीं है।

ब्रिटिश काल से ही भारत में वन्यजीवों को सुरक्षा प्रदान करने और बचाने के लिए कानूनी प्रावधान किए जाते रहे हैं लेकिन चिंता की बात यह है कि उसके बावजूद वन्यजीवों की अनेक प्रजातियां पिछली एक सदी में लुप्त हो गई हैं। विश्व वन्यजीव कोष (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) की 'लिविंग प्लेनेट रिपोर्ट 2022' में कुछ ही महीने पहले चौंका देने वाला यह चिंताजनक खुलासा भी हुआ था कि पूरी दुनिया में विगत पचास वर्षों में वन्यजीवों की आबादी करीब सत्तर फीसदी कम हुई है, जिनमें स्तनधारी, पक्षी, उभयचर, सरीसृप, मछली इत्यादि जीव शामिल हैं। हर दो साल में प्रकाशित होने वाली इस रिपोर्ट में बताया गया है कि वन्यजीवों की आबादी दुनियाभर में कैसे प्रभावित हो रही है। 'प्रदूषण मुक्त सांसें' पुस्तक के अनुसार वन्य जीवों को विलुप्त होने से बचाने के लिए देश में सबसे पहले वर्ष 1872 में ब्रिटिश शासनकाल में 'वाइल्ड एलीकेंट प्रोटेक्शन एक्ट' बनाया गया था। उसके बाद वर्ष 1927 में वन्य जीवों के शिकार और वनों की अवैध कटाई को अपराध मानते हुए 'भारतीय वन अधिनियम' अस्तित्व में आया, जिसके तहत सजा का प्रावधान किया गया। देश की आजादी के बाद वर्ष 1956 में 'भारतीय वन अधिनियम' पारित किया गया और 1972 में देश में वन्यजीवों को सुरक्षा प्रदान करने तथा अवैध शिकार, तस्करी और अवैध व्यापार को नियंत्रित करने के उद्देश्य से 'वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972' लागू किया गया। वर्ष 1983 में वन्य जीव संरक्षण के लिए 'राष्ट्रीय वन्य जीव योजना' शुरू की गई, जिसके तहत वन्य जीवों को इंसानी अतिक्रमण से दूर रखने और उनकी सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय पार्क और वन्य प्राणी अभयारण्य बनाए गए। जनवरी 2003 में वन्य जीव संरक्षण अधिनियम में संशोधन किया गया और अधिनियम के तहत अपराधों के लिए जुर्माना तथा सजा को अधिक कठोर बना दिया गया। बहरहाल, प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह समझना बेहद जरूरी है कि वन्य जीवों का संरक्षण हम सभी की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है क्योंकि वन्य प्राणियों की विविधता से ही धरती का प्राकृतिक सौन्दर्य है, इसलिए लुप्तप्राय: पौधों और जीव-जंतुओं की अनेक प्रजातियों की उनके प्राकृतिक निवास स्थान के साथ रक्षा करना पर्यावरण संतुलन के लिए भी बेहद जरूरी है।

हम हिंदुस्तानी फिल्मी
March 08-16, 2024
www. humhindustaniusa. com
Pg 76 to 79

श्वेता तिवारी किसी न किसी वजह से लगातार खबरों में बनी ही हुई हैं। वहीं, एक्ट्रैस सोशल मीडिया के जरिए भी अपने चाहने वालों ....

श्वेता तिवारी

अनारकली सूट में दिखाई सादगी

अदाओं पर टिकी रह गईं फैंस की नजरें

श्वेता तिवारी कुछ समय से लगातार खबरों में बनी हुई हैं। उन्होंने अपनी दमदार अदाकारी के कम पर तो हमेशा ही खुद को साबित किया है, इसके अलावा वह अपने स्टाइल और ग्लैमरस अंदाज का जादू भी देश भर के लोगों पर खूब चला रही हैं। ऐसे में एक्ट्रैस के चाहने वाले उनकी एक झलक देखने के लिए बेताब रहने लगे हैं। वहीं, श्वेता भी फैंस के साथ जुड़ी रहने के लिए सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। अक्सर उनके गॉर्जियस लुक्स फैंस के बीच वायरल हो जाते हैं। अब फिर से श्वेता ने अपनी अदाओं से फैंस के दिलों की धड़कनें बढ़ा दी हैं। श्वेता ने कुछ देर पहले ही अपने इंस्टाग्राम अकाऊंट पर नए लुक की झलक दिखाई है। यहां उन्हें एथनिक लुक में देखा जा रहा है। तस्वीरों में श्वेता पिंक कलर का अनारकली सूट पहने हुए नजर आ रही हैं, जिस पर हैवी एम्ब्रॉयडरी वर्क किया गया है। इसके साथ उन्होंने एक शोल्डर साइड में दुपट्टा पहना है। एक्ट्रैस ने इस लुक के साथ एक्सैसरीज के तौर पर गोल्डन भारी ईयररिंग्स कैरी किए हुए हैं। श्वेता ने अपने इस लुक को सटल बेस, न्यूड शाइनी लिप्स और स्मोकी आई मेकअप से कंप्लीट किया है। इसके साथ उन्होंने अपने बालों को सॉफ्ट कर्ल्स के साथ बालों ओपन रखे हुए हैं। श्वेता इस लुक में बेहद खूबसूरत और स्टनिंग दिख रही हैं। उन्होंने अदाएं दिखाते हुए कैमरे के सामने एक से एक पज दिए हैं। अब फैंस भी उनकी तारीफें करते नहीं थक रहे हैं।

वैब सीरीज में दिखी थीं श्वेता तिवारी

दूसरी ओर श्वेता के वर्कफ्रंट की बात करें तो पिछली बार एक्ट्रैस को रोहित शेट्टी के कॉप यूनिवर्स की वैब सीरीज 'इंडियन पुलिस फोर्स' में देखा गया था। इसके बाद से ही फिलहाल एक्ट्रैस ने अपने अगले प्रोजैक्ट का ऐलान नहीं किया है। फैंस उन्हें फिर पर्दे पर देखने के लिए उत्साहित हैं।

Janhvi Kapoor B'day Special

जब जाह्नवी कपूर ने श्रीदेवी से नहीं की थी तीन दिनों तक बात

श्रीदेवी को बताया था बुरी मां

जाह्नवी कपूर अपना 27वां जन्मदिन सैलीब्रेट कर रही हैं। इस खास मौके पर चलिए एक्ट्रैस से जुड़ी कुछ खास बातें जानते हैं...

बॉलीवुड की खूबसूरत अदाकारा जाह्नवी कपूर बॉलीवुड का जाना-माना नाम बन चुकी हैं। उन्होंने अपने बेहतरीन अभिनय और खूबसूरती के दम पर दुनिया भर के दर्शकों को दीवाना बनाया है। जाह्नवी का जन्म 6 मार्च 1997 को दिवंगत फीमेल सुपरस्टार श्रीदेवी और फिल्मकार बोनी कपूर के घर हुआ था। दिवंगत अभिनेत्री ने एक्ट्रैस से जुड़ा एक किस्सा शेयर कर सबको चौंका दिया था। जाह्नवी कपूर अपनी मां श्रीदेवी के बेहद करीब थीं। लेकिन जब उन्होंने अपना डेब्यू फिल्म 'धड़क' से किया, तब तक श्रीदेवी ने हमेशा के लिए इस दुनिया को अलविदा कह दिया था। ऐसे में जाह्नवी और उनकी मां से जुड़े कई किस्से वायरल होते रहते हैं। लेकिन इस अनोखी बात का खुलासा खुद श्रीदेवी ने किया था, जब उनकी बेटी ने उनसे तीन दिन तक बात नहीं की थी। श्रीदेवी ने अपने एक इंटरव्यू में इस किस्से का खुलासा किया था। एक्ट्रैस ने बताया था कि जाह्नवी करीबन 6 साल की थीं, तब उन्होंने उनसे तीन दिनों तक मुझसे बिल्कुल बात नहीं की थी। इतना ही नहीं, जाह्नवी ने श्रीदेवी को बुरी मां भी बता दिया था। इसके पीछे वहज थी श्रीदेवी की फिल्म सदमा। जी हां, उस समय जाह्नवी ने अपनी मां की फिल्म 'सदमा' देखी थी। एक्ट्रैस को ये बात अच्छी नहीं लगती हैं कि वह फिल्म में कमल हसन को छोड़कर चली जाती हैं। इस फिल्म ने नन्हीं जाह्नवी के दिमाग पर बहुत गहरा सदमा दे दिया था। उन्होंने इस कारण श्रीदेवी को 'गंदी मम्मा' बताया था। हालांकि, बाद में श्रीदेवी ने जाह्नवी को बहुत समझाया था कि वह सिर्फ एक फिल्म है। इसमें उन्होंने एक ऐसी महिला का किरदार निभाया है, जो बच्चों की तरह व्यवहार करती है।

मां नहीं देख पाईं थी डेब्यू फिल्म

श्रीदेवी ने जाह्नवी की डेब्यू फिल्म 'धड़क' को नहीं देख पाया। एक्ट्रेस ने फिल्म की एक 25 मिनट की क्लीप देखी थी। इसके बाद उन्होंने अपनी बेटी को एक्टिंग से रिलेटेड कुछ खास टिप्स भी दिए थे। हालांकि, फिल्म जुलाई 2018 में रिलीज हुई, जबकि फरवरी 2018 में ही श्रीदेवी का निधन हो गया था।

अंकिता लोखंडे

कास्टिंग काऊच का शिकार हुईं थीं!

एक्ट्रैस ने किया खुलासा प्रोड्यूसर ने रखी थी ये शर्त

पवित्र रिश्ता से फेम पाने वालीं टी.वी. एक्ट्रैस अंकिता लोखंडे ने अपने करियर और निजी जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखें हैं। अंकिता बॉलीवुड की कई फिल्मों में नजर आ चुकीं हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने एंटरटेनमैंट इंडस्ट्री में रहने के इतने साल बाद कास्टिंग काऊच को लेकर खुलकर बात की है। अंकिता ने बताया कि करियर के शुरुआती दौर में उन्हें भी बहुत स्ट्रगल करना पड़ा था। जब उनके साथ ऐसा हुआ था तो वो महज 19 साल की ही थी। इंटरव्यू में एक्ट्रैस ने बिना किसी का नाम लेते हुए कहा कि उन्होंने साऊथ की फिल्मों में ऑडिशन दिया था। उन्हें कॉल आया कि साइन करने आ जाओ। अंकिता ने बताया कि वो इस कॉल से काफी खुश थीं, लेकिन उनके मन में डऊट भी हो रहा था कि क्या सच में उनका सिलैक्शन हो गया। उन्हें लगा कि ये एक लक हो सकता है, या फिर सच में उन्होंने सच में अच्छा परफॉर्म किया होगा। बातचीत में उन्होंने कहा उन्हें बार- बार शक हो रहा था कि इतनी आसानी से उनका सिलैक्शन कैसे हो सकता है। उन्होंने दोबारा प्रोडक्शन कम्पनी से पूछा कि क्या सच में उन्हें सिलैक्ट कर लिया गया है। इसके जवाब में उन्हें कहा गया, कि हां हो गया है लेकिन इसके लिए एक शर्त पूरी करनी होगी। इस रोल के लिए आपको उनके साथ सोना पड़ेगा। अंकिता को गुस्सा आ गया और उन्होंने कहा कि उन्हें नहीं लगता कि आपके प्रोड्यूसर को फिल्म के लिए टैलेंटेड इंसान की जरूरत है।

गुलशन देवैया ने आगामी अनटाइटल्ड एक्शन सीरीज में अपनी भूमिका के बारे में खुलासा किया

प्रसिद्ध अभिनेता गुलशन देवैया ने बहुप्रतीक्षित अनटाइटल्ड एक्शन सीरीज में एक पुलिस वाले के अपने किरदार की एक झलक पेश की है, जिसकी तुलना हॉलीवुड फिल्म 'बैड कॉपत : क्रिमिनेल' से की जा रही है। अपनी बहुमुखी प्रतिभा और अपनी कला के प्रति समर्पण के लिए जाने जाने वाले, गुलशन देवैया ने अपनी भूमिका में प्रामाणिकता लाने के लिए कठोर एक्शन प्रशिक्षण से गुजरते हुए, किरदार की तैयारी में गहराई से काम किया। अपने अनुभव पर बात करते हुए, गुलशन देवैया ने कहा कि हम इस 8 एपिसोड की सीरीज को फिल्माने के बीच में हैं, और यह बेहद मज़ेदार और दर्दनाक दोनों रहा है। अभिनेता ने गहन एक्शन दृश्यों और स्टंट को फिल्माने के दौरान आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि एक्शन सीक्वैंस और स्टंट करना कठिन था, लेकिन असली कठिन काम दौड़ना था। आदित्य द्वारा निर्देशित और रवि वर्मा द्वारा कोरियोग्राफ किए गए एक्शन दृश्यों की विशेषता वाली इस सिरीज़ में सामान्य से परे शारीरिक परिश्रम की मांग की गई थी। गुलशन देवैया ने विस्तार से बताया कि हमारे निर्देशक आदित्य और एक्शन निर्देशक रवि वर्मा ने ऐसे दृश्यों को डिजाइन किया था, जिसके लिए मुझे कई टैक के लिए 100 से 200 मीटर से अधिक लंबी दूरी तक दौड़ना पड़ता था, कभी-कभी एक दर्जन से अधिक बार। गुलशन देवैया ने चुनौती की सीमा का खुलासा किया, उन्होंने कहा कि कुछ स्टंटमैनों ने तो उल्टी भी कर दी, यह इतना कठिन था जो हमारी बरदास्थ की सीमा से बाहर था। बाधाओं का सामना करने के बावजूद, अभिनेता डटे रहे और एक सम्मोहक प्रदर्शन देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की। यह यात्रा बाधाओं के बिना नहीं थी, जैसा कि गुलशन देवैया ने खुलासा किया कि इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि केबल स्टंट रिहर्सल के दौरान मेरा टखना मुड़ गया था, यह एक वास्तविक संघर्ष था। असफलता के बावजूद, भूमिका के प्रति उनका समर्पण कभी कम नहीं हुआ, जिससे उनकी व्यावसायिकता और प्रतिकूल परिस्थितियों से उबरने का दृढ़ संकल्प प्रदर्शित हुआ।

71वीं मिस वर्ल्ड पेजैंट कॉम्पिटिशन में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहीं सिनी शेट्टी ने टॉप 20 में अपनी जगह बना ली है। ऐसे में अब उनसे उम्मीदें और बढ़ती जा रही हैं। वह लगातार फैंस के साथ अपने ....

सिनी शेट्टी

ने भारत का सिर ऊंचा करने के लिए कसी कमर

टॉप 20 में हुईं शामिल!

71वीं मिस वर्ल्ड पेजैंट प्रतियोगिता का आगाज 20 फरवरी, 2024 से हो चुका है। करीब 28 सालों बाद एक बार फिर से भारत इसकी मेजबानी कर रहा है। इस प्रतियोगिता का आयोजन दिल्ली में स्थित भारत मंडपम से किया गया। भारत की ओर से सिनी शेट्टी मिस वर्ल्ड 2024 में देश का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। 120 देशों की बेहद खूबसूरत महिलाएं इस प्रतियोगिता का हिस्सा बनी हैं। अब सभी कंटैस्टैंट्स मुंबई पहुंच चुकी हैं। बीते शनिवार को सिनी शेट्टी सहित सभी खूबसूरत प्रतिभागियों ने मुंबई में रैंप वॉक पर जलवे बिखेरे। 71वें मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता के लिए बीती शाम सिनी शेट्टी ने ब्लैक ड्रेस में रैंप पर अपना जादू चलाया। उन्होंने इस दौरान नेकलाइन स्लीवलेस आऊटफिट में नजर आईं। उन्होंने अपने लुक को मिनिमम मेकअप और सॉफ्ट कर्ल्स के साथ कंप्लीट किया था। रैंप पर सिनी बहुत खूबसूरत और अट्रैक्टिव तो दिख ही रही थीं, साथ ही वह काफी कॉन्फिडैंट भी लगीं। बताया जा रहा है कि सिनी शेट्टी ने टॉप 20 में अपनी जगह बना ली है। इसके अलावा उन्हें एशिया और ओशिनिया से सर्वश्रेष्ठ डिजाइनर ड्रेस का विनर भी घोषित किया गया है। सिनी से देशभर के लोगों को काफी उम्मीदें हैं, जो हर दिन बढ़ती ही जा रही हैं। बता दें कि सिनी शेट्टी इससे पहले 21 साल की उम्र में वह 2022 में फेमिना मिस इंडिया का खिताब भी अपने नाम कर चुकी हैं। सिनी शेट्टी इस दौरान सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव हैं। वह कॉम्पिटिशन के दौरान भी लगातार चाहने वालों के साथ अपनी फोटोज और वीडियोज शेयर कर रही हैं। गौरतलब है कि अब तक ऐश्वर्या राय, प्रियंका चोपड़ा, मानुषी छिल्लर, युक्ता मुखी, रीता फारिया और डायना हेडन मिस वर्ल्ड का खिताब अपने नाम कर भारत का सिर गर्व से ऊंचा कर चुकी हैं।

9 मार्च को होगा फिनाले

गौरतलब है कि 71वें मिस वर्ल्ड के ग्रैंड फिनाले के लिए दर्शकों को ज्यादा लंबा इंतजार नहीं करना होगा। प्रतियोगिता का फिनाले 9 मार्च को मुंबई के जियो वर्ल्ड कन्वैंशन सैंटर में होने वाला है। इसे सीधे सोनी लिव पर शाम 7.30 बजे से टैलीकास्ट किया जाएगा।

Shraddha Kapoor B'day Special

कभी कॉफी शॉप काम करती थीं श्रद्धा कपूर

सलमान खान ने एक्ट्रैस को दिया था पहला ऑफर

बॉलीवुड एक्ट्रैस श्रद्धा कपूर आज अपना 37वां जन्मदिन मना रही हैं। इस खास मौके पर चलिए जानते हैं उनसे जुड़ी कुछ खास बातें...

बॉलीवुड एक्ट्रैस श्रद्धा कपूर आज अपना जन्मदिन सेलिब्रेट कर रही हैं। श्रद्धा कपूर अपनी खूबसूरती और दमदार एक्टिंग के लिए जानी जाती हैं। इतना ही नहीं वह अच्छी सिंगर भी है। एक्ट्रेस बेहद डाउन टू अर्थ है और उनकी ये खूबी फैंस को बेहद पसंद आती है। आज श्रद्धा भले ही सक्सैसफुल एक्ट्रैस की लिस्ट में शुमार हों, लेकिन एक्टिंग की दुनिया में आने से पहले वह कॉफी शॉप में काम किया करती थीं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक श्रद्धा कपूर ने बॉस्टन से अपनी पढ़ाई पूरी की है। इस दौरान एक्ट्रैस कॉफी शॉप में काम किया था। एक्ट्रैस ने इस बात का खुलासा एक इंटरव्यू में था। साल 2010 में उन्होंने फिल्म तीन पत्ती से फिल्मी दुनिया में कदम रखा था। बतौर लीड एक्ट्रैस श्रद्धा कपूर को साल 2013 की फिल्म आशिकी 2 ऑफर हुई थी, जिसके बाद वह बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रैसैस में शुमार हो गई थीं। श्रद्धा टिपिकल मराठी मुलगी हैं। उन्हें खाना बहुत पसंद हैं। एक्ट्रैस के आए दिन फूड वीडियो और फोटोज सोशल मीडिया पर वायरल होती रहती हैं। श्रद्धा कपूर ने एक इंटरव्यू में बताया था कि उन्हें हॉलीवुड सॉन्ग सुनना पसंद है। Ocean Drive का विद द सनशाइन उनका फेवरेट गाना है। वहीं एक्ट्रेस को तूफान और बिजली की गड़गड़ाहट से काफी डर लगता है। श्रद्धा कपूर को उनका पहला ऑफर 16 साल की उम्र में मिला था। वे सलमान खान ही थे, जिन्होंने श्रद्धा कपूर की एक्टिंग की तारीफ की थी। एक्टर ने श्रद्धा कपूर को बोस्टन यूनिवर्सिटी में नाटक परफॉर्म करते हुए देखा था। जिसके बाद उन्होंने एक्ट्रैस को काम ऑफर किया था।

इन सितारों संग रहा जुड़ा नाम

श्रद्धा कपूर की पर्सनल लाइफ की बात करें तो उनका नाम कई स्टार्स के साथ जुड़ चुका है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार आशिकी 2 के बाद श्रद्धा कपूर आदित्य रॉय कपूर एक-दूसरे को डेट कर रहे थे। लेकिन कुछ समय बाद ही दोनों अलग हो गए। इसके अलावा श्रद्धा कपूर का नाम फरहान अख्तर के साथ भी जुड़ चुका है। टाइगर भी खुलासा कर चुके हैं कि श्रद्धा उनका क्रश थी।

कृति सेनन

'दो पत्ती' को प्रोड्यूस कर रही हैं

अपनी फिल्म को लेकर एक्ट्रैस ने कही बड़ी बात

कृति सेनन इन दिनों अपनी फिल्म तेरी बातों में ऐसा को लेकर चर्चा में हैं। वहीं अब एक्ट्रैस अपने प्रोडक्शन हाउस तले बन रही पहली फिल्म 'दो पत्ती' के लिए भी कमर कस चुकीं हैं....

अभिनेत्री कृति सेनन फिल्म 'दो पत्ती' से निर्माता बनने जा रही हैं। फिल्म प्रोड्क्शन के लिए उन्होंने काफी क्रिएटिव काम किया और वह काफी संतुष्ट हैं। कृति ही नहीं, इस फिल्म में काजोल भी अहम रोल में दिखने वाली हैं। डायरैक्टर शशांक चतुर्वेदी की इस फिल्म की स्क्रिप्ट कनिका ढिल्लन ने लिखी है, जबकि वह फिल्म से वह प्रोड्यूसर के तौर पर डेब्यू कर रही हैं। यह जल्द ओ.टी.टी. प्लेटफॉर्म नैटफ्लिक्स पर रिलीज की जाने वाली है। कृति सेनन हाल में ही 'नेक्स्ट ऑन नैटफ्लिक्स' इवैंट में शामिल हुई थीं। कृति ने बताया कि वह एक्टिंग से कुछ अलग करना चाहती थीं, जिनमें उन्हें कुछ और ज्यादा क्रिएटिव करने को मिले। इसी वजह से एक प्रोड्यूसर के तौर पर वह फिल्म में काम कर रही हैं। उन्होंने बताया फिल्म 'मिमी' के बाद मुझे ऐसी कुछ अलग तरह के रोल का इंतजार है।' कृति ने कहा कि वह इस बात में विश्वास नहीं करती कि उन्हें सही समय आने पर सही मौका मिल जाएगा। एक्ट्रैस ने कहा कि वह मौके का लम्बे समय तक इंतजार नहीं कर सकतीं। वह तो खुद में कुछ करने पर यकीन करती हैं। उन्होंने कहा कि जब आपको सही और अच्छा मौका न मिले, तो खुद से बना लो।

कृति के लिए खास है फिल्म

कृति सेनन को उनकी फिल्म 'मिमी' के लिए बैस्ट एक्ट्रैस के नेशनल अवॉर्ड से नवाजा गया है। उन्हें इंडस्ट्री में काम करते हुए 9 साल हो चुके हैं। फिल्म 'दो पत्ती' की शूटिंग पूरी होने के बाद कृति ने बताया था कि 'हर फिल्म में मेरे दिल के करीब होती है, लेकिन कुछ में मेरी आत्मा भी है।'

रिधि डोगरा और अंशुमन झा की लकड़बग्घा-भाग दूसरा

के शुरू होने से पहले कॉमिककॉन 2024 में एक कॉमिक बुक के रूप में लांच होगी

अभिनेता अंशुमान झा ने गर्व के साथ दुनिया की पहली एनिमल लवर निगरानीकर्ता कॉमिक बुक, 'लकड़बग्घा (द हाइना)' के आगामी लांच का खुलासा किया। अमरीकी चित्रकार ब्रिटैन पेक द्वारा निर्मित, इस अभूतपूर्व प्रोजैक्ट का लांच कॉमिककॉन 2024 में किया जाएगा। ब्रिटैन पेक कहती हैं, कि लकड़बग्घा एक असाधारण फिल्म है – यह एक सुपरहीरो का जन्म है जो एक साधारण आदमी है। मैं अंशुमान के साथ कॉमिक बुक सीरीज बनाने और उनकी सम्मोहक रचनात्मक दृष्टि को हमारी ओरिजिनल कॉमिक बुक सीरीज़ में ढालने में सक्षम होने के लिए रोमांचित हूं। अर्जुन एक सरल लेकिन शक्तिशाली व्यक्ति हैं और हमारे समय में कमज़ोर लोगों की वकालत करने की हमारी जिम्मेदारी की याद दिलाने के लिए एक आवश्यक किरदार हैं। फिल्म में नकाबपोश निगरानीकर्ता के रूप में अपने अभिनय कौशल के लिए जाने जाने वाले अंशुमन झा ने इस ड्रीम प्रोजैक्ट के लिए अपना उत्साह व्यक्त किया, लकड़बग्घा एक ड्रीम प्रोजैक्ट रहा है और इसे कॉमिक बुक दायरे में विस्तारित होते देखना बहुत रोमांचक है और यह हमारे परे रहेगा। मैं ब्रिटैन के साथ इसे बनाने के लिए रोमांचित हूं जो बेजुबानों की आवाज बनने की अवधारणा में विश्वास करती है और जैसा कि मैं अपने निजी जिंदगी में करता हूं। कॉमिक बुक प्रिय पात्रों 'अर्जुन बख्शी' (झा) और 'अक्षरा डिसूजा' (रिधि डोगरा) को एक नए और आकर्षक तरीके से जीवंत करने का वादा करती है।

क्वीन ऑफ रोमांस, मृणाल ठाकुर, विजय देवरकोंडा के साथ बहुप्रतीक्षित पारिवारिक ड्रामा, 'फैमिली स्टार' के अंतिम शैड्यूल के लिए तैयार हैं...

मृणाल ठाकुर

चेन्नई में 'फैमिली स्टार' के अंतिम शैड्यूल के लिए विजय देवरकोंडा के साथ हुईं शामिल

क्वीन ऑफ रोमांस, मृणाल ठाकुर, विजय देवरकोंडा के साथ बहुप्रतीक्षित पारिवारिक ड्रामा, 'फैमिली स्टार' के अंतिम शैड्यूल के लिए तैयार हैं। परशुराम द्वारा निर्देशित, फिल्म ने अपनी अनूठी जोड़ी के लिए काफी ध्यान आकर्षित किया है और यह 5 अप्रैल को रिलीज होने वाली है। फिल्म में मुख्य भूमिका निभाने वाली मृणाल ठाकुर जल्द ही दक्षिण सिनेमा की क्वीन ऑफ रोमांस जोनर की क्वीन बन गई हैं, उन्होंने 'हाय नन्ना और सीता रामम जैसी हालिया हिट फिल्मों में अपने शानदार प्रदर्शन से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया है। मृणाल और विजय के बीच की कैमिस्ट्री का प्रशंसकों को बेसब्री से इंतजार है, जिससे फिल्म में उत्साह की एक अतिरिक्त परत जुड़ गई है। एक सूत्र के मुताबिक कि मृणाल पहले ही विजय के साथ जुड़ने और फैमिली स्टार के अंतिम शैड्यूल की शूटिंग शुरू करने के लिए चेन्नई के लिए रवाना हो चुकी हैं। एक हफ्ते तक चलने वाली शूटिंग पूरी तरह से चेन्नई में होगी। पूरी कास्ट और क्रू प्रत्याशा से भरी हुई है और इस अद्भुत यात्रा के समापन के करीब पहुंचने पर भावनाओं से भरी है। हालांकि, यह विजय और मृणाल की प्रतिभाशाली जोड़ी की एक मनोरम फिल्म की शुरुआत का प्रतीक है, जो पहली बार एक साथ सिल्वर स्क्रीन की शोभा बढ़ाएंगे। फैमिली स्टार अपने स्टार कलाकारों और परसुराम के निर्देशन की कुशलता के साथ एक सम्मोहक कहानी होने का वादा करता है।

Rhea Kapoor B'day Special

अव्वल दर्जे की बिजनैस वूमैन हैं रिया कपूर

फिल्ममेकर के साथ-साथ फैशन ब्रांड की हैं मालकिन

अनिल कपूर की छोटी बेटी रिया कपूर आज अपना 37वां जन्मदिन मना रही हैं। रिया फिल्मों का निर्माण करती हैं साथ ही कई और बिजनैस संभालती हैं...

5 मार्च 1987 को जन्मी रिया कपूर सोनम कपूर की छोटी बहन है। सोनम कपूर की तरह रिया को भा लाइमलाइट से दूर रहना पसंद हैं। हालांकि, उन्हें फैशन का काफी शौक है। रिया कपूर फैशन डिजाइनर भी हैं। वह सोनम के साथ मिलकर फैशन ब्रांड रेसन चलाती हैं। इतना ही नहीं रिया फिल्में भी प्रॉड्यूस करती हैं। रिया कपूर ने बतौर प्रोड्यूसर अपने करियर की शुरुआत साल 2010 में की थी। रिया ने राजश्री ओझा के साथ फिल्म आयशा को प्रोड्यूस किया था। इस फिल्म में सोनम कपूर ने लीड रोल में थीं। उनके साथ अभय देओल नजर आए थे। आयशा के बाद रिया ने साल 2014 में फिल्म खूबसूरत को प्रोड्यूस किया था, जिसके डायरैक्टर शशांक घोष थे। रिया ने साल 2018 में चार बड़ी एक्ट्रैस को लेकर फिल्म वीरे दी वेडिंग का निर्माण किया था। इस फिल्म में करीना कपूर, सोनम कपूर, स्वरा भास्कर और शिखा दिखाई दी थीं। यह फिल्म सुपरहिट हुई थी। बॉक्स ऑफिस पर फिल्म को काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिला था। फैंस ने फिल्म को खूब प्यार दिया था।

लग्जरी लाइफ की हैं शौकीन

रिया लाइमलाइट से दूर रहती हैं। प्रोड्यूसर के साथ-साथ रिया फैशन डिजाइनर हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, रिया की कुल संपत्ति पांच से छह मिलियन डॉलर है। रिया को महंगी गाड़ियों का भी काफी शौक हैं, उनके पास मर्सिडीज बेंज एस400, मर्सिडीज मेबैक एस 500 जैसी गाड़ियां हैं। पर्सनल लाइफ की बात करें तो 14 अगस्त 2021 को अपने लॉन्ग टर्म बॉयफ्रेंड करण बूलानी से शादी की थी।

कियारा आडवाणी

'डॉन 3' के लिए मोटी फीस वसूल रहीं?

रकम सुन लगेगा 440 वोल्ट का झटका

कियारा अडवाणी बॉलीवुड की टैलेंटेड एक्ट्रैस में से एक मानी जाती हैं। एक्ट्रैस ने अपनी शानदार अदाकारी से दर्शकों के दिलों में जगज बनाई है। लम्बे समय से उनका नाम फरहान अख्तर के निर्देशन में बन रही फिल्म डॉन 3 को लेकर लाइमलाइट में है। इस बीच सूत्रों के हवाला से खबर आ रही है इस फिल्म के एक्ट्रैस मोटी फीस वसूल रही हैं। आइए जानते हैं एक्ट्रैस फिल्म के लिए कितनी फीस ले रही हैं। 'डॉन 3' में कियारा आडवाणी लीड रोल में नजर आएंगीं। पहले खबरें आ रही थीं कि कृति सेनन को फिल्म में कास्ट किया जाने वाला है लेकिन बाद में कियारा आडवाणी का नाम फाइनल हुआ था। वहीं अब ये भी खबरें आ रही हैं कि कियारा ने 'डॉन 3' के लिए काफी मोटी फीस वसूल रही हैं। दरअसल हाल ही में आई एक मीडिया रिपोर्ट की मानें तो कियारा आडवाणी फरहान अख्तर की फिल्म के लिए 13 करोड़ रुपये की भारी-भरकम फीस ले रही हैं। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि इस फिल्म के लिए एक्ट्रेस अब तक की सबसे बड़ी फीस वसूली है। इतना ही नहीं रिपोर्ट में ये भी दावा किया गया है कि कियारा की 'डॉन 3' की फीस उनकी 'वॉर 2' से 50 फीसदी ज्यादा है। हालांकि इस अभी तक इस खबर को लेकर एक्ट्रेस की तरफ से कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है डॉन 3' में कियारा आडवाणी के शामिल होने की अनाऊंसमैंट फरवरी 2023 में की गई थी। फिल्म में एक्ट्रेस रणवीर सिंह के साथ स्क्रीन शेयर करेंगी। इस फिल्म में रणवीर और कियारा की जोड़ी पहली बार स्क्रीन पर नजर आएंगी। हाल ही में, कियारा ने भी इस फ्रैंचाइजी में शामिल होने के बारे में बात की, जब उन्होंने खुलासा किया कि जिस तरह से दर्शकों ने अब तक उन्हें देखा है, उससे अलग होने के लिए उन्होंने जानबूझकर इस फिल्म को साइन करने का फैसला किया है।

कब रिलीज होगी डॉन 3?

'डॉन 3' में कियारा आडवाणी और रणवीर सिंह लीड रोल प्ले करते नजर आएंगें। इस फिल्म की अनाऊंसमैंट के बाद से फैंस को इसका बेसब्री से इंतजार हो रहा है। बता दें कि फरहान अख्तर की 'डॉन 3' साल 2025 में रिलीज होगी और शूटिंग भी उसी साल शुरू होगी। हालांकि फैंस इस फिल्म में एक बार फिर शाहरुख खान को ही देखने की उम्मीद कर रहे थे, किंग खान के फैंस का मानना यही है कि असली डॉन तो शाहरुख खान ही हैं। हालांकि अब देखने वाली बात होगी कि क्या रणवीर सिंह डॉन के किरदार में दर्शकों पर अपना मैजिक चला पाएंगे या नहीं।

जेमी लीवर ने पिता जॉनी लीवर से प्रेरित स्वच्छ पारिवारिक कॉमेडी की विरासत को जारी रखा

प्रसिद्ध हास्य कलाकार जेमी लीवर अपने पिता, महान जॉनी लीवर से प्रेरणा लेती हैं, जो मंच और फिल्मों दोनों में अपनी स्वच्छ पारिवारिक कॉमेडी के लिए जाने जाते हैं। अपने पिता की विरासत को अपनाते हुए, जेमी आज कई स्टैंड-अप कलाकारों के बीच प्रचलित एडल्ट-उन्मुख कॉमेडी से खुद को अलग करते हुए, संपूर्ण पारिवारिक हास्य प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। साफ-सुथरी कॉमेडी के क्षेत्र में अग्रणी, जॉनी लीवर की बेटी के रूप में, जेमी अपनी अनूठी परवरिश और हास्य संवेदनाओं का लाभ उठाकर पीढ़ियों से अधिक हंसी के साथ दर्शकों का मनोरंजन करती है। स्वच्छ हास्य के मूल्यों को बनाए रखने के प्रति उनका समर्पण उनके पिता के शानदार करियर और मनोरंजन उद्योग पर उनके प्रभाव के प्रति उनके गहरे सम्मान को दर्शाता है। अपनी हास्य यात्रा पर बात करते हुए, जेमी लीवर कहती है कि मेरे पिता मेरे मार्गदर्शक रहे हैं, और मुझे उनके नक्शेकदम पर चलने पर बेहद गर्व है। स्वच्छ पारिवारिक कॉमेडी के प्रति उनके समर्पण ने मुझे मनोरंजन की दुनिया में अपना रास्ता बनाने के लिए प्रेरित किया है। मेरा मानना है कि हंसी को लोगों को एक साथ लाना चाहिए, और मैं ऐसा हास्य पेश करने के लिए प्रतिबद्ध हूं जो सभी उम्र के दर्शकों को पसंद आए। स्वच्छ कॉमेडी के सार को संरक्षित करने के लिए जेमी की प्रतिबद्धता एक ऐसे उद्योग में सकारात्मकता के प्रतीक के रूप में काम करती है जो अक्सर एडल्ट-उन्मुख कॉन्टेंट से प्रभावित होता है। परिवार के अनुकूल माहौल बनाए रखते हुए हंसी पैदा करने की उनकी क्षमता उनके पिता की विरासत की भावना का प्रतीक है, जो दुनिया भर के दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देती है।

छोटा पर्दा

दीना पाठक हिंदी सिनेमा की जानी मानी अभिनेत्री थी। सपोर्टिंग किरदार निभाने के बाद भी उन्होंने अपनी एक्टिंग से लोगों का ध्यान अपनी ओर खूब खींचा। दर्शकों से एक्ट्रैस को खूब प्यार मिला....

गुजरे जमाने की अभिनेत्री दीना पाठक भले ही आज हमारे बीच न हो, लेकिन उनके किरदार आज भी लोगों के दिलों में बसे हुए हैं। एक्ट्रेस ने 60 साल की उम्र तक फिल्मों में किया काम किया छा। उन्होंने लगभग 120 फिल्मों में दमदार भूमिका निभाई थी। बॉलीवुड में ऐसे बहुत कम किरदार हैं, जो साइड रोल में होने के बावजूद दर्शकों का ध्यान खींच लेते हैं। कुछ ऐसा ही कारनामा दीना करती थीं। उनके सफेद बाल, बोलने का अंदाज हर किसी को मोह लेता था। एक्ट्रैस की पर्सनल लाइफ भी काफी दिलचस्प रही है...

दीना पाठक ने बेहद कम उम्र से फिल्मी करियर की शुरुआत कर दी थी। उन्होंने एक्टिंग की क्लास राशिकला पारेख से ली थी। जिसके बाद वह इंडियन नैशनल थिएटर में शामिल हो गई थीं। एक्ट्रैस ने भवानी थिएटर में अंग्रेजों के खिलाफ लोगों को एक्टिंग के जरिए जागरूक करने का काम भी किया था। उन्होंने गुजराती फिल्मों में अपने करियर की शुरुआत 1948 में फिल्म 'कारियावार' से की थी।

दर्जी को दे बैठी दिल

फिल्मी करियर के साथ-साथ दीना की निजी जिंदगी भी काफी लाइम लाइट में रही। कहते हैं कि दीना का दिल एक दर्जी पर आ गया था। दर्जी का नाम था बलदेव पाठक दर्जी। दोनों ने एक दूसरे को अपना हमसफर चुन लिया था। बलदेव गेटवे ऑफ इंडिया के पास कपड़े सिला करते थे। खास बात ये थी कि वह राजेश खन्ना और दिलीप कुमार जैसे बॉलीवुड के सुपरस्टार के लिए कपड़े सिलते थे। कहा जाता है कि फिल्म 'गुरु' में राजेश खन्ना ने बलदेव पाठक का डिजाइन किया हुआ कुर्ता ही पहना था। दीना और बलदेव का साथ ज्यादा दिन न रह पाया। बलदेव पाठक का 52 साल की उम्र में निधन हो गया था।

दीना की दोनों बेटियां हैं एक्ट्रैस

दीना और बलदेव दो बेटियों के मां-बाप बनते हैं। आज दोनों बॉलीवुड का जाना-माना नाम हैं। दीना की बड़ी बेटी का नाम रत्ना पाठक शाह और छोटी बेटी का नाम सुप्रिया पाठक है। दोनों बॉलीवुड की तमाम फिल्मों में नजर आ चुकी हैं । रत्ना पाठक की शादी नसीरुद्दीन शाह से और सुप्रिया पाठक की शादी पंकज कपूर से हुई है।

2024 में दक्षिणी सिनेमाई क्रांति में पहली बार चमकेंगे 7 बॉलीवुड सितारे

एक अभूतपूर्व कदम में, बॉलीवुड के शानदार अभिनेता भौगोलिक बाधाओं को तोड़ रहे हैं और 2024 में दक्षिणी सिनेमा में पहली बार कदम रख रहे हैं। यह क्रॉस-इंडस्ट्री सहयोग भाषाई सीमाओं को पार करते हुए, क्षेत्रीय सिनेमा के समृद्ध परिदृश्य में नई प्रतिभा और विविध कथाओं को शामिल करने का वादा करता है।

इमरान हाशमी: ओजी (तेलुगु फिल्म)

बॉलीवुड के करिश्माई अभिनेता इमरान

हाशमी मेगा स्टार पवन कल्याण के साथ बहुप्रतीक्षित तेलुगु फिल्म 'ओजी' के साथ दक्षिण में अपनी पहचान बनाने के लिए तैयार हैं। बॉलीवुड में खुद को सफलतापूर्वक स्थापित करने के बाद, इमरान का तेलुगु सिनेमा में प्रवेश उनके बहुमुखी करियर में एक नया आयाम जोड़ता है, जो प्रशंसकों के लिए एक रोमांचक सिनेमाई अनुभव का वादा करता है।

सनी हिंदुजा: 'हैलो मम्मी' (मलायलम फिल्म)

अभिनेता सनी हिंदुजा, जो 'एस्पिरैंट्स, दि रेलवे मैन और संदीप भैया' जैसी प्रोजैक्ट्स के साथ अपने ओ.टी.टी. उद्यमों के साथ लगातार बड़ी सफलता हासिल कर चुके हैं, 'हैलो मम्मी' के साथ मलयालम सिनेमा में अपनी शुरुआत करने के लिए तैयार हैं जो एक फंतासी कॉमेडी है। हालांकि प्रोजेक्ट के बारे में विवरण गुप्त रखा गया है, सनी उत्साह से भरे हुए हैं क्योंकि वह कोच्चि में फिल्म की शूटिंग शुरू करने के लिए तैयार हैं। हैलो मम्मी की पटकथा संजो जोसेफ द्वारा लिखी गई है और वैशाख एलान्स द्वारा निर्देशित है। ऐश्वर्या लक्ष्मी और शराफ यू धीन सनी के सह-कलाकार हैं।

जेमी लीवर: आ ओकाट्टी अडक्कू (तेलुगु फिल्म)

बहुमुखी कलाकार जेमी लीवर, जो अपनी हास्य प्रतिभा के लिए जानी जाती हैं, 'आ ओकाट्टी अडक्कु' के साथ अपना तेलुगु डेब्यू करने के लिए तैयार हैं। यह फिल्म, जो उनकी दादी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि है और भी मार्मिक हो जाती है क्योंकि जेमी दक्षिणी बड़े परदे पर अपनी मातृभाषा को प्रस्तुत करेंगी। प्रशंसित राजीव चिलाका द्वारा निर्मित, यह प्रोजैक्ट भावना और मनोरंजन का एक अनूठा मिश्रण का वादा करता है।

जान्हवी कपूर और सैफ अली खान : देवरा: पार्ट 1 (तेलुगु फिल्म)

डायनामिक जोड़ी सैफ अली खान और जान्हवी कपूर एक्शन से भरपूर ड्रामा 'देवरा: पार्ट 1' से अपना तेलुगु डेब्यू करने के लिए तैयार हैं। कोराटाला शिवा द्वारा निर्देशित, यह फिल्म एक मनोरम कहानी का वादा करते हुए बॉलीवुड की दो पीढ़ियों की प्रतिभाओं को एक साथ जोड़ती है। तेलुगु सुपरस्टार जूनियर एन.टी. रामा राव द्वारा प्रदाशित, यह सहयोग 5 अप्रैल, 2024 को दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है।

बॉबी देओल: कंगुवा (तमिल फिल्म)

'एनिमल' की ताजा सफलता के बाद, बॉलीवुड के बॉबी देओल ने तमिल पीरियड एक्शन ड्रामा 'कांगुवा' के साथ दक्षिण भारतीय सिनेमा में पहला कदम रखा। बॉबी तमिल सुपरस्टार सूर्या के साथ स्क्रीन साझा करेंगे, शिव द्वारा निर्देशित और आदि नारायण द्वारा लिखित यह फिल्म, बॉबी देओल के शानदार करियर में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा। दिशा पटानी सहित कलाकारों की एक लम्बी सूची है, 2024 के मध्य में दुनिया भर में रिलीज होने के लिए तैयार है।

शनाया कपूर: वृषभम (मलयालम फिल्म)

बॉलीवुड की लेटैस्ट सनसनी, शनाया कपूर, महान अभिनेता मोहनलाल के साथ मलयालम फिल्म 'वृषभम' के साथ दक्षिणी सिनेमा में अपना पहला कदम रखेंगी। नंदा किशोर द्वारा निर्देशित और एकता कपूर द्वारा निर्मित, इस प्रोजैक्ट में शनाया की महत्वपूर्ण भूमिका मलयालम सिनेमा की सांस्कृतिक समृद्धि की खोज करते हुए उनके बढ़ते करियर में एक महत्वपूर्ण छलांग का प्रतीक है।

सैयामी खेर पैरा एथलीट चैम्पियन पलक कोहली के साथ एक फ्रैंडली बैडमिंटन मैच से जुड़ी

सैयामी खेर, जो अपनी आखिरी रिलीज़ घूमर के बाद बुलंदियों पर हैं, एक प्रसिद्ध अभिनेत्री और बैडमिंटन की शौकीन हैं। घूमर की तैयारी के लिए सैयामी ने कई पैरा एथलीटों से बातचीत की जो उनकी प्रेरणा रहे हैं। उन्होंने हाल ही में भारतीय पैरा एथलीट पलक कोहली के साथ एक दोस्ताना मैच खेलते हुए नज़र आई। 2021 में टोक्यो पैरालिंपिक के लिए क्वालीफाई करने वाले सबसे कम उम्र के पैरा एथलीट के रूप में इतिहास रचने वाली पलक वर्तमान में इस साल के अंत में पेरिस में आगामी पैरालंपिक खेलों के लिए कठोर प्रशिक्षण से गुज़र रही हैं। सैयामी की हालिया फिल्म 'घूमर', जिसमें उन्होंने एक पैरा क्रिकेटर की भूमिका निभाई, ने उन्हें उन एथलीटों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया, जो अपने खेल के प्रति उल्लेखनीय दृढ़ संकल्प और जुनून दिखाते हैं। बैडमिंटन के प्रति अपने प्यार और पलक की उपलब्धियों से प्रेरित होकर, सैयामी ने पलक के साथ एक दोस्ताना मैच खेलने में रुचि व्यक्त की थी। सैयामी के जीवन में बैडमिंटन का एक विशेष महत्व है, और वह पलक के साथ कोर्ट सांझा करने के अवसर का बेसब्री से इंतजार कर रही थी, जिसका खेल के प्रति समर्पण उस पर गहरा प्रभाव डालता था। 'घूमर' में सैयामी के पैरा क्रिकेटर के किरदार से प्रभावित पलक ने सैयामी के साथ बैडमिंटन खेलने के निमंत्रण को उत्साहपूर्वक स्वीकार कर लिया। मैत्रीपूर्ण खेल ने खिलाड़ियों के कौशल और खेल कौशल को प्रदर्शित किया और वे एक उत्साही प्रतिस्पर्धा में लगे हुए थे। अपने अनुभव पर विचार करते हुए, सैयामी खेर ने सांझा किया कि मैं पिछले 2 वर्षों से पलक के सम्पर्क में हूं। मैं उसके साथ खेलने का कोई मौका नहीं छोड़ना चाहती थी। उनके कोच गौरव खन्ना पैरा बैडमिंटन के लिए लखनऊ अकादमी में अविश्वसनीय काम कर रहे हैं। घूमर के दौरान मुझे स्क्रीन पर एक पैरा एथलीट का जीवन जीने का मौका मिला और मेरे मन में एथलीटों के लिए बहुत सम्मान और विस्मय है। बैडमिंटन ने हमेशा मेरे दिल में एक विशेष स्थान रखा है। पलक और गौरव सर के साथ कोर्ट साझा करना मेरे लिए एक खास अहसास था। मैं पैरिस में आगामी पैरालंपिक खेलों में पलक का हौसला बढ़ाऊंगी। जैसा कि वे अपनी-अपनी यात्राओं में एक-दूसरे को प्रेरित और समर्थन करते रहते हैं, सैयामी खेर और पलक कोहली का दोस्ताना मैच सौहार्द और आपसी प्रशंसा को बढ़ावा देने में खेल के गहरे प्रभाव को रेखांकित करता है।

Sarashiva
Exclusive Indian
Clothing &
Costume Jewelry
sarashiva9@yahoo.com
144, Broadway, Hicksville, NY-11801, Ph. : 516-513-0989